अंकुर

हीरक जयंती वर्ष

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065

असतो मा सद्गमय

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नई दिल्ली

Editorial Board

Standing Faculty Editors *(L-R)* : Dr Ved Prakash *(Hindi)*, Ms Pritika Nehra *(English)*, Dr Patanjali Bhatia *(Sanskrit)*, Dr Urvashi Sabu *(Chief Editor)*, Dr Mukesh Aggarwal *(Officiating Principal)*, Ms Garima Gaur Srivastava *(Publisher)*, Dr Pramita *(Sanskrit)*, Dr Banna Ram Meena *(Hindi)*

Sitting Student Editors *(L-R)* : Mahesh (Sanskrit), Ria Sharma (English), Swati Baruah (English), Priyanka (Hindi), Amisha (Hindi)

Cover Design :
Basu
B.Sc. (Hons.) Computer Science, II Year

अंकुर

असतो मा सद्गमय

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नई दिल्ली

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

नेहरू नगर, नई दिल्ली 110065

www.pgdavcollege.edu.in

email:pgdavcollege.edu@gmail.com

वर्ष : 2017-18 अंक : 66

Patron
Dr Mukesh Aggarwal

Chief Editor
Dr Urvashi Sabu

Editors
Dr Patanjali Bhatia
Dr Banna Ram Meena
Ms Pritika

Co-Editors
Dr Ved Prakash
Ms Pramita

Student Editors
Sanskrit : **Mahesh**
Hindi : **Priyanka, Amisha**
English : **Swati Baruah, Ria Sharma**

Publisher
Ms Garima Gaur Srivastava

Printer
Ess Pee Printers

UNIVERSITY OF DELHI

दिल्ली विश्वविद्यालय

Professor Yogesh Tyagi
Vice Chancellor

08 March 2018

Message

I am pleased to know that PGDAV College, University of Delhi, is celebrating its Diamond Jubilee this year. Over the past Sixty years the Collage has grown exponentially and established itself as one of the premier Colleges in Delhi University offering academic courses in multiple disciplines.

I am confident that with the collective efforts of the College fraternity, it will soon attain greater heights of success. The College magazine "Ankur (2017-18)" presents a beautiful blend of creative writing, College achievements and its future plans.

I congratulate the editorial team of the magazine and wish the College fraternity all success in their future endeavors.

Yogesh K. Tyagi

University Road, Delhi-110 007, India, Phones : +91-11-27667011, 27667190 Fax : +91-11-27667049

Email : vc@du.ac.in

PGDAV College welcomes
Chairman, Governing Body, Sh T.N. Chaturvedi

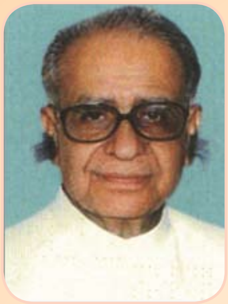

Shri T.N. Chaturvedi, Vice President, DAVCMC was educated at Allahabad University where he took his degrees in M.A., L.L.B. He Joined the Indian Administrative Service in 1950, and was allotted the Rajasthan cadre. On deputation with the Government of India he worked as Joint Director, National Academy of Administration, Chief Secretary, Delhi Administration, Chief Commissioner, Chandigarh, Director, Indian Institute of Public Administration, Secretary, Ministry of Education, Culture and Sports and Secretary, Ministry of Home Affairs. He was sworn in as Comptroller and Auditor General of India in 1984. He was elected to the Rajya Sabha in 1992 and 1998. He was Chairman, standing Committee on Industries and Member Committee on Defence and External Affairs. He was elected to the Executive Board of UNESCO in 2000. He was Governor of Karnataka from 2002 to 2007. He was also Governor of Kerala in 2004. He also served as Chairman of the Executive Committee, Nehru Memorial Museum and Library. He is currently Chairman, Indian Institute of Public Administration, Chairman, Institute for studies in Industrial Development, Chairman, The Lala Dewan Chand Trust and Chairman, Society for Indian Ocean Studies. He has authored two books and edited many more.

The many honours he received include the plaque of appreciation for his contribution of public audit and public administration (EROPA), Manila in 1987. He was awarded the Padma Vibhushan by the President of India for his contribution to public affairs in 1990. He has been conferred honorary doctorate (D. Litt) by the Lal Bahadur Shastri Sanskrit Vidyapeeth, New Delhi and by Punjab University, Chandigarh.

PGDAV College is proud and honoured to welcome Dr. Chaturvedi as Chairman of its Governing Body.

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय, नई दिल्ली की हीरक जयन्ती के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी के आगमन पर अन्तर्मन से निस्सृत उद्गार :

राम के आगमन से हुआ है कॉलेज धन्य।
आभार क्यों न माने हम नेता हैं मूर्धन्य।।
नेता हैं मूर्धन्य अन्तर्मन से दिया आशीष।
प्रगति पथ पर तुम बढ़ो सदा घण्टे चौबीस।।
कहे 'वीर' शुभभाव भरि बनना चाहो अभिराम।
पदचिह्नों पर चलो तुम ऐसे ही राम।।

डॉ. धर्मवीर सेठी
सदस्य, प्रशासकीय समिति

प्राचार्य की कलम से...

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज अपनी यात्रा के साठ वर्ष पूरे कर चुका है। किसी संस्था के जीवन में यह कार्य बहुत अधिक चाहे ना हो महत्वपूर्ण अवश्य होता है। 'अंकुर' की यात्रा भी कॉलेज के साथ साथ ही चली है, इस दृष्टि से अंकुर भले ही प्रौढ़ हो गई है, परंतु आज भी यह प्रतिभांकुरों को ही विकसित, पुष्पित, पल्लवित करने का कार्य कर रही है। यह पत्रिका विद्यार्थियों की साहित्यिक प्रतिभा को तो प्रोत्साहित कर ही रही है, कॉलेज में हो रही गतिविधियों की जानकारी प्रदान कर इस क्षेत्र में भी उनके विकास को बढ़ावा दे रही है। कॉलेज के हीरक जयंती समारोह के में कार्यक्रमों की कड़ी में 'अंकुर' को मेरी ओर से अनेक शुभकामनाएँ।

मुकेश अग्रवाल
कार्यवाहक प्राचार्य

Diamond Jubilee Celebrations : Hon'ble President of India **Sh. Ram Nath Kovind** visits PGDAV College on 18th February, 2018

UNIVERSITY OF DELHI
ON THE OCCASION OF DIAMOND JUBILEE CELEBRATIONS
WELCOMES
HONOURABLE PRESIDENT OF INDIA
SHRI RAM NATH KOVIND

UNIVERSITY OF DELHI
HONOURABLE PRESIDENT OF INDIA
SHRI RAM NATH KOVIND

हीरक जयंती पर प्राचार्य का संबोधन

नमस्कार,

भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविंद जी तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति परम आदरणीय प्रो. योगेश त्यागी जी अपने, कॉलेज की प्रशासकीय समिति (Governing body), कॉलेज के प्राध्यापक, कर्मचारियों, विद्यार्थियों तथा अपनी ओर से PGDAV कॉलेज के हीरक जयंती समारोह में मैं आपका हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत करता हूँ। किसी कॉलेज के लिए वह ऐतिहासिक क्षण होता है जब राष्ट्र के सर्वोच्च पद पर आसीन राष्ट्रपति जी का अभिभाषण कॉलेज परिवार के सदस्यों को कॉलेज के ही प्रांगण में प्रत्यक्ष रुप से सुनने का अवसर मिले। माननीय राष्ट्रपति जी ने यहाँ आकर जो हमारा सम्मान और गौरव बढ़ाया है, उसे शब्दों में अभिव्यक्त कर पाना निश्चय ही एक कठिन कार्य है।

महोदय

स्वतन्त्रता के पश्चात् देश में शिक्षा की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने के लिए सन 1957 में पी.जी.डी.ए.वी. College Managing Committee के नेतृत्व में जिस पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज ने 5 कमरों, 7 अध्यापकों और पैंसठ विद्यार्थियों के साथ अपनी यात्रा प्रारंभ की थी, उसमें आज Commerce, Art, Environmental Science तथा Computer Science के 13 Undergraduate तथा 4 post graduate courses में अध्ययन हो रहा है। FYUP में यहाँ B.Tech का Four Year Degree Course भी रहा है। हमारे अध्यापको की संख्या 150 है। सभी Departments के लिए Departmental rooms हैं। सभी अध्यापकों को कॉलेज की ओर से Laptops issue किए गए है। कॉलेज में Regular विद्यार्थियों की संख्या लगभग 3900 है। इसके अतिरिक्त NCWEB, SOL, तथा IGNOU की कक्षाएँ भी चलती है। विद्यार्थियों के लिए आज हमारे पास 25 interactive classroom के साथ कुल 62 Room, 5 Computer Labs तथा एक Statistics Lab है, Wi-fi enabled कैंपस है, PWD students के लिए 2 lift, ramps तथा wheel chair हैं। खिलाड़ियों के लिए बड़ा Ground, Gym तथा अन्य सुविधाएँ है।

कॉलेज के पास एक Fully Computerised Air-Conditioned Library है जिसमें कुल मिलाकर 1,13,000 से अधिक पुस्तकें तथा journals है। इसी साल हमने लाइब्रेरी में N-list Program शुरु किया है जिसके माध्यम से अध्यापक और विद्यार्थी घर बैठकर 6000 E-journals तथा 31,35,000 E-Books नि:शुल्क access कर सकते हैं। हमारे कॉलेज में कुछ विभागों का परीक्षा परिणाम 100% तो शेष का 88-95% के बीच रहता है। हिंदी, मैथ्स, कॉमर्स आदि विषयों में हमारे विद्यार्थी टापॅर भी रहे हैं। इस वर्ष भी डंजी में तीन विद्यार्थियों का CGPA 9.25 से अधिक है। क्लास रुम के अतिरिक्त Tutorial, PPP, Group Discussion आदि के माध्यम से भी विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न की जा रही है। हमने सभी विद्यार्थियों के लिए एक Nodal Teacher नियुक्त करने की योजना तैयार की है।

कॉलेज में R.O. Water System, Bank, Doctor, Nurse, Pad Vending Machine, Rain-harvesting System compost pit जैसी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। एक पुष्प वाटिका तथा herbal Garden

विकसित किए गए है। हमारे इन प्रयासों को Indian Institute of Ecology - Environment की ओर से World Ecology Environment - Development पुरस्कार देकर सराहा भी गया। भविष्य में हमारी कॉलेज Library तथा कार्यालय को विस्तृत करने की योजना है। PWD विद्यार्थियों के लिए जल्दी ही QR Code based application तथा Techtile path का काम शुरु होने वाला है। इसी सत्र से Smart I-Card issue कर कॉलेज को Cashless Campus में परिवर्तन किया जाएगा। शीघ्र ही कॉलेज में Solar panel के माध्यम से बिजली की बचत एवं उत्पादन का कार्य भी प्रारम्भ किया जाएगा।

Governing body में कॉलेज को समय-समय पर जस्टिस मेहरचंद महाजन, Justice J.L. Kapar, Lala Surajbhan, Prof. Ved Vyas, Dr. G.P. Chopra, Dr. T.R. Tuli, Sh. Mohan Lal Jee, Dr. S.R. Arora तथा Sh. Ravinder Kumar का मार्ग दर्शन मिला। DAV College Managing Committee के वर्तमान President Padamashri Dr. Poonam Suri Ji का आशीर्वाद और सहयोग भी हमारा उत्साहवर्धन करता रहता है।

Enactus- PGDAV; Geo-crusadons : The Environmental Society; Satark : The consumer club, NCC, NSS आदि के माध्यम से हम पीड़ित महिलाओं की सहायता, गरीब विद्यार्थियों को मुफ्त शिक्षा पर्यावरण जागरण, उपभोक्ता का अधिकार, रक्तदान, वस्त्र एवं दवा-वितरण, जैसे सामाजिक कार्य कर विद्यार्थियों को एक अच्छा नागरिक बनने का दायित्व पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं। हमारे कॉलेज छात्रसंघ ने इस वर्ष अपने फंड से विश्वविद्यालय में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले हमारे विद्यार्थियो के लिए पुरस्कार की घोषणा की है, यह हमारे लिए हर्ष और गर्व का विषय है। दलित व पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों की मदद् के लिए कॉलेज ने SC/ST/OBC Cell तथा North East के विद्यार्थियों की सहायता के लिए North East Cell भी स्थापित किया है।

हमारी सांस्कृतिक संस्था हाईपीरियन के अन्तर्गत कॉलेज में नाटक, लोकनृत्य, Fine Arts, Photography, Film Making आदि से संबंधित 15 societies हैं। गत वर्ष इस संस्था ने देश भर में 150 से अधिक पुरस्कार जीते। हमारे नाटक 'जानेमन' को साहित्य कला परिषद के नाट्य समारोह में Best Play, Best Production और Best Actor का Award मिला। विद्यार्थियों को साहित्यिक मंच प्रदान करने के लिए कॉलेज पत्रिका 'अंकुर' नियमित रुप से प्रकाशित होती है। हमारे कॉलेज का Spic Macay Chapter अनेक कलाकारों को आमंत्रित कर इस सांस्कृतिक वातावरण को और अधिक गरीमा प्रदान करता है।

कॉलेज अपने विद्यार्थियों को Placement के अवसर भी उपलब्ध कराता है। EY, Wipro जैसी कंपनियों में 4.5 लाख के पैकेज तक इस वर्ष हमारे 95 विद्यार्थियों का चयन हो चुका है। 2017 से हमने Internship Fair भी शुरु किया है, जिसे इस वर्ष भी आयोजित किया जाएगा। हमारी इन उपलब्धियों को स्वीकार करते हुए Confederation of Indian Universities ने PGDAV को Best Managed College of the Year 2017 पुरस्कार से सम्मानित किया है। Indian Institute of Information Technology Hyderabad के सदस्य रहे सतीश खोसला, दिल्ली प्रेस के संपादक और प्रकाशक रहे परेश नाथ, भारत सरकार के Additional solicitor general रहे संजय जैन Additional District Session Judge राजीव मेहरा आदि हमारे कॉलेज के विद्यार्थी रहे हैं। खेलो में रमन लाम्बा, मनोज प्रभाकर, अजय शर्मा, परविंदर अवाना, गुरविंदर सिंह, संतोष कश्यप, राम

सिंह आदि ने क्रिकेट, फुटबॉल, एथलेटिक्स आदि में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है। हमारी क्रिकेट टीम इस वर्ष दिल्ली University Cricket Tournament में Runner Up रही।

इस कॉलेज को माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री अरूण जेटली, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, श्रीमती स्मृति ईरानी, पद्मविभूषण सोनल मानसिंह, अभिनेत्री सुषमा सेठ जैसी विभूतियों का आतिथ्य करने का सौभाग्य मिला है। हमें गर्व है कि आज देश के सर्वोच्च पद पर आसीन माननीय श्री रामनाथ कोविन्द जी के आतिथ्य का सौभाग्य हमे मिल रहा है। इस पद पर रहते हुए भी आप जिस सहज, सरल, मानवीय स्वभाव के धनी हैं, वह हमारे लिए अनुकरणीय है। आत्मविश्वास और कर्तव्यनिष्ठा आपके व्यक्तित्व को प्रभावपूर्ण बनाती है। आप ईशावास्योपनिषद के इस मंत्र में विश्वास रखते हैं-

ऊँ ईशा वास्यमिदं सर्व यत्किच जगत्यां जगत्,

तेन त्यक्तेन भुजिथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।

महोदय आपके आने से हमारा उत्साहवर्धन भी हुआ है और यह दायित्व भी बढ़ा है कि स्वयं को एवं अपने विद्यार्थियों को इस योग्य बनाए कि हम सब गर्व से यह कह सकें कि हम उस PGDAV कॉलेज में पढ़े है अथवा पढ़ाते हैं जहां स्वयं माननीय राष्ट्रपति कॉलेज प्रांगण में हमें आशीर्वाद देने आए थे। मान्यवर, मैं एक बार पुनः आपका कॉलेज प्रांगण में स्वागत करता हूँ। आपके अभिभाषण से हम बौद्धिक दृष्टि से अधिक समृद्ध होंगे, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

भारत के राष्ट्रपति

श्री राम नाथ कोविन्द

का

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज के हीरक जयंती समारोह में सम्बोधन

नई दिल्ली, 18 फरवरी, 2018

मुझे प्रसन्नता है कि 'दयानन्द एंग्लो वैदिक' परिवार से जुड़ा यह कॉलेज अपनी स्थापना के 60 वर्ष पूरे करते हुए हीरक जयंती मना रहा है। इस अवसर पर आप सभी को बहुत-बहुत बधाई।

आज के दिन इस कॉलेज के संस्थापकों और सहयोगियों को स्मरण करने का भी दिन है जिनकी शिक्षा के प्रति व्यापक और दूरगामी सोच के कारण इस महाविद्यालय में अब तक लाखों विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। **पन्नालाल गिरधरलाल** नामक फर्म के मालिक इस कॉलेज के निर्माण के लिए धनराशी प्रदान करने वाले पहले दान-दाता थे। **जस्टिस मेहर चंद महाजन** ने, जो कि प्रबंध समिति के तत्कालीन प्रधान थे, इस कॉलेज की स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाई।

डॉक्टर भाई महावीर और प्रोफेसर बलराज मधोक जैसे समाज को दिशा देने वाले अनेक चिंतक और विद्वान इस कॉलेज से जुडे रहे हैं। इस कॉलेज ने अध्ययन-अध्यापन के साथ ही खेलों को भी महत्व दिया है, फलस्वरुप इस परिसर ने देश को कई अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी दिए हैं, विशेषकर भारत की क्रिकेट टीम में **मनोज प्रभाकर** और **रमन लांबा** जैसे छात्रों का चयन होता रहा है। इस कॉलेज की नेशनल सर्विस स्कीम (एन.एस.एस.) इकाई की गिनती देश की सर्वश्रेष्ठ इकाईयों में होती रही है।

उन्नीसवीं सदी के दौरान, भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक जागरण की जो धाराएं प्रभावित हुई उनमें बहुत ही प्रमुख योगदान **स्वामी दयानंद सरस्वती** का था। स्वामी जी ने समाज सुधार का संकल्प लेकर 1874 में आर्य समाज की स्थापना की। वे कुरीतियों तथा अंधविश्वासों के विरोधी थे। उन्होंने वेदों के ज्ञान को व्यावहारिक बनाया और आंतरिक शुद्धि, मानसिक विकास और वैज्ञानिक चिंतन पद्धति पर बल दिया।

स्वामी दयानंद सरस्वती के आदर्शों को आगे बढ़ाने के लिए लाला हंसराज ने लगभग 130 वर्ष पहले लाहौर में 'दयानंद एंग्लो वैदिक' कॉलेज की नींव रखी थी। उसके बाद डी.ए.वी. संस्थाओं की स्थापना अविभाजित उत्तर भारत के अधिकांश क्षेत्रों में हुई।

आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित तथा भारतीय परंपरा से ओत-प्रोत शिक्षा प्रदान करते हुए डी.ए.वी. परिवार के शिक्षण-संस्थानों ने देश की अनेक पीढ़ियों का निर्माण किया है। भारत-रत्न से अलंकृत पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कानपुर के डी.ए.वी. कॉलेज से एम.ए. की पढ़ाई पूरी की थी। मुझे भी कानपुर के डी.ए.वी. कॉलेज ही से बी.कॉम. व एल.एल.बी. की पढ़ाई करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

अनेक डी.ए.वी. शिक्षण संस्थानों के आदर्श-वाक्य हैं, 'असतो मा सद्गमय' तथा 'तमसो मा ज्योतिर्गमय', जिनका अर्थ है 'हमे असत्य से सत्य की ओर ले चलो', अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। असत्य से सत्य की ओर, अनैतिकता से नैतिकता की ओर तथा अज्ञान से अंधेरे से ज्ञान के प्रकाश की ओर जाना एक श्रेष्ठ समाज के निर्माण में आवश्यक है। इन विचारों को लेकर आगे बढ़ने वाले व्यक्ति और समाज सदैव लोक-कल्याण की भावना से प्रेरित अपने लक्ष्य को प्राप्त करते है।

भारतीय मूल्यों और आधुनिक विज्ञान के समन्वय की सोच के द्वारा मानव समाज का स्थाई विकास संभव है। उन्नीसवीं सदीं में शुरु की गई डी.ए.वी. संस्थानों के शिक्षा दर्शन के आधार पर इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों का भी सामना किया जा सकता है, 21वीं सदी की अर्थव्यवस्था को 'ज्ञान की अर्थव्यवस्था' या 'नॉलेज इकॉनोमी' कहा जाता है। साथ ही आज के दौर को 'इन्फोर्मेशन एज' या 'डिजिटल एज' भी कहते हैं। इस दौर में भारत के उद्यमियों ने दुनियां में अपनी एक नई पहचान बनाई है। अमेरिका की 'सिलिकॉन वैली' में भारत के उद्यमियों और प्रोफेशनल्स ने जो सम्मान अर्जित किया है वह आज के भारत की प्रतिभा का एक उदाहरण है। यह उदाहरण आप सभी विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

आज के इस दौर में, नये आईडिया, नई सोच और इनोवेशन की ताकत पैसे से अधिक है। आप सभी उन अनेक उदाहरणों के विषय में जानते है। जहां कंप्यूटर के जरिए ऑन-लाइन व्यापार, ट्रांसपोर्ट, होटल, रेस्टोरेन्ट और पर्यटन आदि सेवाएं प्रदान करके अनेक युवाओं ने सफलता की नई मिसालें कायम की है। उन युवाओं ने सेवाओं और वस्तुओं का उपभोग करने वाले और उन्हें मुहैया कराने वालों को केवल एक-दूसरे के साथ जोड़ने का काम किया है। उनकी विशाल सफलताओं के पीछे पूंजी बहुत कम लगी है लेकिन जो प्रतिभा लगी है वह अमूल्य है। उन्होंने डिजिटल मार्केट में उपलब्ध नए अवसरों का प्रभावी उपयोग किया है।

कुछ ही सालों पहले प्रकाशित 'स्टार्ट अप जिनोम रिपोर्ट' में पाया गया कि भारत के लोगों में उदयमियों की प्रतिभा 'सिलिकॉन वैली' के उदयमियों के बराबर है। यही प्रतिभा आप जैसे सभी विद्यार्थियों में भी मौजूद है। इस प्रतिभा का उपयोग करने के लिए सभी को भरपूर प्रयास करने चाहिए।

मुझे बताया गया कि इस कॉलेज के अधिकांश विद्यार्थी दिल्ली और आस-पास के क्षेत्रों के निवासी हैं। इस क्षेत्र के विकास की अपार संभावनाएं है। भारी संख्या में देश के दूसरें हिस्सों से लोग अवसरों की तलाश में यहां आते हैं। ऐसे में आप अपनी यहां रहने की सुविधा का भरपूर उपयोग कीजिए। आज भारत की जीडीपी का 60 प्रतिशत से अधिक योगदान शहरों से होता है। इससे आप जैसे युवाओं के लिए बहुत से अवसर पैदा होते हैं।

वर्तमान में रोजगार की परिभाषा बदल रही है। रोजगार का मतलब केवल नौकरी ही नहीं रह गया है। स्व-रोजगार करना और दूसरों के लिए रोजगार पैदा करना अधिक सुविधाजनक और व्यावहारिक हो गया है। स्व-रोजगार में सफलता के नित नए उदाहरण देखने को मिलते हैं। स्व-रोजगार के लिए पूंजी उपलब्ध कराने के लिए 'मुद्रा-योजना' तथा अन्य कई योजनाओं के तहत सहायता प्रदान की जा रही है। सरकारी प्रक्रियाओं को भी बहुत आसान बनाया गया है। हाल के वर्षों में भारत ने 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' के पैमानों पर बयालीस स्थान उपर उठते हुए सौवां स्थान प्राप्त किया है। 'स्किल इंडिया', स्टार्ट-अप इंडिया', 'मेक इन इंडिया' आदि कार्यक्रमों के जरिए बहुत से अवसर प्रदान किए जा रहें है। Small and Medium Enterprises को बहुत सी सुविधाएं और करों में छुट दी गई है। जरुरत है कि आप जैसे युवा इन अवसरों का भरपूर उपयोग करें और अपना विकास करते हुए दूसरों के लिए विकास का अवसर पैदा करें। मुझे आशा है कि आप सभी विद्यार्थी अपने विकास के अवसरों को तलाश कर पूरी एकाग्रता के साथ उनका उपयोग करेंगे। आप सभी विद्यार्थियों में अपार प्रतिभा और क्षमता है। ज़रुरत है, कि आज सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जा रही तमाम सुविधाओं का उपयोग करके आगे बढ़ने की। इन अवसरों का उपयोग करते हुए आगे बढ़ते हुए आप सभी अपनी प्रतिभा का उपयोग कर सकेंगे, अपने और अपने परिवारजन के जीवन-स्तर में सुधार ला सकेंगे तथा समाज के दूसरे लोगों को भी रोजगार और विकास के अवसर प्रदान कर सकेंगे।

मैं एक बार फिर इस कॉलेज के सभी विद्यार्थियों, अध्यापकों, प्रशासकों और अतीत में यहां से जुड़े सभी व्यक्तियों को बधाई देता हूं। मैं सभी विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की मंगल-कामना करता हूं।

धन्यवाद

जय हिंद!

From The Chief Editor's Pen

In today's world of the screen, pages seem an outdated commodity. As reading habits change from perusing books made of paper to words flickering on an electronic screen, the question begs asking: Will the present generation, 'millennials' as they have been termed, ever know the pleasure of holding a book? Will they ever understand what it meant to live in a world where books were prized possessions, heirlooms and collector's items? Will it occur to them that words crystallized on paper could be repositories of knowledge handed down from generation to generation, and that any marauding regime first took it upon itself to destroy libraries and then to exterminate intellectuals? Today, we live in a world where knowledge and information have merged so inextricably that it is difficult to identify one from the other. We live in a time where knowledge and news come to us from a huge web that connects the world, where information is disseminated, distorted, and deleted by the mere touch of a button; a world where the length of memory is equal to the time it is visible to us on our screens. The feel of a warm page in our hands, its dog eared ends recalling for us a train of thought and a sequence of events, notes scribbled in the margins, favourite lines underlined, the handmade bookmark gifted by a parting friend, the occasional pressed dried flower falling out to remind us of love that was, the forgotten letter accidentally discovered while flipping through a book, all these seem nostalgic vignettes of a past era.

However, there is hope. The book as an actual entity may be gradually taking a back seat, but the habit of reading is as strong as it was. The means have changed, the end remains intact. The book may have undergone a Merlinesque metamorphosis and reincarnated itself on Kindle, but people read. Book clubs are burgeoning and flourishing, and a whole new generation of readers is now growing up with the word as seen through an electronic medium. It is with this view of the present, with the desire to enlarge our reach and encourage our young readers, that we have come out, this year, with a digital version of Ankur which will be available to our readers on the PGDAV College website.

Also a first for the magazine is the special feature 'Amalgamations', or 'Samanvay'. Ankur has traditionally been printed with three separate sections: Sanskrit, Hindi and English. This year, we have introduced a section featuring translations from these three languages into these three languages. The original piece in a language begins the section, followed by its translation into the other two languages. The pieces have been translated by our own faculty. Philosophically speaking, we exist through a process of translation, trying to make sense of the natural and human events taking place around us. In the literary world, translation is the most significant act of bringing an alien text closer to one's understanding, thereby extending one's frontiers of knowledge. We request you to be the judge. Tell us whether the effort to bring you closer to a work you wouldn't easily have accessed has been worthwhile or not.

I extend my heartfelt gratitude to the Principal Dr Mukesh Agarwal for his continued support and encouragement.

My warm thanks to the entire editorial team comprising both faculty and students: Dr Patanjali Bhatia and Dr Pramita Mishra from the dept. of Sanskrit and their student editor Mahesh; Dr Banna Ram Meena and Sh. Ved Prakash from the Hindi Dept. along with student editors Amisha and Priyanka; and Ms Pritika from the Dept of English with student editors Swati Baruah, and Ria

Sharma, as well as the student editorial team of the English section, Anubhav Tekwani, Kartik Gupta, and Apoorva Thakur. Their enthusiasm, ideas and efforts have been the mainstay of this magazine.

A special word of thanks to all colleagues and students whose creative inputs are represented in these pages; they are the body and soul of this issue.

Finally, it is with great pleasure and some pride that we present to you the 2017-18 issue of Ankur. In August 2017, the college completed 60 glorious years of excellence in education, and this edition of Ankur is, in that sense, the Diamond Jubilee year issue. It abounds with creative energy and academic reflections, with laughter and anguish, with philosophical ruminations and thoughts on current affairs, with music and art and images and vignettes of the academic session. It is an archive not just of the events of the year, but a repository of memories, musings and achievements that will continue to inspire and regale. We hope you too, dear reader, will settle in a comfortable corner of your room and peruse this lovingly curated effort at your leisure. We wish you peace and the joy of words. Because paper may be waning, like bodies; but words, like souls, live on.

Dr Urvashi Sabu
Associate Professor, Dept of English

संस्कृत खण्डः

विषय सूची

क्र. सं.	विषय		
1.	कालिदास हमारे दिलों के अंश हैं	–	पं. जवाहरलाल नेहरु
2.	वेदों की सार्वभौमिकता	–	प्रो. कपिल कपूर
3.	पक्षिणः विवेकः	–	मोहित कुमार
4.	आधुनिक युगे गीतायाः प्रासङ्गिकता	–	आरती यादव
5.	दैवमेव परम्	–	काजल अग्रवाल
6.	चाणक्य नीतिः	–	डॉ. प्रमिता मिश्रा
7.	वेद के अध्ययन का प्रयोजन	–	प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद
8.	संस्कृत शिक्षया कौशलविकासः संभवति	–	कु. आरती
9.	भारतीय संस्कृति में संस्कारों की कल्पना	–	महेश
10.	बलवान कः	–	काजल अग्रवाल
11.	कर्कटस्य उपाय	–	मिताली
12.	व्यर्थः मूर्खोपदेशः	–	मिताली

सम्पादकीयम्

(नूतन संस्कृतकोशग्रन्थस्य आवश्यकता)

डॉ. पतञ्जलिकुमारो भाटिया

संसारोऽयं परिवर्तनशील: यदा-यदा संस्कृतिद्वयस्य मेलनं भवति तदा खाद्य-वेशभूषादिषु तु परिवर्तनं भवति भाषापि नास्य अपवादभाक्, अत्रापि भाषा परिवर्तते। नूतन-शब्दा: इतरभाषाभ्य: इतरसंस्कृतिभ्य: गृह्यन्ते पूर्वं मातायातार्थ तादृशतीव्रगतिकवाहनानि नासन्, यथा अद्यत्वे। अत: भाषिकपरिवर्तनं मथरगतिक आसीत्। परम् अद्यत्वे प्रसारणमाध्मानामां वैदेशिका पत्र-पत्रिकाणां सुलयमतया प्रसारणेन भाषिक परिवर्तनं तीव्रगत्या भवति। यथा पास्ता-बर्गर-होटडाग-मोमोज़-चाउमिन-डलरोटी-स्कर्ट-ब्लाउज प्रभृतय: शब्दा: भाषायां प्रयुजन्ते। एवमेव-हैण्डग्रिनेड-हथगोला-एण्टीए अरक्राफ्टगन-पनडुब्बी-रिएक्टर-बोइंग-ब्रेकिंगन्यूज-प्रभृतिबहव: शब्दा: समाचारपत्रेषु दृश्यन्ते एवमेव नूतनरोगा: प्रसृता:। एतेषां संस्कृतभाषान्तरं कि स्यात्? अयं जाज्वल्यमान: प्रश्न:। दूरदर्शने आकाशवाणीवार्तासु यद्यपि एतेषां संस्कृतरूपान्तरं प्रयुज्यते, परं तद् यादृच्छिकम्। एक संपादक: अनुवादककर्ता वा बजटर्थम् आयव्ययपत्रकं अपरश्च अर्थसंल्यम्। श्रोता सन्दिहानो भवति। एवमेव बहव: शब्दा: सन्ति। टेलीवीयन कृते दूरदर्शनम् परं दाक्षिणात्ये (विशेषत: श्री लङ्कपदेशे रुपवाहिनी - शब्द: प्रयुज्यते, य: हि सार्थकतां भजति। रोगाणमपि इयं स्थिति:। प्लेग-हार्पिज़-एड्स - आदि शब्दा: जनभाषासु प्रसृता:। तेषां संस्कृतं किं स्यात्? बहो: कालात् विद्वांस कथयन्ति यत् एतदर्थम् एका समिति: सखघटनीया। यस्यां सैन्यायुध चलचित्र: रोगादिविषयका: विद्वांस: विचारविमर्शं कृत्वा रूपान्तरितशब्दानां एकमत्या निर्धारणं स्यात्। यथा हिन्दीभाषायां डॉ. रघुवीरेण परिभाषिकशब्दावली निर्मिता तथैव संस्कृत पारिभाषिक शब्दकोशांऽपि निरूपणीय:। साम्प्रतिके काले 'अमरकोशो जगत्पिता इयं प्राचीना सूक्ति: नहि समीचीनतां भजति। तत्र नूतनशब्दानां भाषान्तरस्य अभावो वर्तते। तत्र केचन एतादृशा: शब्दा: अपि सन्ति, ये प्राचीनसाहित्ये, वैदिकसाहित्ये वा प्रयुक्ता: परं सामप्रतं न हि ते आधुनिक साहित्ये प्रयुज्यन्ते। अत: साम्प्रतिके काले अभिनवसंस्कृतकोशविरचनाया: महती आवश्यकता वर्तते। विद्वद्भि: अस्मिविषये नूनं चिन्तनीयम्, तत्र च कथंकारमपि पूर्वाग्रहं विहायनूतन कोषग्रन्थ: विरचनीय:।

कालिदास-हमारे दिलों के अंश हैं

कालिदास समारोह उज्जैन 1959 के अवसर पर उद्घाटन के अवसर पर दिया गया भाषण

जब से हमारा देश स्वतंत्र हुआ तब से, कालिदास का नाम तो मालूम था लेकिन उसकी तरफ ध्यान अधिक जाने लगा। बात यह है जब एक देश दबा हुआ होता है, दासता की जंजीरों में बंधा होता है, तब हाथ कान बंद हो जाते हैं। हाँ, कुछ कभी-कभी सुनाई दे जाए, पुरानी-नई बातें और एक बड़ी निशानी, स्वतन्त्रता की है, कि आँख-कान खुल जाए और जब वे खुलते हैं तब दो तरफ से देखते हैं, एक तो अपने प्राचीन समय को, जिसकी याद ताजी हो जाती है और एक भविष्य की तरफ क्योंकि भविष्य में उसको जाना है। ये बात हमारे देश में पिछले वर्षों से हो रही है। दोनों तरफ हम देखते हैं, कभी-कभी कठिनाई भी हो जाती है दोनों तरफ देखने में, लेकिन आवश्यक है दोनों को जोड़ना। अगर हम आगे भविष्य की तरफ देखे तो हमारी जड़ नहीं रहती, हमारे देश की, हमारी जाति की, पुरानी जड़, अगर हम खाली प्राचीन समय की तरफ ध्यान दें, भविष्य की तरफ नहीं, तो हम जम जाते हैं, आगे नहीं बढ़ते हैं। दोनों बातें पुरानी है। कोई देश या कोई कौम, बहुत आगे बढ़ती नहीं जब तक उसकी जड़ गहरी न हो। जड़ आती है, जो कुछ उस जाति के अभ्यास तजुर्बे, सैकड़ों-हजारों वर्ष से होते हैं, वह उसके रग और रेशे में भर जाते हैं। हमारे किसान, उनको आप कहिए अनपढ़ होते हैं, बहुत सारे, लेकिन मैं इस बात को मानने को तैयार नहीं कि वो किसान जो अनपढ़ हैं वो क्या कहूं उनमें सभ्यता नहीं है, कुछ संस्कृति नहीं है, मैं नहीं मानता। काफी है वो उनके रगों-रेशों में जाने कितने जमाने से जो-जो बातें उनको आई, उसी में कुछ न कुछ भारत की संस्कृति भरी है। यहाँ उत्तरप्रदेश में यानी मैं उत्तरप्रदेश को जानता हूँ, कितने बिल्कुल अनपढ़, किसान हैं, लेकिन उनको, रामायण, तुलसीदास जी की, उसके बहुत हिस्से याद थे और उनको दोहराते थे और उसकी मिसाल देते थे तो यह यानी एक उनमें जो कि मामूली एक संस्कृति जिससे एक आदमी एक व्यक्ति बनता है वो उनमें थी बहुत कुछ, और है, खैर! मैंने आपको दो-एक मामूली मिसालें बताई। आपने

आपकी समारोह समिति ने इस कालिदास जयंती पर बुलाया इसके लिए धन्यवाद। मुझे बहुत खुशी है कि थोड़ी देर के लिए मैं भी इसमें भाग ले सकता हूँ। इस समारोह में और अपनी श्रद्धाञ्जलि कवि कालिदास के लिए पेश कर सकता हूँ। यह तो खैर, सभी जानते हैं कि दो-तीन बातें हैं, एक तो वो संस्कृत भाषा से संबंध रखती है। कुछ मैंने भारत के इतिहास को पढ़ा और जो भारत में प्राचीन समय में बड़ी-बड़ी बातें हुई और मैंने सोचा कि सब बातें, हमारी सारी कौम का बढ़ना, कितना बंधा हुआ है संस्कृत भाषा से और संस्कृत भाषा में जो विचार हुए उनसे अगर संस्कृत भाषा न होती, हमारी देश में तो मालूम नहीं हमारा देश कैसा होता? ऐसा नहीं होता, जैसा है, कुछ और होता। आजकल की हमारी जो भाषाएँ हैं, बड़ी-बड़ी भाषाएँ हैं। देशभर में, वो सब नहीं तो बहुत कुछ उनमें संस्कृत भाषा के बच्चे हैं, उसी से निकलीं और वो संस्कृति की धारा उनमें आ गई, कुछ न कुछ। पूरी तौर से नहीं। संस्कृत का भंडार तो बहुत बड़ा है और कुछ हमारी भाषाएँ है जो हैं, वो कुछ बल्कि दबी रहीं। सैकड़ों वर्ष तक दबी रहीं संस्कृत की वजह से, जब कोई बड़ी भाषा ऐसी होती है तो दूसरों को बढ़ने नहीं देती। जितने हमारे विद्वान् पढ़े-लिखे थे आजकल नहीं मैं कह रहा हूँ जरा पहले दो सौ ढाई-सौ वर्ष पहले, उसके भी पहले जाइए तो संस्कृत थी सब पढ़े लिखे आदमियों की भाषा, लिखने की पढ़ने की, फिर फारसी भाषा आई अब वो सरकारी भाषा हो गई और वो फैली तो संस्कृत और फारसी ने मिलकर हमारी और भाषाएँ जो हैं उनको बढ़ने नहीं दिया। कुछ हल्के-हल्के बढ़ीं लेकिन कुछ किसी कदर वो पढ़े-लिखों की भाषा नहीं समझी जाती। वो तो संस्कृत में काम करते थे जो आप फारसी में करते थे खैर। उनको तो बढ़ना ही था और उचित था बढ़ना और बढ़ेगी और उनके लिए यह भंडार संस्कृत का है। जिससे निकाल-निकाल कर कितनी वह बातें निकाल सकते हैं, तो एक तो मैंने संस्कृत का कहा, कितना बड़ा भारी असर सारे हमारे पिछले समय में, जमाने में, हमारे देश के ऊपर, उसके विचारों पर सोचने पर, संस्कृति पर, सभ्यता पर। उसमें कोई संदेह नहीं कि संस्कृत में, संस्कृत साहित्य में पहले जमाने की पूर्व पुस्तकों को छोड़ दें, पुरानी, वेद है, हमारे ये महाभारत, रामायण हैं। बड़ी ऊँचे दर्जे की जबरदस्त चीजें हैं, उनको छोड़कर, फिर सारे संस्कृत साहित्य में, मैं तो जरा दबी जुबान से कहता हूँ क्योंकि मैं तो बहुत इस मामले में पढ़ा लिखा नहीं हूँ लेकिन शायद सही हो कि कालिदास सबमें उँची चोटी के हैं। और ये बड़ी खुशी की बात है कि इस समय फिर से देश का ध्यान कालिदास की तरफ जाता है, हम अच्छे साहित्य में बहुत कुछ सीख सकते हैं। उसके गुण हैं, उसका सौंदर्य है, वो तो हैं ही लेकिन उसके अलावा बहुत कुछ सीख सकते हैं। मैं समझाता हूँ आज-कल हमारे हिंदी के लिखने वाले बहुत कुछ सीख सकते हैं। संस्कृत में भी हम देखें कि कैसे हल्के-हल्के संस्कृत साहित्य बदलता गया। वेदों के जमाने में आप जाए तो इतना गठा हुआ है कि उसके समझने के लिए काफी कठिन बड़े-बड़े ग्रंथ और समझाने के लिए बड़ी-बड़ी टीकाएँ रखी जाती है उनके, एक भाषा की एक खूबी है कि चुस्त हो तो वेदों से ज्यादा कोई चुस्त हो ही नहीं सकती। इतनी गठी हुई एक एक'शब्द में बहुत माने हैं। उसके बाद हल्के-हल्के बदलती गई और फिर आप आते हैं उस जमाने में, जब संस्कृत साहित्य सबसे ऊँची कोटि पर था। कालिदास के समय, इतना सुंदर, फिर भी गठा हुआ है। फिर और भी बहुत कुछ हुए साहित्यकार, अच्छे हुए, बड़े बड़े, फिर कई सौ वर्ष बीत जाते हैं तब आप हिंदी साहित्य को देखिए, कुछ अच्छा है, सुंदर है लेकिन गठापन निकल जाता है। चुस्ती निकल जाती है, एक-एक फिकरा चलता है तो आधे सफे पर चला जाता है कभी कोई पूरा सफा नहीं लिखता। ये है कुछ लोग उसको पसंद करें लेकिन एक भाषा का कुछ कमजोर होना, गिरना होता है, यह अजीब बात है कि आप इसको देखेंगे कि भाषा से कोई चीज अधिक आपको नहीं बता सकती, उस देश का हाल। एक महाकवि अंग्रेजी के महाकवि मिल्टन ने लिखा है कि - ''एक देश का हाल कुछ नहीं जानूं खाली उसकी भाषा आप मुझे बता दीजिए, दिखाइए तो,

मैं उसको पढ़कर दिखा दूँगा कि देश कैसा है। मजबूत है, दुर्बल है, कमजोर है, गठा हुआ है, तेज है, विद्वान है और क्या है'' और बात सही है। भाषा एक आईना होता है कि फिर आप देखें जैसे हमारे देश में कुछ देश का पतन हुआ। पाँच-सात सौ वर्ष हुए एक बात आपसे कह रहा हूँ सुंदर बातें हुई, सब बातें, अच्छी बातें हुई लेकिन संस्कृत का जो साहित्य उस समय का है और उसमें बड़ा सुंदर साहित्य है। मैं नहीं कहता, लेकिन गठा हुआ नहीं रहा। एक उसको मैं कहूँ तो उर्दू में कहूँ तो फिकरेबाजी का हो गया। लंबे-लंबे वाक्य और वही हाल हमारी जाति का हो गया हम ढीले हो गए और कौमें आई और देशों से हमारे देश में, हम कमजोर थे जो ऊपर की संस्कृति हममें थी। हम बड़ी-बड़ी बातें पुरानी दोहराते थे लेकिन वो तो जान होती है जो कौम को जीवित करती है, वो कम हो गई और भाषा में भी कमी आ गई। वही बात आजकल की भाषाओं में विचार करने की है कि हम इस फिकरेबाजी में न फंस जाएं हम एक दिखाने के शब्द जरा सुंदर करके लेकिन बेजान कर देते हैं। कुछ जरा उधर झुकाव होता है, कम हो रहा है। लेकिन कुछ झुकाव था। भाषा की शक्ति जब ही है, जब एक तो दरबारी भाषा में है आम जनता से उस को ताकत मिलती है उसको समझे और दूसरे जो मैंने आपसे कहा एक चुस्त तो अब एक तरफ बहुत ज्यादा चुस्ती हो तो समझ में नहीं आती। कालिदास ने बिल्कुल ठीक जोर उठाने की बात कही। सौंदर्य इतना अच्छा और उसी के साथ गठी हुई भाषा और इसमें तो खैर कोई शक नहीं, मैं समझता हूँ हमारे कवियों को उसमें कोई मुकाबला नहीं कर पाए और जितना अधिक हमारे देश भर के लोग उसको पढ़ें, उसको समझें, ये तो एक उनको लाभ पचास होंगे लेकिन एक लाभ होगा हमारी आजकल की भाषाओं पर भी उसका असर पड़ेगा और अच्छा असर पड़ेगा।

आप जानते हैं शुरू में मैंने आपसे कहा, एक देश जब स्वतन्त्र होता है तो जाग्रत हो जाता है, जग जाता है, हल्के हल्के उसकी आँखें कान खुलने लगते हैं। और दोनों तरफ को देखता है, पीछे और आगे, और दोनों को मिलाने की कोशिश करता है। उसी यत्न से देश बढ़ सकता है। न खाली पीछे देखना है, न आगे देखना खाली काफी है। दोनों को रखना, तो वो जब ही हो सकता है उसके मानी है कि हर बात में जान आती-जाती है। जब हमारे देश के बड़े दिन थे, साहित्य अच्छा था, हमारी कितनी इमारतें बनी, पुराने मंदिर, इतने जबरदस्त, आजकल के नहीं। आजकल के जो मंदिर बनते हैं, मुझे देखकर कुछ सिर में दर्द होने लगता है। बस फूल-बूटे वगैरह बना दिए उन्होंने, एक समझते हैं कि सौंदर्य की बात है कोई उसमें असल बुनियादी सौंदर्य नहीं है, एक बड़ा मंदिर दिल्ली में है, अच्छी जगह है, लोगों को आने-जाने को, लेकिन देख कर तकलीफ लगती है। इस हिसाब से जरा उसका मुकाबला कीजिए, किसी पुराने मंदिर से जमीन आसमान का अंतर है। एक चीज है जिसमें एक शक्ति है, एक विचार आप को पकड़ता है वह चीज पुरानी थी। आजकल एक पत्थर का ढेर होता है। तो इस तरह से जाग्रत देश में ये सब चीजें फलने-फूलने लगती हैं। साहित्य है और बातें हैं, हर तरफ वो बातें अब हम देख रहे हैं भारत में। भारत में ये बातें होती जा रही हैं। ये एक निशानी है कि कालिदास से प्रेम बढ़ता जाता है। उसको लोग अधिकतर उधर ध्यान देते हैं, पढ़ते हैं, जानते हैं, अब उसके और भी आजकल के जमाने के हिसाब से क्या-क्या फिल्म बनते हैं, फिल्म अच्छे हो, बुरे हों यह दूसरा प्रश्न है लेकिन बनते हैं, ध्यान जाता है तो यह अच्छी बात है क्योंकि ऐसे महाकवि कोई आपके मध्य प्रदेश का तो मतलब ही नहीं है वे तो सारे भारत के हैं। लेकिन असल में तो उनकी उस चुने हुए आदमियों में गिनती है जो कि सारी दुनिया के महाकवि गिने जाते हैं। उस गिनती में आते और अभी तक पूरी तरह से और दुनिया जानती नहीं उसको, लेकिन बहुत पुरानी बात है। डेढ़ सौ वर्ष से अधिक के जो पहले की बात आप जानते होंगे आपकी पुस्तकों में भी लिखा है जब पहले किसी ने उसका अनुवाद किया जो वो एक बड़े जर्मन कवि थे 'गेटे' उन्होंने। चौकन्ना हो गए उसको पढ़कर हैरान

हुए और कहा कि ऐसी सुंदर चीज दुनिया में और कहाँ है? तो है दुनिया में एक महाकवि है और मुझे कोई संदेह नहीं कि और दुनिया में उनकी कविता से और जो उन्होंने लिखा है साहित्य उससे, जानकारी बढ़ती जाती है। कठिनाई तो यह है कि एक कविता में विशेषकर कि उसका अनुवाद कभी ठीक हो ही नहीं सकता क्योंकि अनुवाद कवि का कवि ही कर सकता है। डिक्शनरी को देखकर करने वाला नहीं करता है। कोश देखकर कर दिया और उसमें शब्दों का अनुवाद नहीं होता है। विचार का होता है, ज्ञान का होता है, इन चीजों का होता है और आजकल ये बड़ी कठिनाई है कि अंग्रेजी भाषा से अच्छे अनुवाद ढूंढते हैं, हिंदी में बहुत कम अच्छे होते हैं। मैंने दो-चार पुस्तकें अंग्रेजी में लिखी। मुझसे हिंदी नहीं पढ़ी जाती। मैंने बहुत कोशिश की। कुछ मेरे विचार ही गड़बड़ा गए हैं उसमें छोड़ दी अच्छाई-बुराई। लोग समझते हैं अनुवाद कर देना कुछ शब्दों का अर्थ कर देना है। यह नहीं है, अनुवाद करने से कोई कठिन काम नहीं है। क्योंकि दो भाषाएँ हैं बाज चीजों का अनुवाद तो आप कर सकते हैं बड़ी आसानी से, मेज है उसका अनुवाद कर दिया आपने, कुर्सी है उसका अनुवाद कर दिया आपने इसमें कोई कठिनाई नहीं है लेकिन जहाँ विचारों का अनुवाद होता है हर भाषा का एक ढंग दूसरा होता है उसको आप शब्दों से अनुवाद नहीं कर सकते हैं। अगर आप अनुवाद करने वाले को दोनों भाषाएँ बिल्कुल अच्छी तरह से मालूम होनी चाहिए और उसको पढ़कर एक तो बंध करके उस विचार को लिखना चाहिए न कि शब्दों को। एक जैसा कि मुझे याद है, याद आता है एक चीनी महाकवि थे ली-पो, उनके पास एक नौजवान आए, नवयुवक, उनने कहा कि गुरु जी मुझे बताइए मैं महाकवि कैसे बनूँ उन्होंने कहा - कि तुम खूब अच्छी तरह से जोरों से भाषा को पढ़ो उसके सब अंश पढ़ो, क्या है कायदे-कानून, ग्रामर इत्यादि सब पढ़ो। पढ़ो चुको तो सब भूलने की कोशिश करो उसको, तब तुम लिखने की कोशिश करो, करके भूल जाने की, लेकिन पढ़ो जरूर, उसे समझो फिर भूलो फिर लिखो तो तुम कवि हो सकते हो नहीं तो तुम कुछ भी नहीं लिख सकते तो इस तरह से शब्दों का अनुवाद करना कोई अनुवाद नहीं है, बड़ी कठिनाई है। खैर हिंदी और संस्कृत का तो 2 बहुत जोर है लेकिन आप संस्कृत का अनुवाद कीजिए यूरोप की भाषाओं में तो फर्क हो जाता है और कहीं कोई चीनी में करें तो मालूम नहीं कहाँ से कहाँ पहुंच जाए तो वो तो बिल्कुल अजीब ढंग की दूसरे ढंग की भाषा है, बड़ी ऊँची भाषा है आप मानते हैं उसको उसकी लिपि भी एक तस्वीरों की है। खैर, आप जानते हैं कि मैं कोई बड़ा पंडित तो हूँ नहीं, कि मैं ऐसे समारोह जिसमें बड़े-बड़े पंडित है मैं कोई माकूल बात आपसे कहूँ। इसलिए सिर्फ इतना ही कहता हूँ कि मुझे बहुत खुशी है, धन्यवाद आपको कि आपने मुझे बुलाया और मुझे बहुत खुशी है कि इस तरह से कालिदास का नाम फिर से लोगों के कानों में आ रहा है। कालिदास उन लोगों में हैं जो साहित्यकार हैं, कवि हैं सब कुछ हैं। उससे ज्यादा है जैसे कि बहुत बड़े लोग होते हैं वो कुछ हमारे दिलों के अंश हो गए हैं, वो भारत का एक हिस्सा है। आजकल हिमालय पहाड़ का बड़ा चर्चा होता है बड़े सिलसिले हैं। हिमालय पहाड़ तो भारत के लोगों के दिलों का हिस्सा है, खाली वो नहीं है, ऊँचा पहाड़। इसी तरह से कालिदास हमारे दिलों के हिस्से हैं यह निशानी है इस महाकवि की।

पं जवाहरलाल नेहरू

वेदों की सार्वभौमिकता

पी. जी. डी. ए. वी. महाविद्यालय द्वारा आयोजित वेद व्याख्यान मञ्जरी के द्वितीय पुष्प में प्रोफेसर कपिल कपूर जी ने वेदों की सार्वभौमिकता विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। इस व्याख्यान में प्रोफेसर कपिल कपूर जी ने भारतीय ज्ञान परम्परा, वेदों की महत्ता, वैदिक वाङ्मय की विशालता, उनमें संचित ज्ञान पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

वेद भारत ही नहीं अपितु वैश्विक ज्ञान परम्परा के प्राचीनतम ग्रंथ हैं। वेद शब्द की उत्पत्ति 'विद्' धातु से हुई है जिसका अर्थ ज्ञान होता है। इस प्रकार वेद वेद एक ऐसी ज्ञानराशि है जिसमें समूची मानवता अथवा संपूर्ण सृष्टि के कल्याण का तत्व निहित है।

वेदों के संदर्भ में आलोचकों की यह सामान्य शिकायत होती है कि यह अत्यंत क्लिष्ट है और समझ में नहीं आता और दूसरी मुख्यतः पाश्चात्य आलोचकों की व्याख्या में व्यक्त विचारों की प्रासंगिकता नहीं है। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि वेद कोई पढ़ने की किताब नहीं है, यह कोई छपा हुआ ग्रंथ नहीं है, यह शब्द राशि से भी परे है क्योंकि शब्द तो संकेतक मात्र होते हैं। वे शब्द जिस ज्ञान की तरफ संकेत करते है, वह वेद हैं। वह ज्ञान कोई व्यक्ति ग्रहण कर पायेगा या नहीं यह उस व्यक्ति की योग्यता, उसके ज्ञान के स्तर पर निर्भर रहता है। यह इस पर भी निर्भर करता है कि वह ज्ञान कैसा है, सरल है अथवा क्लिष्ट। ज्ञान ग्रंथ तो क्लिष्ट होते ही हैं। सरल भाषा में भी अत्यंत गंभीर ज्ञान छिपा होता है यथा 'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया.' यह मंत्र भाषिक दृष्टि से अत्यंत सरल है परंतु इस में अंतर्विष्ट रहस्य में द्वा सपुर्णा का अर्थ जीवात्मा और परमात्मा अथवा भोक्ता तथा साक्षी भी हो सकता है। इसलिए प्रत्येक विद्या के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा में 'अधिकारी' की परिकल्पना की गई है। वेद ज्ञान के लिए भी अधिकारी में छः वेदांगों का ज्ञान, एक अच्छा गुरु, अभ्यास तथा इन सबसे अधिक इसकी निष्ठा आवश्यक है। इनके बिना वेद ज्ञान नहीं हो सकता।

भारत को अन्य राष्ट्रों की भांति एक भाषा, एक जाति, एक धर्म के रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता है। इसकी व्याख्या 'ज्ञान जनित चैतन्य की एकात्मकता' के रूप में की जा सकती है और इस ज्ञान के प्रतिनिधि ग्रंथ वेद हैं। भारतीय साहित्य को श्रव्य प्रेक्ष्य की श्रेणी में रखा जा सकता है। भारतीय ज्ञान परम्परा मौखिक ज्ञान परम्परा है। जो गुरु-शिष्य परम्परा के रूप में सदियों से अक्षुण्ण है। इसीलिए यहां 28 व्यासों की मान्यता है। इसका आशय यह है कि हमारा ज्ञान कई बार लुप्त हुआ परंतु प्रतिभाशाली चिंतकों ने इसे पुनः पुनः जीवित किया। महाभारत का विकास भी तीन कालों में माना जाता है। इस संदर्भ में मैक्समूलर का मानना था कि यदि वेद की सभी कृतियां नष्ट हो जायें तो भी इसे मौखिक परम्परा द्वारा संचित ज्ञान के आधार पर पुनः अर्जित किया जा सकता है।

वैदिक साहित्य अत्यंत विशाल है। इसमें चार वेद शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष नामक छः वेदांग वेदों से संबंधित ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् तथा प्रातिशाव्य सम्मिलित है। इन वेदों की कई शाखाएं हैं जिनमें उच्चारण भेद होता है। यास्क ने निरुक्त में वेद के अर्थ निर्धारण की प्रक्रिया बताई है। भर्तृहरि ने अपने ग्रंथ वाक्यपदीय के ब्रह्मकाण्ड में कहा है कि वेद ज्ञान के स्रोत हैं और ये पहले एक ही थे, व्यास ने इसे विषय की भिन्नता के आधार पर 4 भागों में विभक्त किया।

वेद सौरभ ग्रंथ के लेखक जगदीश्वरानंद सरस्वती ने वेदों में वर्णित विषयों को 12 खण्डों में विभक्त किया है – 1. ज्ञान खण्ड, 2. ईश्वर खण्ड, 3. उपासना खण्ड, 4. सदाचार खण्ड, 5. स्वास्थ्य खण्ड, 6. ग्रहस्थ खण्ड, 7. जीवात्मा खण्ड, 8. पुरुषार्थ खण्ड, 9. विज्ञान खण्ड, 10. राजनीतिक खण्ड, 11. सिद्धांत खण्ड तथा 12. विविध खण्ड।

इस प्रकार वेदों की सार्वभौमिकता का आशय यह है कि इसमें वर्णित ज्ञान देश काल की सीमा से अविच्छिन्न है जिसकी प्रासंगिकता आज भी है।

– (जनवरी 2018 में महाविद्यालय में प्रदत्त व्याख्यान के कुछ अंश)

प्रोफेसर कपिल कपूर

पक्षिण: विवेक:

परित: फलयुक्तवृक्षा: बहूनि कृषिक्षेत्राणि इति एवं प्रकृतिरमणीय: स: ग्राम:। तत्रत्यै: कृषकै: कृषिकर्म प्रारब्धम्। कृमिकीटेभ्य: पक्षिभ्य:, गोभ्य: चतुष्पादेभ्य: च परिणतानां व्रीहिकणानां संरक्षणकार्ये ते लग्ना: सन्ति। कृषिक्षेत्रं परित: वृतिं निभीय जालानि प्रसार्य ते जागरुका: आसन्।

एकदा दूरात् आकाशमार्गेण आगता: केचन कपोता: कृषिक्षेत्रम् आगत्य व्रीहीन् खादितुं प्रारभन्त। एतत् दृश्यं कुटीरे उपविष्ट: कश्चन बालक: अपश्यत्।

स: कंसाताडनेन शब्दम् अकरोत्। शब्द श्रवणात् भीता: ते पक्षिण: पलायनं कर्तुं प्रायतन्त। परं वयं जाले बद्धा: स्म: इति तदा तै: अवगतम्। आपत्तिं ज्ञातवन्त:। ते भयेन व्याकुला: अभवन्। "न भेतव्यम्! दु:खिन: मा भवत, उपाय: विद्यते एव" इदं कस्य वचनम् इति ज्ञातुम् आकाङ्क्षया सर्वे पक्षिणा: तस्यां दिशि दृष्टिं प्रसारितवन्त:।

"आम् अस्माकं नेता एव! परन्तु कथं.....?

कथम् इत: मुक्तिं प्राप्नुम:? वयं भवन्तम् अनुसर्तुं सिद्धा: स्म:" अन्ये कपोता: कण्ठैक्येन अवदन्।

"एक: एव मार्ग: मम स्फुरति। वयं सजाला: सन्तु: उड्डयनं कुर्म:। नातिदूरे मम कश्चन निपुण: मूषकश्रेष्ठ: सुहृद अस्ति। जालच्छेदनं कृत्वा स: अस्मान् रक्षिष्यति।"

नेतु: वचनानुसारेण सर्वे उड्डयनाथ सज्जा: अभवन्। एकम्.......द्वे.........त्रीणि..........। पटपटाकृत्य ते पक्षिण: सजाला: उड्डीय मृत्युमुखात् रक्षिता: अभवन्।

मोहित कुमार
संस्कृत (विशेष)
बी.ए., तृतीय वर्ष

आधुनिके युगे गीतायाः प्रासङ्गिकता

भारतीयदर्शनशास्त्रे संस्कृतसाहित्ये च भगवद्गीता महत्वपूर्णां स्थानं धारयति। गीता भारतस्य सर्वजनेषु समादृता वर्तते। महाभारतस्य भीष्मपर्वणः अंश विशेषः अष्टादशाध्यायात्मकः ग्रन्थ विशेषः गीता नाम। अत्र भगवता श्रीकृष्णेन महाभारतस्य युद्धे अवसादयुक्ताय अर्जुनाय कर्ममार्गोपदेशः कृतः। अद्यापि अर्जुनवत् संकटापन्नस्य कर्तव्यूमूढस्य जनस्य कृते सार्थकः एव गीतोपदेशः।

महाभारतसंग्रामे अर्जुनस्य सक्षमं मार्गद्वयम् आपतितम्-पूज्यान् गुरुन् हत्वा राज्यभोगः अथवा युद्धं विहाय संन्यासग्रहणम्। अर्जुनः एतयोः पलायनमार्गमेव स्वीकृत्य विषण्णो जातः तस्य मनसि समागतो यत् युद्धेन विनाशः कुलनाशः, समाजनाशश्च भविष्यति। अर्जुनस्य अन्तर्द्वन्द्वस्य समाधानं कृष्ण ेन गीतायां सम्यक् कृतम्। तेन कर्मोपदेशः कृतः। धर्मपूर्वकं युद्धमपि न त्याज्यम्। कर्मणः पलायनं न वरम्। गीता कथयति–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

कर्मरहितं जीवनं तिरस्कार विषयकं भवति इति कृष्णस्य मुख्यः उपदेशः। अर्जुनस्य मानसिकद्वन्द्वतः उद्भूता गीता सर्वेषां शास्त्राणां साररुपा वर्त्तते। अत्र जिज्ञासोः मानवस्य कृते उपादेयं सर्वं वस्तु विद्यते। गीतायां सम्प्रदायवादो नास्ति, यतः मानवमात्रस्य हिताय समन्वयात्मकाः उपदेशाः अत्र अभिव्यक्ताः। भारतीयधर्मस्य उदारदृष्टिः गीतायां लभ्यते। इह एकत्र मोक्षवादः प्रतिपादितः अपरत्र लौकिकं कर्ममयं जीवनं प्रोत्साहितम्।

मानवजीवने यदि अंतर्द्वन्द्वः समायाति, कर्मविषये च विचिकित्सा आपद्यते तदा गीतोपदेशाः मार्गदर्शकाः भवन्ति। स्वाधीनता संग्रामे भारते वर्षे गीतैव जनानां प्रेरणादात्री बभूव। बालगंगाधर तिलकः गीतायाः व्याख्यां कर्मयोगपरां गीतारहस्यनाम्ना अरचयत्। महात्मा गांधी च अस्याः व्याख्याम् 'अनासक्तियोग' रूपेण कृत्वा अहिंसा धर्मस्य प्रतिपादनं कृतवान्। एवं गीतायाः योगदानं स्वाधीनता लाभे अद्भुतम् अभूत्।

गीताग्रन्थे विभिन्नाः मार्गाः समन्वयेन व्यवस्थापिताः। मुख्यतः अद्वैततत्वमेव अत्र स्वीकृतम्। तेन सर्वे प्राणि ानः समानाः का कथा मानवानाम्। अत्र व्यावहारिकः साम्यवादः प्रतिष्ठितः। कृष्णः कथयति–

विद्याविनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।

शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥

वर्तमानकाले यथा समताभावः आवश्यकः तथा कालान्तरेऽपि आसीत्। इति गीतायाः भेदे सार्वकालिकं महत्वम्। अद्य संसारे वर्णभेदः धर्मभेदः, क्षेत्रभेदः, इत्यादयः भेदाः युद्धाय मानवमात्रं प्रेरयन्ति। तत्र गीतैव उपभेददर्शनं प्रतिपाद्य द्वेषभावं विनाशयितुं समर्था। यदा सर्वे ईश्वरकृताः, तदा को रागः, को द्वेषः वर्तमानयुगस्य कृते कर्मबोधं दर्शयित्वा गीता उपकरोति जनतायाः। कर्मरहितः न तिष्ठेत्, कर्मणि च फलवासनां न धारयेत्। निष्कर्मणः महत्वम् आधुनिकालेऽपि विद्यते अन्यथा सर्वे जनाः स्वार्थपराः स्युः। वस्तुतः द्वेषः ईर्ष्या वा कामेन एव भवति। यदि कर्मणि

संपाद्यमाने कामनानाशः कर्माभिमाननाश्च, तदा संसारः सुकरः स्यात्। मानवः समाजस्य उत्कर्षाय, देशस्य अभ्युदयाय मानवमात्रस्य च विकासाय स्वार्थत्याग पूर्वकं कर्म कुर्यात् इति गीतोपदेशः।

गीता प्रतिपादयति यत् साधनामार्गस्य सोपानेषु प्राप्तेषु स्वयमेव समत्वबुद्धिः आविर्भवति। तस्याम् अवस्थायां साधकः स्थितप्रज्ञः योगी च भवति। राजनीतावपि अस्य आवश्यकता वर्तते। सा एव राजनीतिः श्रेष्ठा, यत्र, शत्रोवोऽपि मित्रवद् भवन्ति तदानीं राज्यस्य सर्वं संसाधनं शान्तिकर्मणि एव समर्पितं भवति न तु युद्धकर्मणि, रक्षाकर्मणि वा। अस्मिन् विषये गीतायाः प्रासंगिकता निर्विवादा।

गीतायां योगशब्देन एकत्र कर्मषु कौशलमेव परिभाषितम्। आधुनिकयुगेऽपि कार्यकुशलतायाः आवश्यकता सर्वेषु क्षेत्रेषु भवति। अन्यत्रापि नीतिशास्त्रे प्रतिपाद्यते–

''या लोकद्वयसाधनी चतुरता सा चातुरी चातुरी॥''

अर्थात् सा एव कुशलता गीतायां शिक्ष्यते तथा लोकजीवनं व्यवस्थितं भवेत् न कुत्रापि रागद्वेषादिः प्रवर्तेत पारलौकिकं जीवनं च सुरक्षितं स्यात्।

समासतः प्रतिपादनीयं यत् गीतोपदेशाः अर्जुनस्य कृते एव दत्ताः, तथापि मानवजीवनस्य सर्वाः समस्याः अत्र युगपत् समाहिताः अधुनापि ते प्रासङ्गिकं विद्यन्ते। अतएव सर्वेषु धर्मेषु, सर्वाषु भाषासु, सर्वेषु देशेषु गीतायाः समादरः। संस्कृतसाहित्यस्य भारतदेशस्य च गौरवग्रन्थोऽयम्।

आरती यादव

दैवमेव परम्

एकः अहितुण्डिकः आसीत्। सः सर्पान् गृहीत्वा जीवनं यापयति स्म। एकदा सः एकं सर्पम् आनयति। सर्पं पेटिकायां स्थापयति च। प्रतिदिनं सर्पस्य प्रदर्शनं करोति। इत्थं तस्य जीवनयात्रा प्रचलति।

कदाचित् अहितुण्डिकः अन्यं ग्रामम् अगच्छत्। पेटिकायाम् एव सर्पः बद्धः आसीत्। पञ्च दिनानि अभवन्। अहितुण्डिकः न आगच्छत्। सर्पस्य आहारः एव नास्ति। सः पेटिकातः बहिर्गमनाय प्रयत्नम् अकरोत्। सः बुभुक्षितः आसीत् अतः शक्तिः नासीत्। विफलः अभवत्। तदा पेटिकासमीपे एकः मूषकः आगच्छत्। सः पेटिकाम् अपश्यत्। "पेटिकायां भक्ष्याणि सन्ति" इति मूषकः अचिन्तयत्। "रन्ध्रं करोमि" इति सः निश्चयम् अकरोत्। अनन्तरं सः रन्ध्रं कृत्वा अन्तः प्रवेशम् अकरोत्। मूषकः सर्पस्य मुखे एव अपतत्। सर्पः मूषकम् अखादत्। तेन रन्ध्रेण एव बहिः अगच्छत्।

"अहो! सर्पस्य सौभाग्यम्! मूषकस्य दौर्भाग्यम्!!"

काजल अग्रवाल
संस्कृत (विशेष) स्नातक
तृतीय वर्ष

चाणक्य नीतिः

1. सुखार्थी चेत् त्यजेद्विद्यां, विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम्।
सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।।

जिसे सुख की अभिलाषा हो उसे विद्या प्राप्ति की आशा छोड़ देनी चाहिए और जिसे विद्या प्राप्ति की इच्छा हो उसे सुख को तिलाञ्जलि दे देनी चाहिए। क्योंकि सुख चाहने वाले को विद्या-प्राप्ति नहीं होती है और विद्यार्थी को सुख नहीं मिलता है।

2. अन्तःसारविहीनानामुपदेशो न जायते।
मलयाऽचलसंसर्गात् न वेणुश्चन्दनायते।।

आन्तरिक योग्यता से हीन मलिन हृदय वाले मनुष्यों का कोई प्रभाव नहीं होता, जैसे- मलयगिरि से आने वाले पवन के स्पर्श से भी बाँस चन्दन नहीं हो जाता।

3. यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते निर्घर्षणच्छेदनतापताडनैः।
तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा।

जैसे सोने के खरे और खोटेपन को जानने के लिए उसकी घिसकर, काटकर, तपाकर और कूटकर परीक्षा की जाती है; वैसे ही मनुष्य की परीक्षा भी दान, शील, गुण, कर्म और आचरण से होती है।

4. युगान्ते प्रचलेन्मेरुः कल्पान्ते सप्तसागरः।
साधवः प्रतिपन्नार्थान् न चलन्ति कदाचन।।

युग के अन्त में सुमेरु पर्वत चलायमान हो जाता है, कल्प के अन्त में सातों समुद्र भी अपनी मर्यादा छोड़ देते हैं, परन्तु श्रेष्ठपुरुष अपने हाथों में लिए हुए कार्य से अथवा अपनी की हुई प्रतिज्ञा से कभी भी विमुख नहीं होते हैं।

डॉ. प्रमिता मिश्रा

भारतीय इतिहास की विकृतियां

भारतवर्ष और उसके प्राचीन साहित्य में पाश्चात्यों की अभिरुचि

('स्वर्गीय पं. भगवद्दत्त जी अपने सुविख्यात ग्रन्थ भारतवर्ष का बृहद् इतिहास' में भारतीय इतिहास की विकृतियों के कुछ कारणों पर प्रकाश डाला है। इनमें से एक प्रमुख कारण है - 'पाश्चात्त्य भारतविद्याविदों के (कुत्सित) उद्देश्य'। अपने इष्टमित्रों और प्रशंसकों के आग्रह पर पण्डित जी ने उपर्युक्त उद्देश्यों को कुछ विस्तार से लिखकर एक एक पुस्तिका का रुप दिया- Western Indologist : A story in motives. इसका हिन्दी रुपान्तर नवम्बर 1994 में वेदवाणी प्रत्रिका में प्रकाशित हुआ था। अब एक लम्बे समय से यह लेख अनुपलब्ध है। वर्तमान काल में इसकी उपयोगिता को देखते हुए इस पत्रिका में उस लेख के कुछ अंश प्रकाशित कर रहे हैं।)

संवत् 1814 में प्लासी युद्ध हुआ और उससे भारत का भाग्योदय निरुद्ध हो गया। बंगाल अंग्रेजों की प्रभुसत्ता में आ गया। सं. 1840 में विलियम जॉन्स को अंग्रेजी उपनिवेश फोर्ट विलियम का प्रधान न्यायाधीश नियुक्त किया गया। उसने संवत् 1851 में विख्यात कवि कालिदास के प्रसिद्ध नाटक "शाकुन्तल" (विक्रमपूर्व चतुर्थ शताब्दी) का और 1741 में मनुस्मृति का अंग्रेजी में अनुवाद किया और उसी वर्ष उसकी मृत्यु हो गई। उसके पश्चात् उसके कनिष्ठ सहयोगी सर हेनरी थॉमस कोलब्रुक ने संवत् 1862 में "वेदों के विषय में" एक लेख लिखा।

विक्रम संवत् 1875 में अगस्ट विल्हेम वान श्लेगल जर्मनी के बान विश्वविद्यालय में संस्कृत का प्रथम प्राध्यापक नियुक्त हुआ। फ्रेड्रिक श्लेगल उसका भाई था। उसने संवत् 1865 में "हिन्दुओं का ज्ञान और भाषाएं" शीर्षक से एक पुस्तक लिखी। दोनों भाइयों ने संस्कृत के प्रति अत्यन्त प्रेम दर्शाया। एक अन्य संस्कृतज्ञ हर्व विल्हेम वान हम्बोल्ट, अगस्ट श्लेगल का सहयोगी बना, जिसके भगवद्गीता के संस्करण ने उसका ध्यान उसके (संस्कृत)अध्ययन की ओर आकर्षित किया। संवत् 1884 में उसने अपने मित्र को यह कहते हुए लिखा- 'संभवत: यह गम्भीरतम और उत्तम वस्तु संसार को दिखाने योग्य है'। उसी समय प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक आर्थर शोपनहार (सं. 1845-1917 वि.) ने संयोगवश उपनिषदों का लैटिन अनुवाद (1858-1859 वि.) पढ़ा, जिसको फ्रेंच लेखक आडक्वचिल ज्यू पेरों (1788-1862 वि.) में राजकुमार दारा शिकोह कृत (1722 वि.) सीरे-अकबर' महान् रहस्य-नामक फारसी अनुवाद से अनूदित किया था। वह उनके दर्शन से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उनको 'सर्वोत्तम मानव बुद्धि की उपज' कहा और "लगभग अतिमानव अवधारणाएं" माना। उपनिषदों का अध्ययन उसके आत्मा का प्रेरणा का स्रोत और सुख का साधन था। और इस विषय में लिखते हुए वह कहता है कि-

"यह संतोषजनक और उन्नति-कारक अध्ययन (मूल पाठ के अपवाद सहित) है जो संसार में संभव है। यह मेरे जीवन के लिए शान्तिदायक है और मृत्यु के लिए भी शान्तिदायक" होगा। यह सुविदित है कि उपनिषद् सदा उसकी मेज पर खुली रखी रहती थी और शयन के लिए जाने से पूर्व वह इसका नियमित अध्ययन करता था। वह कहता था कि-संस्कृत साहित्य का प्रकाशन 'हमारी शताब्दी का सर्वोत्तम उपहार' है, उसने भविष्यवाणी की थी कि-उपनिषदों का दर्शन और ज्ञान पश्चिम का प्रियधर्म (विश्वास) बनेगा।

इस अभिरुचि का परिणाम- इस प्रकार के लेखन ने जर्मन विद्वानों को संस्कृत अध्ययन के लिए अधिकाधिक आकृष्ट किया और उनमें से अनेक विद्वान् भारतीय संस्कृति को अत्यन्त आदर से ग्रहण करने लगे।

प्रो. विन्टरनित्ज उनके आदर और उत्साह को निम्नलिखित शब्दों में वर्णित किया है–

''जब पाश्चात्य जगत् में सर्वप्रथम भारतीय साहित्य का परिचय हुआ तो लोग भारत से आने वाली प्रत्येक साहित्यकृति को अति प्राचीन काल की मानने के लिए प्रवृत्त हुए वे भारत को मानव जाति या कम से कम मानव सभ्यता को पालना सा समझने लगे''।

यह प्रभाव बिना किसी निमित्त के स्वाभाविक था। यह सत्य पर आधृत था और इससे इसमें कोई पक्षपात का तत्त्व नहीं थां भारतवर्ष के ऋषियों द्वारा प्रदत्त ऐतिहासिक तथ्य सत्य और अविच्छिन्न परम्परा पर आधृत थे। उनके दार्शनिक सिद्धान्त जीवन के स्रोत और रहस्यों में गहराई तक पैठे हुए थे और शाश्वत मूल्यों के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते थे। जब पश्चिमी लोगों ने प्रथम बार उनको जाना तो बहुत से उदार विद्वान् उनकी आश्चर्यजनक यथार्थता और गम्भीर विद्वत्ता से अत्यधिक प्रभावित हुए और किसी वर्ण या जाति के विचारों से प्रभावित न होकर वे अपने अपनी प्रशस्तियों में उदार थे। ईसाई देशों के ईमानदार लोगों की इस उत्साहयुक्त प्रशस्ति ने यहूदी और ईसाई प्रचारकों के दडबों (संकीर्ण मस्तिकों) में कम्पन उत्पन्न कर दिया। वे जैसे अपने धर्मग्रन्थ और परम्पराओं के वास्तविक आगमन के विषय में अनभिज्ञ थे, वैसे भारतवर्ष के धर्मग्रंथ एवं परंपराओं के विषय में भी। वे केवल कट्टरपालित ईसाईयत के आदेशों का अनुसरण करते थे, जिस ने उनको अन्य मान्यताओं के प्रति असहिष्णु बना दिया था। हमारे निष्कर्ष की यथार्थता हेन्रिश जिमर की निम्नाङ्‌कित टिप्पणी से प्रमाणित की जा सकती है–

''वह (शोपनहार) पाश्चात्त्य लोगों में प्रथम व्यक्ति था जिसने अनुपम शैली से उस यूरोपीय ईसाई वातावरण के विशाल मेघ विस्फोट में यह भाव अभिव्यक्त किया''।

कट्टर ईसाई और यहूदी अपने समान मान्यता न रखने वालों के प्रति कितनी शोध भावना से युक्त हैं ''यह रिलीजन ऑफ द सेमिट्रस'' के लेखक और फ्री चर्च कालेज अबर्डीन हिब्रू के प्राध्यापक रॉबर्टसन स्मिथ (1846-94 ई.) के भाग्य से स्पष्ट प्रतीत होता है। अपने वैज्ञानिक अनुसन्धान की निष्कपट और निर्भीक अभिव्यक्ति के कारण उसको जो दण्ड मिला वह लेवी स्पेंस के द्वारा निम्नलिखित शब्दों में सुवर्णित है–

''बाइबल पर विश्वकोश में प्रदत परंपराओं से मुक्त स्वरूप वाले लेख से परम्पराओं से विरुद्ध मान्यताओं के कारण उसके ऊपर अभियोग चला जिस से वह मुक्त हो गया। किन्तु अंग्रेजी विश्वकोश 1880 में अगले लेख हिब्रू लैंग्वेज एंड लिट्रेचर (हिब्रू भाषा और साहित्य) से उसको कॉलेज की प्राध्यापकी से मुक्त कर दिया गया''।

प्राथमिक कारण

यहूदी और ईसाई पक्षपात– प्राचीन यहूदी आर्यो के वंशज थे। उनकी मान्यताएं वही थीं। जो आर्यो की थी। जिस प्रथम मनुष्य को वे आदम कहते थे, वह मानव जाति का जन्मदाता ब्रह्मा था। ब्रह्मा के एक पर्यायवाची 'आत्मभू' शब्द से हिब्रू शब्द (आदम) निकला है। सृष्टि के आरम्भ में ''ब्रह्मा ने सारी वस्तुओं और प्राणियों का नामकरण किया। यहूदी परम्परा के अनुसार आदम ने भी वही किया– ''और आदम ने प्रत्येक जीवित प्राणी को जिस नाम से सम्बोधित किया वही उसका नाम हो गया। उत्तर काल में यहूदी अपने प्राचीन इतिहास और पुरखों को भूल गए और उनकी दृष्टि संकुचित हो गई। वे अपने आप को सभी जातियों से प्राचीनतम मानने लगे। किंतु 1654 ई. में आयरलैंड के आर्कबिशप अशर ने दृढ़ता से घोषणा की कि उसका प्राचीन धर्मग्रन्थ का अध्ययन

यह सिद्ध कर चुका है कि सृष्टि की रचना ईसा पूर्व 4004 में हुई। इसलिए पाश्चात्त्यों ने 17 वीं शताब्दी की समाप्ति से इस कालक्रम को स्वीकार किया और वे विश्वास करने लगे कि ईसा से 4004 वर्ष पूर्व आदम उत्पन्न हुआ।

उसके पश्चात् अधिकतर आधुनिक यहूदी और धर्मान्ध ईसाई एवं विशेषकर संस्कृत के प्राध्यापकों को इस दृष्टिकोण के अनुकूल बनने में कठिनाई हुई कि उनके द्वारा स्वीकृत आदम की तिथि से भी प्राचीन कोई सभ्यता अथवा जाति हो सकती है? उन्होंने अपने उदार बन्धु विद्वानों द्वारा स्वीकृत भारतवर्ष की सभ्यता और साहित्य की अति प्राचीनता और उससे भी अधिक मनुष्य की उत्पत्ति के प्रति आक्रोश व्यक्त किया। इस गहरी जड़ों वाले पक्षपात की ओर संकेत करता हुआ ए. एस. साइस लिखता है-

''परन्तु जहां तक मनुष्य का संबन्ध है उसके इतिहास का काल अब तक हमारी बाइबल की सीमाओं में बंधा हुआ है। मनुष्य के अर्वाचीन प्रादुर्भाव का पुराना विचार अब तक उन क्षेत्रों में व्याप्त है जहां उसके पाने की न्यूनतम संभावना है और तथाकथित आलोचक इतिहासज्ञ आज भी मनुष्य के प्राचीनतम इतिहास की तिथियों को घटाने के प्रयत्न में अपने आपको व्यस्त किए हुए हैं। जो पीढ़ी इस धारणा को लेकर पालित-पोषित हुई है कि ईसा से लगभग 4004 वर्ष पूर्व अथवा उसके आस-पास में सृष्टि रची गई, उसके लिए यह विचार अकल्पनीय अविश्वसनीय है कि- मानव स्वयं 100000 वर्ष पूर्व विद्यमान था'।

यथेष्ट प्रमाण इस अन्तर्निहित पूर्वाग्रह के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए दिए जा सकते हैं किन्तु एक महान् नृवंशज्ञ का उपर्युक्त उद्धरण ही हमारे उद्देश्य के लिए पर्याप्त होगा।

यूरोप में संस्कृत का अध्ययन चल रहा था और विकसित हो रहा था और बहुत शीघ्र ही विद्वानों की मान्यताएं और निर्णय धर्मगुरुओं के द्वारा बढ़ाये हुए पारम्परिक पक्षपात के प्रभाव से दिग्भ्रष्ट हो गए। विक्रम संवत् 1858 1897 तक युजेन् बर्नुफ फ्रांस में संस्कृत प्राध्यापक के आसन पर विराजमान रहा। उसके दो जर्मन शिष्य थे- रुडोल्फ राथ और मैक्समूलर, जो बाद में यूरोपीय संस्कृत विद्वत्ता में ख्यातनामा हुए।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत की बोडन पीठ का उद्देश्य- संवत् 1890 में होरेस हेमन् विल्सन् ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत का बोडन प्राध्यापक बना। उसके उत्तराधिकारी प्रो. एम. मोनियर विलियम्स ने इस पीठ की स्थापना के उद्देश्य की ओर विद्वानों का ध्यान निम्नलिखित शब्दों में आकर्षित किया-

''मुझे इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करना है कि मैं बोडन पीठ का द्वितीय अधिकारी हूं और इसके संस्थापक कर्नल बोडन ने अपनी वसीयत में स्पष्ट रूप से निर्देश किया था कि उसके अत्यन्त उदार दान का मुख्य उद्देश्य है कि बाईबल आदि धर्म ग्रंथों के संस्कृत में अनुवाद को प्रोन्नत किया जाए, जिससे हमारे देशवासी भारतीय मूल लोगों को ईसाई धर्म में दीक्षित कराने में आगे बढ़ाने के लिए सक्षम बनें''।

पूर्वाग्रह ग्रस्त संस्कृत अध्यापक-

1. प्रो. विल्सन उत्तम स्वभाव वाला व्यक्ति था किन्तु जिस पीठ पर आसीन था उसके संस्थापक के उद्देश्यों के प्रति वह बद्ध था। इसलिए उसने 'द रिलीजियस एंड फिलोसोफिकल सिस्टम ऑफ हिंदूज'' (हिन्दुओं का धार्मिक और दार्शनिक तंत्र) पर एक पुस्तक लिखी और उस पुस्तक को लिखने के कारण बताते हुए वह कहता है- ''हिन्दू धर्म के प्रखरतम प्रत्याख्यान के लिए हेलबरी के वृद्ध निवासी और संस्कृत के महान् विद्वान् जॉन म्यूर द्वारा प्रदत्त 200 पाउंड के पुरस्कारार्थ प्रतियोगियों की सहायता हेतु ये भाषण लिखे गए हैं''।

इस उद्धरण द्वारा शिक्षित पाठक यह निर्धारण कर सकते हैं कि किस सीमा तक यूरोपीय विद्वत्ता का उद्देश्य वैज्ञानिक कहा जा सकता है, कहां तक उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त पक्षपात से रहित हो सकते हैं एवं विश्वसनीय कहला सकते हैं और उनका भारतीय सभ्यता और संस्कृति का चित्रण कहां तक सत्य हो सकता है?

2. इसी पक्षपात की भावना से प्रेरित होकर पूर्वोक्त विद्वान् रुडाल्फ राथ ने अपना शोध प्रबन्ध लिखा– ''जूर लिटरेचर अन्द गेशिथ देस वेदा'' ZUR LITERATUR AND GESCHICHETE DES VEDA जो वैदिक साहित्य और इतिहास पर औपचारिक विवेचन है। 1909 वि. में उसका यास्कीय निरुक्त का संस्करण प्रकाशित हुआ। वह अपनी जर्मन प्रतिभा और निज अध्ययन पर अत्यधिक गर्वित था। उसने दावा किया कि– वैदिक मन्त्रों का अनुवाद निरुक्त की अपेक्षा कहीं अच्छा जर्मन भाषा–विज्ञान की सहायता से किया जा सकता है। राथ ने अन्य बहुत सी बातें इस अहंकार वृत्ति से लिखी हैं।

3. **डब्लू. डी. व्हिट्ने** के लेखन में भी वैसा ही अहंकार प्रकाशित होता है, जो दावा करता है– वेदों को यथार्थ रूप में समझने के लिए एकमात्र 'जर्मन संप्रदाय' के सिद्धान्त ठीक–ठीक मार्गदर्शन कर सकते हैं।

4. **मैक्समूलर**– मैक्समूलर राथ का सहपाठी था। अपने गुरु की छाप के अतिरिक्त लार्ड मैकाले के साथ की मैक्समूलर की 28 दिसंबर 1855 ई. में हुई भेंट ने उसके भारत विरोधी दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मैक्समूलर को 1 घंटे तक मौन बैठना पड़ा, जबकि इतिहासज्ञ (मैकाले) अपनी परस्पर विरोधी मान्यताओं की बौछार करता रहा और फिर अपने भेंटकर्त्ता (मैक्समूलर) को निरस्त कर दिया जो एक सामान्य शब्द बोलने का निष्फल प्रयत्न कर रहा था। मैक्समूलर लिखता है– ''मैं अत्यन्त शोकाकुल और बुद्धिमत्तर व्यक्ति के रूप में आक्सफोर्ड लौटा''।

दो कारणों से मैक्समूलर का नाम भारतीय लोगों को अच्छे प्रकार से विदित्त हुआ। प्रथम वह बहुत सी पुस्तकों का रचयिता था, द्वितीय महान् विद्वान् स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी जनसभा के भाषणों और लेखनों में उसके दृष्टिकोण की कठोर आलोचना की। मैक्स मूलर की मान्यताओं का मूल्य उसके निम्नलिखित कथनों से आंका जा सकता है

1. इतिहास सिखाता प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण मानव जाति को ईसाइयत के सत्यों को पूर्णतः स्वीकार कर सकने से पूर्व क्रमिक शिक्षा की अपेक्षा है। उच्चतर सत्य के प्रकाश की तत्कालिक स्वीकृति का सामना करने से पूर्व मनुष्य की सभी भ्रान्तियों का विनाश करना होगा। विश्व के प्राचीन धर्म निसर्ग का दुग्ध मात्र थे, जिसका स्थान उचित समय में जीवन के पोषक आहार को लेना था। बौद्ध धर्म आर्यों के संसार की सीमाओं से परे फैला है, और हमारे मर्यादित दृष्टिकोण के अनुसार मनुष्य जाति के विशाल भाग में ईसाइयत के आगमन को रोकता हुआ प्रतीत हो सकता है। परन्तु उस (प्रभु) की दृष्टि में जिसके लिए एक सहस्र वर्ष केवल एक दिन के तुल्य होता है वह धर्म विश्व के प्राचीन धर्मों के तुल्य अपने ही दोषों से, ईश्वरीय सत्य के लिए मानव हृदय में स्थित अनिर्मूलनीय उत्कण्ठा को सुदृढ एवं गहरा करने के माध्यम से सहायता करते हुए ईसा के मार्ग को प्रशस्त करने में सहायक हो सकता है।
2. ''वैदिक सूक्तों की बड़ी संख्या अत्यन्त बालिश, अरुचिकर, निम्न और तुच्छ हैं''।
3. ''नहीं वे (वेद) साधारण, नैसर्गिक, बालिश विचारों के साथ, बहुत सी ऐसी कल्पनाओं से युक्त हैं, जो हमें

आधुनिक अथवा द्वितीय श्रेणी अथवा तृतीय श्रेणी की प्रतीत होती हैं''।

विश्व के प्राचीनतम और उच्च वैज्ञानिक पवित्र ग्रन्थ के प्रति ऐसे पाखण्ड पूर्ण अपशब्द केवल हठधर्मी (सच्चे नहीं) ईसाई, नीच अज्ञानी या अपवित्र नास्तिक के मुख से ही निकल सकते हैं। मैक्समूलर ईसाईयत को छोड़कर प्रत्येक अन्य धर्म का कट्टर विरोधी था जिसको वह अविकसित समझता था। उसकी धार्मिक असहिष्णुता जर्मन विद्वान् डॉ. स्पीगल के इस दृष्टिकोण के तीव्र खण्डन से स्पष्ट है कि बाइबिल का सृष्टि-उत्पत्ति का सिद्धान्त ईरानी धर्म से ग्रहण किया गया था। इस कथन से आहत होकर मैक्समूलर लिखता है-

''स्पीगल जैसे लेखक को जानना चाहिए कि वह दया की आशा नहीं सकता। नहीं, उसे स्वयं दया की इच्छा भी नहीं करनी चाहिए अपितु बाइबल की आलोचनाओं के तूफानी समुद्र में गोले बरसाने वाला जो जलपोत उसने उतारा है उसके विरुद्ध गोलों की भारी बौछार को निमन्त्रित करना चाहिए''। (आश्चर्य से कहना पड़ता है कि हमारा इतिहास डॉक्टर स्पीगल के सत्य दृष्टिकोण का इस सीमा तक समर्थन करता है कि बाइबल के वचन ईरान, बेबीलोन और मिश्र के धर्म-ग्रन्थों से ग्रहण किए गए थे जो विश्व के प्राचीन इतिहास के अनुसार, क्रमशः वैदिक स्रोतों से ग्रहण किए गए थे)।

एक अन्य स्थान पर वही पाश्चात्त्य 'वैज्ञानिक' वैदुष्य का भक्त कहता है- ''ऐसा होने से भी निर्णय करने में सर्वथा समर्थ बहुत से लोग पारसियों के मत-परिवर्तन की विश्वास पूर्ण प्रतीक्षा करते हैं तो इसका कारण यह है कि महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर वे अनजाने ही ईसाईयत के शुद्ध सिद्धान्त के निकट पहुंच चुके हैं। उन्हें जेंदा-अवेस्ता पढ़ने दीजिए जिसमें वे विश्वास की शपथ लेते हैं और वे पाएंगे कि उनका विश्वास अब यस्न (यज्ञ) वेंडीड, विस्पड, में नहीं है। ऐतिहासिक स्मृति चिन्ह के रूप में ये कृतियां यदि समीक्षात्मक रूप से भाषान्तरित की जाए तो प्राचीन विश्व के विशाल पुस्तकालय में सर्वदा महत्वपूर्ण स्थान धारण करेंगी। इस युग में धार्मिक, विश्वास की दिव्य वाणी के रूप, में वे निष्प्राण और कालगणना-भ्रम मात्र है''।

सरसरी दृष्टि से पढ़ने वाला भी ईसाई धार्मिक उन्माद का प्रसार इन पंक्तियों से गुजरते हुए देख सकता है। यदि मैक्समूलर जैसे हठधर्मी व्यक्ति की लेखनी से भारतीय सभ्यता की कदाचित् प्रशस्ति निकल सकी है, तो वह संस्कृति की अनुपम महत्ता के कारण है।

मैक्स मूलर और जैकालियट - चन्द्रनगर में मुख्य न्यायाधीश फ्रांस के विद्वान लूई जकालियट् ने संवत् 1926 में एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था 'ला बोब्ल दां लेन्द'। अगले वर्ष उसका अंग्रेजी अनुवाद भी छपा। उस पुस्तक में सुपठित लेखक ने यह स्थापना प्रस्तुत की संसार में सभी प्रमुख विचारधाराएं प्राचीन आर्यों की विचारधारा से निकली है। उसने भारतवर्ष को 'मानवता का दौला कहा है।

'हे प्राचीन भारत की भूमि! मानव के 'दोला'! धन्य हो! धन्य पूज्य मातृभूमि जिसको शताब्दियों तक चलने वाले नृशंस आक्रमण अब तक विस्मृति की धूल के नीचे नहीं दबा सके! धन्य है विश्वास प्रेम, काव्य और विज्ञान की पितृभूमि हम तेरे अतीत का पुनरुज्जीवन अपने पाश्चात्य भविष्य में स्वागत करें!'

इस पुस्तक ने मैक्समूलर को मर्माहत कर दिया और उसने इसकी समीक्षा करते हुए कहा ''ग्रन्थ -कार भारतीय ब्राह्मणों के धोखे में आ गया प्रतीत होता है।''

मैक्स मूलर के पत्र- व्यक्तिगत पत्र लेखक के अन्तर्मन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं। व्यक्ति जिन पत्रों को

अपने सम्बंधी और मित्रों को लिखता है, उनमें अपने अन्तरतम भावों को व्यक्त कर देता है। इस प्रकार के पत्र उसके सच्चे स्वभाव और चरित्र के मूल्यङ्कन में अत्यन्त सहायक होते हैं।

सौभाग्य से **''लाइफ एंड लेटर्स ऑफ फ्रैडरिक मैक्समूलर''** नामक संग्रह दो खण्डों में प्रकाशित किया जा चुका है। उन पत्रों में से कुछ उद्धरण उस व्यक्ति के मनोभाव को प्रकाशित करने में पर्याप्त होंगे, जो पश्चिम में अपने संस्कृत ज्ञान और निष्पक्ष निर्णयों के लिए अत्यन्त आदर से देखा जाता है।

अ) 1866 ई.(विक्रम् संवत् 1923) के पत्र में वह अपनी पत्नी को लिखता है- 'यह मेरा संस्करण और वेद का अनुवाद उत्तर काल में भारत के भाग्य को बड़ी सीमा तक प्रभावित करेगा- यह उनके धर्म का मूल है और मैं यह निश्चित अनुभव करता हूं कि उन्हें यह दिखाना कि मूल क्या है, उस सबको उखाड़ फेंकने का ही एकमात्र मार्ग है, जो उस (मूल) से गत तीन हजार वर्षों में उत्पन्न हुआ है।'

आ) एक अन्य पत्र में वह अपने पुत्र को लिखता है-

क्या तुम संसार में सबसे उत्तम किसी पवित्र पुस्तक को बताओगे? मैं कहता हूं- 'नया विधान' है। उसके बाद मुझे कुरान को रखना चाहिए जो अपनी नैतिक शिक्षाओं की दृष्टि से 'नये विधान' के उत्तरकालीन संस्करण की अपेक्षा कठिनाई से ही अधिक है। उसके पश्चात्त अनुगमन करते हैं- पुराना विधान दाक्षिणात्य त्रिपिटक .... वेद और अवेस्ता''।

इ) 16 दिसंबर 1868 ई. (संवत् 1925) को वह भारत के लिए मन्त्री डयुक् आर्फ आरगाइल को लिखता है-

भारत का प्राचीन धर्म नष्ट हो चुका है और यदि ईसाईयत प्रवेश नहीं करती है तो यह किसका दोष होगा?

ई) 29 जनवरी 1888 को उसने (संवत् 1939) को उसने बैरमजी मालाबारी को लिखा-

''मैं केवल ईसाई के रूप में अथवा यूरोपियन के रुप में नहीं, किन्तु ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यह बताना चाहता था कि इस प्राचीन धर्म का वास्तविक ऐतिहासिक मूल्य क्या है। परन्तु इसमें वाष्पयन्त्र विद्युत् और यूरोपियन दर्शन-शास्त्र एवं नैतिकता का अन्वेषण करें, तो आप इसको इसके वास्तविक स्वरुप से वञ्चित करते हैं''।

यहां पर मैक्स मूलर वैदिक धर्म के सच्चे ऐतिहासिक मूल्य को जानने का दावा करता है, परन्तु हमारा इतिहास उस ज्ञान और विद्वता की शून्यता को व्यक्त करने जा रहा है जिस पर ये और इनके साथी अधिकार करने का अहङ्कार करते हैं।

5. **वेबर का पक्षपात-** जिस समय इंग्लैंड में मैक्समूलर भारतीय साहित्य और धर्म की कीर्ति को मलिन करने में व्यस्त था उसी समय जर्मनी में अल्बर्ट बेबर इसी निन्दनीय कार्य के लिए अपने आप को समर्पित कर रहा था। हाबोल्ट द्वारा की गई भगवद्-गीता की अपरिमित प्रशंसा का उल्लेख हम पूर्व कर चुके हैं। बेबर इसको सहन नहीं कर सका। उसने यह स्वतः सिद्ध मान लेने का साहस किया कि- महाभारत और गीता ईसाई विचारों से प्रभावित है। देखिए वह क्या लिखता है-

''संपूर्ण ग्रंथ में व्याप्त कृष्ण संप्रदाय का विशेष रूप ध्यान देने योग्य है। ईसाई व्याख्यान विषय और अन्य

पाश्चात्य प्रभाव निसंदेह विद्यमान है''।

दो अन्य पाश्चात्य विद्वानों लारिन्सर और ई. वाशबर्न हाप्किन्स- ने वेबर के दृष्टिकोण का जोरदार समर्थन किया।

परन्तु यह विचार इतना अधिक विवेकशून्य था कि- यूरोपीय विश्वविद्यालयों के अधिकतर प्राध्यापकों ने अपने ईसाई झुकाव के बावजूद इसे स्वीकार नहीं किया। किन्तु इस मिथ्या विचार के प्रसार ने अपनी शरारत (प्रतिपक्षियों) कर ही दी और यही विचार पश्चिमी विद्वानों सहित महाभारत का समय ईस्वी संवत् से पूर्व निर्धारित करने में संभ्रम के लिए मुख्यत: उत्तरदायी हुआ।

वेबर और बंकिमचंद्र- इस विचार की स्वीकृति में मैं अकेला नहीं हूं। सुप्रसिद्ध बंगाली विद्वान् बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय भी अपने कृष्णचरित्र में वेबर के विषय में यह कहने को विवश है-

''विख्यात वेबर निसंदेह विद्वान् था, परंतु मैं यह सोचने के लिए बाध्य हुआ हूं, कि वह भारत के लिए एक अशुभ क्षण था जब उसने संस्कृत पढ़ना आरम्भ किया। कल के जर्मन बर्बरों के वंशज भारत की प्राचीन कीर्ति से अपने आप को समन्वित नहीं कर सके। इसलिए उनका तत्परता-पूर्ण उद्योग यह सिद्ध करने के लिए था कि भारतीय सभ्यता का प्रादुर्भाव अपेक्षाकृत अधुनातन है। वे अपने आप को इस विश्वास में समर्थ नहीं बना सके कि- महाभारत ईसा के जन्म से शताब्दियों पूर्व रचा गया।''

वेबर और गोल्डस्टुकर- वेबर और बोथलिंग ने 'संस्कृत वारतेर बुख' नामक संस्कृत भाषा का शब्दकोश तैयार किया। प्रोफेसर कुह्न भी उसके सहायकों में से एक था। प्रधानत: मिथ्या और काल्पनिक भाषा विज्ञान के सिद्धान्तों पर आधृत यह ग्रन्थ अनेक स्थानों पर अशुद्ध अर्थों से परिपूर्ण है, इसलिए अविश्वसनीय और भ्रामक है। दु:ख है कि निपट पक्षपात के कारण बहुत-सा श्रम व्यर्थ किया गया। वह शब्दकोश प्रोफैसर गोल्डस्टुकर की तीव्र आलोचना का विषय बना जिसने दोनों संपादकों को पीड़ित किया। वेबर इतना दु:खी हुआ कि वह गोल्डस्टुकर के विरुद्ध तुच्छ प्रकार की अपशब्दात्मक भाषा के प्रयोग पर उतर आया। उसने कहा कि गोल्डस्टुकर के 'वारतेर बुख' शब्दकोश संबन्धी विचार ''उसकी मानसिक शक्ति के पूर्ण व्यक्तिकम'' को प्रदर्शित करते हैं, क्योंकि उसने सर्वश्रेष्ठ हिन्दू विद्वानों की प्रामाणिकता का स्वच्छन्दता से और सरलता से प्रत्याख्यान नहीं किया। उनके महत्त्वहीन आक्रमणों का उत्तर देते हुए गोल्डस्टुकर ने प्रोफेसर राथ बोथलिंग, वेबर और कुह्न के षड्यंत्र का पर्दाफाश किया जो उन्होंने प्राचीन भारत के गौरव को सुरंग लगाने के लिए रचा था। उसने लिखा-

''वस्तुत: प्रथम अवसर में ही यह दर्शाना मेरा कर्तव्य होगा कि बोथलिंग पाणिनि के सरल नियमों को भी समझने में असमर्थ है, कात्यायन के नियमों को समझने में उससे भी कम और शास्त्रीय ग्रन्थ को समझने के लिए उनके नियमों के प्रयोग के विषय में तो और भी कम समर्थ है। शब्दकोश के तत्संबन्धी विभाग में इतनी अधिक त्रुटियां है कि- वह प्रत्येक गम्भीर संस्कृतज्ञ को तब निराशा से भर देगा जब वह (संस्कृतज्ञ) उन त्रुटियों के कारण संस्कृत भाषा विज्ञान के अध्ययन पर अवश्य पड़ने वाले दुष्प्रभाव का आकलन करेगा।

वह आगे टिप्पणी करता है कि ''जिन समस्याओं का बहुत ही सावधानी से समाधान किया जाना चाहिए था और जिनका समाधान परिश्रमपूर्ण अनुसन्धान के बिना नहीं किया जा सकता था उनके 'वारतेर बुख' में अत्यन्त अनधिकृत ढंग से तुच्छ बना दिया गया है।''

बोथलिंग के पक्ष के व्यक्तियों में से एक ने गोल्डस्टुकर से 'पाणिनि' के संपादक' (बोथालिंग) के प्रति

न केवल आदर प्रकट करने अपितु गुप्त कारणों से उसकी सर्वविध भयंकर भूलों को प्रमाणिक यथार्थ के रूप में जनता में प्रचलित करने की प्रार्थना की।

हम जानते हैं कि उनके उस ईसाई और यहूदी पक्षपात के अतिरिक्त अन्य कोई गुप्त कारण नहीं थे, जो हिन्दू वैयाकरणों की यथार्थ सूचना को दबाने के लिए और आर्य संस्कृति एवं सभ्यता के अवमूल्यन एवं कलंकित करने के लिए और साथ ही साथ इसी उद्देश्य के लिए ब्रिटिश शासन के साधन के रूप में कार्य करने के लिए उनको प्रोत्साहित करता था।

प्रोफेसर कह्न जिसने 'वारतेर बुख' के विषय में अपना मत प्रकट किया था, ऐसा व्यक्ति था जिसका संस्कृत अध्ययन से मात्र इतना संबन्ध था कि वह संस्कृत जानने वालों को संस्कृत की पुस्तकें हस्तगतं कराता था। वह साहित्यिक दृष्टि से शून्य था, पूर्णत: अज्ञात था, परन्तु प्रेरक संख्यायुक्त परिमाण (उपाधियों एवं पद) का अहंकार पाले हुए था। वह व्यक्ति उसके मित्रों के अनुसार संस्कृत से पूर्णत: अनभिज्ञ था।

प्रामाणिक हिन्दू परम्परा के अनधिकारिक उपहास से उकसाया गया गोल्डस्टुकर 'वैज्ञानिक' विद्वानों के वेश में छदम्‌वेशी धूर्त मिथ्या प्रचारको के संघ के विरुद्ध अपनी दुर्बल किन्तु एकल आवाज़ उठाने के लिए विवश हुआ था। वह अपने परिश्रम पूर्ण ग्रन्थ का उपसंहार निम्नलिखित अर्थपूर्ण टिप्पणी के साथ करता है।

''जब मैं देखता हूं कि अतिविशिष्ट और उच्च शिक्षित हिन्दू विद्वान् और दिव्य पुरुष-अत्यन्त महत्वपूर्ण और कदाचित् प्राचीन भारत के एकमात्र ज्ञान स्रोत-सिद्धांत रूप से तिरस्कृत किए जाते हैं, लिखित रूप से खंडित किए जाते हैं और परिणामत: वैदिक ग्रन्थों का अनुवाद करते समय अलग रख दिए जाते हैं; .... जब इस प्रकार के विवरण वाले संस्कृतज्ञों का एक दल हिन्दू प्राचीनता के आरंभ में विद्यमान वेदार्थ को बताने का अहंकार करता है, जब मैं विचारता हूं कि संस्कृत भाषा विज्ञान के अध्ययन की इस पद्धति का अनुसरण वे लोग करते हैं जिनके शब्द स्पष्टत: उनके द्वारा प्राप्त व्यवसायिक पद से बल और प्रभाव को ग्रहण करते हैं, तब मैं मानता हूं कि यदि संस्कृत भाषाविज्ञान के इन क्रूर प्रतिशोधको का विरोध न करूं, तो यह मेरे साहस की कमी और कर्तव्य का त्याग होगा''।

मोनियर विलियम्स जिसने बॉर्डर पीठ की स्थापना के वास्तविक उद्देश्य को प्रकट किया स्वयम् इस प्रकार कहता है-

''इसलिए ब्राह्मणवाद को अवश्य नष्ट होना चाहिए। वस्तुत: अति सामान्य वैज्ञानिक विषयों से संबद्ध मिथ्या विचार इसके सिद्धान्त के साथ इतने मिश्रित हो गए हैं कि सामान्यतम शिक्षा-भूगोल विषयक सरलतम पाठ-ईसाईयत की सहायता के बिना इसकी नींव को अन्तत: अनिवार्य रूप से उखाड़ फेंकने में समर्थ होने चाहिये''।

''जब ब्राह्मणवाद के सुदृढ़ दुर्ग की दीवारें चारों ओर से घेर ली गई है सुरंगे लगा दी गई है और अन्तत: ईसा के सैनिकों (पादरियों) ने अन्तिम धावा बोल दिया है अत: ईसाईयत की विजय असाधारण और पूर्ण होगी।

इसलिए हम यह निष्कर्ष निकालने में युक्त हैं कि उसकी पुस्तक ''दि स्टडी ऑफ संस्कृत इन रिलेशन टू मिशनरी वर्क इन इंडिया''। भारत में मिशनरी कार्य से सम्बद्ध संस्कृत का अध्ययन 1861 ई. लन्दन ईसाइयत को प्रोन्नत करने और हिन्दुत्व को नष्ट करने के मूलभूत उद्देश्य से लिखी गई। इसके बावजूद हमारे कुछ भारतीय

संस्कृत विद्वान् इन यूरोपीय विद्वानों को संस्कृत साहित्य के निष्पक्ष अध्येता कहते हैं, जिनका मूलभूत उद्देश्य ज्ञान मात्र के लिए ज्ञानर्जन करना रहा है।

पुनः बाइबल के प्रति अन्तर्निहित अपने बद्धमूल आदर को व्यक्त करते हुए मोनियर विलियम्स लिखता है- ''बाइबिल यद्यपि सत्य दैव प्रकाशन है''

रुडाल्फ हार्नलि- रुडाल्फ हार्नलि संवत् १६२६ मे बनारस के क्वींस कॉलेज का प्रिंसिपल था। उसी समय महर्षि दयानन्द सरस्वती का, जिन्होंने उत्तर काल में आर्य समाज की स्थापना की- अपने मिशन के विस्तार के लिए प्रथम बार बनारस में आगमन हुआ। डॉक्टर हार्नलि कई अवसरों पर स्वामी दयानंद से मिला। उसने स्वामी जी पर एक लेख लिखा जिससे निम्नलिखित उद्धरण उल्लेखनीय हैं क्योंकि यह उन अनेक यूरोपीय विद्वानों की यथार्थ अभि-संधि को व्यक्त करता है जिन्होंने संस्कृत और भारतवर्ष की प्राचीन धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन किया। हार्नलि कहता है-

वह (दयानन्द)हिन्दुओं को संभवतः यह विश्वास दिला सकता है कि उनका आधुनिक हिन्दुत्व सर्वथा वेदों के विरुद्ध है। यदि एक बार उन्हें इस मौलिक भूल का पूर्ण विश्वास हो जाए तो वह निःसन्देह तत्काल हिन्दुत्व को छोड़ देंगे, वे वैदिक अवस्था की ओर नहीं लौट सकते, जो अब मृत और अतीत हो गई है और पुनः जीवित नहीं होगी। बाद में थोड़ी बहुत नवीनता अवश्य आएगी। हमें आशा है कि वह ईसाईयत हो सकती है''।

रिचर्ड गार्बे- एक जर्मन संस्कृतज्ञ था जिसने बहुत से संस्कृत ग्रंथों का संपादन किया था। इनके अतिरिक्त उसने 1914 ई. में मिशनरियों के लिए एक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक था- ''इन्देन अन्द दास क्रिश्चियन तुम'' (प्दकपंद ंदक कें बेतपेजमद जनउ) इस पुस्तक में उसका मतवादी पक्षपात स्पष्ट झलकता है।

9. **विन्टरनित्ज-**उपरि-वर्णित प्रकार के पश्चिमी संस्कृत विद्वानों में अपने निज दर्शन एवं धर्म की श्रेष्ठता और अपने निज निष्कर्षो की स्थिरता का अहंकार इतना बद्धमूल है कि वे जनता के समक्ष निर्लज्जता से उसे अभिव्यक्ति देने में किसी संकोच का अनुभव नहीं करते। शोपनहार की उपनिषदों के दर्शन की आदरपूर्ण प्रशंसा ने, जिसको भारतीय लेखकों ने बहुधा उद्धृत किया है।- यूरोपीय-विद्वानों के हृदय में पीड़ा उत्पन्न की। 1925 ई. तक के उत्तर काल में प्रो. विन्टरनित्ज ने शोपनहार के सत्य और हार्दिक विचारों को निम्नाङ्कित शब्दों में खंडित करना अपना कर्तव्य समझा-

''तो भी मैं विश्वास करता हूं कि वह उन्मत्त अतिशयोक्ति हैं जब शोपनहार कहता है-''उपनिषदों की शिक्षा मनुष्य के सर्वोच्च ज्ञान और बुद्धि के फल'' को दर्शाती है और उसमें लगभग अतिमानव अवधारणाएं विद्यमान है जिनके आविष्कर्ता कठिनाई से ही मनुष्य समझे जा सकते हैं।''

उपनिषदों संबन्धी अपनी इस निन्दा से संतुष्ट न होकर उसने वेदों की महत्ता को भी तिरस्कृत करने का साहस यह कहते हुए किया-

''यह सत्य है कि इन सूक्तों के रचनाकर कदाचित् ही यहूदियों के धार्मिक काव्य की उच्च उड़ानों और गंभीर भावनाओं तक पहुंच पाते हैं।''

यह कलंकित करने का कार्य केवल संस्कृत विद्वानों तक ही सीमित नहीं रहा है यह विज्ञान के क्षेत्र में भी स्रवित हुआ। प्राचीन हिन्दुओं के यथार्थ एवं नानाविध वैज्ञानिक ज्ञान के विषय में एक शब्द भी नहीं जानने

वाला सर विलियन् सेसिल् डैम्पियर लिखता है-

“संभवत: अन्य विज्ञानों (दर्शन एवं भेषज के अतिरिक्त) को भारतीय योगदान की अल्पता अंशत: हिन्दू धर्म के कारण हो सकती है”।

लौकिक साहित्य में भी हिन्दुत्व के प्रति द्वेष का चरमोत्कर्ष आगे वर्णित जैसी बहुत ही शरारत भरी उत्तेजक टिप्पणियों में देखा जा सकता है-

हिन्दू धर्म भारत के लिए अभिशाप है। 20 करोड़ से अधिक लोग पौराणिक कथाओं के वानर-मिश्रण पर विश्वास करते हैं, जो राष्ट्र का गला घोट रहा है। भारत में जो कोई ईश्वर प्राप्ति की उत्कट इच्छा करता है, वह शीघ्र ही अपना दिल और दिमाग दोनों खो देता है।

मुंबई का प्रो. मैकेंजी भारतीय नीतिशास्त्र को दोषयुक्त अतार्किक, असामाजिक किसी भी दार्शनिक आधार से रहित तपस्या एवम् कर्मकाण्ड के घृणास्पद विचारों से निष्फल और ‘यूरोप की उच्चतर आध्यात्मिकता’ की अपेक्षा सर्वथा हीन पाता है। वह अपनी पुस्तक “हिन्दू एथिक्स” का अधिकतर भाग अपनी इस प्रतिज्ञा के समर्थन में अर्पित करता है और इन विजय निष्कर्षो पर पहुंचता है कि हिंदू दार्शनिक विचार ‘जब तर्कपूर्ण रीति से विनियुक्त किए जाते हैं तो नीतिशास्त्र के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ते’ और वे ‘सुदृढ़ नैतिक जीवन के विकास को’ अवरुद्ध करते हैं।

जो प्रशासन भारत की मित्रता और सहानुभूति को प्राप्त करने के लिए उत्सुक है, उसके लिए यह गम्भीर भूल का विषय है कि रिप्ले जैसे व्यक्ति के ऐसे घृणित प्रकार के साहित्य को प्रकाशित करने की अनुमति देता है। और यह पुन: पश्चात्ताप का विषय है कि ऐसी पुस्तकों पर वे चाहे भारत में प्रकाशित हुई हों अथवा बाहर हमारे राजनेताओं द्वारा ध्यान नहीं किया जाता है और हमारी राष्ट्रीय सरकार के द्वारा प्रतिबन्ध नहीं लगाया जाता है। न केवल हमारी सरकार ही इस प्रकार के मिथ्या निन्दात्मक साहित्य पर प्रतिबन्ध के प्रति उपेक्षा भाव रखती है, अपितु हमारे विश्वविद्यालय भी न केवल व्यवस्था करते हैं अपितु भारतीय इतिहास और संस्कृति के विषय में उच्च अध्ययन के लिए उन विदेशी लेखकों द्वारा लिखित पुस्तकों की अनुशंसा भी करते हैं, जो खुले रूप से या अत्यन्त चातुर्यपूर्ण ढंग से हमारी सभ्यता को कलङ्कित करने का कोई अवसर नहीं छोड़ते हैं।

जिस देश के ब्राह्मणों से संपूर्ण विश्व नैतिकता और चरित्र के नियमों की शिक्षा लेता था, उसके नीतिशास्त्र पर मैकेंजी जैसों की टिप्पणियां एवं घृणास्पद वचन और राष्ट्रीय अपमान से कम नहीं है। स्थिति का व्यङ्ग यह है कि निन्दा किए जाने के स्थान पर ऐसे लोग हमारे शिक्षाविदों से और राजनीतिक नेताओं से मान्यता और सम्मान प्राप्त करते हैं।

प्राय: भारतीय विद्वान् और राजनेता इस पक्षपात से अनभिज्ञ- हमने इस प्रकार के पाश्चात्त्य विद्वानों की मानसिकता को पर्याप्त प्रकट किया है। उन्होंने अपनी सरकारों और भारत की अंग्रेजी सरकार से भी विपुल आर्थिक सहायता प्राप्त की जिसे उन्होंने स्वच्छन्द रूप से ऐसे लेख पुस्तिका और ग्रन्थों को लिखने में वह किया, जो उनके प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण को धूर्तत्तापूर्ण और छद्मपद्धति से प्रचार करते हैं।

उनका अवधान पूर्ण प्रयत्न यह था कि वे अपने को समर्पित न करें और अपनी विद्वत्ता, और निष्पक्षता के वेश में भारतवर्ष के लोगों और संसार को पथभ्रष्ट करें। यदि स्वामी दयानन्द सरस्वती उनकी दृष्टता पूर्ण योजनाओं को निर्दयतापूर्वक उद्घाटित करके उनके हवाई किलों को ढहा न देते तो वे अपने कार्य में सुसफल हो जाते।

स्वामी जी अद्वितीय व्यक्तित्व साहस तीक्ष्ण-बुद्धि, दूरदृष्टि और गंभीर चिंतन से युक्त पुरुष थे। वे अपने समय के बहुत से यूरोपीय विद्वानों के संपर्क में आए। वे जार्ज बूलर, मोनियर-विलियम्स, रूडाल्फ हार्नलि, थोबो और अन्य विद्वानों से मिले थे, जिन्होंने ईसाई उत्साह से संस्कृत अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य किया। वह सर्वप्रथम व्यक्ति थे जिनकी सूक्ष्म दृष्टि उनके अनुसंधान कार्य के दूरगामी उद्देश्यों को देखने में विफल नहीं हो सकी भले ही भारतवर्ष के सामान्य लोग और सरकारी सेवा में लगे हुए प्रायः उच्च शिक्षित व्यक्ति उन (पाश्चात्यों) के तथाकथित अति गम्भीर वैदुष्य कठोर पक्षपात रहितता का वैज्ञानिक और उदार दृष्टिकोण से मोहित हो गए थे। उन्होंने उचित समय पर इस देश के लोगों को चेतावनी दी और उनको इन मिथ्या विद्वानों और गुप्त मिशनरियों के पंजों से बचाने में अत्यधिक सफल हुए।

हमने पाश्चात्य विद्वानों की कई पीढ़ियों द्वारा निर्मित किया हुआ लगभग सारा साहित्य पढ़ा है और खुले दिमाग से उसका गम्भीर विवेचन किया है। हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि इन विद्वानों में से अधिकांश लेखकों में निश्चित रूप से ईसाईयत पूर्वाग्रह का रङ्ग है जो उस संपूर्णता का अवमूल्यन न करने के लिए उत्तरदायी है जो भारतवर्ष में महान् है। इन लेखकों का चरम उद्देश्य अत्यन्त धूर्ततापूर्ण ढंग से इस देश के लोगों के दिमाग में उनके धर्म और संस्कृति की हीनता को स्थापित करके उन्हें ईसाईयत में दीक्षित करना प्रतीत होता है।

परन्तु सत्य अधिक काल तक छिप नहीं सकता। अब भारतवर्ष के कुछ आधुनिक विद्वानों ने भी कुछ सीमा तक यूरोपीय विद्धता के पतले आवरण में से यद्यपि गहराई से नहीं देखना आरंभ किया है जैसे-

प्रो. वी. रंगाचार्य लिखता है- मिश्र या मेसोपोटामिया की तिथियों को स्वच्छन्दता पूर्वक प्राचीनतम-न्यूनतम 5000 वर्ष तक पीछे जाने वाली तिथियां- और इस आधार पर कि भारत उनका ऋणी है प्राचीन भारत की तिथियों को यथासंभव अर्वाचीनतम मानने में लगभग सभी अंग्रेज और अमेरिकन विद्वानों ने असीम शरारतें की हैं।

मद्रास विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग अध्यक्ष श्री नीलकण्ठ शास्त्री को, यद्यपि वह अनेक अस्थानीय पाश्चात्त्य सिद्धांतों का समर्थक था, लिखना पड़ा- 19वीं शताब्दी के प्रकाश में यूरोप का पूर्वाग्रह भारतीय समाज और भारतीय इतिहास की समालोचना के अतिरिक्त और क्या है? यह समालोचना अंग्रेजी शासन और यूरोपीय मिशनरियों के आरंभ की थी और ''लासेन'' के उच्च पाण्डत्य से अच्छी प्रकार से प्रकाशित हो रही है। 19 वीं शताब्दी के आरम्भ में जर्मनी की अपूर्ण अभिकांक्षाओं ने लासेन के विचारों को आकार देने में निश्चित रूप से अंशदान किया था।

भारत सरकार के भूतपूर्व शिलालेख विद्वान् श्री सी.आर. कृष्णमाचारुलु ने पाश्चात्त्य विद्वानों के दूरगामी उद्देश्यों को अनुभव करके अधिक दृढता से अपने विचारों की अभिव्यक्ति की है। वह लिखता है-

'ये लेखक सांस्कृतिक सहानुभूति के ऐतिहासिक सत्य के लिए प्रामाणिकता प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि ये नव विकास के राष्ट्रों से उभरे हैं और इस इतिहास को सांस्कृतिक से भिन्न उद्देश्यों से लिखते हैं, जो कुछ अवस्थाओं में भारत के प्राचीन इतिहास की यथार्थ व्याख्या के प्रति स्पष्ट रुप से जातीय है और पक्षपात-पूर्ण है'।

प्रो. आर. सुब्बाराव एम.ए., एल.टी. वाल्टेर (29 दिसंबर 1953) में हुए भारतीय इतिहास कांग्रेस के 16वें अधिवेशन के अपने अध्यक्षीय भाषण विभागीय में लिखता है- ''दुर्भाग्य से पुराणों की ऐतिहासिकता और उनकी प्रामाणिकता को कुछ पाश्चात्त्य विद्वानों ने विकृत कर दिया है, जिन्होंने कुछ हठ से कहा है कि ऐतिहासिक काल

2000 ईसा पूर्व से परे नहीं जा सकता और महाभारत युद्ध को 1400 ईसा पूर्व से प्राचीनतर निर्धारित करने की आवश्यकता नहीं। उन्होंने ब्राह्मणों को अपनी प्राचीनता को ऊपर उठाने का दोषी ठहराया और हिन्दुओं के ज्योतिष ग्रन्थों की प्रामाणिकता पर प्रश्नचिन्ह लगाया'।

निष्कर्ष-

संक्षिप्त रूप से विगत पृष्ठ यह स्पष्ट करते हैं कि यह ईसाई और यहूदी पक्षपात ही है, जिसने-

प्राचीन भारतीय इतिहास की वास्तविक तिथियों को स्वीकार करने की अनुमति पाश्चात्त्य विद्वानों को नहीं दी, जो वेदों को पुराने विधान (बाईबिल)के प्राचीनतर भाग की अपेक्षा प्राचीनतम आने और ईसा-पूर्व 2500 रखने के प्रति-सदा अनिच्छुक थे।

प्राचीन भारतीय ज्ञान की प्रशस्ति में शोपनहार का अनुसरण करने वाला और काल क्रम विषय पर प्रत्यक्ष रुप से कार्य न करनेवाला पॉल डयूशन्, ए. डब्लू. राइडर और एचजिमर का संप्रदाय भी इन अत्यन्त वैज्ञानिक और काल्पनिक तिथियों के भार को दूर नहीं फैंक सका।

पाश्चात्त्य भारतविदों की दो परस्पर संबद्ध व्याधियों का कारण बना; प्रथमतः मिथ (कल्पित कथा), मिथिकल (कल्पितकथासम्बन्धि), मिथालोजी (कल्पितकथाशास्त्र) की व्याधि जिसके अनुसार ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु, पर्वत, नारद, कश्यप, पुरूरवा, वशिष्ठ और अन्य अनेक प्राचीन ऋषि कल्पित घोषित किए गए हैं। यह सोच कर कि भारतीय इतिहास की तिथियां अति प्राचीन काल तक चली जाएगी, किसी ने उनके वास्तविक ऐतिहासिक स्वरूप को समझने का प्रयास कभी नहीं किया। और पूर्वोक्त के परिणाम स्वरूप द्वितीयतः संबन्ध या आरोप की व्याधि जिसके अनुसार इन ऋषियों के ग्रन्थ किन्हीं अर्वाक्कालीन अज्ञातनामा व्यक्तियों के द्वारा रचित घोषित किए गए हैं, जो (अज्ञात व्यक्ति) अपने को उन मिथिकल (काल्पनिक)ऋषियों के रूप में प्रचारित करते हुए कहे गए हैं।

निम्नलिखित उदाहरणों का उल्लेख करना रुचिकर होगा

1. प्रोफेसर मैक्स मूलर (1860 ई.) हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर में लिखता है-

   क) 'प्रथम (प्रातिशाख्य) शौनक से संबंधित है' .... पृष्ठ 215

   ख) 'कात्यायन से संबंधित अनुक्रमणी' .... पृष्ठ 215

2. प्रो. ए.ए. मैकडॉनल्ड्स (1904) ई. स्वसंपादित पुस्तक के मुख्यपृष्ठ पर लिखता है-

   'शौनक से संबंधित बृहद्देवता'

3. प्रो. एल.डी. बार्नेट (1904) 'ब्रह्म नॉलेज' (पृष्ठ 11) में लिखता है-

   'ब्रह्म सूत्र परंपरा से दो कल्पित ऋषियों बादरायण और व्यास में से किसी एक से संबंधित'

4. प्रो. मौरिस ब्लूमफील्ड (1919) 'ऋग्वेद को पुनरुक्तियां (पृष्ठ 194) में लिखता है-

5. 'कात्यायन से संबंधित सर्वानुक्रमणी के कथन'

   प्रो. जूलियस जॉली (1923 ई.) अर्थशास्त्र के संस्करण की अपनी भूमिका (पृष्ठ 47) में लिखता है-

'ग्रन्थ से कौटिल्य चाणक्य का संबध होने का पूर्णत: हेतु वे कल्पित कथाएं हैं जो उसका कल्पित महामंत्री के संबंध में प्रचलित थी जो राजनीति कला का आचार्य एवं सर्जक और नीति विषयक संपूर्ण ''प्लवमान ज्ञान'' का संकलयिता समझा जाता था''।

6. प्रोफेसर ए.बी कीथ (1924 ई.) संस्कृत नाटक में लिखता है-

'शिलाली और कुशाश्व से संबंधित नटों की पाठ्यपुस्तकें (नटसूत्र)' ..... पृष्ठ 31

7. प्रो. एम. विन्टरनित्ज (1925 ई.) 'सम प्रोबलम्स् आर्फ इण्डियन लिटरेचर' में लिखता है- 'कौटिल्य अर्थशास्त्र'।

और पुन: (1927 ई.) अपने हिस्ट्री ऑफ इंडियन लिटरेचर में लिखता है-

क) जो गान (ऋग्वेदसंहिता के सूक्त) काल के अंतराल में रचे जा चुके थे वे किसी किसी एक संग्रह के रूप में जोड़ लिए गए और प्रागैतिहासिक काल के प्रसिद्ध पुरुषों के साथ संबंधित कर दिए गए।

ख) ऋग्वेद-प्रातिशाख्य शौनक से संबंधित है जो आश्वलायन का गुरु समझा जाता है।

ग) वाजसनेयी प्रातिशाख्य सूत्र कात्यायन से संबंधित। (पृष्ठ 284)।

8. प्रो. ए. बैरीडेल कीथ 'इण्डियन हिस्टारिकल क्वाटर्ली के खण्ड 4 संख्या 1 में प्रकाशित अपने लेख (1931ई.) 'न्याय प्रवेश का ग्रंथ कर्तृत्व' में लिखता है-

'कणाद' लेखक जिससे वैशेषिक सूत्र संबंधित है।'

9. प्रोफेसर डब्लू. कैलेण्ड पञ्चविंश ब्राह्मण के अंग्रेजी अनुवाद की भूमिका (1931 ई.) में लिखता है उनकी छत्रछाया में रहने वालों के कुछ सरल उद्धरण-

10. सर एस. राधाकृष्णन भगवद्गीता के अपने भूमिकात्मक निबंध में लिखता है (1948 ई.)-

'हम गीता के लेखक को नहीं जानते हैं। लगभग वे सभी पुस्तकें जो भारत के प्राचीन साहित्य से संबंधित है अज्ञातनामा लेखकों की हैं। गीता का ग्रन्थ-कर्तृत्व व्यास से संबंधित है; जो महाभारत का पौराणिक संग्रह कर्ता है।

11. प्रो. अल्तेकर (1949 ई.) लिखता है-

'प्राचीन भारत में लेखक प्राय: अज्ञात रहना ही पसंद करते थे और अपने ग्रन्थों को दिव्य अथवा अर्ध दिव्य पुरुषों से संबंधित करते थे।' (स्टेट एण्ड गवर्नमेण्ट इन् एन्शिएट इण्डिया, पृष्ठ 2)

12. श्री मनमोहन घोष नाट्यशास्त्र के अपने अंग्रेजी अनुवाद के शीर्षक पृष्ठ पर लिखता है- 'भरतमुनि से संबंधित नाट्यशास्त्र'। हजारों वर्षों तक सतर्कता से सुरक्षित भारतीय परम्परा के विरुद्ध यह चतुरतापूर्ण फुसलाने वाली उक्तियां इस देश के बहुत से शिक्षित मनुष्यों के मस्तिष्क में अपने प्राचीन ऋषियों के अस्तित्व और उनके ग्रन्थों की प्रामाणिकता के विषय में संदेह उत्पन्न करने में सफल हो गई है। इस छद्म प्रकार से की गई धूर्तता की सीमा इस तथ्य से आंकी जा सकती है कि सर. एस. राधाकृष्णन् जैसे उत्तरदायी व्यक्ति भी पाश्चात्त्य प्राच्य विद्याविदों के पूर्णत: असंबद्ध और अनैतिहासिक विचारों को बिना किसी प्रश्न के स्वीकार करने के लिए बाधित हो गए हैं, बल्कि वें उनके साथ यह घोषणा करने में सम्मिलित हो गए हैं कि

संपूर्ण भारत असत्य राष्ट्रवादियों का राष्ट्र था।

भारत में आर्यों के देशान्तर के अत्यन्त काल्पनिक और आधारहीन सिद्धान्त को प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार भारत, मिश्र आदि के प्रथम अभिषिक्त राजा मनु; मनु के तेजस्वी पुत्र इक्ष्वाकु; शकुंतला के तेजस्वी पुत्र चक्रवर्ती भरत; गंगाकी धारा को मोड़ने वाले भगीरथ; जिसके कारण पवित्र यज्ञिय भूमि कुरुक्षेत्र नाम से विख्यात हुई वह कुरु; दशरथ के पुत्र राम और अनेक दूसरे राजाओं का अस्तित्व भी पूर्णतया नकारा जा रहा है।

वह वैदिक ग्रन्थों के सर्वथा अशुद्ध अनुवाद और वैदिक संस्कृति के मिथ्या प्रस्तुतीकरण के लिए उत्तरदायी था।

कम से कम इण्डो-यूरोपीय समूह की भाषाओं को की जननी के रूप में संस्कृत भाषा को स्वीकार करने की अनुमति नहीं दी, जैसा कि सर्वप्रथम फ्रांज-बॉप ने बड़ी योग्यता से प्रतिपादित किया था और प्राचीन भारतीय लेखकों ने भी बहुधा उल्लेख किया था।

हम इस सारे के लिए दु:खी नहीं है क्योंकि संस्कृत अध्ययन के ऐसे पक्षपाती विदेशी अन्वेषकों से इससे अधिक की आशा नहीं की जा सकती थी। इन संक्षिप्त टिप्पणियों द्वारा हम गम्भीरता से प्रार्थना करते हैं कि- भारतवर्ष के प्रत्येक शिक्षित और विचारशील मनुष्य में सत्य का प्रकाश उदित हो, जिससे राजनैतिक और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के इन दिनों में वह पाश्चात्त्य बौद्धिक दासता के जुए को उतार फेंक सके।

पं. भगवद् दत्त

वेद के अध्ययन का प्रयोजन

(10 मार्च 2000 को अगरतला में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर दिए गए भाषण का यह अंश वर्तमान में अधिक मुखर और प्रासंगिक लगता है।)

वेद संपूर्ण जीवन शास्त्र है। यह ज्ञान भी है, विज्ञान भी, फिजिक्स भी, मेटाफिजिक्स भी, भूतशास्त्र भी, अध्यात्म शास्त्र भी। इसीलिए वेदार्थ के तीन स्तर माने जाते हैं - आधिभौतिक, आधिदैविक एवम् आध्यात्मिक। वेद को त्रयी विद्या कहे जाने का एक कारण यह भी है।

वेद के अध्ययन की परम्परा गुरु-शिष्य परम्परा से जुड़ी रही है। संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ होने पर भी वेद के न लुप्त होने का कारण यही है। वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को पीढ़ी-दर-पीढ़ी शुद्ध रूप में संरक्षित रखने के लिए वेद-पाठ की जो अनेक पद्धतियां भारत में प्रचलित रहीं, वैसी संसार के अन्य किसी भाग में किसी धर्मग्रन्थ के लिए नहीं रहीं। वेदपाठी पंडित आज भी वैदिक मंत्रों का सस्वर पाठ लगभग मूल रूप में सुरक्षित रखे हुए हैं। इस अमूल्य निधि को लुप्त होने से बचाने के लिए आधुनिक वैज्ञानिक यंत्रों का उपयोग कर इन्हें सुरक्षित रखा जाना चाहिए। यह कार्य वैसे शुरू हो चुका है। पर इसे पूरा करने में विलम्ब नहीं होना चाहिए। जो पाठ-भेद या स्वर-भेद मिलते हैं, उन सबका भी संकलन किया जाना चाहिए।

श्वेताश्वतरोपनिषद् में कहा गया है कि ब्रह्मविदों ने ध्यानयोगानुगत होकर देवात्मशक्ति का साक्षात्कार किया (श्वेता. 1.3)। मुंडकोपनिषद् में कहा गया है कि वेदते विज्ञान के सुनिश्चितार्थ के लिए 'शुद्धसत्त्व' होना आवश्यक है; (मुण्डक, 3.2.6) दोनों का मूल प्रयोजन है ध्यानयोग। शुद्धसत्त्व हुए बिना ध्यानयोग सध ही नहीं सकता। ध्यान योगी ही इस ब्रह्म-नाद का श्रवण कर सकता है, जो ब्रह्मण्ड-चेतना से सतत अनुरणित हो रहा है। इसीलिए वेद को श्रुति कहते हैं। इसीलिए ऋषि वेद-मन्त्रों के रचयिता नहीं द्रष्टा हैं। यही वेद की अपौरुषेयता है। आधुनिक मनुष्य के लिए इसे समझने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए, क्योंकि ट्रांजिस्टर, रेडियो, टेलीविजन आदि इसी सिद्धांत के आधार पर, परंतु यांत्रिक प्रक्रिया से, संचार केंद्र से, प्रसारित ध्वनियों का श्रवण करते हैं। वैदिक ऋषि श्रोता के अतिरिक्त द्रष्टा भी थे, क्योंकि ध्यानयोग से प्राप्त शक्ति के कारण वे उस अनुरणन के श्रवण के साथ-साथ उसके वाच्यार्थ का दर्शन भी कर सकते थे। अब ऐसे दूरभाषी यन्त्रों का आविष्कार भी हो ही गया है, जिसमें संताप में संलग्न व्यक्ति एक दूसरे की बात सुनने के अतिरिक्त उसे देख भी सकते हैं। वेदार्थ पर विचार करते समय आधुनिक पण्डितों का ध्यान इस ओर भी जाना चाहिए।

'ब्रह्मसूत्र' के दूसरे सूत्र - जन्मादि यस्य यत: के भाष्य में आदि शंकराचार्य ने 'ब्रह्मज्ञानं वस्तुतंत्र ज्ञानम्' और अन्य ज्ञान को 'पुरुषतंत्रज्ञानम्' कहा है। ब्रह्मज्ञान के पक्ष में संसार के किसी विद्वान् ने इससे अधिक मौलिक और पुष्ट तर्क नहीं दिया। परंतु आचार्य के इस मौलिक तर्क की ओर स्वामी रंगनाथानंद के अतिरिक्त शायद ही और किसी का ध्यान गया हो। महर्षि आइंस्टाइन ने अपने जीवन के अंतिम 50 वर्ष जिस 'एकीकृत क्षेत्र सिद्धांत' (यूनिफाइड फील्ड थ्योरी) की खोज में लगाए, इस सूत्र और उसके ऊपर लिखित भाष्य के आधार पर उसके शोध का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। इसके विस्तार में यहां जाने की आवश्यकता नहीं है। वेद के प्रसंग में यहां इसका संकेत भर इसलिए किया गया है कि वस्तुतंत्रज्ञान - आधुनिक भाषा में निरपेक्ष ज्ञान - के आधार के कारण ही वैदिक ऋषि द्रष्टा थे, मात्र अनुमन्ता नहीं।

भारतीय काल गणना के अनुसार सृष्टि-प्रक्रिया और मानव-विकास का इतिहास इतना प्राचीन है कि वेद

के अध्ययन की परम्परा बीच-बीच में खंडित प्रतीत होती रही है। आश्चर्य की बात यह है कि फिर भी भारतीय पण्डित वेद-मंत्रों की रक्षा करते आए। पर मंत्रों को कण्ठस्थ कर लेना भर पर्याप्त नहीं है। वेद संपूर्ण जीवन का संपूर्ण जीवनशास्त्र है। अतः मंत्रों के अर्थ को ग्रहण कर जीवन को पूर्ण बनाने में उनका उपयोग करने पर ही ऋषियों का प्रयोजन सिद्ध हो सकता है। आधुनिक पाठकों के लिए वेद-मन्त्रों को स्पष्ट करने की दृष्टि से ऋषि दयानन्द, महायोगी अरविंद, वेदमूर्ति सातवलेकर और श्रीराम शर्मा आचार्य के कार्यों का ऐतिहासिक महत्व है। श्री अरविंद ने ऋषि दयानन्द के योगदान के महत्व को स्वयं स्वीकार किया है। उनके प्रयास के बिना वेद को संपूर्ण जीवनशास्त्र के रूप में देखने-समझने की दृष्टि ही नहीं विकसित होती। ब्राह्मणों, आरण्यकों आदि के आधार पर या यास्क के 'निरुक्त' से वैदिक शब्दों के मर्म तक पहुंचने की जो दृष्टि प्राप्त होती थी, सायण के कर्मकाण्डपरक भाष्य ने उसे अवरुद्ध कर दिया। पर सायण के इस ऋण को तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि उनके भाष्य के कारण ही वेद का आधिभौतिक एवं आधिदैविक अर्थ लुप्त होने से बच गया। इसका एक कारण संभवतः यह भी है कि उपनिषद् की वेदान्त के रूप में लगभग एक स्वतंत्र अध्ययन-परंपरा विकसित हो जाने के कारण संहिता के भाष्यकारों ने मन्त्रों के आध्यात्मिक पक्ष के भाष्य पर श्रम करना अनावश्यक मान लिया। लेकिन इसके कारण एक बहुत बड़ी हानि यह हुई कि वेदांती वेद की निंदा करने लगे। गीता तक में 'त्रैगुण्यविषया वेदा व निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन' की बात आ गई (2.45)। ऐसी उक्तियों से वेद के अध्ययन की परम्परा को बड़ा धक्का लगा। जीवन-प्रवाह असंतुलित हो गया। चार पुरुषार्थों में से केवल मोक्ष परम पुरुषार्थ के रूप में प्रतिष्ठा-योग्य माना जाने लगा। ऐसी स्थिति में मानव-समाज का सर्वांगीण विकास कैसे हो सकता है?

आधुनिक युग में आकर इसके कारण वेद के अध्ययन की और शाखा फूट पड़ी। वेदान्त को वेद से अलग कर दिया गया। पाश्चात्य पंडित एवं उनके भारतीय अनुयायी वैदिक कर्मकाण्ड के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में विकसित मानकर वेदांत को ज्ञानकाण्ड के रूप में देखने लगे। वे इसका विस्मरण कर गए कि उपनिषदों में शीर्षस्थानीय 'ईशावास्योपनिषद्' यजुर्वेद संहिता का ही अंतिम अध्याय है। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि इसके स्थान पर बृहदारण्यक एवं छान्दोग्य को प्राचीनतर उपनिषद् माना जाने लगा। एक बार मैंने जब डॉ. राधाकृष्णन से इसकी चर्चा की तो उन्होंने कहा कि यही प्रचलित मत था, इसीलिए उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया। वेद के अध्ययन में रुचि लेने वालों को ऐसी अनेक भ्रांतियों का भी निराकरण करना होगा, नहीं तो पाश्चात्य पंडित वेद को या तो गड़रियों का गीत कहते रहेंगे या उसमें इतिहास ढूंढते रहेंगे। ये सब वेद को जीवनशास्त्र के रूप में समझने में बाधक होते आ रहे हैं।

वेद के जीवन शास्त्र का स्वरूप

संपूर्ण वैदिक वाङ्मय 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' (ऋ.1.164.46) का विश्व-रूप है, विराट् दर्शन है। वेद के इस अद्वैत-भाव का तत्व-दर्शन का सर्वात्म-भाव रूप है - 'कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम्' (ऋ. 6.635)। इन दिनों जिस भूमण्डलीकरण की बहुत चर्चा है उसका वैदिक रूप है - 'यत्र विश्वं भवति एक नीडम्' (यजु.32.8) वैदिक धारा की इस त्रिवेणी का संगम है इस जीवन-योग से प्राप्त आत्मज्ञान जिसे 'सोऽहंमस्मि', 'तत्त्वमसि', 'अहम् ब्रह्मास्मि' आदि अनेक रूपों में व्यक्त किया जाता रहा है।

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदंति' वेद को समझने का सूत्र है। सूत्र के बिना वेद के अध्येता और साधक भटकते रह जाते हैं। इन भटकने वालों को वेद में बहुदेववाद दिखाई देता है प्रकृति की पूजा दिखाई देती है, सभ्यता और संस्कृति के विकास का शैशव दिखाई देता है। उन्हें केवल नहीं दिखाई देता है 'अविभक्तं विभक्तेषु; (गीता, 18.20) क्योंकि ये सर्वत्र भेद देखने के ही अभ्यस्त होते हैं। यह दृष्टि विश्लेषण की है, संश्लेषण कि नहीं। यह निर्जीवशास्त्र (Inorganic) है, सजीवशास्त्र (Organic) नहीं। लेकिन जीवनशास्त्र को और जीवशास्त्र को सजीवशास्त्र के बिना

कैसे समझा जा सकता है? निर्जीवशास्त्र में एक को एक से निकाल लेने पर शून्य रहता है। पर सजीवशास्त्र में एक बीज को निःशेष होकर अंकुरित-विकसित होने से उसमें से वैसे हजारों बीज निकल आते हैं। भौतिक विज्ञान में यह समझ विकसित होने पर ही पञ्चम आयाम और एकीकृत सिद्धान्त का स्वरूप समझ में आएगा।

पंडितों ने 'आर्य' शब्द के संबन्ध में भी ऐसा ही भ्रम फैला रखा है। वेद में आर्य शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के 'रेस' शब्द के अर्थ में हुआ ही नहीं है। अतः आर्य जाति नहीं, संस्कार है। इसीलिए वैदिक ऋषि जब यह कहते हैं कि आओ, सारे विश्व को आर्य बनाएं, तब उनका प्रयोजन जन्म पर आधारित भेदभाव के बिना सबको संस्कारवान् बनाना होता है। यदि आर्यत्व या वर्ण-व्यवस्था जन्म पर आधारित होती तो तो ब्राह्मणकुलोत्पन्न रावण के नाश के लिए रामावतार की क्यों आवश्यकता पड़ती? राक्षस कुल में उत्पन्न बलि को अगले मन्वन्तर का मनु क्यों बनाया जाता? इसी वैदिक परियोजन को ध्यान में रखकर महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी।

भूमण्डलीकरण मात्र बाजार का वैश्वीकरण है, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का इसमें सर्वथा अभाव है। भूमण्डलीकरण राजनैतिक-आर्थिक व्यवस्था है, 'वसुधैव कुटुंबकम्' या 'यत्र विश्वं भवति एक नीड़म्' सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था। जहां पहले में सत्ता प्रधान है, वहां दूसरे में सत्य। सत्य हारती-जीतती है, सत्य दबता-उभरता है। वैदिक मानव-समाज को, वसुधा को एक कुटुम्ब के रूप में पालित-पोषित करने के मर्म से अवगत कराने का समय अब आ गया है। वैज्ञानिक साधनों के कारण भौगोलिक दूरी तो कम जरूर हुई है, परन्तु मनुष्य मनुष्य के बीच की मन की दूरी में वृद्धि ही हुई है। इसके कारण उसकी संवेदनशीलता भी कुंद होती जा रही है।

वेद ने स्वयं घोषणा की है कि उसकी वाणी सब के लिए है -

यथेमां वाचं कल्याणीम् / आवदानिजनेभ्यः / ब्रह्म राजन्याभ्यां / शूद्राय चार्याय च / स्वाय चारणाय च।

अर्थात् मेरी वाणी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र देशी-विदेशी सभी लोगों के कल्याण के लिए है। जो सबके कल्याण के लिए है उसके अध्ययन से किसी को वंचित रखने का प्रश्न ही कहां उठता है? ऐसा करना अवैदिक है, वेद-विरुद्ध है।

संसार भर के सभी धर्मग्रंथों में केवल वेद में ही स्त्रियों को समान अधिकार एवं सम्मान प्राप्त है। वेद-मंत्रों की रचयिताओं में ऋषिकाएं भी हैं। इसीलिए वेद में अद्वैत-तत्व ही नहीं, अभेद-तत्व भी है।

वेद में दृष्टि-निष्ठा है, व्यक्ति-निष्ठा नहीं। इसीलिए इसमें एकेश्वरवाद नहीं, अपितु अद्वैतवाद है। वेद ने व्यष्टि-निष्ठा को समष्टि-निष्ठा की उदात्तता दी है। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में अग्नि देवता पुरोहित हैं, पूरे पुर का हित-साधन करने वाले हैं, किसी एक व्यक्ति का नहीं। इसके अंतिम सूक्त तक यही दृष्टि-निष्ठा, यही समष्टि-निष्ठा है - **'समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तम् एषाम्'** (ऋ. 10.191)। आज सारे संसार से 'सह चित्तम् एषाम्' की सह-चित्तता की, भावना का लोप होता जा रहा है, जो समानता दिखती है, वह बाहरी है, आन्तरिक नहीं। इसीलिए चारों ओर अन्तहीन तनाव दिखाई देता है।

वैदिक परम्परा की वस्तुतंत्रता और समष्टि भावना के कारण, भारत में ज्ञान और विज्ञान, भौतिक ज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान में टकराव की स्थिति नहीं आई, जैसा कि अन्य परम्पराओं में हुआ। इसीलिए यहां महर्षि आइंस्टाइन का पदार्थ और ऊर्जा की परस्पर परिवर्तनीयता का सिद्धांत वेदान्त की मूल स्थापना की नई व्याख्या प्रतीत होता है। इस ज्ञान-विज्ञान के आलोक में वेद से नए मुक्त विश्व-समाज की स्थापना में सहायता ली जा सकती है। वेद के अध्ययन की प्रासंगिकता के प्रसंग में इसका सदा स्मरण रखा जाना चाहिए।

(नवनीत दिसम्बर 2000 के अङ्क से साभार संकलित)

प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद

''संस्कृतशिक्षया कौशलविकासः संभवति''

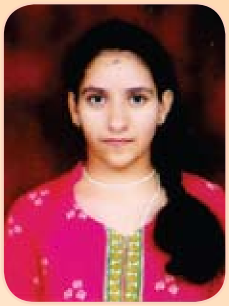

दन्तधावनं स्नानं वस्त्रधारणं भोजनं इत्यादीनि जीवनस्य सामान्यानि कार्याणि कथं भवेयु:? इत्यस्य परिचयं सर्वे गृहात् एव आप्नुवन्ति। कथं जीवनीयम्? इत्येतत् चित्रं पितरौ बान्धवा: चैव कस्यचित् शिशो: मनसि रचयन्ति। न विद्यालयेन, न सर्वकार-नियमेन, न माध्यमै: वा एतत् सम्भवति। एतानि जीवनस्य मूलभूत चिंतनानि गृहात एवं सर्वे लभ्यन्ते। अत: गृहं जीवन शिक्षणस्य प्रमुख प्रधानं च स्थानम् अस्ति। वस्तुत: सर्वप्रथमम् अस्माकं कर्त्तव्यम् अस्ति यत् परिवारे प्रत्येकं सदस्ये संस्कृतभाषां प्रति रुचि: उत्पन्ना भवेत् यतोहि संस्कृतशिक्षया एव मानवस्य सर्वांगीण-विकास: सम्भवति। एकम् उदाहरणं पश्याम: -''स्वामिना विवेकानन्देन बाल्ये मातु: लालन-प्रेरणा च या प्राप्ता सा एव अश्वचालकं कृतवती।'' संस्कृतभाषायाम् ईदृश्या: अनेका: नैतिक-कथा सन्ति या पठित्वा मानव: सद्गुणै: परिपूर्ण: भवितुं शक्नोति। संस्कृति: बौद्धिकस्तरमात्रे न तिष्ठति अपितु सा तु जीवनस्य विषय: पालनस्य विषय: आचरणस्य विषय: अस्ति। संस्कृति पालनेन तस्य आत्मविश्वास: चापि वर्धते। उद्धरेत्-आत्मनात्मानम् इति वचनं प्रसिद्धम्। अत: आत्मना एवं स्वस्थ उद्धार: करणीय:। स: केवलया बुद्धया अवगमनेन न भवति अपितु जीवने तत्त्वस्य अनुसरणेन एव भवति।

एकस्मिन् चिकित्सके यदि कर्त्तव्यनिष्ठाया: गुण: न अस्ति तर्हि स: स्वकार्ये सफल: न भवितुं शक्नोति। अत: एतस्य प्रकारस्य गुण: संस्कृतशिक्षाया एव प्राप्तुं शक्नोति। अद्य कम्प्यूटरस्य युग: अस्ति। अस्मिन् युगे कम्प्यूटर नाम यंत्रस्य महत्त्वं सर्वविदितमेव। वैज्ञानिकै अस्य कम्प्यूटरस्य कृते संस्कृतभाषा सर्वथा आनुकूल्यं मन्यते। अत: भविष्ये कम्प्यूटर यंत्रंचालनाय अस्या: भाषाया: महत्त्वं अस्ति इति मन्यते। अद्य प्रतियोगितात्मक: युग: अस्ति। सर्वासु क्षेत्रेषु प्रतियोगिताया: आयोजनं भवति एव। अस्मिन प्रतिस्पर्धात्मके युगे ते खलु छात्रा: उन्नतिं कुर्वन्ति, ते स्वलक्ष्यं गृह्णन्ति ये श्रेष्ठतम् अंकान् लभन्ते। अत: सर्वश्रेष्ठानाम् अंकानां महत्त्वं स्पष्टमेव। संस्कृतम् एका वैज्ञानिकी भाषा अस्ति अत: विज्ञानवत् अस्याम् अपि छात्रै: अंका: उपलभ्यन्ते। संस्कृतस्य अध्येतार: छात्रा: योग्यताक्रमे: प्राप्नुवन्ति अनया एव विशेषतया-सर्वासु उच्चप्रशासनिक सेवाया: परीक्षासु अपि अस्या: भाषाया: उपयोगिता सुस्पष्टा। अस्या: वाङ्मय: वेदै: पुराणै: नीतिशास्त्रै: चिकित्साशास्त्रादिभिश्च समृद्धमस्ति। चाणक्य रचितम् अर्थशास्त्रं जगति प्रसिद्धम्। गणितशास्त्रे शून्यस्य प्रतिपादनं सर्वप्रथमं सिद्धांतशिरोमणि: भास्कराचार्य: अकरोत्। चिकित्साशास्त्रे चरकसुश्रुतयो: योगदानं विश्व-प्रसिद्धम्। संस्कृते यानि अन्यानि शास्त्रापि विद्यन्ते तेषु खगोल-विज्ञानं वास्तुशास्त्रं, रसायनशास्त्रं, ज्योतिषशास्त्रं, विज्ञानशास्त्रं च उल्लेखनीयम्। उपर्युक्तानां शास्त्राणाम् अध्ययनं कृत्वा मानवस्य कौशलविकास: निश्चितरूपेण सम्भवति:। संस्कृतस्य इदं वैशिष्टयं वर्तते यत् अस्या: वाङ्मये विद्यमाना: सूक्तय: अभ्युदयाय प्रेरयन्ति। वरिष्ठान् कनिष्ठान् च प्रति अस्माभि: कथं व्यवहर्तव्यम् इत्यस्य व्यावहारिकं ज्ञानं संस्कृतमेव ददाति। भारत-सर्वकारस्य व्यावहारिकं ज्ञानं संस्कृतस्य सूक्तय: ध्येयवाक्य रूपेण स्वीकृता: सन्ति। भारतस्य सर्वकारस्य राजचिह्ने उत्कीर्णा सूक्तिं सत्यमेव जयते इति सर्वे जानन्ति। एवमेव राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद: ध्येयवाक्यं विद्ययाऽमृतमश्नुते वर्तते। केचन जना: कथयन्ति यत् संस्कृत भाषायां केवलं धार्मिक-साहित्यं वर्तते। एषा धारणा समीचीना नास्ति। संस्कृत ग्रन्थेषु मानवजीवनाय विविधा: विषया: समाविष्टा: सन्ति। महापुरुषाणां मति: उत्तमजनानां धृति: सामान्य जनानां जीवन-पद्धति: च वर्णिता: सन्ति। संस्कृतशिक्षया कौशलविकास: संभवति। अद्य अखिलं विश्वं योगक्रियां स्वीकरोति। स्थाने-स्थाने योगस्य शिविराणि उपभोज्यन्ते। अनेन मानव: वृत्त्यवरुरं लभन्ते। अत: अस्माभि: संस्कृतम् अवश्यमेव पठनीयं येन मनुष्यस्य समाजस्य च परिष्कार: भवेत्।

''पठामि संस्कृतं नित्यं, वदामि संस्कृतं सदा।
ध्यायामि संस्कृतं सम्यक् वन्दे संस्कृत-मातरम्।।
अत: संस्कृतशिक्षया एवं मानवस्य कौशलविकास: संभवति।

कु. आरती
बी. ए. इतिहास (ऑनर्स) प्रथम वर्ष

भारतीय संस्कृति में संस्कारों की कल्पना

भारतीय समाज 'संगच्छध्वम् संवदध्वम् संम वो मनांसि जानताम्' की उदात्त भावना से अनुप्राणित है।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों की योजना वास्तव में मानव के नव-निर्माण की नींव है। इन संस्कारों का सूक्ष्म विश्लेषण करने पर इनमें विभिन्न वैयक्तिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक तथ्य दृष्टिगत होते हैं, जो सोद्देश्यपूर्ण हैं -

1. अवाञ्छित प्रभावों को दूर करना।
2. प्रेम व परस्पर सौहार्द व सख्य भाव को विकसित करना।
3. सुरक्षा की भावना का विकास।
4. गर्भ एवं बीज संबंधी दोषों का निवारण।
5. चारित्रिक गुणों का विकास।
6. पारिवारिक व सामाजिक कर्त्तव्यों का बोध।
7. अनुशासित व संयमित जीवनचर्या को विकसित करना आदि।

भारतीय समाज में प्रायः सोलह संस्कार ही महत्त्वपूर्ण माने गए हैं -

1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमंतोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन, 8. चूड़ाकर्म, 9. कर्णवेध, 10. विद्यारंभ, 11. उपनयन, 12. वेदारंभ, 13. केशांत, 14. समावर्तन, 15. विवाह, 16. अंत्येष्टि

गर्भाधान - अर्थात् गर्भ का आधान। जिस कर्म के द्वारा गर्भ को धारण किया जाता है, संस्कार-विधि में इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है - 'गर्भस्याऽऽधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणं यस्मिन् येन वा कर्मणा तद् गर्भाधानं'

पुंसवन - 'पुमान् सूयते यस्मात्' अर्थात् बलवान संतान की उत्पत्ति के लिए किया जाने वाला संस्कार पुंसवन संस्कार के नाम से जाना जाता है।

सीमंतोन्नयन - सीमांत (माँग) निकालना। स्त्री के केशों को ऊपर उठाकर केश संवारना अथवा विभाजित करना। यह समय गर्भस्थ शिशु के मानसिक विकास का है। अतः इस संस्कार का उद्देश्य गर्भ में स्थित शिशु की मानसिक शक्ति को प्रभावित करना है।

जातकर्म - बालक के जन्म के समय जिस संस्कार का विधान है, वह जातकर्म है। यह संस्कार शिशु बुद्धि उत्पादन और आमृवृद्धि हेतु किया जाता है।

नामकरण - इस संस्कार के लिए भिन्न-भिन्न कालों की व्यवस्था शास्त्रों में मिलती है। पारस्कर में इसका समय जन्म के दसवें दिन, मनुस्मृति में दसवें व बारहवें दिन उल्लिखित है।

निष्क्रमण - जन्म के पश्चात् प्रथम बार बालक को घर से बाहर निकालने की प्रक्रिया इस संस्कार के द्वारा होती है। जन्म के चतुर्थ मास में यह संस्कार किया जाता है।

अन्नप्राशन – अन्न का प्राशन (भक्षण) कराना। यह संस्कार जन्म के छठे माह में निष्पन्न होता है।

चूड़ाकर्म – बालगुच्छ या शिखा रखना। यह संस्कार जन्म के प्रथम अथवा तृतीय वर्ष में या किसी मंगल समय में सुविधानुसार करना चाहिए।

कर्णवेध – कान बींधना। यह संस्कार तीसरे या पाँचवें वर्ष में किया जाता है। सुश्रुत संहिता में वर्णित है कि इस संस्कार को करने से रोगों से रक्षा होती है। 'रक्षा भूषणानिर्मितं बालस्य कर्णौ विध्येत्।

उपनयन – बालक को शिक्षित करने हेतु किया जाने वाला यह संस्कार सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उपनयन का शाब्दिक अर्थ है- ले जाना, अर्थात् विद्या प्राप्ति के निमित्त बालक को गुरु के समीप ले जाना।

वेदारंभ – गायत्री मंत्र से लेकर चारों वेदों के सम्यक् अध्ययन करने के लिए जो व्रत धारण किया जाता है उसे ही वेदारंभ संस्कार की संज्ञा दी जाती है। यह संस्कार उपनयन के अवसर पर ही किया जाता है।

केशांत – केशों का अंत इस संस्कार के द्वारा ब्रह्मचारी की दाढ़ी व मूंछ नाई द्वारा साफ की जाती थी। इस अवसर पर नाई को उपहार तथा आचार्य को गाय दान की जाती थी, इसलिए इसे गोदान भी कहते हैं।

समावर्तन – यह शिक्षा समाप्ति के बाद होने वाला संस्कार है। समावर्तन का शाब्दिक अर्थ है गुरुकुल से शिक्षा ग्रहण करने के बाद घर की ओर लौटना।

विवाह – यह संस्कार समस्त संस्कारों में महत्वपूर्ण है। इस संस्कार के द्वारा ब्रह्मचर्य आश्रम से गृहस्थ आश्रम में प्रवेश होता है। इसके द्वारा व्यक्ति का समाजीकरण होकर उत्तरदायित्त्वपूर्ण जीवन प्रारंभ होता है।

अन्त्येष्टि – मृत्यु के पश्चात् किया जाने वाला संस्कार अन्त्येष्टि संस्कार है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ये संस्कार मनुष्य के क्रमिक विकास के साथ उसके समग्र जीवन में उन गुणों का संग्रह करता है, जो उसे समाज के साथ स्थापित करने में सहायक होते हैं और उन दोषों का निवारण करते हैं जो सामाजिक सामंञ्जस्य में बाधक होते हैं।

महेश

तृतीय वर्ष

बलवान् कः

पुरातनकाले गङ्गातीरे कश्चन आश्रमः आसीत्। तत्र याज्ञवल्क्यः नाम महर्षिः वसति स्म। सः कदाचित् श्येनमुखात् पतिताम् एकां मूषिकां दृष्टवान्। करुणया सः तां मूषिकां आश्रमं नीतवान्। तत्र मन्त्रबलेन तां कन्यकां कृतवान्। याज्ञवल्क्यस्य सन्ततिः न आसीत्। अतः तां कन्यकां स्वपुत्रीम् इव महर्षिः पालितवान् कालान्तरे सा कन्यका विवाहयोग्या जाता। याज्ञवल्क्यः सूर्येण सह तस्याः विवाहं कारयितुम् इष्टवान्। अतः सः पुत्रीं पृष्टवान् – ''भवती किं सूर्यं परिणेष्यति? इति तदा सा उक्तवती–''अहं सूर्यस्य तापं सोढुं न शक्नोमि। अतः इतोऽपि उत्तमम् अन्यं वरं भवान् सूचयतु'' इति।

ऋषिः सूर्यम् एव पृष्टवान्– ''भगवन्! भवतः अपेक्षया उत्तमः वरः कः? इति।

सूर्य उक्तवान् – ''मेघः माम् आच्छाद्या तिष्ठति। सः मम अपेक्षया बलवान् योग्यः चापि'' इति।

ऋषि मेघम् आहूतवान्। पुनः पुत्री पृष्टवान्– ''भवति एनं परिणेष्यति किम्?'' इति।

सा उक्तवती–''एतस्य वर्णः कृष्णः। अतः एषः मास्तु मे वरः इतोऽपिं उत्तमं वरं भवान् सूचयतु'' इति।

ऋषि मेघं पृष्टवान्। मेघः उक्तवान् –वायुः सहस्रधा मम विभागं करोति। अतः सः एव मम अपेक्षया बलवान्'' इति।

ऋषिः वायुम् आहूतवान्। परन्तु पुत्री वायुम् अपि न अङ्गीकृतवती। '' इतोऽपि बलवान् कः अस्ति?'' इति पृष्टवती।

''अहं पर्वतं कम्पयितुं न शक्नोमि। अतः पर्वतः एव बलवान्'' इति वायुः उक्तवान्। अनन्तरं ऋषिः पर्वतम् आहूतवान्।

परन्तु पर्वतः उक्तवान्– ''यद्यपि अहम् बलवान् तथापि मूषकः मम शरीरे सर्वत्र बिलम् करोति। अतः मूषकः एव मम अपेक्षया बलवान्'' इति। ऋषिः मूषकम् आहूतवान् पुत्रीं च पृष्टवान् – ''भवती एतं परिणेष्यति किम्? इति।

सा सन्तोषेण अङ्गीकृतवती। अनन्तरं ऋषिः तां मूषिकां कृत्वा मूषकेण सह तस्याः विवाहं कारितवान्। वस्तुतः स्वभावोहि दुरतिक्रमः।

काजल अग्रवाल
संस्कृत (विशेष) स्नातक
तृतीय वर्ष

कर्कटस्य उपाय:

कस्मिंश्चित् वने कश्चन वटवृक्ष: आसीत्। तस्मिन् वृक्षे बहव: बका: वासं कुर्वन्ति स्म। वृक्षस्य कोटरे एक: कृष्णसर्प: अपि वासं करोति स्म।

एकदा कृष्णसर्प: एकस्य बकस्य शावकान् खादितवान्। तदा स: बक: अत्यन्तं दु:खित: अभवत्। स: एकस्य सरोवरस्य तीरम् आगत्य नेत्राभ्याम् अश्रूणि मुञ्चन् स्थितवान्। तदा एक: कर्कटक: तं पृष्टवान् "माम! किमर्थं भवान्! रोदनं करोति?" इति।

तदा बक: उक्तवान् – "कृष्णसर्प: मम शावकान् खादितवान्। अत: अहं दु:खित: अस्मि। तस्य दुष्ट सर्पस्य मरणार्थं भवान् एकम् उपायं वदतु" इति।

कदा कर्कटक: चिन्तितवान् – 'वस्तुत: एष: बक: अस्माकं जातिवैरी। अत: अहं कृष्णसर्पं मारयितुं तादृशम् उपायं वदामि, येन बकस्य अपि मरणं भवेत्' इति।

अनन्तरं स: उक्तवान् – माम! भवान् एतस्य नकुलस्य बिलद्वारत: कृष्णसर्पस्य कोटरपर्यन्तम् अपि मत्स्यखडान् प्रक्षिपतु। नकुल: तेन एवं मार्गेण आगत्य कृष्णसर्पं मारयिष्यति" इति।

बक: तथैव कृतवान्। नकुल: मत्स्यखण्डान् खादन् अग्रे-अग्रे आगत्य कृष्णसर्पस्य कोटर दृष्टवान्। कृष्णसर्पं मारितवान्। अनन्तरं शनै: शनै: तस्मिन् वृक्षे स्थितान् सर्वान् बकान् अपि मारितवान्।

व्यर्थ: मूर्खोपदेश:

कुत्रचित् कश्चन तमालवृक्ष: आसीत्। तस्य वृक्षस्य शाखायाम् एक: नीड: आसीत्। तत्र कश्चन चटक: पत्न्या सह वसति स्म। कदाचित् वर्षाकाल: आगत:। बहि: सर्वत्र शीतलं वातावरणम् आसीत्। नीडे तु औष्ण्यम् आसीत्। अत: चटक: निरातङ्क: आसीत्।

तदा कश्चन वानर: तत्र आगतवान्। वृष्ट्या तस्य शरीरं क्लिन्नम् आसीत्। शैत्येन स: कम्पते स्म। स: वानर: दन्तवीणां वादयन् वृक्षम् आरुह्य उपविष्टवान्।

तं दृष्टा चटका उक्तवती – "किं भो:। भवत: अपि हस्तपादसहितं सदृढं शरीरम् अस्ति। तथापि एकं गृहं निर्माय तत्र वासं कर्तुं भवान् किं न शक्नोति? किमर्धम् एवं शीतपीडाम् अनुभवतिं भवान्?" इति।

तत् श्रुत्वा वानर: उक्तवान् – "रे, अधमे! किमर्थं मौनं न साधयति भवति? मम विषये भवति किमर्थं चिन्तयति?" इति।

परन्तु चटका मौनन न स्थितवती। पुन: तथैव उपदेशम् आरब्धवती। तदा वानर: कपित: सञ्जात:। स: तां शाखाम् आरूह्य चटकाया: नीडं शतधा खण्डश: कृतवान् एवं मूर्खम् उद्दिश्य उपदेशेन चटकाया: नीड: एवं नष्ट: अभवत्। अत: मूर्खाय कदापि उपदेश: न कर्तव्य:।

मिताली भारद्वाज
स्नातक (विशेष) संस्कृत

हिन्दी खण्ड

संपादक की कलम से

युवा मन को विचारों की सबसे उर्वर भूमि के रुप में स्वीकार किया गया है। युवा वर्ग का अपने समाज और उसकी विसंगतियों के प्रति संवेदनशील जवाबदेह होना अपेक्षित है। विश्वविद्यालय/कॉलेज ऐसा प्लेटफार्म है जो युवामन को रचनात्मक उड़ान के लिए आकाश देता है। छात्र-जीवन ज्ञान अर्जन के साथ-साथ अच्छी नागरिकता की भी पाठशाला है। कॉलेज में अध्ययनरत विद्यार्थियों का यह दायित्व बनता है कि निजी महत्त्वाकाक्षांओं से बाहर निकलकर अपने समय समाज और राजनीति के प्रति भी जागरूकता पैदा करे। कॉलेज पत्रिका अपने समय की चिंताओं के बारे में लिखने का मंच है। छात्रों की रचनाशीलता को समृद्ध बनाती है तथा उनके अन्दर के लेखक को बाहर निकालने का अवसर भी देती है। देश के विभिन्न मसलों/सवालों पर छात्रों के रचनात्मक पहलू को कॉलेज पत्रिका सामने लाती है। यहां हमारे छात्रों की रचनात्मक क्षमता को नया क्षितिज मिलता है। पत्रिका के माध्यम से अलग-अलग मसलों पर युवाओं के अलग-अलग विचार, उनके अन्दर के सरोकार, उनके सोचने का तरीका, उनकी बेचैनी, उनका नजरिया, दृष्टिकोण सामने आता है। यह छात्रों के नागरिकता की गुणवत्ता की पहचान कराती है। कॉलेज जीवन के तीन वर्ष में छात्र का कच्चा मन पक कर ठोस रूप ग्रहण करता है। कॉलेज की विभिन्न गतिविधियों के जरिये वह अपने व्यक्तित्त्व के विविध आयामों पर धार चढ़ाता है। यहां एक बेहतर नागरिक की बुनियाद तैयार होती है। इस दृष्टि से कॉलेज पत्रिका की भी विद्यार्थियों के छात्र-जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

सामाजिक जीवन में अपने आप को बचाये रखने के लिए अभिव्यक्त करने की जरूरत पड़ती है। ऐसे में यह देखने की जरूरत है कि हमारे विद्यार्थियों के व्यापक संसार और उनकी रचनाशीलता को खाद-पानी मिल रहा है या नहीं? देश के महत्वपूर्ण मसलों/चिंताओं पर उनके मन में कुछ सवाल बेचैन टहल रहे हैं या नहीं? कहीं हमारे युवा-वर्ग की नजरों से देश के बहुत ही बुनियादी सवाल पिछे तो नहीं छूटते जा रहे हैं? यह पत्रिका हमें बताती है कि हमारा युवा मन क्या सोच रहा है? साथ ही शिक्षक होने के नाते हमें यह पता चलता है कि हम कैसे छात्र, कैसे नागरिक, कैसे मनुष्य तैयार कर रहे हैं। उनकी रचनाओं के जरिये युवा-मन की बेचैनी को जानने का अवसर मिलता है।

सभ्यता के विकास के साथ-साथ मानवता के बुनियादी सवाल आज मीडिया की आंखों से ओझल हो गये हैं। ऐसे में हमारे युवा-वर्ग को कैसे सरोकार मिल रहे हैं और कैसी मानसिक बुनावट तैयार हो रही है। चिंता का विषय है कि हमारे युवा वर्ग अपने समय के सरोकारों और चिंताओं के प्रति उदासीन है। वास्तव में, कॉलेज पत्रिका फीडबैक की प्रक्रिया है। जिससे यह पता चलता है कि हमारे छात्रों के अंतर्जगत में क्या चल रहा है। मुझे यह कहते हुए पीड़ा हो रही है कि कहीं न कहीं हमारे छात्र किसानों, पर्यावरण, बेरोजगारी, आदिवासियों, दलितों, पिछड़े आदि समाज के सामने चुनौतियों की तरह खड़े अन्य सवालों को लेकर उतने मुखर नहीं है। वो उनकी चिंताओं के दायरे से बाहर हैं।

पत्रिका की रचनाओं को देखकर लगता है कि बच्चों ने युवा मन की कविताएँ लिखी हैं। जिस तरह से युवा शुरूआती दौर में प्रेम, स्त्री को लेकर कविताएं लिखा करता है। बाल मन की कविताओं का भले ही रचनात्मक और साहित्यिक मूल्य न हो, लेकिन उनका मूल्य उनके प्रयास को लेकर है। इससे यह पता चलता है कि व्यक्ति की स्वाभाविक अभिव्यक्ति कविता है। यह विचार पुख्ता हो जाता है कि हर व्यक्ति के भीतर भी कवि है। प्रेम,

स्त्री, बचपन, शिक्षा पर हमारे छात्रों द्वारा लिखी गई कविताओं को गुणवत्ता के हिसाब से भले ही न आँका जाए। लेकिन एक युवा मन की कोमल अभिव्यक्ति के लिए प्रयास के तौर पर महत्त्वपूर्ण है। साहित्यिक गुणवत्ता के हिसाब से उनका बहुत ज्यादा मूल्य भले न हो, लेकिन भावना, कोमल अभिव्यक्ति और प्रयास को लेकर उनका मूल्य ज़रूर है। वास्तव में, कॉलेज पत्रिकाएँ किसी छात्र के भीतर यही भावना जगाने का काम कर सकती है कि उनके भीतर भी एक रचनाकार है। आगे चलकर भी कॉलेज पत्रिका छात्रों को रचनात्मकता की ओर उन्मुक्त कर सके। यही इस 'अंकुर' पत्रिका और इस प्रयास की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी। हम वैसे भी कॉलेज पत्रिका को साहित्यिक कलेवर देने के पक्ष में नही है। हमारा मानना है कि छात्र कॉलेज पत्रिका को उस परती जमीन के तौर पर देखे जहां वह चिंताओं और किसी भी तरह की हिचक से मुक्त होकर हल चला सकता है और रचनात्मकता का पौधा बौने की कोशिश कर सकता है। इसी रूप में इस प्रयास की सार्थकता है।

अंत में गुरूवर डॉ. अवनिजेश अवस्थी, डॉ. उर्वशी साबू, डॉ. वीणा, रेनू कपूर, डॉ. कुसुम कौशिक, आरती माथुर, शुचि पाहुजा, वरूण गौतम, मुकेश बैरवा, डॉ. चैन सिंह मीना, वेद प्रकाश, प्रदीप कुमार सिंह, धर्मराज कुमार और अन्य सभी साथियों का प्रत्यक्ष और परोक्ष रुप में सहयोग मिला। उनका तहेदिल से शुक्रिया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल को शुक्रिया कहना चाहता हूँ, जिनके नेतृत्व में हर साल की तरह रचनात्मकता का यह उत्सव मनाया जा रहा है। मैं कामना करता हूँ कि यह सहयोग आगे भी मिलता रहेगा और छात्र इसी तरह अपनी रचनात्मकता का प्रर्दशन करते रहेगें। साथ ही मैं इस अवसर पर तृतीय वर्ष के सभी छात्रों को भविष्य की शुभकामनाएं देना चाहता हूँ और यह उम्मीद करता हूँ कि आने वाले समय में कॉलेज का नाम रोशन करेंगें।

शुक्रिया

डॉ. बन्ना राम मीना

गद्य खण्ड

जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, अध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममे गति और शक्ति न पैदा हो, हमारा सौन्दर्य प्रेम न पैदा हो, जो हममें संकल्प और कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं है।

– प्रेमचंद

गद्य खण्ड

क्र. सं.	विषय		नाम
1.	एक झलक मात्र	-	सांस्कृतिक समिति
2.	मिल्की व्हाइट	-	डॉ. योगेन्द्र कुमार
3.	समाज की धारणा	-	स्वीटी बवारी
4.	समय का बदलाव	-	वंशिका प्रजापति
5.	जीवन शब्द में छुपा रहस्य	-	वंशिका प्रजापति
6.	दान की महिमा	-	स्वीटी बवारी
7.	संकल्प शक्ति	-	आनन्द मिश्रा
8.	बचपन की कुछ यादें	-	तस्लीमा
9.	मेरे विचार	-	रोहित कुमार
10.	साहित्यकार का जीवन	-	निशु
11.	एक कहानी	-	शांतनु गर्ग
12.	कभी हार मत मानो	-	गीता यादव
13.	जरुरत है कुछ करने की	-	मोहम्मद मुस्तफा
14.	तोहफा	-	अंशुमानद नाथ चौधरी
15.	नया साल नई चुनौतियाँ	-	फरजाना
16.	गरीब के जूते	-	परमहंस
17.	पाँच सौ का नोट	-	सुनैना
18.	वास्तविक जीवन का हीरो पिता	-	शुभम चतुर्वेदी

मिल्की व्हाइट

'मिल्की व्हाइट' असल में कुछ नहीं .... दरअसल बहुत कुछ है। लगन का वसंत आते ही होनहार लड़कों के लिए उनके परिवारों में इस 'चीज' की डिमांड में उछाल इतनी ज्यादा आ जाती है कि एक से बढ़कर एक सुघड़ – सुंदर – सुशील – कृष्ण कन्याओं को वे ठीक उसी तरह 'रिजेक्ट' कर देते हैं; जैसे आजकल जरा 'एडवांस ख्याल' के लोग अपनी सभ्यता, संस्कृति, देशी भोजन और भाषा को रिजेक्ट कर देते हैं; .... पुत्र पैदा करना और होना ही गर्व की बात है, ... और ऐसा हो भी क्यों नहीं, ... ऐसी उपलब्धि 'अचीव' करके केवल पुरुषों के ही बाँछे नहीं खिलती, स्त्रियों के भी पाँव जमीन पर नहीं पड़ते। पुत्र के शुभागमन के लिए स्त्री–पुरुष दोनों ही केवल अपने इष्टदेवों से नहीं, ... नदियों, पर्वतों, वृक्षों, गायों और संत–फकीर, पीर–बाबाओं आदि इत्यादि की पूजा–अर्चना, झाड़–फूँक, माला–गंडा–ताबीज सबकी खाक छान आते हैं.. यह उद्यम लोक प्रसिद्ध है। इसकी विलोम कामना–पूर्ति के लिए राजा–से–रंक, खास से आम... आज तक ऐसा उद्यम किसी ने भी किया हो तो मेरी जानकारी में एकदम अज्ञात और दुर्लभतम मामला हो सकता है। खैर छोड़िए ! लड़के तो सभी लड़के होते हैं और जिनके लड़के होते हैं उनकी तो बात ही कुछ और होती है। दूल्हा ! दूल्हा तो दुर्लभ होता है। और जो दुर्लभ होता है उसकी औकात (वैल्यू) तो आप जानते हैं और जानेंगे भी क्यों नहीं.. हम सब भी तो उसी परंपरा के ध्वजवाहक जो ठहरे ! अगर ये ध्वज हम सब न उठाए होते और न उठाएँगे तो सदियों से अपने वर्चस्व का लाल कब का इंडिया गेट का चौरस मैदान हो गया होता। अपने वर्चस्व का झंडा बुलंद रहे, ... इसके लिए हम ऊँची–नीची–ओछी–सब हरकत कर जाते हैं! क्या फर्क पड़ता है! फर्क पड़ता है, साहब, जब कभी कोई सुकन्या देवी–दुर्गा–काली–चंडी का अवतार लेकर किसी दूल्हे का रूप–गर्व मर्दन कर बैठती है। यह अलग बात है कि ऐसी दूल्हा–दर्प–मर्दन कथाओं का प्रभाव समाज में दीर्घकालिक न होकर व्यक्तिगत और अल्पकालिक ही होता है; क्योंकि यह मगज–मर्ज तो पानी में फैले काई की तरह है, जिसमें एक पत्थर पड़ने पर वह थोड़ी देर के लिए हट तो जाती है फिर जस–के–तस दशानन जैसा ! वह वहाँ से तभी हट सकती है जब वहाँ से पानी ही हट जाए। लेकिन पानी का हटना क्या आसान है? आसान तो केवल परोपदेश होता है ... आचरण नहीं। पानी और समाज में गुण साम्य है.. पानी ठोस भी होता है, गर्म भी होता है, थोड़ी देर में पानी फिर पानी ही होता है। समाज में भी कभी–कभी शिक्षा उपदेश और प्रेरणाओं का बुलबुला तो उठता है, किंतु पानी का बुलबुला फिर पानी में ही फूटता है। इस तरह पानी में तरलता और समाज में गतिशीलता है। पानी और काई का जो संबंध है, वह तो है, किंतु काई पानी का संस्कार नहीं है। लेकिन समाज में पुरुषत्व का वर्चस्व तो उसका अपना संस्कार है। इसे त्यागकर तपस्वी–महात्मा भला कौन बनना चाहता है? उसे आज कौन पूछता है? जमाना तो 'रफ एंड टफ' दबंगों का है। इसीलिए तो इसे बढ़ाकर ही पुरुषों का वक्षस्थल बत्तीस से छत्तीस, छत्तीस से चौवन और मूँछें 'यूआकार' हो जाती है।

दूल्हों को देखना क्या देखना? दूल्हा और दुल्हन को देखने में फर्क होता है, क्या होता है? आप भी जानते हैं! लड़का हट्टा–कट्टा–तगड़ा पट्ठा–जवान हो, बी. ए, बी. एस सी, बी. कॉम पास हो तो अच्छा है... बाप के बटुए में मोटा माल हो तो बहुत अच्छा है.. अगर हाथ–पैर–दिमाग चलाकर कुछ कमाता–धमाता हो तो सोने पर सुहागा है। जिसके पास इतना कुछ नहीं है,

वह ठन-ठन गोपाल, किस्मत का मारा, अभागा और बेचारा है। उसके तेवर ढीले होते हैं, वह थोड़ा कम उछलता है, किंतु पुरुषत्व का अहंकार किसी शेर की तरह उसके भीतर भी बैठा गुर्राता रहता है। दूल्हे को देखते समय नजर में वह 'तीखापन' नहीं होता, 'मीन-मेख' की अदा पर लगाम होता है... ठीक है, चलता है, चलेगा ... इन्हीं आदि-इत्यादि जुमलों की प्रधानता से काम चलता है। दोनों को देखते समय हमारी दृष्टि और दृष्टिकोण में गंभीर अंतर होता है।

दूल्हे को 'उस' सूक्ष्म दृष्टि, गंभीरता और संपूर्णता में कोई नहीं देखता, अगर कोई देख रहा हो तो समझिए वह बाप अपनी बेटी के भविष्य के विषय में अतिरिक्त रूप से गंभीर है। तभी तो मुँह जलने से पहले ही वह दूध को फूँक मारकर पीने का प्रयास कर रहा होता है। हर बेटी के बाप का ध्यान जहाँ चेहरे (रुप) से ज्यादा जेब (गुण) पर होता है; वहीं हर बेटे के पक्ष वालों का ध्यान 'ऊपर-नीचे' दोनों पर होता है। यहाँ ऊपर नीचे का संबंध क्रमशः बेटी और उसके बाप से होता है। उसके बाल अच्छे नहीं है... कट ! उसके दाँत अच्छे नहीं हैं... कट ! वह मोटी है... कट ! वह पतली है... कट ! उसकी सूरत (नयन नक्श) अच्छी नहीं है... कट ! उसके चेहरे पर पानी है... नहीं है कट ! कट ! कट ! कट !! न जाने किस बात पर कट। आजकल तो एक बात और भी होने लगी है... उसके फेसबुक इत्यादि का प्रोफाइल को खुफियाना अंदाज़ में खंगाला जाता है... अगर वहाँ से कुछ भी 'संदिग्ध' आंखों में गड़ जाए तो कट ! इस मामले में हम जो दूध से धुला हो, उससे भी अधिक धुले अपने आप को समझते हैं। वधू की बारीक-से-बारीक बातों पर नजर रखने वाले वर और वर पक्ष के नखरे बरगद की तरह होते हैं। तभी तो कन्या-दर्शन से कन्यादान की संपन्नता तक, कन्या के पिता के प्राण पिंजरे में बंद परिंदे की भाँति हर हलचल पर फड़फड़ा उठता है!

हर छोटी-मोटी, सच्ची-झूठी बात पर लड़की को रिजेक्ट करने वाला 'होनहार' लड़का हिलते-डूलते आईने में पीछे से ऋतिक रोशन की तस्वीर देखकर उसी में अपने आप को फिट करके खुद को 'माचोमैन' समझता है.... तब तो उसे प्रियंका, कैटरीना, करीना और आलिया से कम कुछ जँच जाए तो उसकी आंखों को धिक्कार है! जानी लीवर होकर भी खुद को जॉन अब्राहम समझना उसकी फितरत है। इस ऊँचाकांशा में अपने स्वप्न-लोक की परियों की तलाश बंदा इस लोक में करता फिरता है। ये समझे-जाने बगैर कि अपना परिवार-समाज-परिवेश-धरती-मिट्टी-हवा-पानी कैसा है? इस लोक में तो भई, इसी लोक की मिलती है। 'उस लोक' की चाहिए तो उस लोक में जाना पड़ता है। कभी-कभी लंगूर के मुँह में अंगूर भी देखा जाता है! जब लंगूरों को अंगूर मिल सकता है तो हमें क्यों नहीं?... हम तो! ऐसे ही कुछ 'इंसेंटिव' श्याम-हरि-मुख के हृदय में भी 'मिल्की व्हाइट' का कामना-वृक्ष उगा देते हैं। उसे पालता हुआ वह स्वत्व के मदान्ध में तब तक डगमगाता फिरता है, जब तक उसे ठेस न लग जाए; जमाने की उसे कुछ खबर न हो जाए या जमाना उसी को खबरदार न करने लग जाए! वैसे, बादाम खाने से अक्कल आए या न आए... ठेस लगने से अक्कल आती जरूर है! इसे फेर में कई बार हो जाती है लेट.. मिल्की व्हाइट मिली नहीं.. एक्सपायर हो जाती है 'श्यामा संग फेरों की डेट!!

डॉ. योगेंद्र कुमार
हिंदी विभाग
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

समाज की धारणा

सन्यास लेने के बाद गौतम बुद्ध ने अनेक क्षेत्रों की यात्रा की। एक बार वह एक गाँव गये। वहाँ एक स्त्री उनके पास आई और बोली आप तो कोई राजकुमार लगते हैं। क्या मैं जान सकती हूँ कि इस युवावस्था में गेरुआ वस्त्र पहनने का क्या कारण है? बुद्ध ने विनम्रता पूर्वक उत्तर दिया कि तीन प्रश्नों के हल ढूँढने के लिए उन्होंने सन्यास लिया। बुद्ध ने कहा – हमारा यह शरीर जो युवा व आकर्षक है वह जल्दी ही वृद्ध होगा, फिर बीमार व अंत में मृत्यु के मुँह में चला जायेगा। मुझे वृद्धावस्था, बीमारी व मृत्यु के कारण का ज्ञान प्राप्त करना है।

बुद्ध के विचारों से प्रभावित होकर उस स्त्री ने उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया। शीघ्र ही यह बात पूरे गाँव में फैल गई। गाँववासी बुद्ध के पास आए और आग्रह किया कि वह इस स्त्री के घर भोजन करने न जाए क्योंकि वह चरित्रहीन है। बुद्ध ने गाँव के मुखिया से पूछा- क्या आप भी मानते हैं कि वह स्त्री चरित्रहीन है? मुखिया ने कहा कि मैं शपथ लेकर कहता हूँ कि वह बुरे चरित्र वाली स्त्री है। आप उसके घर ना जाए। बुद्ध ने मुखिया का दाँया हाथ पकड़ा और उसे ताली बजाने का कहाँ मुखिया ने कहा – मैं एक हाथ से ताली नहीं बजा सकता क्योंकि मेरा दूसरा हाथ आपके द्वारा पकड़ लिया गया है।

बुद्ध बोले इस प्रकार यह स्वयं चरित्रहीन कैसे हो सकती है, जब तक कि इस गाँव के पुरुष चरित्रहीन ना हो। अगर गाँव के सभी पुरुष अच्छे होते तो यह औरत ऐसी ना होती इसलिए उसके चरित्र के लिए यहाँ के पुरुष जिम्मेदार हैं। यह सुनकर सभी लज्जित हो गए लेकिन आजकल हमारे समाज के पुरुष लज्जित नहीं गौरवान्वित महसूस करते हैं क्योंकि यही हमारे 'पुरुष प्रधान' समाज की रीति एवं नीति है।

स्वीटी बवारी
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

दान की महिमा

एक भिखारी सुबह-सुबह भीख माँगने निकला। चलते समय उसने अपनी झोली में जौ के मुट्ठी भर दाने डाल दिए, इस अंधविश्वास के साथ कि भिक्षाटन के लिए निकलते समय भिखारी अपनी झोली खाली नहीं रखते। थैली देखकर दूसरों को भी लगता है कि इसे पहले से ही किसी ने कुछ दे रखा है।

पूर्णिमा का दिन था। भिखारी सोच रहा था कि आज अगर ईश्वर की कृपा होगी तो मेरी यह झोली शाम से पहले ही भर जाएगी। अचानक सामने से राजपथ पर उसी देश के राजा की सवारी आती हुई दिखाई दी। भिखारी खुश हो गया। उसने सोचा कि राजा के दर्शन और उनसे मिलने वाले दान से आज तो उसकी सारी दरिद्रता दूर हो जाएगी और उसका जीवन संवर जायेगा। जैसे-जैसे राजा की सवारी निकट आती गई भिखारी की कल्पना और उत्तेजना भी बढ़ती गई। जैसे ही राजा का रथ भिखारी के निकट आया, राजा ने अपना रथ

रुकवाया और उतर कर उसके निकट पहुँचे। भिखारी की तो मानो साँसे ही रुकने लगी, लेकिन राजा ने उसे कुछ देने के बदले उल्टे अपनी बहुमूल्य चादर उसके सामने फैला दी और उससे भीख की याचना करने लगा। भिखारी को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

वह सोच ही रहा था कि राजा ने पुन: याचना की। भिखारी ने अपनी झोली में हाथ डाला मगर हमेशा दूसरों से लेने वाला मन देने को राजी नहीं हो रहा था। जैसे-तैसे करके उसने दो दाने जौ के निकाले और राजा की चादर में डाल दिए। उस दिन हालांकि भिखारी को अधिक भीख मिली लेकिन अपनी झोली में से दो दाने जौ के देने का मलाल उसे सारा दिन रहा। शाम को जब उसने अपनी झोली पलटी तो उसके आश्चर्य की सीमा ना रही। जो जौ वह अपने साथ झोली में ले गया था, उसके दो दाने सोने के हो गए थे। अब उसे समझ में आया कि यह दान की महिमा के कारण ही हुआ। वह पछताया कि- काश! उस समय उसने राजा को और अधिक जौ दिए होते लेकिन दे नहीं सका, क्योंकि उसकी देने की आदत जो नहीं थी।

शिक्षा-

1. देने से कोई चीज कभी घटती नहीं।
2. लेने वाला से देने वाला बड़ा होता है।
3. अँधेरे में छाया, बुढ़ापे में काया और अंत समय में माया किसी का साथ नहीं देती।

स्वीटी बवारी
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

समय का बदलाव

समय ....कह रहा है।
ना दोस्त किसी का न दुश्मन किसी का
जिसने दोस्त बनाया दोस्त उसी का
दुश्मन जिसने बनाया दुश्मन उसी का

ना मुझको बदनाम कर, अपना कुछ तू नाम कर
जिस ने मुझ को खोया है, तकलीफ वही पाया है।
जिसने मेरी कीमत समझी है, मंजिल भी वह पाया है।

कर मेहनत और लगन से लोगों ने मुझे झुकाया।
मुझ से भी तेज चल कर, अपने नाम को बढ़ाया।

कर लो तुम खुद से एक प्रण, न तुम मुझे खराब करोगे
एक-एक पल को तुम अपनी जान से भी ज्यादा उपयोग करोगे।

रहे अडिग तुम इस पथ पर, मंजिल तुम पाओगे
इस समय को दोस्त बना तुम इसको पाओगे

समय से बड़ा न कोई दुश्मन है
समय से बड़ा ना कोई हित है।

आँखों में नींद है, दिल में जुनून है
कुछ कर दिखाने का, मेरा यह जुनून है।

लक्ष्य भी एक है, तीर भी एक है
ना जाने क्यों? राहें अनेक हैं।

अब न लौटूँगा, न राह बदलूँगा
आगे ही आगे बढ़ता मैं जाऊँगा।

काँटों की इस राह को, फूलों में बदलूँगा

मेहनत और लगन से, राह को आसान बनाऊँगा।

न डगमगाएंगे मेरे कदम, ना डगमगाएगा मेरा जुनून
बना मैं राह एक, आगे ही आगे बढ़ता जाऊँगा।

चाह लिया है, कुछ कर जाऊँगा
देश के लिए, मैं मर जाऊँगा।

बढ़ता मैं जाऊँगा, पीछे न मुड़कर देखूँगा
एक दिन मैं मंजिल पर पहुँच ही जाऊँगा।

वंशिका प्रजापति
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

‘जीवन’ शब्द में छुपा रहस्य....

प्राकृतिक आपदाओं को देख कर तो ऐसा लगता है मानो जैसे यह प्रकृति का संदेश है हम लोगों के लिए कि ऐ नासमझ इंसानों संभल जाओ अभी भी वक्त है नहीं तो ये मात्र अभी ट्रेलर था पिक्चर तो अभी बाकी है।

हर साल पर्यावरण दिवस आता है चला जाता है। क्या होता है इस दिन? कोई सम्मानित व्यक्ति हमारे समक्ष आता है। कोई लंबा चौड़ा भाषण देता है और कई सुझाव देता है। वादे करता है। पर्यावरण संबंधी कुछ लुभावनी बातें कर के चला जाता है। अपनी सरकारी संस्थाओं आदि की उपलब्धियों का गुणगान करते हुए विपक्ष पर कीचड़ उछालता है। कहीं किसी कमरे के सामने “वृक्षारोपण अभियान” चलाया जाता है। अंततः इस तरह पर्यावरण दिवस भी बीत जाता है पर सवाल यह है कि क्या हुआ उन लंबे चौड़े भाषण और लुभावने वादों से या इन एक दिन के लगाए गए पौध ों से। उन कमरों के सामने लगाए पेड़ पौधों की दशा कैसी है या उन्हें किसी चीज की आवश्यकता है या नहीं? क्या इन सब कार्यों की माँग से पर्यावरण सुरक्षित हो गया? या क्या प्राकृतिक आपदाओं का खतरा टल गया? नहीं ना। तो अब सवाल यह उठता है कि ऐसा क्या किया जाए कि यह प्रकृति भी सुरक्षित हो जाए और हमारा जीवन भी। इसी जीवन शब्द में छुपा है हमारी इस समस्या का समाधान भी। जीवन शब्द जो कि जी + वन इन दो शब्दों के मेल से बना होता है। ‘जी’ अर्थात प्राण और ‘वन’ अर्थात् पेड़ पौधे इत्यादि से बना क्षेत्र। यानी कि यह जीवन शब्द वह माध्यम है जो आज हमारे प्राणों की रक्षा कर सकता है।

इतिहास उठाकर देख लीजिए आप लोगों को यही मिलेगा कि मनुष्य प्राचीन काल से ही वनों पर निर्भर रहा है। वन हमें वह सब कुछ देता है जो न केवल हमारी रक्षा हेतु आवश्यक होता है अपितु हमारी सभी प्रकार की जरूरतों को पूरा करता है। इन वनों ने हमारा हर क्षण साथ दिया है। जन्म से मृत्यु तक हम वन पर निर्भर हैं। वनों ने हमारा पालन-पोषण ‘माँ’ की तरह किया है। सब कुछ यही प्रदान करते हैं। हमने बदले में वनों को क्या दिया? जिन्होंने हमारा पालन-पोषण अपने बच्चे की तरह किया।। क्या दिया इन्हें? विनाश! विनाश! विनाश! अपने लालच और स्वार्थ के लिए काटा, जलाया, हानि पहुँचाई जिससे वन धीरे-धीरे खत्म होने की कगार पर हैं। हमारे प्राण भी संकट में है। अगर वन खत्म हो गए तो हमारा जीवन भी समाप्त है।

आज अपने जीवन और प्रकृति की रक्षा के लिए हम लोगों को पुनः एक बार फिर वनों को जीवन में वापस लाने की जरूरत है। हमें प्रकृति के मातृत्व भाव का कर्ज चुकाना होगा। तभी प्रकृति माँ को हरे भरे वनों के रूप में वापस लाने में सफल होंगे। आज एक बात समझना जरूरी है- मनुष्य के बिना इन वनों का अस्तित्व होगा परंतु हम लोगों का इन वनों के बिना अपना कोई अस्तित्व नहीं है।

वंशिका प्रजापति
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

संकल्प शक्ति

एक बार महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों के साथ कहीं जा रहे थे। उन्हें रास्ते में एक चट्टान अवरोधक के रूप में मिला। तब एक शिष्य महात्मा से पूछ पड़ा- महाराज! इस चट्टान से मजबूत और ताकतवर कोई वस्तु है? महात्मा बोले वत्स! अवश्य लोहा है, जो इसे तोड़ सकता है। अर्थात यह चट्टान से मजबूत और ताकतवर है अतः इस नाशवान संसार में हमें गर्व नहीं करना चाहिए क्योंकि हमारे गर्व को तोड़ने वाला कोई ना कोई अवश्य होता है। जिज्ञासु शिष्य ने पुनः प्रश्न किया- महाराज तब लोहे से ताकतवर क्या हो सकता है? महात्मा ने उत्तर दिया- अवश्य! अग्नि, जो इसे पिघला सकती है। पुनः शिष्य ने प्रश्न किया- और अग्नि से ताकतवर? महात्मा जी ने सहजता से उत्तर दिया- वत्स! पानी। शिष्य ने पानी से भी अधिक शक्तिशाली वस्तु जानने की इच्छा प्रकट की। महात्मा ने कहा- वायु है जो पानी के प्रवाह की दशा को मोड़ सकता है। शिष्य की जिज्ञासा और बढ़ गई। वह पूछा- चट्टान, लोहा, अग्नि, जल और वायु से भी बढ़कर कोई बला है क्या? महाराज जो इन सबसे अधिक शक्तिशाली है।

महात्मा शिष्य के प्रश्न पूछने की जिज्ञासा और चंचलता पर हँस पड़े। और उसके प्रश्न के उत्तर को बड़ी सरलता से दिया- वत्स! तुम नहीं जानते? इस चट्टान, लोहा, अग्नि, जल और वायु आदि से भी बढ़कर ताकतवर और मजबूत कुछ है तो वह है- 'मनुष्य की संकल्प शक्ति' जिसके द्वारा मनुष्य अपने कठिन से कठिन कार्य को सरल से सरल तरीके से कर सकता है और अपने जीवन के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकता है।

आनंद मिश्रा
बी. ए. (हिंदी विशेष) द्वितीय वर्ष

बचपन की कुछ यादें

मसरुफियत के दिन हैं, कॉलेज की परीक्षाएँ सर पर है इसलिए सब व्यस्त हैं। दो लम्हें की भी फुर्सत नहीं लेकिन यह दो क्षण निकाल लीजिए तो दुनिया को देखने समझने और मुस्कुराने का इससे बेहतर समय नहीं हो सकता। बचपन, स्कूल, घर और दोस्तों से जुड़ी चंद बातें और चीजें ऐसी हैं जो सबको एक समय पर जहर लगती है और बस चंद सालों के फासले पर उनका इंतजार रहता है। पेंसिल थी, तो स्याही वाले पेन की चाह थी, पेंसिल छीलना, नोक बनाना झँझट लगता था। आज जैल पेन तक आ गए तो पेंसिल छीलने का इत्मीनान और छीलने से आकृतियाँ बनाने की होड़ याद आती है। स्कूल जाना तो शायद ही किसी को पसंद हो, बस्ता (बैग) जमाना, क्लास के बारे में सोच-सोच कर दुबले होना। लगता था कि जब इस दौर से निकल जाएंगे तब जिंदगी के मजे आएंगे। स्कूल यूनिफार्म हर सुबह याद आती है जो उन दिनों ऊब लगती थी आज अलमारी खोल कर खड़े होते हैं कि क्या पहने तो बड़ी याद आती है वह बोरिंग सी यूनिफार्म जिसके रहते कुछ और सोचने की जरूरत ही नहीं थी। पहले कहते थे दोपहर में कोई सोता है क्या? आज दफ्तर में खाना खाने के बाद जब आँखें मूँदने लगती है तो कहते हैं

दोपहर में सोना नसीब वालों को मिलता है। माँ जब कहती थी घर पर रुकना आज याद है कितना बवाल मचाते थे घर पर। बोर हो जाएँगे क्या करना होता है घर में? आज घर पर रुक कर चंद आराम के पल बिताने को कोई नहीं कहता। बचपन के एक-एक क्षण बहुत याद आते हैं। बचपन में पुराने गाने बोरिंग लगते थे आज उनकी मधुरता का एहसास होता है। जीवन में सब कुछ मिल सकता है परंतु हमारा बचपन नहीं मिल सकता दोबारा। बचपन में याद है छोटे होते हुए हमें बड़ा दिखना अच्छा लगता था आज जब कोई कहता है कि तुम्हारी उम्र का पता नहीं चलता। कितना अच्छा लगता है सबसे हसीन पल जीवन के जो होते वह हमारे बचपन के पल होते हैं जो हम से चाहकर भी भुलाए नहीं जाते।

तस्लीमा
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

मेरे विचार

सन 1947 में भारत की आजादी के साथ-साथ कुछ सकारात्मक प्रभाव पड़े तो कुछ नकरात्मक भी। जहाँ एक ओर भारत धीरे-धीरे आर्थिक रुप से संपन्न होने लगा तो वहीं दूसरी और धार्मिक भेदभाव बढ़ने लगा। लोगों को प्रलोभन देकर अलग-अलग धर्मो में बाँटा जाने लगा। शिक्षा का जो स्तर आज है वह उस समय नहीं था। यही कारण है कि उस वक्त सांप्रदायिकता का बीज बो दिया गया और राष्ट्र निर्माण की ओर देखने के बजाए दृष्टि धर्मों के पक्ष- विरोध पर थम गई।

इस देश की इससे अजीब विडंबना क्या ही होगी जहाँ लोग तो आधुनिकता की दुहाई देते हैं और साथ आज भी रूढ़िवादी है जिसका नमूना राजनीति में देखा जा सकता है जहाँ जातीय समीकरण को ध्यान में रखकर ही रणनीति बनाई जाती है। यह स्थिति राजनीतिज्ञों की मानसिकता पर कड़ा प्रहार करती है।

इस देश का सौभाग्य रहा है कि जहाँ एक ओर महात्मा गांधी जैसे बुद्धिजीवियों ने जन्म लिया वहीं दूसरी ओर डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे महान व्यक्तित्व ने भी अपनी सेवाएँ देश को दी थी। आजादी से पहले जहाँ भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी नेता हुए तो वहीं दूसरी ओर अशफाकुल्लाह खाँ जैसे लोगों ने भी कदम से कदम मिलाया।

प्रसंगवश - कहा जा सकता है कि जब हमारे अमरनाथ यात्रियों के लिए सलीम हमले में ढाल बनकर खड़ा हो सकता है तो हज यात्रियों के लिए हम भी ढाल बनकर खड़े हो सकते हैं। मेरे विचार से इस देश को खड़ा करने के किसी धर्म विशेष का योगदान नहीं है बल्कि सभी धर्मों के लोगों ने सराहनीय योगदान दिया है। धर्म, जाति, लिंग आदि को त्यागकर एक और एक ग्यारह बन कर काम करना चाहिए तभी भारत पुन: 'सोने की चिड़िया' कहलाएगा।

'मेरे लहजे में राम-राम है
तेरे लहजे में सलाम है
फर्क सिर्फ लहजे का है जनाब
अत: मैं भी एक इंसान हूँ,
तू भी एक इंसान है।

रोहित कुमार
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

साहित्यकार का जीवन

साहित्यकार मस्तिष्क, बुद्धि और हृदय से संपन्न एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज से पृथक हो ही नहीं सकता क्योंकि वह भी समाज का ही एक प्राणी है। वह समाज के मध्य जीता है और समाज के मध्य साँस लेता है। जब कभी उसे घुटन की अनुभूति होती है तब उसकी अभिव्यक्ति साहित्य के रूप में प्रकट हो जाती है। समाज के साथ निकटता उसे साहित्य सृजन की प्रेरणा देती है और तभी उसके रचे साहित्य को समाज स्वीकार कर लेता है। सामाजिक प्रभाव और दबाव की उपेक्षा कर साहित्यकार एक कदम आगे नहीं बढ़ सकता है। कबीर की साखियाँ तथा प्रेमचंद की कथा आगे नहीं बढ़ सकती है। कबीर ने अपने समय के धार्मिक बाह्यडम्बरों, सामाजिक कुरीतियों एवं खोखली मान्यताओं के विरोध में अपना स्वर बुलंद किया। निराला जी के साहित्य में ही नहीं उनके व्यक्तिगत जीवन में भी यह धर्म बराबर बना रहा। प्रेमचंद की कहानियों एवं उपन्यासों में सर्वत्र किसी-न-किसी सामाजिक समस्या के प्रति उनके गहरी संवेदना झलकती है। अत: हम कह सकते हैं कि साहित्यकार अपने युग तथा समाज के प्रभाव से अपने को अलग रखना भी चाहे तो भी वह ऐसा नहीं कर सकता।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। किंतु इस कथन का यह आशय नहीं है कि साहित्यकार समाज का फोटोग्राफर है और सामाजिक विद्रूपताओं, कमियों, दोषों, अंधविश्वासों और मान्यताओं का यथार्थ चित्रण करना ही उसका उद्देश्य होता है। साहित्यकार को तो ब्रह्मा कहा गया है। वह नए समाज का सृजन भी करता है। वर्तमान समाज की विद्रूपताओं पर व्यंग्य भी करता है और भी युगांतकारी जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा कर सुंदरतम समाज का जो रुप हो सकता है वह उसका भी एक रेखाचित्र प्रस्तुत करता है। इस प्रकार जीवन के शाश्वत मूल्यों की प्रतिष्ठा करने के कारण साहित्यकार एकदेशीय होकर भी सार्वदेशिक होता है।

इस प्रकार जीवन और साहित्य का अटूट संबंध है। साहित्यकार अपने जीवन में जो दुख, अवसाद, कटुता, स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, दया आदि का अनुभव करता है उन्हीं अनुभवों को वह साहित्य में उतारता है। यदि हम इतिहास के पृष्ठों को पलटकर देखें तो हम पाते हैं कि साहित्यकार के क्रांतिकारी विचारों ने राजाओं-महाराजाओं को बड़ी-बड़ी विजय दिलवाई है।

अनेक ऐसे राजाओं का उल्लेख मिलता है। जिन्होंने स्वयं तथा अपनी सेना के मनोबल को उन्नत बनाए रखने के लिए कवियों और साहित्यकारों को विशेष रूप से अपने दरबार में नियुक्त किया था।

मध्यकाल में भूषण जैसे वीररस के कवियों को दरबारी संरक्षण एवं सम्मान प्राप्त था। बिहारी लाल ने अपनी कवित्व शक्ति से विलासी महाराज के उनके कर्तव्य का भान कराया था। संस्कृत के महान साहित्यकारों कालिदास और बाणभट्ट को अपने राजाओं का संरक्षण प्राप्त था। बिहारी की पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य हैं-

'नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास यहि काल
अली कली में ही सौं बिन्ध्यो आगे कौन हवाल।'

इस प्रकार हम देखते हैं कि जीवन और साहित्य को पृथक नहीं किया जा सकता। उन्नत साहित्य जीवन को नैतिक मूल्य प्रदान करता है और उसे उत्थान की ओर ले जाता है। साहित्य के विकास की कहानी वास्तविक रूप में मानव सभ्यता के विकास की गाथा है।

जब हमारा देश अंग्रेजी सत्ता का गुलाम था तब साहित्यकारों की लेखनी की ओजस्विता राष्ट्र के पूर्व गौरव और वर्तमान दुर्दशा पर केंद्रित थी। इस दृष्टि से साहित्य का महत्व वर्तमान में भी बना हुआ है। आज के साहित्यकार वर्तमान भारत की समस्याओं को अपनी रचनाओं में स्थान दे रहे हैं।

निशु
बी. ए. (हिंदी विशेष)तृतीय वर्ष

एक कहानी

यह कहानी है 1953 ई. की उस जमाने में लड़कियों को अपने लिए रिश्ता चुनने का अधिकार नहीं हुआ करता था, हक नहीं हुआ करता था। ऐसे माहौल में राजस्थान में रहने वाली एक 16 साल की लड़की के लिए रिश्ता आता है, तो लड़की रोती है और अपनी माँ को समझाते हुए कहती है-

मम्मी भेजो ना मुझको दूर तुम,
ऐसे मुझ पर करो ना अफसोस तुम
मम्मी भाई भी तो है बाहर खड़ा,
उसकी शादी करवा दो, वो तो है मुझसे बड़ा
मम्मी गलती क्या हुई मुझसे मुझको बता दो तुम
सीने से अपने मुझको लगा लो तुम

लड़की की माँ उसकी नहीं सुनती और उसको डाँटते हुए कहती है कि-

बेटी अपने घर जाना है तुझको अब
तेरा रिश्ता खत्म हुआ हमसे अब
हमको अब तू भूल जाना
अपने पति का तुझको है
साथ निभाना

लड़की बहुत समझाती है लेकिन उसके माँ-बाप उसकी एक नहीं सुनते और रक्षाबंधन वाले दिन उसकी शादी तय कर देते हैं, लड़की यह सब बर्दाश्त नहीं कर पाती और राखी के दिन खुद को फाँसी लगा लेती है। लड़की का भाई जब अपनी बहन की लाश को देखता है तो रोता है और रोते-रोते अपनी माँ से कहता है-

मम्मी मेरी बहन को तुमने मुझसे छीन लिया है,
राखी का कितना अच्छा तोहफा दिया है,
अपनी बहन से अब मैं खुद मिलने जाऊँगा
क्योंकि उसके बिना तो मैं भी जी नहीं पाऊँगा।

अपने बेटे के मुँह से यह सब सुनकर उसके पिता को गुस्सा आता है और वह अपने बेटे को चाँटा मारने के लिए जैसे ही आगे बढ़ते हैं एक कागज उनके पैरों से टकराता है। उस कागज में उस लड़की ने अपने कुछ अंतिम शब्द लिखे थे जो शायद वह लोग तो न समझ सके लेकिन हमें उन शब्दों को समझना चाहिए।

उस कागज में लड़की ने लिखा था-

ना मम्मी की जान बन पाई
ना पापा की पहचान बन पाई
ना भाई की शान बन पाई

मैं मर इसलिए नहीं रही हूँ क्योंकि मेरी शादी करवा रहे हैं, मैं मर इसलिए रही हूँ क्योंकि इस 16 साल की लंबी जिंदगी में मुझे एक बात समझ आ गई की जितनी खुशी मेरे पैदा होने पर नहीं हुई शायद उससे कहीं ज्यादा खुशी मेरे मरने पर हो। और मैं आप सबको हमेशा खुश देखना चाहती हूँ।

शांतनु गर्ग
बी. कॉम. प्रथम वर्ष

कभी हार मत मानो

बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं।

अधिकतर लोग ठीक उसी समय हार मान लेते हैं जब सफलता उन्हें मिलने वाली होती है, विजय रेखा बस एक कदम दूर होती है तभी वे कोशिश करना बंद कर देते हैं वे खेल के मैदान से अंतिम 1 मिनट में हट जाते हैं, जबकि उस समय जीत का निशान उनसे केवल 1 फुट के फासले पर होता है।

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती....

गीता यादव
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

जरूरत है कुछ करने की

जरूरत है कुछ करने की?
न की खाली बैठे रहने की,
है माहौल हर तरफ निराशा का,
न आस दिख रही बदलाव की,
अगर रहा हाल ऐसा ही धरती का,
जगह न रहेगी जीने की,
ये वक्त नहीं बेवजह बहस करने का,
समय आ गया है, जरूरत है कुछ करने की ?
जरूरत है कुछ करने की?

आज दुनिया में विभिन्न समस्याएँ संकट बनकर हमारे सामने आ खड़ी हुई है। इन समस्याओं में 'ग्लोबल वार्मिंग' तथा भिन्न-भिन्न मुद्दों को लेकर विभिन्न देशों में टकराव होना आम बात बन गई है। इस सबसे सारे के सारे प्राणियों के जीवन को ही खतरा है। ऐसा नहीं लगता है कि इन समस्याओं पर आसानी से काबू पाया जा सकता है। क्योंकि हर देश अपने ही फायदे की सोचता है। ऐसा नहीं लगता है कि वह वास्तव में इस समस्या का निदान चाहते हैं और पृथ्वी तथा प्राणी जगत के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए इसी तरह कई समस्याएँ हमारे देश के भी सामने खड़ी है जो न केवल हमारे लिए शर्म करने लायक है बल्कि इससे हमारे अस्तित्व व शांति को भी खतरा है।

सबसे पहले तो बात करते हैं पर्यावरण की। पर्यावरण के साथ भी बहुत सी समस्याएँ जुड़ी हुई हैं लेकिन जो सबसे बड़ी समस्या हाल ही में हमारे सामने खड़ी है तथा टलने का नाम नहीं ले रही है, वह है प्रदूषण की समस्या।

पिछले करीब दो ढाई महीने से हमारी राजधानी व इसके पड़ोसी राज्यों में इसकी मात्रा बहुत तेजी से बढ़ी है।

राजधानी में प्रदूषण के कण इतनी सघनता में है कि लोगों को कैंसर, हार्ट अटैक व दमा जैसी बीमारी हो सकती है। समस्या इतनी बढ़ चुकी है कि हमारे देश में ब्रिटेन जैसे कई देशों ने अम्बेसियों में एक ही व्यक्ति को ज्यादा

समय तक दिल्ली में रखना उचित नहीं समझा है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह देश अपने कुछ अधिकारियों की भी कितनी चिंता करते हैं मगर यहाँ हमारे करोड़ों लोगों के जीवन का सवाल है फिर भी देश की न तो केंद्रीय और न राज्य सरकारें गंभीर नजर आ रही हैं। ऐसा लगता है कि इन्हें देश की जनता से ज्यादा चिंता अपनी पार्टी व कुर्सी की है।

इससे भी बढ़कर लोगों का देश में आज भी भूखा मरना आम बात है। ऐसा क्या विकास किया है हमने 70 सालों में जो हम अपने नागरिकों को भोजन की उपलब्धि भी नहीं करा सकते।

देश को आजादी दिलाने के संघर्ष के दौरान हमारे स्वतंत्रता सेनानियों का सपना था कि आजाद भारत में कोई भी इंसान भूखा नहीं सोना चाहिए। लेकिन हाल आज भी वैसा ही है। हाल ही में झारखंड व उत्तर प्रदेश में क्रमशः एक लड़की व बूढ़ी औरत की मृत्यु घर में खाद्यान न होने के कारण हो जाती है। मगर इसके पीछे कुछ अन्य कारण भी सामने आ रहे हैं कि इनके पास आधार कार्ड नहीं था या अन्य महत्वपूर्ण कागजात नहीं थे। यहाँ तो इन लोगों से सिर्फ जरूरी कागजात न होने के कारण राइट टू फूड का अधिकार तक छीन लिया गया। इतना तो गैर देश भी शरणार्थियों के साथ नहीं करते हैं उन्हें भी समय बेसमय भोजन तो मिल ही जाता है। हाल ही के एक सर्वे में हमारे देश का स्थान ग्लोबल हंगर इंडेक्स सूची में 118 में से 100 वाँ था।

ऐसा ही कुछ हाल शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी देखने को मिलता है। एक तरफ तो हम मेक इन इंडिया को बढ़ावा देना चाहते हैं और यह सपना केवल तकनीकी ज्ञान व अच्छे प्रशासन के आधार पर ही साकार हो सकता है। मगर हमारे देश में इंजीनियरिंग की लाखों सीटों पर दाखिला तक बच्चे नहीं ले पाते हैं। जिससे कक्षा खाली ही नजर आती है। हाल ही में देखा गया है कि उत्तर प्रदेश में व कई अन्य राज्यों में सरकारी कॉलेजों में एक कक्षा में 2 से 3 बच्चे ही बैठे नजर आए थे।

इसके अलावा स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी कुछ ऐसा ही हाल है। इस देश में ही बनी जेनेरिक मेडिसिन जो बहुत ही सस्ती होती है वह तो सरकारी व प्राइवेट डॉक्टरों द्वारा मरीजों को लिखी नहीं जाती है बल्कि दवा किसी दूसरे ब्रांड की लिख दी जाती है। हमारे देश में वे दवाएँ धड़ल्ले से बिकती हैं जिन दवाइयों पर अमेरिका में प्रतिबंध है। उनके मानकों पर खरा न उतरने के कारण वे दवाइयाँ हमारे देश में ही बनाई जा रही है। लेकिन प्रशासन का इस ओर कोई भी ध्यान नहीं है उन्हें तो सिर्फ अपने पेट को भरने के लिए मिल जाए वही काफी है।

इसके अलावा यहाँ के डॉक्टर भी पैसा कमाने की होड़ में क्या-क्या नहीं करते हैं ? किसी का ऑपरेशन, मरे हुए को ऑक्सीजन लगा कर जिंदा बनाने के बहाने से कभी-कभी तो ऐसे केस भी सामने आए हैं कि गरीब के अंगों को अमीर मरीजों को निकालकर बेच दिया जाता है।

हाल ही में एक बड़ा ही दर्दनाक मामला सामने आया है जिन में डॉक्टरों की लापरवाही के कारण एक जिंदा बच्चे को मृत घोषित कर थैली में पैक करके माँ बाप को दे दिया जाता है। यह सब इतनी आसानी से बदलने वाला नहीं है इसके लिए सबको मिलकर संघर्ष करना होगा।

मगर कुछ ऐसे कदम हैं जो गैर-सरकारी संस्थाओं तथा देश के हित के लिए अपने हितों को अनदेखा कर देश के लिए काम कर रहे हैं। जैसे कि श्री कैलाश सत्यार्थी व मेधा पाटेकर तथा अन्ना हजारे आदि।

कुछ उम्मीद जगाने के लायक काम राजस्थान में कुछ गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा सस्ती दरों पर जेनेरिक मेडिसिन का वितरण सामने उभरकर आया है।

यह बदल तो सकता है मगर इसके लिए हमें अपने बजट का जो अभी स्वास्थ्य पर 3 से 4% तक खर्च किया जाता है इतना ही शिक्षा व पर्यावरण से संबंधित समस्याओं पर खर्च किया जाता है को बढ़ाना होगा। इसका उदाहरण हम जापान को ले सकते हैं। जापान एक ऐसा देश है जहाँ पर न तो हमारे बराबर प्राकृतिक संसाधन है न ही भौगोलिक क्षेत्र। आज जापान में शिक्षा व स्वास्थ्य पर खर्च के कारण ही जीवन की प्रत्याशा दर विश्व में सबसे अधिक है तथा अपनी तकनीक के आधार पर भी इसने विभिन्न वस्तुओं का निर्यात कर अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत किया है। हाल ही में भारत ने भी करोड़ों रुपए के बजट से बुलेट ट्रेन योजना को जापान की सहायता से ही साकार किया है।

इसलिए अपने देश की शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए जरूरत है। आवश्यकता है हम सभी को एक साथ मिलकर इन सब समस्याओं से लड़ने और बदलाव लाने की। हाल ही में कुछ आंदोलन हुए हैं और हो रहे हैं जो सिर्फ अपने-अपने समुदायों के हितों के लिए किए जा रहे हैं जैसे कि हरियाणा में जाट, महाराष्ट्र में मराठा, राजस्थान में गुर्जर तथा जगह-जगह दलित आंदोलन तथा तीन तलाक के खिलाफ विरोध प्रदर्शन। अगर ये सभी आंदोलन ऐसे ही चलते रहे तो जरूर ही यह भारत की शांति व्यवस्था व अर्थव्यवस्था को कमजोर करने में अपना योगदान देंगे। मगर इसे केवल इस देश के युवा व बुद्धिजीवी वर्ग रोक सकते हैं। इन्हें समझा-बुझाकर देश हित के लिए इनका सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।

अगर यह सभी आंदोलनकारी एक साथ आकर सबके हित के लिए इस देश के हित के लिए अपने हितों से ऊपर उठकर काम करें और प्रशासन पर ईमानदारी से काम करने के लिए दबाव डालने से बदलाव जल्द ही देखने को मिल जायेगा। यह समय की माँग है और माहौल भी सही है जरूरत है कुछ करने की तथा सब को एक साथ लाकर बदलाव लाने की न कि खाली बैठे रहने की।

मोहम्मद मुस्तफा
बी. ए. (इतिहास विशेष) तृतीय वर्ष

तोहफा

"गर्मियों में लाइट की समस्या अत्यंत दुखदाई होती है। इतना पावर कट! लगता ही नहीं है कि हम दिल्ली जैसे महानगर में रहते हैं" विश्वास बोला। रात के करीब 8:30 बज रहे थे विश्वास खाने के लिए बैठा ही था और बत्ती गुल। खाने का स्वाद पूछते हुए उसकी पत्नी मनोरमा ने जवाब दिया "एक तो मौसम गर्म, ऊपर से माहौल गर्म और अब लाइट ने तो जीना ही मुहाल कर रखा है।" कहकर चुप हो गई। 2 वर्ष पूर्व ही दोनों का विवाह हुआ था। यूं तो सब कुछ ठीक था दोनों के बीच पर मन फिर भी सदा खिन्न रहता था।

"क्या-क्या ख्वाब देखे थे मन में, कितना प्यार दिया, लाड़-प्यार से पाल पोस कर बड़ा बनाया, आखिर कौन सी कमी छोड़ दी थी मैंने जो आज यह ऐसा व्यवहार कर रहा है मेरे साथ.." लगातार बोली जा रही थी विश्वास की माँ। पिछले वर्ष ही घुटनों के दर्द के इलाज के चक्कर में विश्वास उन्हें दिल्ली लेकर आया था। घुटनों में दर्द के कारण वो ज्यादा चलती नहीं थी, लेकिन आवाज में अभी भी वह दम जो बड़े घर की मालकिन में होता है।

"इनको भला लेकर ही क्यों आए। इतना अच्छा तो घर पर पैसे भेजते ही थे फिर किस बात की दिक्कत? और

ऐसा तो है नहीं कि वहाँ डॉक्टरों की कमी थी।" इस बात पर मियां बीबी में वाद-विवाद हो जाता था। इस हंसते खेलते परिवार को न जाने किसकी नजर लग गई थी। जहाँ सब इस बात से जला करते थे कि इतना प्यार किसी में कैसे हो सकता है, वहाँ अब इस परिवार का नाम गुमनाम हो गया था मानो इसका कोई अस्तित्व ही नष्ट हो गया हो। ऐसा नहीं था की बहू के आने के बाद से कलह शुरू हुआ हो। कहते हैं ना "सत्संग गुणा: दोषा:" वही हुआ था मनोरमा के साथ।

रविवार का दिन था रोज की तरह माँ सबसे पहले उठकर नित कर्म से निवृत्त होकर पूजा करने जा रही थी, अचानक उनकी नजर रसोई में पड़े कल रात के जूठे बर्तनों पर पड़ी। उन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं आया और वो चिल्लाने लगी "ऐसे कौन दिन भर सोता रहता है। दिन का काम दिन में नहीं, रात का काम रात में नहीं। रात में ही बर्तन माँज कर सोती तो क्या हाथ टूट जाता? अगर मेरे शरीर में इतनी क्षमता बची होती तो मैं मुँह न लगती कभी इनके। राम! राम! राम! कोई शर्म नहीं।"

माँ का चिल्लाना सुन दोनों की नींद खुल गई। विश्वास ने कहा "माँ पहली बार तो छोड़ा है फिर तुम ऐसे कर रही हो ! हो सकता है कि कुछ कारण रहा हो, लेकिन नहीं तुम्हें तो बस चिल्लाना होता है।" उसकी माँ कुछ बोलती उससे पूर्व हीं मनोरमा बोल पड़ी "वैसे आपको काम से मतलब होना चाहिए, अब काम करने का तरीका सबका अलग-अलग होता है मेरा भी है।"

माँ की आँखें नम हो गई, उन्होंने कुछ नहीं बोला और सोचा कि आगे से कुछ नहीं बोलूँगी। समय कभी एक समान नहीं रहता कल अच्छा था तो "माँ गुस्सा नहीं करते.. सॉरी.. आगे से ऐसा नहीं होगा.." और अब.. सोच कर ही रोना आ रहा था। मौन धारण कर पूजा करने चली गई। काफी समय बीत गया था घर में बिल्कुल सन्नाटा था। 4 बीएचके फ्लैट में अकेली वृद्ध महिला, बहू बेटा छोड़ कर चले गए बिना बताए। बेचारी बार-बार इस कमरे से उस कमरे अंदर-बाहर कर रही थी। इस बुढ़ापे में जब खुद का शरीर साथ छोड़ने लग जाता है, कार्य करने में असमर्थ हो जाता है शरीर, तो लोग भी साथ छोड़ देते हैं। कहते हैं ना "जब तक है चाम तब तक है दाम।''

शाम होने को आई फिर बत्ती गुल हो गई। दिल्ली की सँकरी गलियों के बीच यह मकान बत्ती जाने पर अंध कार में डूब जाता था। हमेशा जगमग रहने वाली जगह अंधकार में विलीन हो गई और साथ ही वृद्ध महिला की चेतना भी। सीढ़ियों पर किसी के चलने की आहट आई। ध्वनि निरंतर बढ़ती जा रही थी। वह घबरा गई झट से अंदर घुसने का मार्ग बंद कर दिया। "पता नहीं कौन होगा! कहीं चोर! लुटेरा!" भयभीत मन में वह छुप गई।

"माँ-माँ दरवाजा खोलो" विश्वास की आवाज आई। मन की शंका दूर करके माँ ने दरवाजा खोला। विश्वास और उसकी पत्नी दोनों के हाथ भरे हुए थे। बहुत सी खरीदारी की थी उन्होंने अपने लिए कपड़े, जूते, घड़ी और भी बहुत कुछ। "कहाँ गए थे बिना बताए? अगर मुझे कुछ हो जाता तो?" माँ ने बोला। पर उत्तर में मनोरमा का जवाब आता है "धरती का बोझ कुछ हल्का हो जाता।" पुन: माँ कहती है "हाँ तो मार दो ना मुझे जान से! जहर लाकर दे दो।" पर उत्तर में "हाँ ठीक है- ठीक है अभी थक गए हैं कल लाकर दे देंगे।"

थोड़ी सी बक-झक के बाद विश्वास अपनी पत्नी को शांत रहने को कहता है और साथ ही आगे की सोचने को कहता है। उधर खरीदारी के सामान को उसकी माँ अच्छी तरीके से देखती है परखती है। उसमें कहीं भी उसके लिए कुछ नहीं था। होता भी क्यों भला! अब उनकी उम्र ढलान की ओर है, उस पर ध्यान देने से क्या फायदा।

एक स्त्री के लिए उसके पति का राज स्वर्णकाल होता है। लाख बंदिशों के बाद भी, झगड़ा लड़ाई के बाद

भी, जो प्यार, जो हक पति के ऊपर होता है वह अपने बच्चों पर भी नहीं होता। तभी हमारे राष्ट्र में तलाक का प्रचलन नहीं था। जो मिला उसी को नियति मानकर प्रसन्न रहना भारतीय नारियों की विशिष्ट पहचान है। जब बच्चे कमाने लग जाते हैं तो चाहते हैं कि माँ बाप उनके हिसाब से चले। शायद मतभेद का यही कारण है।

मगर आज उसी स्त्री के सब्र का बाँध टूट गया। वह टूट गई थी पूरी तरह से। सबके होते हुए भी खुद को अकेला पाया उन्होंने। आज कोई उनकी सुनने वाला नहीं था। जीवन में हार चुकी थी अब वो। चुपचाप एक कमरे में जाकर सो गई वो।

अगले दिन सुबह-सुबह माँ की नींद खुली तो अपने सामने युगल जोड़े को सुसज्जित देख अचंभित हो गई। विश्वास और मनोरमा कल के लाए हुए वस्त्र पहन सुबह-सुबह तैयार हो गए थे। वह कुछ बोल पाती उससे पहले ही दोनों एक साथ बोल पड़े "हैप्पी बर्थडे टू यू.." माँ को खुद याद नहीं था कि आज उनका जन्म दिवस है। उन्होंने जेब से निकाल कर बेशकीमती हीरे की अंगूठी माँ को तोहफे के रुप में दी। दोनों के चेहरे पर अलग लाली छाई हुई थी। माँ की आँखों में आँसू आ गए। वह कुछ बोल नहीं पा रही थी। इस बात की बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी उन्हें।

"मैं आज क्या बोलूँ तुम्हें, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। सच में मैं बहुत प्रसन्न हूँ। पर तुम्हें इतना पैसा खर्च करने की क्या जरूरत थी, कम पैसों में ही काम चला लेते। सच में मेरे मन की आशा आज तुम लोगों ने पूर्ण कर दी।" कहकर आँखों में आँसू भर आए माँ के और वो दौड़कर दूसरे कमरे में चली गई। "शायद माँ को इतनी प्रसन्नता पहली बार मिली है" विश्वास मनोरमा को बोला।

काफी वक्त बीत गया माँ अभी तक बाहर नहीं आई। शायद हमसे उन्हें जितनी उम्मीद थी उससे ज्यादा उन्हें मिल गया है इसलिए ज्यादा प्रसन्न है वो आज। फिर भी उन्होंने सोचा कि एक बार जाकर देखना चाहिए कि आखिर माँ क्या कर रही है। कमरे में जाकर देखा तो माँ का शव बिस्तर पर पड़ा हुआ था और मुँह में थी हीरे की अँगूठी "तोहफा!" विश्वास की चीख निकल पड़ी "माँ!.."

अंशुमान नाथ चौधरी
बी. ए. (गणित विशेष) द्वितीय वर्ष

नया साल नई चुनौतियाँ

एक बार फिर नया साल हमारे दरवाजे पर दस्तक देने आ गया है। यह वक्त है बीते साल का हिसाब-किताब करने का और आने वाले समय की चुनौतियों से जूझने के संकल्प का। यों तो 365 दिनों का एक साल काल की विराट शिला पर कोई खास मायने नहीं रखता, फिर भी काल की चक्की तो चलती रहती है और संसार में बहुत कुछ बदलती भी रहता है। कामनाएँ और उम्मीदें मनुष्य की फितरत है वही उसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसा हर दिन होता है लेकिन बात जब नए साल की हो तो कहना ही क्या।

हमारी उत्सवधर्मिता हर आगत के स्वागत की होती है यह मनोभावना ही नई उम्मीदों, नए सपनों के नवांकुर उगाती है लेकिन हर सपने के पीछे एक सच्चाई भी होती है और उससे जुडी चुनौतियाँ भी। जब हम नए साल के स्वागत की तैयारियों में व्यस्त हों तो हमें इन चुनोतियों को नहीं भूलना चाहिए। बीते साल ऐसा बहुत कुछ हमारी जिंदगी में हुआ है जिसने नए साल में हमारी चुनोतियों को भी बड़ा बना दिया है। इस बीच दुनिया की भू

राजनीति भी बदली है और अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ भी। खुद हमारी परंपरागत अर्थव्यवस्था भी बदलाव के नए चरण में है। हर क्षेत्र में हम डिजिटल हो रहे हैं। इसके अपने लाभ हैं तो खतरे भी कम नहीं है। बेशक इस बीच महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है लेकिन यह भी सच है कि इसी के साथ-साथ महिला उत्पीड़न की घटनाएँ भी बढ़ी है। आधी आबादी का एक हिस्सा विकास की दौड़ में आगे जरूर बढ़ा है, लेकिन एक बहुत बड़ा हिस्सा अब भी हाशिये पर है। फिर पर्यावरण की चुनौतियाँ भी कम नहीं है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण के मामले में हम दुनिया के उन देशो में है जो सबसे ज्यादा संकट में हैं।

आतंकवाद और विध्वंसक हथियारों की होड़ एक ऐसी समस्या है जो सारी दुनिया के सामने सुरसा की तरह मुँह फाड़े खड़ी है। हम इसके बड़े शिकारों में है। इसके पीछे दुनिया के बड़े देशों की अपनी राजनीति तो है ही हमारी अपनी संकीर्णता भी कम दोषी नहीं है। एक तरफ लोकतंत्र को बचाने की चुनौती है और दूसरी तरफ अशिक्षा का मुद्दा है। अभिव्यक्ति की आजादी पर खतरे की बात अक्सर कही जाती है जिसमें असहमत आवाजों को दबाने की कोशिशें एक बड़ी चुनौती है। लोकतंत्र की खूबसूरती असहमति के सम्मान में है, जिसे हम भूलते जा रहे हैं। यह कुछ चुनौतियाँ हैं जिनसे हमें नए साल में जूझना है।

फरजाना
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

गरीब के जूते

एक बार एक शिक्षक अमीर परिवार से संबंध रखने वाले एक युवा शिष्य के साथ कहीं टहलने निकले। उन्होंने देखा कि रास्ते में एक जोड़ी पुराने जूते उतरे पड़े हैं, जो संभवत: पास के खेत में काम कर रहे गरीब मजदूर के थे जो अब अपना काम खत्म कर घर वापस जाने की तैयारी कर रहा था।

शिष्य को मजाक सूझा उसने शिक्षक से कहा गुरुजी, क्यों न हम ये जूते कहीं छुपा कर झाड़ियों के पीछे छिप जाए, जब वह मजदूर इन्हें यहाँ नहीं पा कर घबराएगा तो बड़ा मजा आएगा!!

शिक्षक गंभीरता से बोले किसी गरीब के साथ इस तरह का भद्दा मजाक करना ठीक नहीं है, क्यों न हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और छुप कर देखे कि इसका मजदूर पर क्या प्रभाव पड़ता है।

शिष्य ने ऐसा ही किया और दोनों पास की झाड़ियों में छुप गए। मजदूर जल्द ही अपना काम खत्म कर जूतों की जगह पर आ गया, उसने जैसे ही एक पैर जूते में डाला उसे किसी कठोर चीज का एहसास हुआ। उसने जल्द से जूते को हाथ में लेकर देखने की कोशिश किया तो अंदर सिक्के पड़े थे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वो सिक्के हाथ में लेकर बड़े गौर से उन्हें पलट-पलट कर देखने लगा। फिर उसने इधर-उधर देखने लगा, दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आया तो उसने सिक्के अपनी जेब में डाल लिए। अब उसने दूसरा जूता उठाया उसने भी सिक्के पड़े थे। मजदूर भाव विभोर हो गया, उसकी आँखों में आँसू आ गए, उसने हाथ जोड़कर ऊपर देखते हुए कहा-

हे भगवान! समय पर प्राप्त सहायता के लिए उस अनजान सहायक का लाख-लाख धन्यवाद उसकी सहायता और दयालुता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा और भूखे बच्चों को रोटी मिल सकेगी।

मजदूर की बातें सुन शिष्य की आँखें भर आई, शिक्षक ने शिष्य से कहा - क्या तुम्हारी मजाक वाली बात की अपेक्षा जूते में सिक्का डालने से तुम्हें कम खुशी मिली? शिष्य बोला, आपने आज मुझे जो पाठ पढ़ाया है उसे मैं जीवन भर नहीं भूलूँगा। आज मैं उन शब्दों का मतलब समझ गया हूँ जिन्हें में पहले कभी नहीं समझ पाया था कि लेने की अपेक्षा देना, कहीं अधिक आनंददायी है।

परमहंस
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

पाँच सौ का नोट

31 जनवरी का दिन सोना स्कूल से घर आई। देखा माँ अभी तक सोई थी, उसने माँ से पूछा- "मम्मी आज तुम काम पर नहीं गई?" माँ ने उत्तर नहीं दिया सोना घबराकर मौसी को बुला लाई। वह समझ गई सोना की माँ को हुआ क्या है, मौसी ने सोना से कहकर तुरंत उसकी नानी को बुलवाया। आते ही सोना की नानी ने सोना से पानी गर्म करने को कहा, सोना तुरंत पानी गर्म करने रसोई घर में चली गई। तभी थोड़ी ही देर में आवाज आई नवजात शिशु के रोने की।

दो दिन बाद मकान मालकिन आई, आते ही उसने सोना से कहा- "बेटा तेरी माँ कहाँ है? अभी तक मकान का किराया नहीं आया"। यह कहते हुए वह अंदर के कमरे में चली गई और बोली- "देवकली पूरे दो दिन हो गए अभी तक किराया नहीं आया", अचानक उसकी नजर बच्चे पर पड़ी। देवकली ने उत्तर दिया- "माँ जी आप मेरी स्थिति देख ही रही है। मैं पूरी कोशिश करूंगी एक हफ्ते के अंदर आपके पैसे दे दूँ। सोना के हाथ भिजवा दूँगी।

मकान मालकिन के जाते ही देवकली सोना से कहती है- "सोना आशा मैडम के पास जा और जाकर पिछले महीने की तनख्वाह माँग ला।

"नमस्ते मैडम मैं देवकली की बेटी सोना। मम्मी की तबीयत ठीक नहीं है इसलिए वह एक महीने तक काम पर ना आ सकेंगी। और उन्होंने पिछले महीने की तनख्वाह पाँच सौ का नोट मंगाया है"।

"ठीक है बेटा मैं पैसे दे दूँगी लेकिन मेरा एक महीने तक काम कौन करेगा? रही बात तनख्वाह की तेरी माँ दो सौ रुपये एडवांस ले चुकी है। इसलिए तू बकाया तीन सौ रुपये लेजा"।

"मैडम हमें किराया देना है और किराया पाँच सौ है"। आशा कहती है- "मैं दूसरी कामवाली रखूँगी तो मुझे उसे भी तो पैसे देने पड़ेंगे?" सोना को तीन सौ रुपये मिल जाते हैं, उसके बाद भी सोना कुछ देर उदास वहीं खड़ी रहती है। अचानक सोना बोल पड़ती है- "मैडम आपका काम मैं कर दूँगी, आप मुझे पाँच सौ का नोट दे दो"।

नीता शर्मा हाजरी ले रही होती है अचानक सोना पर नजर जाती है, और वह उसके पास जाकर दो थप्पड़ जड़ देती है- "तुम पढ़ाई में कमजोर हो, एक दिन आती हो, दो दिन नहीं आती, आती हो तो लेट आती हो, अब तो क्लास में सो भी रही हो। कल स्कूल तभी आना जब दस रुपये फाइन हाथ में हो। क्लास के बाहर हाथ ऊपर करके खड़ी हो जाओ"।

छुट्टी होने के बाद भी जब सोना घर नहीं जाती नीता सवाल करती है- "तुम घर क्यों नहीं गई?" "मैडम मैं फाइन नहीं ला सकूँगी"। "क्यों" "मेरे पापा हमेशा बीमार रहते हैं, मम्मी भी कुछ दिन से ठीक नहीं रहती है क्योंकि मेरा छोटा भाई हुआ है"।

"ठीक है कल तुम एप्लीकेशन लिखवा कर अपनी मम्मी के साइन उस पर करा लाना लेकिन तुम्हें माफी तभी मिलेगी जब तुम टेस्ट में पास हो जाओगी मेहनत करोगी नहीं तो तुम्हें चौथी कक्षा में ही फेल कर दूँगी। अब घर जाओ"।

"सोना आज काम पर देर से क्यों आई" यह कहते हुए आशा सोना को दो थप्पड़ जड़ देती है। सोना उदास मन से कहती है- "आज मैं स्कूल देर तक रुक गई थी। लेकिन आपको मुझ पर हाथ उठाने का कोई अधिकार नहीं है। मुझे मारने, डांटने का अधिकार केवल तीन लोगों का है- मम्मी, पापा और हमारी मैडम जो हमें शिक्षा देती है। आप हमें पैसे देती हो लेकिन बदले में हम भी तो आप का सारा काम कर देते है। हम देर से आए हैं तो आप हमसे देर तक काम करवा लीजिए लेकिन हाथ ना उठाएँ"।

सोना का यह साहस देख हरीश (आशा का पति) प्रसन्न हो जाते हैं- "सोना बिटिया इधर आ मैडम तुम पर नाराज है इसका बुरा ना मानो तुम भी तो हमारे बच्चे जैसे हो?" सोना का उदास मन शांत होता है, इतने में हरीश सोना को पानी पीने को देता है और कहता है- "बच्चे तुम बहुत समझदार हो और इसलिए मेरी तरफ से यह पाँच सौ का नोट इनाम है तुम्हारे लिए"।

मैडम के पास सोना दौड़कर आती है और कहती है- "मैडम यह एप्लीकेशन और मैंने टेस्ट की पूरी तैयारी कर ली है"। "तुम लेट आई हो बाकी बच्चों का टेस्ट हो गया है इसलिए तुम अपना टेस्ट मौखिक दोगी"। प्रश्न-उत्तर करने के बाद नीता शर्मा सोना से कहती है- "तुम पास हो गई हो जाओ अपनी सीट पर बैठो"।

सुनैना
बी ए (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

वास्तविक जीवन का 'हीरो पिता'

क्लास 12 तक सभी विद्यार्थी का जीवन संभवत: साधारण होता है। स्नातक में प्रवेश के पश्चात उनकी मनोदशा, विचार, जिंदगी को देखने का नजरिया पूर्ण रुप से बदल जाता है। और यही नियम मेरे जीवन पर भी लागू होता है।

मेरे रश्के कमर तूने पहली नजर जब नजर से... मजा आ गया, यही अलार्म का धुन उस दिन भी बजा जब मैं जिंदगी के कुछ सत्य से अनभिज्ञ था। अलार्म के पश्चात मैं अलार्म बंद करके अपने नींद के सागर में पुन: प्रवेश कर लिया, कुछ वक्त बीतने पर रूम के सन्नाटे में घड़ी की सुइयों की टिक - टिक आवाज से उसने इशारा किया कि 5:10:18 सेकंड हो चुके थे। आलस्य दिमाग पर हावी था, फिर भी कॉलेज जाने की फिक्र में अपनी नींद को फुसलाकर और रजाई को प्रेमिका की तरह छोड़कर कॉलेज के लिए तैयार हो गया और अपने प्रेमिका अर्थात रजाई से कल मिलने का वादा भी किया। असाइनमेंट और टेस्ट के लिए अपने घबराहट को संभालते हुए ठसा - ठस भरी भीड़ में कॉलेज पहुँचा। हो कुछ विद्यार्थी आपस में बात कर रहे थे कि - बिग बॉस में शिल्पा शिंदे जीत गई, मानुषी छिल्लर मिस वर्ल्ड बन गई और उस नेता ने ऐसा भाषण कल दिया कि मैं उसका बहुत बड़ा प्रशंसक बन गया और वो तो मेरा हीरो हो गया।

कॉलेज खत्म होने के बाद मैं रूम पर पहुँचा, थकावट और नींद दोनों ही ज्यादा थे। मैं बिस्तर पर सो गया। कुछ वक्त के पश्चात टिप, टिप, टिप बारिश की आवाज तथा सुहानी ठंडी हवा मेरे हृदय को हल्के हल्के सुख पहुँचा रही थी। तत्पश्चात मैंने दरवाजे को खोला, बाहर प्रकृति का नजारा अलग था, मानो बादल गहरे समुद्र रंग में ढल गए हो, बारिश और ठंडी हवा मुझे ऐसा लग रहा था मानो किसी भंवरे को कमल मिल गया हो, या धनानंद को सुजान या जैसे आसमान और धरती का मिलाप हो रहा हो। मेरे हृदय को वह दृश्य, बारिश हवा अहलादित कर रही थी। मानो बरसो पुरानी कष्ट पूर्ण रुप से खत्म हो गए हो, हृदय में संतुष्टि ऐसी थी जैसे कि भगवान राम को माँ सीता का पता चल गया हो।

कुछ वक्त पश्चात बारिश बढ़ती गई और मैं रोड पर आने वाले उन लोगों के बारे में सोचने लगा जो भीग रहे होंगे, जो भूखे होंगे, जो बीमार भी होंगे। मैंने भगवान से प्रार्थना की कि वह ठीक हो तथा अपने लिए भी। परंतु एक सवाल जो उस दिन बिजली की तरह मेरे कानों में गूंज रहा था कि मुझे यह सुविधा कौन दिया है। उसका उत्तर मिलता है कि – माता पिता। शायद उस दिन मुझे यह खुद एहसास हुआ माता–पिता की अहमियत।

जिंदगी के प्रत्येक कठिनाई को जूझते हुए मेरे पिताजी मुझे सुख देते हैं। मुझे समाज की तमाम घटनाओं से बचपन से लेकर आज तक मुझे बचाते हुए हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया। वास्तव में पिता कोई रिश्ता नहीं यह ईश्वर के द्वारा दिया गया एक वरदान है अर्थात माता पिता ईश्वर के ही रूप है। पापा के एक जोड़ी कपड़ा सालों तक चल जाते हैं परंतु हमारे लिए वे अपनी शौक, खुशी का बलिदान कर हमें हमेशा अच्छा रखते हैं। जिंदगी में बहुत सारी असफलता को स्वीकार हमें सफल होने के लिए वह अपनी जिंदगी बलिदान कर देते हैं। जिंदगी की कठिनाई को हृदय से लगा कर खुद अभाव में रहकर मुझे हमेशा कमी नहीं होने देते। मेरे जिंदगी का आदर्श, मेरे नायक, मेरे नेता, मेरा ईश्वर सब कुछ मेरे पिताजी हैं। कौन कहता है कि IAS, PCS ही सपना है, सपना तो यह है कि मेरे माता–पिता के चेहरे पर हमेशा मुस्कान हो।

शुभम चतुर्वेदी
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

> वह अच्छा और बुद्धिमान है जो हमेशा सच बोलता है, धर्म के अनुसार काम करता है और दूसरों को उत्तम और प्रसन्न बनाने का प्रयास करता है।
>
> – दयानन्द सरस्वती

यादों के आईने में पी.जी.डी.ए.वी.

कुछ महत्त्वपूर्ण स्मृतियाँ मेरे जीवन में,
आज यादों के आईने में,
उन स्मृतियों उन अनुभवों को,
लिखना मुश्किल है,
फिर भी लिख रही हूँ।

जीवन कुछ अविस्मरणीय यादों का पुंज है। वर्तमान हम जी रहे हैं, भविष्य अज्ञात है, हमारे चिंतन, हमारे मनन के लिए अतीत ही है। जिसे हम आधार बनाते हैं भविष्य का। विद्यालय हमें अपने बालपन और शिक्षा के आरंभिक दिनों के कारण स्मरण रहता है तो महाविद्यालय में हम कुछ गंभीर हो जाते हैं। अब जीवन हमें कुछ कर गुजरने की चुनौती देने लगता है क्योंकि भविष्य को सुरक्षित करने का ये ही समय होता है; अब बिगड़ा तो भविष्य बिगड़ा। आज जब मैं महाविद्यालय को पीछे छोड़ स्नातकोत्तर की कक्षा में प्रवेश पा चुकी हूँ तो वह क्षण, वह समय रह-रहकर याद आ रहा है। जब मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय के एक प्रमुख कॉलेज पी.जी.डी.ए.वी. में दाखिला लिया था, उस समय मेरे मन में भय, उत्साह, प्रसन्नता के एक साथ सभी भाव थे।

मेरे मन में उस समय नए मित्र बनाने की अपेक्षा अपने अध्यापकों को जानना, समझना, ज्यादा महत्वपूर्ण लगता था। उसमें मैं सफल भी हुई। मैंने अपने अध्यापकों में अपने मित्र ढूँढे और वो मुझे मिले भी।

वास्तव में इसी महाविद्यालय में जिसे मैं विद्या का मंदिर भी कहती हूँ, मेरा बौद्धिक एवं नैतिक विकास हुआ। आरंभ से ही मेरा पसंदीदा विषय हिंदी विशेष रहा है और अपने शिक्षकों के कारण मैं तीनों वर्षों में प्रथम स्थान पर रही।

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज के तीन साल मेरे लिए यादगार बन गए, इसका मुख्य कारण यहाँ के शिक्षक हैं, जिनके माध्यम से मैंने शिक्षा के वास्तविक अर्थ को समझा। शिक्षा के साथ-साथ मानव मूल्यों को भी मैं समझ पाई। कबीर, सूरदास केवल भक्तिकाल के कवि ही नहीं, वे धर्म में फैले अंधविश्वासों को भी दूर करते हैं। भक्ति में भाव के महत्व को प्रतिपादित करते हैं। 'चिंतन' हिंदी साहित्य सभा के माध्यम से मुझे अपने विचार अपने गुरुजनों के मध्य रखने का अवसर मिला। डॉ. मनोज कैन सर ने हम सभी छात्रों को एक अच्छे वक्ता बनने के गुण समझाए।

वीणा मैम, सुखदा मैम, कृष्णा मैम और सुषमा मैडम मुझे शिक्षा के साथ जीवन की कठिनाइयों से जूझने के उपाय समझाती थी। केवल पाठ्य पुस्तकों पर आश्रित रहने से ज्ञान का सर्वोन्मुखी विकास नहीं होता।

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ मुकेश अग्रवाल सर जिनकी छत्रछाया में मैंने स्नातक के तीन साल बिताए। सहज, सहृदय, भाषा-मर्मज्ञ वे एक महान व्यक्तित्व के धनी हैं। हमें व्यक्तित्व और व्यवहार से प्रेरणादायक संदेश देते रहे।

बन्नाराम सर और कपिल सर से मुझे शिक्षा के साथ-साथ राजनीति और मीडिया के विभिन्न पहलुओं को समझने का अवसर मिला। पठन-पाठन के साथ-साथ वह राजनीति में भी सक्रिय रहे। व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास ऐसे ही होता है।

'माता-पिता से हमें जीवन मिलता है, जबकि शिक्षक हमें जीना सिखाते हैं।'

अतः मुझे गर्व है कि मैंने स्नातक में प्रवेश के दौरान पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय का चयन किया। ज्ञान के

इस मंदिर में मुझे एक छात्रा के रूप में बहुत कुछ दिया। इस महाविद्यालय से प्राप्त संस्कार जिंदगी के हर कदम पर मेरा मनोबल बढ़ाते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि 'इन्हीं संस्कार से हम एक अच्छे और सच्चे नागरिक बन सकते हैं।'

जिस प्रकार सुगंध मात्र से पुष्प के रूप-सौंदर्य का दर्शन संभव नहीं है। उसी प्रकार विद्यालय में मैंने जो कुछ भी अनुभव किया उन्हें शब्दों में पिरोना मेरे लिए असंभव है। अर्थात् वह अनुभव मेरे जीवन की बुनियादी शुरुआत है।

पूजा शर्मा

हिंदी विशेष (भूतपूर्व छात्रा)

'हमें हमेशा याद रहेगा'

वरिष्ठ सहकर्मी डॉ मकानी को उनकी सेवानिवृत्ति पर समर्पित

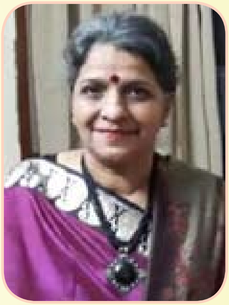

सबकी जरूरतों को समझना और उन्हें पूरा करना।

किसी को सराहना, उत्साहित करना कितनी सहजता से करते रहे हैं आप

हमें हमेशा याद रहेगा।

जिन्दगी की बारीकियों को समझना, अपनी मुस्कुराहटों से उसमे रंग भरना, कितनी तन्मयता से करते रहें हैं आप,

हमें हमेशा याद रहेगा।

वो विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना, उनके सपनों को साकार करना कितनी प्रयत्नशीलता से करते रहे हैं आप

हमें हमेशा याद रहेगा।

कालेज के कार्यक्रमो का सूत्रधार बनना, सभी के व्याख्यानों में जान भरना, कितनी कर्तव्यपरायणता से करते रहें हैं आप

हमें हमेशा याद रहेगा।

वो कालेज के प्रांगण में वाणिज्य विभाग के साथ आपका अंतिम संवाद एक बड़े के रूप में परिवार को अपनत्व की डोर में बांधे रखने का प्रयास

हमें हमेशा याद रहेगा।

रजनी जगोता

एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

पद्य खण्ड

''कर्मभूमि पर फल के लिए श्रम सबको करना है, रब सिर्फ लकीरें देता है, रंग हमको भरना पड़ता है। – गुरुनानक देव

पद्य खण्ड

क्र. सं.	विषय		नाम
1.	भविष्य का भारत	-	प्रखर शुक्ला
2.	मैं सच्चा भारत	-	प्रखर शुक्ला
3.	माँ	-	निशा
4.	वन्दना	-	निशा
5.	बेटी हूँ मैं	-	रवीना सेजवाल
6.	मैं पंछी	-	रवीना सेजवाल
7.	नारी जीवन	-	आरती
8.	ना जाने फिर क्या होगा	-	प्रिया कुमार
9.	बचपन	-	अमिषा सिंह
10.	नारी	-	अमिषा सिंह
11.	एहसास	-	ज्योति भगत
12.	चुनौतियों से आगे अभिलाषा है मेरी	-	ज्योति भगत
13.	वाह रे मोबाइल	-	आनन्द मिश्रा
14.	इतिहास परीक्षा	-	कहकशाँ परवीन
15	कैमिस्ट्री इन माई लाईफ	-	कहकशाँ परवीन
16.	जो भी है चलता जाता हैं	-	बृजेश कुमार
17.	सैनिक	-	दीपक
18.	देशभक्ति	-	दीपिका
19.	पेड़ का दर्द	-	दीपिका
20.	असंभव कुछ नहीं	-	दीपिका
21.	ममतामयी माँ	-	प्रियंका चौधरी
22.	लक्ष्य से तू न विचलना	-	शाहीना
23.	मुकान	-	तस्लीमा
24.	दोस्त पुराने	-	ज्योति ठाकुर
25.	वे भी क्या दिन थे	-	रोहित कुमार
26.	मैं नारी हूँ	-	प्रियंका सिंह
27.	जीवन में गुरुओं का महत्त्व	-	मिसिका चौधरी
28.	बस एक कदम और	-	गीता यादव
29.	जीवन लक्ष्य महान	-	सौरव शर्मा
30.	मंजिल ए एतबार	-	निर्देश प्रजापति
31.	गरीबी सबसे बड़ी सजा	-	पिंकी मीना
32.	अगर वश में मेरे होता	-	पिंकी मीना
33.	मेरी चिड़ियाँ, मेरी दोस्त	-	शैलजा रावत
34.	मासूम	-	राखी
35.	जिंदगी	-	सोनाली
36.	भ्रूण हत्या	-	सोनाली
37.	पैसा	-	सोनाली

38.	जिंदगी की सीख	-	अनस मिर्जा
39.	आज का भारत	-	निधि
40.	बदलेगा समाज जब उठाओगे आवाज	-	निधि
41.	मैं खो चुका हूँ	-	अंशुमान चौधरी
42.	पथिक	-	अंशुमान चौधरी
43.	किस्मत	-	अंशुमान चौधरी
44.	लक्ष्य	-	अंशुमान चौधरी
45.	यह वर्ष भी यूँ ही बीत जाएगा	-	मंटू बाबू
46.	वक्त	-	ज्योति शर्मा
47.	बातों के वीर	-	अभिषेक कश्यप
48.	पंछी	-	कुमारी प्रीति
49.	समय	-	कुमारी प्रीति
50.	दिल की आवाज	-	प्रिया कुमारी
51.	स्त्री का अस्तित्व	-	आरती
52.	जिंदगी को जी लो यारो	-	दीपमाला
53.	प्रदुषण	-	हिमांशु आर्य
54.	रुप	-	गौरव वर्मा
55.	माँ बेटे का रिश्ता	-	गौरव वर्मा
56.	कलम	-	सत्यम पांडे
57.	दहेज	-	विष्णु प्रिया
58.	पंख	-	विष्णु प्रिया
59.	मैं और मेरे अहसास	-	मोहम्मद यहा खान
60.	भारत माता के द्वारा अपने बच्चों की पुकार	-	सौरभ
61.	अनमोल वचन	-	मनोज मीना
62.	मैं कौन हूँ	-	मनोज मीना
63.	इंसान की पहचान	-	शबाना
64.	सियासत	-	गज़ल
65.	पिता एक सोच	-	सुभम चतुर्वेदी
66.	रात	-	सौरव वर्मा
67.	आँखे	-	सौरव वर्मा
68.	खुद से एक सवाल	-	प्रवीण कुमार
69.	दौर	-	मुकेश कुमार
70.	अस्तित्व	-	मुकेश कुमार
71.	याद	-	सुनैना
72.	सैनिक का संदेश	-	विनोद कुमार
73.	जिंदगी	-	परितोष कालरा
74.	इश्क का रंग	-	परितोष कालरा
75.	आजादी के बाद भारत	-	प्रखर शुक्ला
76.	चाँदनी	-	प्रखर शुक्ला

भविष्य का भारत

सब भूखंडों को जोड़, बृहद एक खंड बनाया जायेगा।
सत्य, अहिंसा, मानवता वाला, तंत्र बनाया जायेगा।।
हर अंचल में गूँजेगा जन-गण-मन।
नहीं दूर समय जब, दुनिया में भारत-भारत हो
जायेगा।।

उस बने नये भारत में हम कलम शक्ति दिखायेंगे।
स्वर्ग का धोखा खाने वालो स्वर्ग क्या है दिखायेंगे।।
अंधविश्वास और पाखंड, अधर्म का मूल भंग हो
जायेगा।
इस धरती का बदल नाम, भारत करके दिखायेंगे।।

जाति-धर्म और मंदिर-मस्जिद का मंत्र खत्म हो
जायेगा।
देश को धोखा देने वालों का तंत्र खत्म हो जायेगा।।
सुपुष्पित होगा इस अमर जगत का, शिक्षाधारी यह
आँगन।
अत्यल्प समय में उस भारत वाला, सच्चा भारत हो
जायेगा।।

मैं सच्चा भारत

मैं राम-कृष्ण की जन्मभूमि, मैं शिव का एक
शिवाला हूँ।
मैं भागीरथ की मातृभूमि, मैं ऋषि मुनियों की माला
हूँ।।
मैं वेद पुराणों की गाथा, रामायण और महाभारत हूँ।
राणा प्रताप का स्वाभिमान, मैं ही सच्चा भारत हूँ।।

विक्रमादित्य सा न्यायसिद्ध, विवेकानंद सा ज्ञानी हूँ।
निज आन बचाने वाली, मैं बुंदेलों की रानी हूँ।।
मैं धर्म शक्ति का गठबंधन, वीरों की एक शहादत हूँ।
जो है दुनिया का विश्व गुरु, मैं वो ही सच्चा भारत
हूँ।।

खनिज संपदा का पूरक, अभ्रक का जग विक्रेता हूँ।
मैं हिंद सिंधु की गहराई, एवरेस्ट शिखर विजेता हूँ।।
मेरी प्रकृति विश्व का सम्मोहन, मैं एक तुलसी का
पादप हूँ।
सुरसरि से सिंचित भू अंचल, मैं ही सच्चा भारत हूँ।।

सोलह सौ बावन भाषायें, मैं विविध बोलियों वाला
हूँ।
मैं विष्णु गुप्त की कूटनीति, जयशंकर, पंत, निराला
हूँ।।
तुलसीदास मैं रसिक बिहारी, जायसी रचित पद्मावत
हूँ।
मूर्धन्यों से भरा पड़ा, मैं ही सच्चा भारत हूँ।।

प्रखर शुक्ला
बी. एस. सी. गणित (विशेष) प्रथम वर्ष

हम भारतीयों के आभारी हैं, जिन्होंने हमें गिनना सिखाया जिसके बिना किसी भी तरह की वैज्ञानिक खोज नहीं हो पाती।

– अल्बर्ट आइन्सटीन

माँ

हमें इस दुनिया सें कुछ भी नहीं चाहिए
इस दुनिया से ऐ खुदा
बस मेरी माँ के कदमों की चहल-पहल
मेरे आँगन में सदा रखना

अभी जिंदा है मेरी माँ मुझे कुछ नहीं होगा
हम जब घर से निकलते हैं, तो दुआ भी साथ चलती है
दुनिया की सारी खुशी मौजूद हो
लेकिन घर में बेटी ना हो, तो घर अच्छा नहीं लगता

जिंदगी में बस इतनी सी
दुआ माँग लेना कोई घर माँ के बिना ना हो और
कोई माँ बिना घर के ना हो माँ की आँख में
आँसू मत लाना वरना बदनसीब हो के मर जाओगे

वन्दना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना
या ब्रह्मच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा माँ पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापक।।

समानमस्तु वो मनः

सङ्गछध्वं संवदध्वं
सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे
संजानाना उपासते।।
समानो मंत्रः समितिः सामानी,
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः,
समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः
समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो
यथा वः सुसहासति।।

निशा
बी. ए. (हिंदी विशेष) प्रथम वर्ष

शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूँसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करें।
– सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन

मैं पंछी

मैं पंछी उस जहाँ की जहाँ मेरा ना था कोई साथी,
मैं पंछी उस जहाँ की जहाँ मैं थी पागल-सी।।

ना कल का डर ना आज का सपना,
बस उड़ती चल चली थी मैं, थी मैं थोड़ी पागल सी।।

खुद को ना पहचाना कभी बस गिरती ही चली थी मैं,
मैं पंछी इस जहाँ कि जब बना था मेरा एक साथी।।

ना जाने दोस्त था या था कोई पापी,
मैं भी थी एक पंछी जब था वो साथी,
साथी नहीं था वो पापी,
बदल दिया जिसने गुरूर मेरा, बदला जीवन मेरा,
आज ना मैं पंछी, ना मैं पागल-सी।।

आज जाना वह रिश्ता, जो था अपना,
सब पास मेरे सब कुछ पाया मैंने,
खोया वह चेहरा जो कभी ना था मेरा,
हाँ मैं हूँ वो पंछी जिसने कभी कुछ ना पाया।।

बेटी हूँ मैं

क्या हूँ मैं, कौन हूँ, यही सवाल करती हूँ मैं,
लड़की हूँ, लाचार मजबूर बेचारी हूँ, यही जवाब
सुनती हूँ मैं।

बड़ी हुई, जब समाज की रस्मों को पहचाना,
अपने ही सवाल का जवाब, तब मैंने खुद में ही पाया,
लाचार नहीं, मजबूर नहीं मैं, एक धधकती चिंगारी हूँ,
छेड़ो मत जल जाओगे, दुर्गा और काली हूँ मैं,

परिवार का सम्मान, माँ-बाप का अभिमान हूँ मैं
औरत के सब रूपों में सबसे प्यारा रूप हूँ मैं,

जिसको माँ ने बड़े प्यार से है पाला,
उस माँ की बेटी हूँ मैं, उस माँ की बेटी हूँ मैं।
सृष्टि की उत्पत्ति का प्रारंभिक बीज हूँ मैं,

नए-नए रिश्तों को बनाने वाली रीत हूँ मैं,
रिश्तों को प्यार में बाँधने वाली डोर हूँ मैं,

जिसको हर मुश्किल में संभाला,
उस पिता की बेटी हूँ मैं, उस पिता की बेटी हूँ मैं।।

रवीना सेजवाल
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

आकाश की तरफ देखिये, हम अकेले नहीं है, सारा ब्रह्माण्ड हमारे लिए अनुकूल है और जो सपने देखते है और मेहनत करते है उन्हे प्रतिफल देने की साजिश करता है।

– अब्दुल कलाम

नारी जीवन

खुदा की खूबसूरत इबादत है नारी
दुनिया के सितम सहती है नारी
परन्तु फिर भी गुमनाम सा, जीवन जीती है नारी।
कब अपने सपनों के खातिर, आवाज उठा पाएगी नारी।
कब अपने सपनों के खातिर, दुनिया से लड़ पाएगी नारी।
दूसरे के गुनाहों की सजा, सहती है नारी।
परंतु फिर भी कोई शिकायत, नहीं करती है नारी।
आखिर किस मिट्टी से बनाया है, खुदा ने नारी को।
जमाने के हर अत्याचार, चुप-चाप सह लेती है नारी।
देवी दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती का, रुप है तू नारी।
फिर क्यों पापियों के अत्याचार, सहती है तू नारी।
कब वह दिन आएगा जब, अपने लिए सोच पाएगी नारी।
दुनिया की परवाह करना, छोड़ पाएगी नारी।

आरती
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

ना जाने फिर क्या होगा

ना जाने फिर क्या होगा
जब हिंद से हिंदी उठ जाएगी
खुद की संस्कृति लुट जाएगी
अपना संस्कार ही कुछ नया होगा।

दिनकर पंत सब खो जायेंगे
निराला सदा को सो जाएंगे
मातृभाषा भी विदेशी में बयाँ होगा
ना जाने फिर क्या होगी।

कलम के सिपाही का होगा खून
होंगे कहाँ बाबा नागार्जुन
उर्वशी कहाँ होगी दिनकर की
होगी कहाँ रचना नागर की।

हिंदी से ही जब हिंदुस्तानियों को
शर्म और हया होगी
ना जाने फिर क्या होगा।

प्रिया कुमारी
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

उत्कृष्ट ज्ञान, चिंतनशीलता तथा धैर्य आदि सद्गुणों का स्रोत हमारा मन अंधकार (दुष्कर्मों) की ओर न बढ़े - हमारा मन सदैव शुभ एवं कल्याणपरक संकल्प वाला बना रहे।
– यजुर्वेद 34/3

बचपन

बचपन का वो दिन था,
माँ की गोद और पापा के कन्धों पर चढना,
पेड़ पर चढकर वो फलों के लिए लड़ना,
कभी गिल्ली डंडा तो कभी चोर सिपाही का वो खेल,
कभी दोस्तों से झगड़ना, फिर झट हो जाता मेल,
बचपन का वो दिन था।

ना खाने का गम, ना सोने का होश
दिन ऐसा जिसमें था बस जोश ही जोश
कभी कुछ अनजाने में चुराना तो कभी जानबूझकर,
डाँट खाकर सो जाना रात में रो-रो कर,
बचपन का वो दिन था।

मिट्टी की वो खुशबू, बारिश की वो बूँदे,
जिनमें मग्न रहा करते थे हम नन्हे नन्हे बच्चे,
अब सब बदल चुका है, अब सब कुछ नया है,
वह खूबसूरत सा बचपन कहीं गुम सा गया है,
बचपन का वो दिन था, बचपन का वो दिन था।।

नारी

माँ होने का वरदान है पाया, कहते उसे सब नारी हैं।
रुकती नहीं हो धूप या छाँव, उसके चरण कभी ना हारी है।
हृदय मानो कमल के जैसा, जिसे ना तोल सका है पैसा।
चाहे किसी लिबास को पहने, तन पे जचती साड़ी है।
आदिकाल से अंत-अंनत तक उसी की कथाएँ जारी है।
माँ होने का वरदान है पाया, कहते उसे सब नारी हैं।

अमीषा सिंह
बी. ए. (द्वितीय वर्ष) हिंदी विशेष

याद

उस याद में खोए हो तुम
फरियाद ना कर जाना तुम
सागर को भर जाना तुम
फरियाद ना कर जाना तुम
जैसे जैसे सागर भर जाएगा
यादें धुंधली पड़ जाएंगी
जीवन से लड़ जाना तुम
फरियाद ना कर जाना तुम
सावन की बारिश में खो जाना तुम
बूँद-बूँद बारिश से भर जाएगा सागर
जिस याद में खोए हो तुम
फरियाद ना कर जाना तुम।

सुनैना
बी ए हिंदी विशेष

एहसास

झूठे हम नहीं, झूठे तुम नहीं,
झूठा वो एहसास था।
वो पल वो लम्हा वो दिन और रात था।
आपका हमारा मिलना महज एक इत्तेफाक था।
झूठा कह नहीं सकते आपको, झूठा मान नहीं सकते
अपने आपको, क्योंकि झूठा तो वो एहसास था।
ये दिल अभी भी मानने को तैयार नहीं कि, वह
शख्स कोई और नहीं आप थे।
झूठे हम नहीं, झूठे तुम नहीं, झूठा तो वो एहसास था।
आपका हमारा मिलना महज एक इत्तेफाक था,
इत्तेफाक था, और बस एक इत्तेफाक था।

चुनौतियों से आगे अभिलाषा है मेरी

अभी पैरों से चलना सीखा नहीं,
पैरों में बेड़ियाँ अभी से।

इन आँखों से दुनिया देखी नहीं, पलकें झुक गई
अभी से।
अभी सयानी भी हुई नहीं, सर पर चूनर अभी से।

सपने क्या हैं मेरे, अभी जाना है मैंने,
सपने भुलाकर घर बसाया अभी से।
सबके हिस्से में सपने बुनने की है आजादी,
मेरे हिस्से में ही क्यों चार दीवारी।

जब साथी बनके चलना साथ साथ .....
तो फिर क्यों?

आगे बढ़ने से रोक दे ये रिवाज।।
कोई दे सकता है इसका जवाब?

ज्योति भगत
बी. ए. (हिंदी विशेष) द्वितीय वर्ष

वाह रे मोबाइल

आई बहुत गजब की चीज
धोखाधड़ी बढ़ी अति शीघ्र।
मिथ्या का प्रचलन हुआ, जबसे इसका चलन हुआ।
बनी जरूरत ऐसी सबकी, बड़की छोड़ चलावे छोटकी।
भिक्षुक पूछे मित्रों से अपने, कितना आज कमाया तुमने।

आगे और सुनो हे भैया, जिस घर होता नहीं रुपैया
वहाँ भी यह करता छइयाँ छइयाँ।
डाला ऐसा प्रभाव विपरीत, घर वालों में रही न प्रीत।
सब अपने में मस्त हुए, व्हाटसेप में व्यस्त हुए।
गया गाँव जब मैं इस बार, दिखा नहीं खेल में प्यार।
चोट लगाया इसने ऐसा, छीना बचपन चोरों जैसा।
हैलो! हाय! हैलो! हाय! प्रेमी बोले सांय सांय।
पर है बहुत काम की चीज, मानो मेरे प्यारे मीत।
वाह रे मोबाइल अच्छी लगी तेरी स्टॉइल।

आनंद मिश्रा
बी. ए. (हिंदी विशेष) द्वितीय वर्ष

इतिहास परीक्षा

इतिहास की परीक्षा थी उस दिन
चिंता से हृदय धड़कता था
थे बुरे शकुन घर से
चलते ही बायाँ नयन फड़कता था
मैंने सवाल जो याद किए
वो केवल आधे याद हुए
मैं 20 मिनट था लेट
द्वार पर चपरासी ने बतलाया
मैं मेल ट्रेन की तरह
हाँफते कमरे के अंदर आया
पर्चा हाथ में उठा लिया
देखा उसको टुक झूम गया
पढ़ते ही छाया अंधकार
चक्कर आया सिर घूम गया
यह 100 नंबर का पर्चा था
मुझको 6 की आस नहीं
चाहे सारी दुनिया पलटे
मैं हो सकता था पास नहीं
आँख मूँद कर बैठ गया
बोला भगवान दया कर दे
इन सारे प्रश्नों के उत्तर
ठूँस ठूँस मेरे दिमाग में भर दे
इतने में बाहर से आई
गहरी आवाज एक
अरे मूर्ख! व्यर्थ तू रोता है
आँख उठा और बगल देख
मेरे उत्तर के द्वार खुले
कॉपी पर कलम चली चंचल
जैसे खेत की छाती पर

चलता हो हलवाहे का हल
मैंने लिख दिया
पानीपत का युद्ध
हुआ था सावन में
जापान जर्मनी के बीच
सन 1857 में
अकबर का बेटा था बाबर
बाबर का बेटा था अकबर
पर हाँ गुप्त वंश में राज किया था
रजिया बेगम ने भारत पर,
लिख दिया आर्य जापान से आया था
राणा ने हिंद महासागर को अमेरिका से मँगवाया था
महात्मा बुद्ध महात्मा गांधी के चेले थे
गांधी जी के संग बचपन में
गुल्ली डंडा खेले थे
लिख दिया अंत में
इतिहास की कोई बात न सच्ची है।
इसे पढ़ना बेकार-व्यर्थ
बेहद माथा पच्ची है।
हो गया परीक्षक पागल-सा
मेरी कॉपी को देख देख
बोला इन सारे बच्चों में
होनहार है बस यही एक
औरों की कॉपी फेंक दिए
मेरे सब उत्तर छाँट लिए
जीरो नंबर देकर बाकी नंबर काट लिए।

कहकशाँ परवीन
बी. ए. (हिंदी विशेष) प्रथम वर्ष

कैमिस्ट्री इन माइ लाइफ

कैमिस्ट्री मेरे जीवन में
इंपॉर्टेंट पार्ट रखती है
मेरे अरमानों का वह
सिस्टेमेटिक चार्ट रखती है
मेरे जीवन का कैमिस्ट्री लैब से
ऐसा रिलेशन है
न तो कैमिस्ट्री होती
न मैं होता इसका स्टूडेंट
न कोई लैब होती
और न होता कोई हार्ट एक्सीडेंट
लैब में प्रेक्टिकल करने आई
एक खूबसूरत-सी लड़की
कोबाल्ट से होंठ
कॉपर सी आँखें
नाक टेस्ट ट्युब सी
इसकी हर साँस में
इथर की गंध थी
मिली जब आँखें उससे
एक रिवर्सिबल रिएक्शन हुआ
मौसम केटलिस्ट बना
प्यार का प्रोडक्शन हुआ
फिर रोज लगाने लगे
हम उसके घर में चक्कर ऐसे
न्यूक्लियस के चारों ओर
घूमता है इलेक्ट्रॉन जैसे
और जिस दिन उसके पिताजी ने
मुझे इनविटेशन दिया मेरे
लव टेस्ट का कन्फर्मेशन हुआ
मगर मेरी बात सुनते ही वो
यू तेजी से उबल पड़े
इग्निशन ट्यूब से जैसे
सोडियम पीस निकल पड़े
कहने लगे हाथ में आओ
पहचानो अपनी औकात
गोल्ड का कभी
अलौय नहीं हो सकता
तुम जैसे घटिया आयरन के साथ।

कहकशाँ परवीन
बी. ए. (हिंदी विशेष) प्रथम वर्ष

आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते, पर आप अपनी आदतें बदल सकते है और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका फ्यूचर बदल देगी।

– ए पी जे अब्दुल कलाम

जो भी है चलता जाता है।

क्यों पीट रहा सर उस चौखट पर,
जिसे समय का सीमा लाँघ गई।
रुकना है रुक पर याद रहे,
ठहरेगा कोई साथ नहीं।।

जिस राह निकल कर गया समय,
वो राह कहाँ दोहराता है।
जो आज है वो कल क्या होगा,
ये वही समय बतलाता है।

जो भी है चलता जाता है,
जो भी है चलता जाता है।।

क्या कहूँ कि उड़ता वो पंछी,
बस तिनका लेकर जाता है।
मैं तो कहता हर रोज सुबह,
सूरज से मिलकर आता है।।

उन्नति का कारोबार सदा,
सपनों के दम पर चलता है।
बीज लगे जैसा दिल पर,
फल वैसा लगता जाता है।।

जो भी है चलता जाता है,
जो भी है चलता जाता है।।

क्या सुना कभी वो विश्व कहीं,
ना ध्वस्त हुआ या बना नहीं।
सागर थामे ये पर्वत भी,
क्या कभी जगह से हिला नहीं।।

निर्माण नाश स्तंभ
टिकी
परिवर्तन की अपनी गाथा है।
कभी रुका नहीं ना रुक सकता,
जो भी है चलता जाता है।।

जो आज है वो कल क्या होगा,
यह वही समय बतलाता है...।।

जो भी है चलता जाता है,
जो भी है चलता जाता है।।

बृजेश कुमार
बी. ए. (राजनीति विज्ञान विशेष) प्रथम वर्ष

> नुकसान से निपटने में सबसे ज़रुरी चीज़ है उससे मिलने वाले सबक को ना भूलना, वो आपको सही मायने में विजेता बनाता है।
>
> – स्वामी विवेकानन्द

सैनिक

मैं जगा रहूँगा रात-दिन,
चाहे धूप हो या बरसात हो,
चाहे तूफान आए या पूस की ठंडी रात हो,
मैं पड़ा रहूँगा सरहद पर सीना ताने,
चाहे गोलियों की बौछार हो,
चाहे न खाने को कुछ भी आहार हो,
अपने वतन की खातिर मैं,
हर दर्द हँस के सह लूँगा
निकले जो खून बदन से मेरे,

मैं खुश हो लूँगा
कभी आँखो में रेत भी चली जाए तो,
वादा है मेरी पलकें नहीं झपकेंगी,
लहू भी जम जाए अगर जो सीने में,
मेरे हाथ बंदूक नीचे नहीं रखेंगे
दुश्मन के घर मेरे 'वतन' की चट्टानों का
एक टुकड़ा भी न जा पाएगा,
जमींदोज कर दूँगा मैं काफिर तुमको,
जो मेरी धरती की तरफ आँख उठाएगा,
कितना भी दुर्गम रास्ता हो,
किंचित भी नहीं डरूँगा मैं
चप्पे-चप्पे पर रहेगी नजर मेरी,
देश के गद्दारों पर अब रहम नहीं करूँगा मैं।।

दीपक
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

ममतामयी माँ

कब्र के आगोश में जब थक कर सो जाती है,
तब कहीं जाकर थोड़ा सुकून पाती है माँ।
फिक्र में बच्चे की कुछ ऐसे ही घुल जाती है,
नौजवान होते हुए भी बूढ़ी नजर आती है माँ।
रिश्तों की गहराई तो देखिए,
चोट लगती है बच्चे को रोती है माँ।
घर से जब परदेस जाता है कोई नूरे-नजर,
हाथ में कुरान लेकर दर पे जाती है माँ।
जब मुसीबत सर पर आए तो याद आती है माँ।
लौटकर वापिस सफर से जब भी घर आते हैं,
हम को गोद में अपनी बैठा सिर को हमारे सहलाती है माँ।
शुक्रिया ही तो नहीं कर सकते कभी उसका अदा,
मरते मरते भी दुआ जीने की दे जाती है माँ।
प्यार कहते हैं, किसे ममता क्या चीज है,
यह तो उन बच्चों से पूछो जिनकी मर जाती है माँ।

प्रियंका चौधरी
बी. ए. (हिंदी विशेष) द्वितीय वर्ष

देश भक्ति

उठो जवानो चलो जवानो,
कि हम तुम्हारे साथ हैं।
एक नहीं, दो नहीं, तुम्हारे,
साथ करोड़ों हाथ हैं।

हम सैनिक तो नहीं किंतु
हम भी जी जान लगा देंगे।
भिड़ जाएँगे दुश्मन की,
ईंट से ईट बजा देंगे।

अपने प्यारे देश के लिए,
मरना हमको आता है।
तन, मन, धन जीवन भी अर्पण,
करना हमको आता है
ऊँचा रहे तिरंगा अपना,
इसका मान बढ़ाएँगे।
बढ़ो सैनिकों विजय-पथों पर,
हम भी कदम मिलाएँगे।

असंभव कुछ नहीं

अगर चाहो नदी के दो किनारे मिल भी सकते हैं,
मरुस्थल में कमल के फूल हजारों खिल भी सकते हैं।।
तमन्ना हो अगर दिल में इरादे हो अगर पक्के,
हिलाओ तो जरा मन से ये पर्वत हिल भी सकते हैं।।

बबूलों पर रसीले आम के फल आ भी सकते हैं।
सुरीली तान में बेजान पत्थर गा भी सकते हैं।।
असंभव कुछ नहीं संभावनाएँ जोड़कर रखिए,
तुम्हारे हाथ से तारे जमीं पर आ भी सकते हैं।।

दीपिका
बी. ए. (हिंदी विशेष)

पेड़ का दर्द

रो रोकर एक पेड़, लकड़हारे से एक दिन बोला,
क्यों काटता मुझे, ओ भैया! तू है कितना भोला।।

सोच समझकर फिर बता मुझे, मैं तेरा क्या लेता हूँ,
मैं तो पगले! तुझको, जग को देता ही देता हूँ।।

सूरज से प्रकाश लेकर मैं खाना स्वयं पकाता हूँ।
धरती माँ से जल ले-लेकर अपनी, प्यास बुझाता हूँ।।

पी जहरीली वायु तुझे, मैं शुद्ध पवन देता हूँ।
शीतल छाया देकर तेरा, हर दुख हर लेता हूँ।।

स्वयं धूप में तपकर तेरा, ताप मिटाता रहता हूँ।
अंदर अंदर रोता फिर भी, बाहर गाता रहता हूँ।।

तेरे नन्हें-मुन्नों को, निज छाया तले बुलाता हूँ।
मीठी मीठी लोरी गाकर, अपनी गोद सुलाता हूँ।।

देख ना पाएगा वसंत, तू बाढ़ रोक ना पायेगा
मुझे काट देगा पगले! तू जीते जी मर जायेगा।।

लक्ष्य से तू न विचलना

शूल पंक सब पास ही है, तूफान आना लाजमी है।
रात भी लेकर अंधेरा, तुझको डराए यह भी सही है।

तब हौसले की डाल पर, नजरों का दिव्य प्रकाश कर
छुड़ाकर सबका पसीना, वहाँ है तुझको पहुँचना।

राह में तू न बिखरना, लक्ष्य से तू न विचलना
देखती है तुझको मंजिल, तू बस उसी की ओर चलना।

होता है जो वही होगा, भाग्य का जो लेख होगा
भाग्य का निर्माता है तू, ऐसे कैसे जो भी होगा।

खुद को हवा से तेज कर, दावा चमक के वेग पर
अथक अविचल, सतत चलकर, वहाँ है तुझको पहुँचना।

राह में तू न बिखरना, लक्ष्य से तू न विचलना
देखती है तुझको मंजिल, तू बस उसी की ओर चलना।

पथ भी कहीं भटकाएगा, कुछ भी समझ न आएगा
ईर्ष्या छल से सना पथ, अनगिनत बाधा लाएगा।

तब हिय का नक्शा खोलकर, खुद को उसी पर मोड कर
हार डर भय के धनुष से, तीर सा तू बढ़ निकलना।

राह में तू ना बिखरना, लक्ष्य से तू न विचलना
देखती है तुझको मंजिल,
तू बस उसी की ओर चलना,
तू बस उसी की ओर चलना।

शाहीना
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

मुस्कान

मुस्कान की कोई कीमत नहीं होती,
मगर यह बहुत कुछ रचती है
यह पाने वाले को खुशहाल करती है,
देने वाले का कुछ घटना नहीं, यह क्षणिक होती है।
लेकिन यह यादों में सदा के लिए रह सकती है।

कोई इतना अमीर नहीं कि इसके बगैर काम चला ले
और कोई इतना गरीब नहीं की इसके कायदों को न पा सके
यह घर में खुशहाली लाती है, व्यवहार में ख्याति बढ़ाती है,
यह मित्रता की पहचान है।

यह थके हुओं के लिए आराम है,
निराश लोगों के लिए रोशनी,
उदास के लिए सुनहरी धूप,
हर मुश्किल के लिए कुदरत की सबसे अच्छी दवा।

तब भी न तो यह भीख में, न खरीदने से
न उधार माँगने से और न चुराने से मिलती है।

क्योंकि यह ऐसी चीज है जो तब तक किसी काम की नहीं,
जब तक आप इसे किसी को दे न दें।

इसीलिए जिंदगी के सफर में
सदा मुस्कुराते रहिए.....।

तस्लीमा
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

दोस्त पुराने

मैं यादों का किस्सा खोलूं तो,
कुछ दोस्त बहुत याद आते हैं।
मैं गुजरे पल को सोचूँ तो
कुछ दोस्त बहुत याद आते हैं।।

अब जाने कौन सी नगरी में,
आबाद है जाकर मुग्ध से।
मैं देर रात तक जागूँ तो
कुछ दोस्त बहुत याद आते हैं।।

कुछ बातें थी फूलों जैसी
कुछ लम्हे खुशबू जैसे थे।
मैं सहरे चमन में टहलूँ तो
कुछ दोस्त बहुत याद आते हैं।।

सब की जिंदगी बदल गई
एक नए साँचे में ढल गई
किसी को नौकरी से फुर्सत नहीं
किसी को दोस्तों की जरूरत नहीं

सारे यार गुम हो गए
तू से तुम और तुम से आप हो गए
धीरे धीरे उम्र कट जाती है,
जीवन यादों की पुस्तक बन जाती है

कभी किसी की याद बहुत तड़पाती है,
कभी किसी की यादों के सहारे जिंदगी कट जाती है
किनारे पर सागर के खजाने नहीं आते
फिर जीवन में दोस्त पुराने नहीं आते

जी लो इन पलों को हंस कर ए दोस्त
फिर लौट कर दोस्तों के गुजरे जमाने नहीं आते
फिर जिंदगी में दोस्त पुराने नहीं आते।

ज्योति ठाकुर
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

वे भी क्या दिन थे

साथ गुजारे थे जो पल,
याद आएँगे जब वो कल,
सिहर उठेंगे मिलन आस को,
अतृप्त सी उस मीठी प्यास को।

साथ हमारा थम जायेगा
राह हमारी बँट जाएगी
जीवन की व्यस्तता के कारण
उम्र यूँ ही बस कट जाएगी।

साथ हमारे कुछ न होगा,
बस यादों का गहना होगा,
वे भी क्या खूब दिन थे,
यही हमारा कहना होगा।

धरती पर जब जन्म था पाया
ख्वाहिशों का था घना ही साया
जिस दिन से मित्रों तुमको पाया
बिना साँस के जीना आया।

रोहित कुमार
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

मैं नारी हूँ

मैं स्त्री हूँ, मैं नारी हूँ, मैं कली हूँ, मैं फुलवारी हूँ,
मैं दर्शन हूँ, मैं दर्पण हूँ, मैं नाथ हूँ, मैं ही गर्जन हूँ,
मैं बेटी हूँ, मैं माता हूँ, मैं बलिदानों की गाथा हूँ,
मैं श्रीमद भगवत गीता हूँ, मैं द्रौपदी हूँ, मैं सीता हूँ,
पुरुषों की इस दुनिया ने मुझे कैसी नियति दिखलाई,
कभी जुए में हार गए, कभी अग्नि परीक्षा दिलवाई,
कलयुग हो या सतयुग हो इल्जाम मुझ ही पे आता
है, क्यों घनी अंधेरी सड़कों पर चलने से मन घबराता है,
मैं डरती हूँ, मैं मरती हूँ, जब सफर अकेले करती हूँ,
डर का साम्राज्य बढ़ता है कोई साया पीछा करता है,
मेरी मुट्ठी बँध जाती है डर की धड़कन बढ़ जाती है,
है तरल पसीना माथे पर दिल में मेरे घबराहट है,
जाने ये किसका साया है जाने यह किसकी आहट
है, अँधेरे में इन हाथों ने मुझको बाहों में घेर लिया
एक ने मुँह पर हाथ रखा, एक ने आंचल खींच
लिया नारी के सम्मान को मिलकर तार-तार सा कर डाला
मर्यादा के आँचल को फिर जार जार सा कर डाला,
मारा है, मुझ को पीटा है फिर बालों से घसीटा है
फिर बर्बरता की उन सारी सीमाओं को तोड़ दिया,
उन घनी अंधेरी सड़कों पर मुझे तड़पता छोड़ दिया
सन्नाटे में चीख रही थी खून से लथपथ होकर मैं,
सबने तस्वीरें खींची कोई मदद को आगे ना आया
कोई मदद करो, कोई मदद करो, कोई मदद करो,
ये चीख-चीख कर चीख भी मुझसे रुठ गई,
जब होश में आई इस समाज की बातें सुनकर टूट
गई, परिवार की बदनामी होगी सब सही समझाते हैं,
ये नई उम्र के लड़के हैं थोड़ा तो बहक ही जाते हैं,
अरे भूल जा उसे ये तो लड़के बह ही जायेंगे
क्यों अकेली निकली रात में? क्यों कोई नहीं था साथ
में, क्या मेकअप था, क्या गहने थे, क्या छोटे कपड़े
पहने थे,
ये प्रश्नों की भूलभुलैया में सच्चाई कहीं खो जाती
है, सब भूल जाओ कहने वालों क्या तुम्हें शर्म नहीं
आती है
कैसे भूलूँ उन रातों को, मुझ को छूतें उन हाथों को,
उन सारी तकलीफों को, कैसे भूलूँ उन चीखों को
मेरे शरीर की चोट तो बस कुछ दिन में भर जाएगी,
लेकिन मन की पीड़ा सारी उम्र मुझे सताएगी
सब भूल जाओ, सब भूल जाओ, सब भूल जाओ
कहने वालो,
याद रखो ये आखरी गलती आपकी भी हो सकती है
कब सड़क पर बेसुध लड़की आपकी बहन या बेटी
हो सकती है, इस एहसास से बढ़कर दुख और कोई
नहीं हो सकता है
'जो नारी का अपमान करे वह मर्द नहीं हो सकता है'
जब सजा मौत की लागू होगी सारे दोषी लड़कों पर,
फिर कोई लड़की नहीं मिलेगी खून से लथपथ
सड़कों पर
तो आओ प्रण लो मेरे साथ सब मिलकर यह
आह्वान करो अपनी मर्यादाओं को समझो नारी का
सम्मान करो।।

प्रियंका सिंह
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

जीवन में गुरुओं का महत्व

सफल जीवन के गुरु आधार होते हैं
हर कामयाबी के लिए गुरु ही सार होते हैं,
चलने को चलते हैं अनेकों राही सफर पर
पर मंजिल तक पहुँचाने में गुरु पतवार होते हैं।
गुरु की महिमा, गुरु का गौरव
मिले गुरु से ज्ञान नित नव
अंधकार के सन्नाटे में
करता शीश मुकुट पर कलरव
पर गुरु दक्षिणा में बस सत्कार होते हैं,
समुद्र बीच दिशाओं का पता तब नहीं होता
उसकी जिंदगी में ज्ञानवर्धन, जब नहीं होता
बहने को तो बहती है लाशें भी मीलों तक
पर उस बहने का कोई मतलब नहीं होता
गुरु है अगर कुशल माँझी तो दरिया पार होते हैं
सफल जीवन के गुरु आधार होते हैं।
दुनिया में जब आया तो पहली गुरु माँ मेरी,
वहाँ परछाई माता की जहाँ किलकारियाँ मेरी
लड़खड़ाकर फिर उठना माँ ने सिखाया था
गुरु ज्ञान का दीपक माँ ने बताया था
कहा संघर्ष बाधा की गुरु ललकार होते हैं
सफल जीवन के गुरु आधार होते हैं।

मिसिका चौधरी
बी. ए. (इतिहास विशेष)तृतीय वर्ष

बस एक कदम और...

बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।
बस एक नजर और इस बार इशारा होगा।
अंबर के नीचे उस बदली के पीछे कोई तो किरण होगी। इस अंधकार से लड़ने की कोई तो किरण होगी।
बस एक पहर और इस बार उजाला होगा।
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।
जो लक्ष्य को भेदे वो कहीं तो तीर होगा।
इस तपती भूमि में कहीं तो नीर होगा।
बस एक प्रयास और अब लक्ष्य हमारा होगा।
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।
जो मंजिल तक पहुँचे वो कोई तो राह होगी।
अपने मन को टटोलो कोई तो चाह होगी।
जो मंजिल तक पहुँचे वो कदम हमारा होगा।
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।
बस एक नजर और इस बार इशारा होगा।

गीता यादव
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

जीवन लक्ष्य महान

ओ बाधाओं! यह मत समझो मैं दुर्बल इंसान
मेरे इस जर्जर तन में भी है चेतन भगवान
मैंने हार न अब तक मानी
मेरा साहस है अभिमानी
भीषण से भीषण चोटों को सहना शैल समान
ओ बाधाओं! यह मत समझो मैं दुर्बल इंसान
माना मेरे पथ में तम है,
दावों मैं कुछ बल भी कम है,
पर मेरा यह प्रण पथिक भी है, अद्‌भुत बलवान
ओ बाधाओं! यह मत समझो मैं दुर्बल इंसान
तुम चाहे कितनी भी आओ आ आकर के पथ जगाओ
चलने वाला कभी न रुकता जीवन पंथ महान
ओ बाधाओं! यह मत समझो मैं दुर्बल इंसान।

सौरव शर्मा
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

मंजिल-ए-एतबार

बयाँ कैसे करूँ ऐ दिल जो तुझको चाहता इतना,
इबादत कर रहा प्रेमी जो तुझको मानता इतना।
तू दिल में है कि एहले दिल की बातें बोल दूँ तुझसे,
चाहूँ मैं जान ऐ दिलबर की यूँ लब खोल दूँ तुझसे,
जो लब खोलूँ तो क्या बोलूँ कि तू नहीं जानता
इतना, इबादत कर रहा प्रेमी जो तुझको मानता इतना,
जो बसते हो हृदय में तुम हृदयरानी-सी बनकर के न
है कोई नादाने दिल में मृगनयनी-सी बनकर के
जो दिल कहता है ये तुझ को कमलनयनी है सपनों
की, तू धारा है उमंगों की, किनारा है तू जीवन की,
तुझे पाऊँ तो एहले दिल की हालत फिर सुधर जाए,
तू गर मिल जाए दुनिया पे तो एहले राज हो जाए,
तुझे पाऊँ तो एहले ही खुदा की बंदगी हो जाए,
तुझे पाऊँ तो सफलताओं की रजामंदी हो जाए,
मेरी हो बंदगी ऐ दिल तुम्हें कैसे बताऊँ यह,
मेरी हो जिंदगी ऐ जान तुम्हें कैसे दिखाऊँ यह,
कहूँ कैसे हजारों बात कि पहले दिल के दिल टूटे,
हजारों नेकियों बागों से एहले दिल जो दिल जूटे,
चलो अब छोड़ हुस्नों से अदावत मान लो तुम भी,
इबादत ए खुदाई को एलाही मान लो तुम भी।

निर्देश प्रजापति
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

गरीबी सबसे बड़ी सजा

खुशियों को हर कोई बाँट लेता है
पर किसी के गम को बाँटना आसान नहीं होता

किसी जरूरतमंद की मदद करना इंसानियत है
यह किसी पर कोई एहसान नहीं होता

परिंदे भी लौट आते हैं आखिर में अपने बसेरे की
ओर पर कई इंसान ऐसे भी हैं जिनका कोई मकान
नहीं होता

एक बच्चा सड़क के किनारे बैठे कुछ सोच रहा था
क्या गरीब बच्चों के दिल में कोई अरमान नहीं होता?

यह बात सच है कि हर एक का अपना-अपना
नसीब हैं पर क्या कमजोर लोगों को देख मन कभी
शर्मिंदा नहीं होता

आज के दौर में गरीबी से बड़ी कोई सजा नहीं
काश ऐसा हो कि गरीबी का ही कोई नामोनिशान
नहीं होता।

अगर वश में मेरे होता

आसमान से तारे तोड़ लाती, अगर वश में मेरे होता।
तेरे कदमों में जन्नत बिछाती, अगर वश में मेरे होता।

तुझे दुनिया की सैर कराती, एक नया ही जहाँ
दिखलाती तेरी राहों में फूल बिछाती, अगर वश में
मेरे होता।

तेरे ख्वाब की हकीकत बन, सपने सारे सच कर जाती
तेरे दर्द को खुद पर झेल जाती, अगर वश में मेरे होता।

मैं खुद को तेरा आईना और एक तस्वीर निराली
बनाती तेरे आँसू को अपनी आँखों से गिराती, अगर वश
में मेरे होता

तेरे लिए एक ताजमहल बनवाती, प्यार मेरा सबको
दिखलाती
खुदा बन तेरी हर एक दुआ पूरी करती, अगर वश में
मेरे होता

कितनी मोहब्बत है तुमसे मुझे, यह तुम्हें समझाने के
लिए अपना दिल तेरे दिल में धड़कती, अगर वश में
मेरे होता।

पिंकी मीना
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

मेरी चिड़िया, मेरी दोस्त

बचपन में एक चिड़िया देखी,
मेरी दोस्त, मेरी दोस्त।

चहकती-चुगती फुदफुदाती
बिल्कुल मेरी तरह ही खेलती मेरे
साथ,
मेरी चिड़िया, मेरी चिड़िया, मेरी
दोस्त, मेरी दोस्त।

चोंच से दाना चुगती है
बड़ी सुंदर, मोहक लगती है
मेरी चिड़िया, मेरी चिड़िया, मेरी दोस्त, मेरी दोस्त।

शैलजा रावत
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

जिंदगी

कभी अंधेरा, कभी उजाला,
कभी आशा, कभी निराशा,
है जिंदगी।
माँ से मिला उपहार है जिंदगी।
नए-नए सबक सिखाती है, जिंदगी।
समय के साथ बदलती रहे,
वो संस्कृति है जिंदगी।
गम से भी मुस्कुराने का हौसला है, जिंदगी
कुछ पल की है, ये जिंदगी।

भ्रूण हत्या

मैं लक्ष्मी हूँ किसी के आँगन की,
मैं सपना हूँ किसी की कलाई का,
मैं सहारा हूँ किसी की जिंदगी का,
मैं बेटी हूँ तेरे आँगन की,
मुझे भी दे दो जीने का अधिकार।
ऐसे मत मारो मुझे भ्रूण में,
मुझ को मेरा दोष तो बताओ,
यूँ ऐसे ना सताओ मुझे,
मैं भी तो अंश तुम्हारी चाहे,
मुझे दो न प्यार कर पाओ तो बस,
इतना करना जीने का दो अधिकार,
थोड़ी नजर बदल कर देखो,
संग जमाने से चलकर देखो,
मैं भी ऊँचा नाम करूँगी,
बेटी से पहचान बनूँगी।।

पैसा

पैसे की इस मायानगरी में
अद्भुत खेल निराला है।
जगह-जगह पर भ्रष्टाचार
कदम-कदम पर घोटाला है।

व्यापारी की उन्नति का राज
महँगाई और मिलावट है।
लूट रहा है इंसान-इंसान को
शासक वर्ग में आया नया फैशन है।

पैसे लेते हैं टेबल के नीचे से
नहीं किसी प्रकार की टेंशन है।
प्रशासक की बात ना पूछो,
प्रशासन बड़ा दिल वाला है।

खुली छूट है अपराधियों को,
क्योंकि वह पैसे वाला है।

सोनाली
बी. ए. तृतीय वर्ष (हिंदी विशेष)

मासूम

मासूम की मासूमियत से भी
खेल रही है दुनियाँ,
जंगली जानवर की तरह,
झंझोड़ रही है दुनियाँ।

इंसानियत पर कोई विश्वास नहीं
रह गया,
आज आदिमानव से ज्यादा,
विचारहीन मानव हो गया।

किसे सिखाएँ इस पढ़ी-लिखी दुनियाँ में
जब अपना ही लगा गया दाग, मासूम के दामन में।

कोई किसी का नहीं रह गया,
यह कलयुग का दौर है,
संत महापुरुष में भी,
छिपा यहाँ चोर है।
मासूम की मासूमियत से भी,
खेल रही दुनियाँ है।

राखी
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

जिंदगी की सीख

घबराने से मसले हल नहीं होते,
जो आज है, वो कल नहीं होते।

ध्यान रखो इस बात को जरूर,
कीचड़ में सब कमल नहीं होते।

नफा पहुँचाते हैं जो जिस्म को,
मीठे अक्सर वो फल नहीं होते।

जुगाड़ करना पड़ता है हमेशा,
रास्ते तो कभी सरल नहीं होते।

दर्द की सर्द हवा से बनते हैं जो,
वो ठोस कभी तरल नहीं होते।

नफरत की खाद से जो पेड़ पनपते हैं,
मीठे उनके कभी फल नहीं होते।

जो आपको आपसे ज्यादा समझे,
ऐसे लोग दरअसल नहीं होते।।

अनस मिर्ज़ा
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

निरंतर विकास जीवन का नियम है, और जो व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए हमेशा रूढिवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को गलत स्थिति में पहुँचा देता है।
– महात्मा गांधी

आज का भारत

देश मेरा था सोने की चिड़िया
फैंक के साड़ी उतार के चूड़ियाँ
अब यहाँ डोले पश्चिमी गुड़िया
सोना ले गए बेदर्द फिरंगी
रोए चिड़िया देख पेड़ों की तंगी
इतिहास था जिसकी महान गाथा
आज वहाँ समाज बना दोरंगी
उनके हीं तन के दो हिस्से भारत-पाक
तैयार खड़े लड़ने को परमाणु जंगी
कहीं खो गए महान नेता
देख अब झेले चाले बढ़ेंगी
उग्रवाद घपलों से हुई हालत बदरंगी
इंतजार है उस खुशनुमा पल का
जब संतों की पावन धरती पर
खिलेगा कोई नेक फरिश्ता,
बरसाने को मेघ सतरंगी।।

बदलेगा समाज जब उठाओगे आवाज

समय दे रहा आवाज
बदलेगा नहीं बदलना होगा समाज
नारी तुम अबला नहीं,
तुम तो सबला हो!
पहचानो खुद को
ढूँढो अपने वजूद को
तुम निराधार नहीं
तुम तो आधार हो
इस मानव समाज का
तुम स्नेह की मूर्ति
पहचानो अपनी शक्ति को
हो रहा खण्डहर
यह मानव समाज
होगा सुधार,
जब उठाओगे आवाज
समय दे रहा आवाज
बदलेगा नहीं बदलना होगा समाज।।

निधि
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

उठो मेरे शेरो, इस भ्रम को मिटा दो कि तुम निर्बल हो, तुम एक अमर आत्मा हो, स्वच्छंद जीव हो, धन्य हो, सनातन हो। तुम तत्व नहीं हो, न ही शरीर हो, तत्व तुम्हारा सेवक है, तुम तत्व के सेवक नहीं हो।

– स्वामी विवकानंद

मैं खो चुका हूँ

मैं खो चुका हूँ,
खो चुका हूँ अपना अस्तित्व
आगे बढ़ने की चाह में,
कुछ पाने की राह में,
वो स्वर्णिम अतीत।

मैं क्या सच में गुम चुका हूँ?
वर्तमान में इतना रम चुका हूँ!!
भविष्य की फिक्र में,
झूठे रिश्तों के इस चक्र में,
मैं मुस्कुराना भूल चुका हूँ!
अरे! मैं तो सच में गुम चुका हूँ।

मैं क्यों खो चुका हूँ?
इस मिथ्या रूपी जीवन को,
खुशियों से तोल चुका हूँ।
ओह! अब समझ आया,
बाह्यांतर विषयों में अंतर भूल चुका हूँ
तभी मैं इस कदर खो चुका हूँ।

मैं कैसे खो सकता हूँ?
ऊपर मेरे गुरु का साया,
माँ के आंचल की ठंडी छाया
तो मैं कैसे खो सकता हूँ!
हाँ रास्ता जरूर भूल सकता हूँ,
पर यूँ खो नहीं सकता।

पथिक

पथिक हुआ जब पथ भ्रमित,
हुआ दुसह संताप
जो कर करते थे करबद्ध बड़ों के,
उठे विरूद्ध उन्हीं के समर को तैयार।
भूल गए वो याद अमित जब,
उनको पकड़ चली थी कोमल गात।।

लोचन चाही थी होना रोशन,
अंशुमान सा प्रकाशमान,
जो दृगबिंदु थी उनकी दृष्टि में,
किए चूर कटु वाक् वृष्टि ने,
भूल गए उन मृदुल लार को,
हृदय में लेके अभी अभिमान।।

माना कि बन गए ब्रह्म से,
गति भयी जब वक्र,
कर्म किए थे कभी जो स्वर्णिम,
धूमिल हुए बने इस्पात,
भूले नृप भी फिरता बन भिक्षुक,
परब्रह्म का जब चलता चक्र।।

पथिक हुआ तू पथ भ्रमित,
लौट सकता है कर विहार,
क्षमा माँग बन क्षमा प्रार्थी,
लिपट काया में बनके स्वार्थी
सब भूल जाएँगे मान जाएँगे,
हरषि हिय में प्रेम संचार।।

लक्ष्य

जिस राह पर चला हूँ,
उस पर चलते जाना है,
मंजिलों में काँटों की राहों को,
अपना प्रेम बनाना है,
विषाक्त शस्त्र को शक्ति बना,
उलझी युक्ति से मुक्त करा,
अंगारों की अग्नि में,
मुस्कुरा भस्म हो जाना है।।

अंशुमान नाथ चौधरी
बी. ए. (हिंदी विशेष) द्वितीय वर्ष

किस्मत

क्या सबसे ताकतवर होती है किस्मत?
कभी हार से तो कभी वार से करती है खिदमत?
लोग कहते हैं,
ताली एक हाथ से नहीं बजती
फिर बेगुनाहों की अर्थी क्यों है सजती?
कल दिल बेतहाशा खुश था,
आज उदासी हर तरफ छा गई।।
गलती?
अरे, गलती न मेरी थी
और न ही उसकी,
बस कोई अदृश्य शक्ति चाबुक चला गई
मेरे साथ कईयों को रुला गई
रे बाबू, हे मैडम जी
क्या नहीं है ये किस्मत का खेल?
फिर क्या सेल और क्या फेल
जिंदगी बन कर रह गई है रेल।।

अंशुमान नाथ चौधरी
बी. एस. सी. (गणित विशेष) द्वितीय वर्ष

'यह वर्ष भी यूँ ही बीत जायेगा'

यह वर्ष भी यूँ ही बीत जायेगा, लेकिन
कुछ तो जरूर होगा जो फिर वापस आएगा,
उस लम्हों का क्या पता
फिर जिंदगी को गुनगुनाएगा,
यह वर्ष भी यूँ ही बीत जायेगा,
यह वर्ष में यूँ ही बीत जायेगा।

उस वक्त को कैसे बयां करें
जिसमें हमने, हर एक क्षण को कैद रखा था
वो यारी, वो दोस्ती, वो प्यार, वो लड़ाई,
वो मस्ती, वो बातें, वो रातें, वो खुशी, वो कामयाबी
जिसे एक धागे में पिरो रखा था,
यह वर्ष भी यूँ ही बीत जायेगा,
यह वर्ष भी यूँ ही बीत जायेगा।

नववर्ष आने को है, लेकिन पीछे खड़े,
उस यादों की डोर ने यूँ रोक रखा है,
जैसे कुछ चीज छूट सी रही हो,
लेकिन नई चीजों के पीछे उसका,
छूट जाना ही सही है,
यह वर्ष भी यूँ ही बीत जायेगा,
यह वर्ष भी यूँ ही बीत जायेगा।।

मंटू बाबू
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

वक्त

ऐ वक्त तू मुझे तोड़ता रहा...
पर मैं भी जिद्दी थी खुद को जोड़ती रही
तू देता रहा मुझे गम पे गम
पर मैं भी मुस्कुराती रही चाहे आँखें थी नम...
तूने खड़ी कर दी मेरे सामने तकलीफों की दीवार
क्या सोचता था मैं मान जाऊँगी हार...

ऐ वक्त तू मुझे तोड़ता रहा...
पर मैं भी जिद्दी थी खुद को जोड़ती रही
तू हँसता रहा मुझे देखकर कि तू मेरे साथ नहीं
अरे संभल जा तेरी इतनी औकात नहीं
तूने खुद को धीमा करके मेरा सफर
लंबा कर दिया...
अरे! यह क्या कम है मैंने वक्त को
गिरने पर मजबूर कर दिया...
ऐ वक्त तू मुझे तोड़ता रहा...
पर मैं भी जिद्दी थी खुद को जोड़ती रही।

ज्योति शर्मा
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

बातों के वीर

सिंहासन पर बैठना है सत्ता चलानी आती नहीं
हथियारों में जंग लगा चतुराई है कि जाती नहीं।।

युद्ध में जाए बिना विजय का गुणगान सुनाते
चतुराई से यह जीतते वीरता से न शस्त्र उठाते।।

उचित राय अगर दे कोई तो यह शत्रु उसे मानते
कायरता का चोला ओढ़ा किंतु वीर अपने को
जानते।।

बातें करनी आती है कोई कार्य न इनसे होता है
समय पर न कोई काम किया बस चैन से सोता है।।

छल युक्ति से अयोग्य को योग्य सिद्ध कर बैठे हैं
इधर-उधर की हेरा फेरी कर यह चौधरी बन बैठे हैं।।

अभिषेक कश्यप
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

जो क़ौम अपना इतिहास नहीं जानती, वह क़ौम कभी भी इतिहास नहीं बना सकती।

– डॉ. भीमराव अम्बेड़कर

पंछी

हम पंछी उन्मुक्त गगन के,
पिंजरबद्ध न रह पाएंगे।
कनक तीलियों से टकराकर,
पुलकित पंख टूट जायेंगे ।।

हम बहता जल पीने वाले,
मर जाएँगे भूखे-प्यासे।
कहीं भली है कटुक निबोरी,
कनक कटोरी के आटे से।।

स्वर्ण श्रृंखला के बंधन में,
अपनी गति उड़ान सब भूले।
बस सपनों में देख रहे हैं,
तरु की फुनगी पर के झूले।।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते,
नील गगन की सीमा पाने।
लाल किरण सी चोंच खोल,
चुगने हम अनार के दाने।।

नीड़ न दो चाहे टहनी का,
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो।
लेकिन पंख दिए हैं तो,
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।।

समय

घड़ी भी कभी-कभी अजीब सी आ जाती है।
दिल और दिमाग पर उदासी छा जाती है।
शरीर का साहस कहीं खो जाता है
पल पल निराशा से मन उदास हो जाता है।
जीवन रूपी नाव भी कमाल की है
पल-पल में ठहर जाती है।
घड़ी भी कभी-कभी अजीब सी आ जाती है।

निकल पड़ते हैं हम जीवन रूपी नाव पर अपने
हिसाब से,
पर ये नाव कहीं और ही मुड़ जाती है
लौटने का 'समय' अवसर ही नहीं देता
जीवन कि ये विडंबना बहुत तड़पाती है
सुख थोड़े हैं बस जीवन में
दर्द का अथाह सागर भरा हुआ है
थोड़ा सा उभरता है इंसान जब इन दुखों से
सोचता है क्या सवेरा हुआ है
जूझना पड़ता है पल-पल जीवन के कठिन पलों से
लड़ना पड़ता है
जीवन के कठिन क्षणों से
यही लड़ाई जीने की आशा दिलाती है
घड़ी भी कभी-कभी अजीब सी आ जाती है।

कुमारी प्रीति
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

जो समय बचाते हैं, वे धन बचाते हैं और बचाया हुआ धन, कमाए हुए धन के बराबर है।

– महात्मा गांधी

दिल की आवाज

कवि कविता का रूप नहीं है, लिखा दुनियाँदारी।
समझ सको तो समझो यारो, मेरी भी लाचारी।
कब सुधरेगा देश हमारा, होंगे बराबर नर-नारी।
शिक्षा होगी एक समान, चाहे लाला, नेता, भिखारी।
अब भी जनता एक नहीं है, नेता कोई नेक नहीं है।
समझ सको तो समझो यारो, मेरी भी लाचारी।
आज की गद्दी गिद्द की गद्दी, हंस कहाँ है लुप्त हुआ।
माँ भारती तुम्ही बता दो, कहाँ है तुम्हारी बंशावली।
कब जन्मआओगी भाग्य विधाता, जिसको मैं ताज पहनाता।
देश होता खुशहाल हमारा, लाचार न रहते नर-नारी।
भेद-मिटाता जात-पात का, धर्म बनाता एक समान।
चाहे मुस्लिम, सिख, इसाई, हो या चाहे हिंदू भाई।
कवि कविता का रूप नहीं है, लिखा दुनियाँदारी।
समझ सको तो समझो यारो, मेरी भी लाचारी।

प्रिया कुमारी
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

स्त्री का अस्तित्व

स्त्री जीवन नहीं आसान, इसे जीकर देखो तुम पुरुष महान,
अपनों के लिए अपने सपनों को भूलना पड़ता है।
अपनी आजादी को भूलना पड़ता है।
अपना जीवन किसी दूसरे के हिसाब से जीना पड़ता है।
हर पल दुनिया की रस्मों-रिवाजों में बँधना पड़ता है।
दूसरों की खुशियों के लिए अपनी खुशियों को त्यागना पड़ता है।
किसी दूसरे के लिए अपना अस्तित्व भूलना पड़ता है।
किसी दूसरे के लिए अपने माता पिता को छोड़ना पड़ता है।
अपने माँ के आँगन को सूना कर,
दूसरे के घर आँगन में दीया जलाना पड़ता है
अपने परिवार को छोड़ दूसरे के परिवार को अपनाना पड़ता है।
स्त्री एक पुरुष को जन्म दे सकती है,
फिर कैसे वह पुरुष से कमजोर हो सकती है।
स्त्री एक नहीं दो-दो कुलों का गौरव बढ़ाती है।
फिर क्यों स्त्री को सपने देखने की,
उन्हें पूरा करने की आजादी नहीं होती।
एक स्त्री की समाज में अपनी कोई पहचान क्यों नहीं होती,
क्यों स्त्री को हमेशा अपनी पहचान एक पुरुष के,
नाम के साथ जोड़कर बतानी पड़ती है।

आरती
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

जिंदगी को जी लो यारो

जिंदगी को जी लो यारो
हँसी के हर गम को पी लो यारो
दुखी न हो तुम इस संसार से यारो
बुरे नहीं है ये लोग जान से यारो

जिंदगी को जी लो यारो
कहीं एक दूसरों की बुराई में
निकल न जाए सारा समय यारो
गमों की परछाई में न खोओ यारो
तकलीफों से बाहर निकलो यारो
खुशी के हर लम्हों को जी भर के जी लो यारो।

दो पल, रुक कर देख तो लो
वो पल, जो छूटते जा रहे हैं।
वो पल, जो भूलते जा रहे हैं
वो साथ, जो छूटते जा रहे हैं
खुशी के पल को फिर से थाम लो यारो
जिंदगी को जी लो यारो
खुशी के सारे घूँट आज ही पी लो यारो
जिंदगी को जी लो यारो।

दीपमाला
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

प्रदूषण

घोलकर जहर इस हवा में अब,
हर शख्स चेहरा छुपा रहा है।
देकर गालियाँ एक दूसरे को,
इल्जाम हर किसी पर लगा रहा है।।

जो है हाल ये बेहाल दिल्ली का,
सारी फिजा में ऐसा ही हो जायेगा,
हर शख्स के चेहरे पर नकाब होगा,
फिर भी वो कहीं चैन न पाएगा।।

घोलकर जहर इस हवा में,
अब हर शख्स चेहरा छुपा रहा है।

कर रही धरती
चीखकर पुकार हम सबसे
क्यूँ कर रहे हो इंतजाम,
अपनी मौत का खुद से।
अभी भी है वक्त
बदल डालो खुद को
वरना आएगी मौत बेवक्त
न मिलेगा कंधा भी किसी को

घोलकर जहर हवा में,
अब हर शख्स चेहरा छुपा रहा है।

हिमांशु आर्य
बी.एस.सी. (गणित विशेष) प्रथम वर्ष

रूप

जिस रिश्ते में स्वार्थ नहीं संसार का
ना किसी भी तरह का झूठ कोई
छुपाने को बस तकलीफ एक-दूसरे से
और पहचान लेना तकलीफ एक-दूसरे की
वह रिश्ता माँ बेटे का जिसमे प्यार अटूट है।

कोई ढोंग नहीं कोई स्वांग नहीं
इस रिश्ते में कोई बेईमान नहीं
बीमार कोई परेशान कोई
एक रोए तो दूसरा सोए नहीं
प्रेम यहीं सम्मान यहीं

संसार का दुख एक तरफ माँ की तकलीफ एक तरफ
समुद्र सारे एक तरफ बेटे के आँसू एक तरफ
कोई छल नहीं कोई कपट नहीं
सच्चाई और प्रेम की यह रिश्ता मिसाल है
जिसे माँ का प्रेम न मिला
वो धरती पर जन्नत से अनजान है।

जख्म किसी को दर्द किसी को
जिस रिश्ते में ना मोल पैसों का
जैसे पाठ हो कोई भगवत गीता का
या आयत कुरान की
वो रिश्ता है माँ बेटे का।

माँ बेटे का रिश्ता

यहाँ आदमी एक है, उसके रूप अनेक हैं
हर क्षण में बदलता उसका चेहरा है।

यहाँ पर लोगों की सोच से पहले छल कपट का पहरा है
इंसानियत अब इंसान देख के दिखाई जाती है
यहाँ विश्वास किस पर करूँ सबको तो झूठ बोलने
की पट्टी पढ़ाई जाती है।

मेरा सच यहाँ झूठ बन जाता है
और जब एक झूठ भी बोले वह झूठ भी सच
कहलाता है।

जब देश झूठ बोलने वालों का है
तब सच बोलके मुझे देशद्रोही थोड़ी बनना है।

यहाँ मुझे अपने झूठ को सच नहीं
अपने सच को सच साबित करने के लिए लड़ना है।

यहाँ जब साथ कोई रहता है तो मकसद उसका कुछ
जरूर है
मालूम होते हुए यह झूठ है हम मानने को मजबूर हैं।

अगर यह धरती मंच है
तो एक से बढ़कर एक अदाकार बैठे हैं।

मुझे मालूम है मैं नाटक देख रहा हूँ
झूठ का नाटक चलता जा रहा है
सच का पर्दा गिर नहीं पा रहा है।

झूठ है तो झूठ ही सही
दिल को तसल्ली तो दे रहा हूँ।

असली रूप की सुंदरता क्या इस झूठ के मुखोटे के
पीछे छुपाते हो
सच बोला करो क्योंकि झूठ बोलते-बोलते तुम
हकलाते हो।

गौरव वर्मा
बी.कॉम. (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष

कलम

कलम जहाँ भी चल जाती, कुछ ना कुछ है लिख जाती
जब स्याही कागज के टुकड़ों पर है फिर जाती तो
कभी तो बदनाम हो जाती कभी पहचान बन जाती।
जब लिखता है शायर कोई तो शायरी बन जाती
लिख दे अगर कोई लेखक तो रचना कहलाती
और कलम यही है लिख दे ऋषि तो महाग्रंथ लिख
जाती है।
और इसी कलम से न्यायालय में फाँसी भी दी जाती है
शब्द जोड़कर वाक्य बने वाक्य जोड़कर काव्य बने
और इसी से लोगों को लोगों से आजादी भी मिल
जाती है।
कलम तो बस श्रृंगार करती है रचना दुल्हन बन जाती है
कलम चलाए जब कोई मानव तो वेद ये रच जाती
है।
'अब दु:ख ये है'
क्यों नहीं कलम है हँस पाती क्यों नहीं कलम है रो
पाती
लेकिन जब भी तड़प कर उठती सच्चाई यह लिख
जाती।

हे मानव! क्यों तूने कलम की ताकत नहीं पहचानी
हे मानव! तू क्यों बना रहा अपनों में ही अभिमानी
धन के लोग लालच ने तुझको कर दिया है सबसे
अनजाना
और तेरे भीतर ही राम छुपा है तूने क्यों नहीं
पहचाना।
कभी फाँसी दे जाती कलम तो कभी सबक सिखा
जाती
लेकिन हर बार खुद घिस-घिस कर बस इतना कह
जाती है
कि हे इंसान तू अभी जमाने का दर्द समझ क्या
पाएगा
जिस दिन कोई तुझको घिसने आएगा क्या होती है
पीड़ा तू खुद-ब-खुद समझ जायेगा
कलम अगर सही चले तो राजा यह बनाती है,
और गलत अगर चल जाए कलम तो रंक बना जाती है
अरे! कलम तो केवल घिसती है रच तो स्याही जाती है
चाहे कहीं हो दुनिया में कलम से बस बेटी लिख दो
तो सारी खुशियाँ मिल जाती है
और एक शब्द माँ लिख दो तो सारी दुनिया लिख
जाती है।

सत्यम पांडे
बी.ए. (इतिहास विशेष) तृतीय वर्ष

दहेज

क्यों ये सौदा होता, क्यों ये रिश्तो में होता,
जिसे कहते हैं दहेज, जिस पल ये होता,
खत्म कर देता है, हर रिश्ता फिर भी,
क्यों करते हैं लोग, इसे इतना प्यार,
पढ़े लिखे हो या गँवार,
फिर भी क्यों होता,
फिर क्यों ये सौदा होता।

न पूछता है कोई बेटी से, उसको है क्या यह मंजूर,
क्या है उसको भी ये पसंद, फिर भी यह सौदा होता,
व्यापारी बन जाते हैं लोग, वो अपने हो या पराए,
सब करते हैं इसे दिल, क्यों इसको मंजूर,
फिर क्यों ये सौदा होता।

पंख

मैं इठला बैठी थी, अपने पंखों पर,
अभी तो समय है, गगन चूमने को,
ख्वाब देख रही थी, मंजिल छूने को,
अपने को पूरा कर, सिद्ध करने को,
किस्मत ने ये कैसा, अपना चक्र चलाया,
खो बैठी पल भर में सब कुछ,
तब पता चला कौन अपना कौन पराया,
समय ने सभी का रूप है बतलाया,
जिन्होंने हाथ पकड़कर चलना सिखलाया,
फिर उन्होंने आज अपना हाथ छुड़ाया,
जिससे जीवन में फिर अंधेरा छाया,
क्या हुआ ये कुछ समझ न आया,
तब फिर मुझको यह ज्ञात हुआ,
इठला बैठी थी मैं जिन पंखों पर,
आज वह मुझको काम भी ना आया।

विष्णु प्रिया
बी. ए. (हिंदी विशेष) द्वितीय वर्ष

अगर धन दूसरों की भलाई करने में मदद करे, तो इसका कुछ मूल्य है, अन्यथा, ये सिर्फ बुराई का एक ढ़ेर है, और इससे जितना जल्दी छुटकारा मिल जाए उतना बेहतर है।
– स्वामी विवेकानन्द

मैं और मेरे एहसास

मैं छोटे से गाँव का सीधा साधा लड़का,
पहली बार पढ़ने के लिए दिल्ली आया।
यहाँ हमने नए दोस्तों के साथ कुछ घड़ियाँ बिताई,
हमें पिछले दिनों की बिल्कुल याद नहीं आई।।
फिर वो हमारी जिंदगी में आई, लगा कोई सपना देख रहे हैं हम,
देखकर उन्हें मोम की तरह पिघल रहे थे हम।
जब मिली उनसे नजर तो एक जहाँ बस रहा था,
निगाह हटी तो जैसे चारों और वीरान लग रहा था।।

फिर दोस्ती हुई प्यार हुआ कुछ अनचाहा इकरार हुआ,
ये सारी चीजें नहीं भूल पाएंगे हम।
नहीं सोचा था कि इतने करीब आ जाएँगे हम,
भूल कर भी तुम्हें ना भूल पाएँगे हम।।

क्यों वक्त हमें इतना करीब लाया
जब पता था एक दिन बिछड़ जाएँगे हम।
याद रहेगा हमें सब कुछ याद रहेगा,
वो अधूरी बातें पूरे हुए कुछ वादे इरादे सब कुछ याद रहेगा।।

तेरा होना ना होना तेरा हाथ थामना,
और बिन कहे यूँ ही छोड़ देना।
वो तेरा बात-बात पर रूठना,
सब कुछ याद रहेगा।।

कुछ दिन बाद हमारे रास्ते अलग होंगे
मगर इतना यकीन है हमें, किसी मोड़ पर फिर मिलेंगे।
एक दूजे को देखकर होठों पर मुस्कान आ जाएगी,
जो फिर हमे सालों पीछे ले जाएगी।।

सच कहूँ तो हमें हमारी हर सुबह शाम याद आओगे
तुम, हर खुशी, हर गम, हर पल मैं याद आओगे तुम।।

मोहम्मद याहा खान
बी. ए. (प्रोग्राम) तृतीय वर्ष

भारत माता के द्वारा अपने बच्चों को पुकार

उठो देश के वीरो, शूरवीरों, तुम्हें ही तो गरजकर दिखाना है,
अपने दुश्मनों को थल, नभ व जल से मार भगाना है।
उठो देश के किसानों तुम्हें अपने कर्म पर लगे रहना है,
तुम्हें दिन-रात तप करके देश के अन्नदाता बनना है।
उठो देश के मेहनती कारीगरों तुम्हें अपना कौशल दिखाना है,
देश के लोगों को सुख देने के लिए तुम्हें खून-पसीना बहाना है।
उठो देश के शिक्षकों, तुम्हें अपना फर्ज निभाना है,
तुम्हें ही सूरज के सातवें घोड़े को राह दिखाना है।
उठो देश के सुप्तकलाकारों तुम्हें देश जगाना है,
तुम्हें ही देश के समक्ष समस्याओं से लड़ने की हिम्मत देनी है।
उठो देश के नेताओं तुम्हें ही देश चलाना है,
तुम्हें ही तो अपने देश के शासन को निर्गुण, सशक्त व सख्त बनाना है।
उठो देश के युवाओं तुम ही तो देश की रीढ़ हो,
तुम्हें ही कला विज्ञान को आगे बढ़ाना है।

सौरभ
बी. ए. (प्रोग्राम) तृतीय वर्ष

अनमोल वचन

जो भाग्य में है वह भागकर आएगा,
जो नहीं है वह आकर भी भाग जायेगा।
यहाँ! सब कुछ बिकता है,
दोस्तो रहना जरा संभल के,
बेचने वाले तो हवा भी बेच देते है,
गुब्बारों में डाल के, झूठ बिकता है,
बिकती है हर कहानी,
तीनो लोक में फैला है,
फिर भी बिकता है बोतल में पानी,
कभी फूलों की तरह मत जीना,
जिस दिन खिलोगे टूटकर बिखर जाओगे,
जीना है तो पत्थर की तरह जियो,
जिस दिन तराशे जाओगे,
भगवान बन जाओगे...।।

मैं कौन हूँ?

मैं एक फूल हूँ
जो सभी को सुगंधित करना चाहता हूँ।
मैं इस धरती की धूल हूँ,
जो सब को पवित्र करना चाहता हूँ।
मैं वह पवन हूँ
जो सभी को शीतल करना चाहता हूँ।
मैं वह आग हूँ।
जो सभी की बुराइयों को जलाना चाहता हूँ।
मैं वो चीता हूँ जो हवा में बातें करना जानता हूँ।
मैं वह सूरज हूँ जो प्रकाशमान करना चाहता हूँ।
मैं वह समय हूँ जो सब के काम आना चाहता हूँ।
मैं इश्वर का वो भक्त हूँ,
जो आपके पापों को दूर करना चाहता हूँ।
मैं वो मित्र हूँ, जो आप सभी के दुखों को समझता हूँ।
मैं वो मनुष्य हूँ, जो आप सभी को समझता हूँ।
तो आप ही बताइए, मैं कौन हूँ?

मनोज मीना
बी. ए. (हिंदी विशेष) द्वितीय वर्ष

इंसान की पहचान

गिरना भी अच्छा है औकात का पता चलता है
बढ़ते हैं जब हाथ उठाने को अपनों का पता चलता है

जिन्हें गुस्सा आता है वो लोग अक्सर सच्चे होते हैं
मैंने झूठों को अक्सर मुस्कुराते हुए देखा है
सीख रही हूँ मैं भी इंसानों को पढ़ने का हुनर
सुना है चेहरे पे किताबों से ज्यादा लिखा होता है
मैंने भी इंसान को पहचानना सीखा है..

शबाना
बी.ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

सियासत

बात मुझसे जुड़ी हो तो जानना जरूरी है
समस्या कैसी भी हो समझना जरूरी है
कितनी भी बात करें हम लोग भलाई की
भला करने के लिए बुराई लेना भी जरूरी है
ये लोग जिन्होंने सियासत को खेल बना रखा है
जानते नहीं कि खेलने के लिए मैदान साफ करना भी जरूरी है
एक अरसा हो गया इस खेल से खिलवाड़ होते देखते
कि अब इस खेल के दर्शकों को जगाना भी जरूरी है
मैं जानती हूँ कि मेरी एक आवाज से कुछ नहीं होगा
मेरी आवाज से तेरी आवाज का मिलना जरूरी है
रोटी के लिए जीने वालों कुछ सोचो मुल्क के बारे में
कि चिराग के जलने के लिए हवा का चलना बहुत जरूरी है।

गज़ल
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

पिता एक सोच

"पिता परिवार है जीवन का सार है जीवन की राह है
पिता हृदय की मजबूती है सागरों में मोती है भरोसे का प्रतीक है
पिता जीवन की किताब है, अनुभवों का राग है, शिक्षा का विस्तार है
पिता घबराहटों पर विजय है, गलतियों पर तलब है, शौर्य का सागर है
पिता ज्ञान है, सम्मान है, हृदय का अरमान है
पिता सहारा है, जीत का नारा है, साँसों से प्यारा है
पिता गीत है, मीत है, जीवन की प्रीत है
पिता अमृत का गागर सुख का सागर है
सुख का सागर है
आत्मा की गहराइयों में विचारों की ऊँचाइयों में
समुद्र के लहरों में मरुस्थल के शहरों में
ओस की बूँदों में रात की नींदों में
सुबह के भोर में हवाओं के शोर में
पिता एक एहसास है जीवन के हर छोर में
पिता अमृत का गागर है सुख का सागर है।

शुभम चतुर्वेदी
बी. ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

अपने भाग्य के बजाय अपनी मज़बूती पर विश्वास करो।
– डॉ. भीमराव अम्बेडकर

रात

रात! हर रात मुझे एक ख्वाब आता है
ख्वाब में एक नकाब आता है
नकाब में एक चेहरा होता है
वो चेहरा तेरे जैसा होता है
चेहरे से मासूमियत झलकती है
आँखें मुझे अपनी ओर खींचती है
लब मुझसे चीख-चीखकर कुछ कहते हैं
पर कोई आवाज नहीं आती है
धीरे-धीरे वो चेहरा साफ दिखता है
मेरा कदम उसकी ओर खिंचता है
पास जाते ही आँखों का साहिल खो जाता है
छूता हूँ तो चेहरा धूमिल हो जाता है
अचानक नींद से जाग उठता हूँ
उस ख्वाब की दुनिया से भाग उठता हूँ
ढूंढता हूँ तो बस यही मिलते हैं साथ,
'मैं', 'मेरा बिस्तर', 'तेरी याद' और 'तन्हा रात'।

आँखें

आँखें बहुत कुछ बोलती है तेरी आँखें
तेरे दिल के हर राज खोलती है तेरी आँखें
जब भी इन में झाँकता हूँ बावला हो उठता हूँ
इनकी गहराइयों में डूब जाना चाहता हूँ
इनमें खो कर खुद को ढूँढना चाहता हूँ
इन आँखों में चाहत है, राहत है, मोहब्बत है, इबादत है
इन्हीं में सपनों का घर सजाना चाहता हूँ।
हमेशा यहीं आकर रुक जाता हूँ
क्या इन आँखों में सच में मैं हूँ?
क्या ये आँखें मुझे उसी तरह देखती हैं जिस तरह मैं
खुद को उनमें देखता हूँ?
जवाब नहीं मिलता तो रूठ जाता हूँ
पर अगले दिन फिर वही सपने, वही आँखें।

सौरव वर्मा
बी.ए. (राजनीति विज्ञान विशेष) द्वितीय वर्ष

आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत, असफलता नामक बीमारी को मारने के लिए सबसे बढ़िया दवाई है। ये आपको एक सफल व्यक्ति बनाती है।

– ए पी जे अब्दुल कलाम

खुद से एक सवाल

जो कोई फिल्मी नहीं सत्य है, आजादी मना रहे
हमारे दिल्ली राजधानी का सत्य है
साहब एक तिरंगा ले लीजिए ना भारत माता की जय,
वंदे मातरम, जय हिंद
अचानक कुछ लोगों में देशभक्ति जाग जाती है,
ला दे दे कितने का है? साहब 100, 70, 40 का
अचानक एक आवाज आती है देश भक्ति के नाम
पर लूट रहे हो शर्म करो
तभी पीछे से एक साथी तपाक से बोल बैठता है
साहब हम तो सिर्फ पेट भरने के लिए तिरंगा बेच रहे हैं
लूटा तो आप जैसे लोगों ने है
तभी तो हम जैसे भटक रहे हैं
साहब गुस्से में लाल आगे बढ़ जाते हैं
आखिर यह कैसी आजादी? जहाँ तिरंगे बेचते नन्हे
हाथ नहीं दिखते
पर तिरंगा दिखता है, उस तिरंगे की कीमत दिखती है,
पर उन मासूम चेहरों की बेबसी का एहसास नहीं होता
ये तो कुछ उदाहरण मात्र है
कुछ ऐसी मानसिकता और व्यवस्था से गिरे हैं
जहाँ आजादी शब्द हमसे सवाल करता है
क्या आजादी का मतलब सिर्फ एक दिन तिरंगा
फहरा लेना है?
और राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान गा लेना और वंदे मातरम,
जय हिंद,
भारत माता की जय के नारे लगा लेना मात्र है?
क्या वो आजाद है, जो भूख से लड़ रहे हैं?
क्या वो आजाद है, जो इलाज के अभाव में जीवन
और मृत्यु से लड़ रहे हैं?
क्या वो आजाद हैं जो इस मिट्टी के हैं लेकिन अपने
वजूद के लिए लड़ रहे हैं?
क्या इन्हें भी आजादी माननी चाहिए?
क्या ये आजाद हैं?
एक सच्ची आजादी को समझने और मनाने के लिए
हर किसी को खुद से एक सवाल करना होगा
जी हाँ खुद से एक सवाल करना होगा।

प्रवीण कुमार
बी.ए. (राजनीति विज्ञान विशेष) द्वितीय वर्ष

पुस्तकें वह साधन है, जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल का निर्माण कर सकते है।
– सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन

दौर

किस परिपाटी पर चलके यहाँ तक आ गया हूँ मैं
इस चलते दौर में खुद को ही भूल गया हूँ मैं
हाँ इतना जरूर है कि चल रहा हूँ मैं
दिशा का कोई पता नहीं पर फिर भी चल रहा हूँ मैं
जिसे स्वीकारना है स्वीकारें
पर अब इस मतलबी दुनिया का पराया हो चुका हूँ मैं
किस परिपाटी पर आ खड़ा हूँ मैं कि खुद को ही
भूल गया हूँ मैं।

अस्तित्व

अस्तित्व है हमारा ये जान लीजिएगा
हूँ मैं भी यहाँ पे पहचान लीजिएगा
आओगे इस शहर में गलियाँ ये याद रखना
रहता हूँ मैं वहाँ पर ये जान लीजिएगा
अस्तित्व है हमारा यह जान लीजिएगा
ता उम्र जो किया ना वो प्यार कीजिएगा
अस्तित्व है हमारा ये जान लीजिएगा

मुकेश कुमार
बी.ए. (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

सैनिक का संदेश

कोशिश तो की थी आने की
लेकिन आता तो देश लुट जाता
कोशिश तो की थी युद्ध को बचाने की
लेकिन बचाता तो देश लूट जाता
कोशिश तो की थी खुशियाँ मनाने की
लेकिन खुशियाँ मनाता तो देश आँसुओं में डूब जाता
कोशिश तो की थी कहीं और किस्मत आजमाने की
लेकिन कहीं और किस्मत आजमाता तो देश की
पहरेदारी न कर पाता।
कोशिश तो थी खाने की
लेकिन खाता तो देश भूखा रह जाता
कोशिश तो की थी दुश्मनों को अपनाने की
लेकिन अपनाता तो देश गुलाम बन जाता
कोशिश तो की थी वादा निभाने की
लेकिन निभाता तो देश का कर्ज रह जाता
कोशिश तो की थी महफिले सजाने की
लेकिन सजाता तो देश तन्हा रह जाता
कोशिश तो की थी अपना घर बसाने की
लेकिन बसाता तो देश उजड़ जाता।

विनोद कुमार
गणित विभाग
पीजीडीएवी कॉलेज

जिंदगी

जिंदगी गुलजार है, तेरे हर पल में मोड़ हजार है
तुझे समझने की बहुत कोशिश की मैंने,
पर हर बारी तू ने खोला कोई नया राज है,
पर मैं भी ना हार मानूँगा,
तेरे हर किस्से को एक न एक दिन जरूर जानूँगा,
बस तू कभी नाराज ना होना।
हर रंग को तेरे गले से लगाऊँगा,
तेरी आशिकी में सबकुछ भुलाऊँगा,
बहुत हसीन मोड़ देखे हैं तूने,
समय के आगे कितने सर झुकवाए हैं तूने,
राजा को रंक बनाया है तूने
और रंक को भी राजा बनाया है तूने।
कैसे जीना है, तुझे ये सबक सिखाया है तूने
हर पल कितना खास है पहचान कराया है तूने
हर रोज की यही कहानी है
फिर भी रोज कोई नई खुशी या परेशानी है,
अब तो जैसे इन सब की आदत हो गई है,
ये नहीं है तो क्या मेरी कहानी है।
भले ही गिराया है तूने,
पर गिर के उठना भी सिखाया है तूने,
और रोते रोते भी हँसना सिखाया है तूने,
अकेलेपन में भी बीते बहुत लम्हें
पर, उन लम्हों में भी मुस्कुराना सिखाया है तूने।
जो कुछ मिला है वो तेरी मेहरबानी है
शुक्रिया जिंदगी तेरी वजह से ही ये हसीन कहानी है।

जिंदगी इश्क का रंग

तेरे रंग में जैसे सब रंग जाते हैं,
क्यूँ सब तुझ पर यूँ फिदा हो जाते हैं,
तुझ में तो कोई बात है,
जो तुझमें सब खो जाते हैं।
इश्क का रंग लाल है,
इसके रूप कई हजार हैं,
ये माँ का अपने बेटे के लिए दुलार है,
ये भाई बहन का एक दूसरे के लिए नटखट सा प्यार है,
ये एक महबूब का दूसरे महबूब के लिए इकरार है,
इसका जो चला जादू हर बार है।
ये प्यारा सा एक एहसास है,
जिसको पाने की तमन्ना रखता हर इंसान है,
जिसको मिला वो खुशनसीब,
जिसे ना मिला, वह जैसे इसी को पाने की कोशिश
में लगा है।
अब मेरा भी जैसे ये हाल है।
मेरे महबूब का मुझ पर कोई खुमार है।
ए इश्क ये तूने क्या कर दिया,
एक भोले भाले इंसान को निकम्मा कर दिया।
पर फिर भी तुझ में कोई तो बात है,
जो चाहा सब पर तेरा खुमार है।
अब तो जैसे उसमें कोई नूर बसता है,
उसमें ही रब, तो उसमें ही खुदा दिखता है
उसकी हर बात सुहानी लगती है,
उसके साथ जिंदगी एक हसीन कहानी है।
पर आखिर में यही कहना चाहूँगा,
कि तुझे सच्चे दिल से प्रणाम करना चाहूँगा
क्योंकि ऐं इश्क तेरी हर बात निराली है
तू है तो जैसे हर दिन होली दीवाली है
तेरे होने से ही इस दुनिया में खुशहाली है।
तूने अपने रंग में ही रंग दी ये दुनिया सारी है,
इश्क, इश्क, इश्क तेरी तो हर बात निराली है,
तभी तो तेरे सामने झुकती ये दुनिया सारी है।

पारितोष कालरा
बी.एस.सी. (सांख्यिकी विशेष) तृतीय वर्ष

चाँदनी

मन मोह लेती चाँदनी, मन्द मधुर प्रकाश में
टिम टिम करती दीप, श्रृंखला हीरे जड़ती आकाश में।
आँखों का आकर्षण खींचे, बर्बश अपनी ओर गगन,
मानो शबनम खोज रहा हो, चित्त कवि का प्यास में।
शांत निशा स्वच्छंद गगन, देख रहे अपलक नयन,
वायु शांत मन स्वतंत्र, कर रहा निश्चिंत भ्रमण।
तारों के संग खेलता अब अंक में है चाँद की
नभ गा रहा है लोरियाँ, सज रहा स्वप्न जड़ित कंचन,
शबनम से सिंचित हर पत्ता, भ्रम डाल रहा आकाश में।
तितली की भाँति मन भटक रहा, सही गगन की
तलाश में,
स्पर्श किया उस नभ मंडल को, बन बूँद भूमि पर
बिखर गया।
मन रूठ स्वप्न से जाग गया मुस्कुराई चाँदनी उल्लास में।

आजादी के बाद भारत

परतंत्र भारत स्वतंत्र होकर, लोकतंत्र का गठन हुआ,
ब्रिटिश तंत्र की कुटिल नीति से, देश हमारा खंड हुआ।
कानूनों का संग्रह करके, विश्व का बड़ा गणतंत्र बुना,
हुबली जेल की दीवारों, से विद्वानों का जन्म हुआ।
सन उन्नीस सौ इक्यावन में, जनता का कानून हुआ,
भारत चीन के महा समर में मानवता का खून हुआ।
इस चोटिल घायल भारत को, हरित क्रांति ने थाम लिया,
उद्योगों के सफल हस्त से, नव भारत का जन्म हुआ।
भारत की भुजा कटी दूसरी, बंगाल देश का जन्म हुआ,
राजस्थानी माटी पर, परमाणु परीक्षण सफल हुआ।
हमने अपना प्रथम उपग्रह, आर्यभट्ट क्षितिज पर पहुँचाया,
तब जाकर इस दुनिया को, भारतीय शक्ति का बोध
हुआ।
सन चौरासी में, प्रथम भारतीय अंतरिक्ष को गमन हुआ,
अकाल पड़ा भोपाल शहर में, इंदिरा जी का अंत हुआ।
हिम श्रेष्ठ शिखर पर फहराया तिरंगा, प्रथम भारतीय महिला ने,
अस्सी के दशक तक भारत में, प्रक्षेप अस्त्र निर्माण हुआ।
नब्बे के दशक से भारत में, आर्थिक सुधार आगाज हुआ,
बाबरी ढाँचे से संप्रदाय का अंगार, धधक कर आग हुआ।
तुल्य कोटि सहस्त्रों सेनानी, कारगिल विजय की भेंट चढ़े,
वह पोखरण का अद्‌भुत दृश्य, इंटरनेट का संचार हुआ।
संसद की गरिमा गरमाई, गोधरा में संहार हुआ,
क्षितिज विजय को गई कल्पना का, सूना संसार हुआ।
प्रतिभा ने बन प्रथम शासिका, एक नया इतिहास लिखा
टाटा ने कोरस को खरीदा, सशक्त अर्थ व्यापार हुआ।
राजनीति के जादूगर से, परिवर्तन का बोध हुआ
मुद्रा में परिवर्तन था, कि संपूर्ण देश में शोर हुआ
मंगलयान को छोड़ा हमने, आदित्य मिशन को शुरू किया
दोहरे तीन शतक जड़े शर्मा, ने खेल में हाहाकार हुआ।।

प्रखर शुक्ला
बी.एस.सी. (गणित विशेष) प्रथम वर्ष

समन्वय

समन्वयः

Amalgamations

SAMANVAY: AN INTRODUCTION

Humankind comprehends the external world and its stimuli through a process of translation. One might almost say that translation is vital to existence. In the literary sphere, translation is a profoundly important activity that enables us to traverse through myriad cultures and ways of thought, to enhance our knowledge and expand our frontiers. It accords us the pure pleasure of both encoding, and decoding languages, and of using them as fluid signifiers of meaning. Needless to say, the act has its hazards and pitfalls too. Soviet poet Rasul Gamzatov describes receiving poetry in translation as an experience equivalent to looking at the wrong side of the carpet. One can see the pattern, but it's *not,* and it *cannot* be the original pattern. Whether a lot is 'lost in translation', or is comprehensible to the point of empathy and pleasure, depends on the translator; not just her linguistic expertise and comfort with the source and target languages, but also with her ability to feel in them.

The section that follows, **Samanvay** or **Amalgamations,** as we have christened it, is the outcome of a first time endeavour by the editorial team to bring to you three languages, in original and in translation. Ankur has always been divided into the traditional sections, Sanskrit, Hindi, and English. We decided this time, to *unite* the three, by selecting two pieces of poetry from each as source language and translating into the other two. The pieces have been translated by our editorial team. We hope you will appreciate this initial effort. Your opinion of this section, along with any constructive criticism, will be welcome.

Pahad Par Laalten and *Nadi Boli Samundar Se* are reprinted and translated with permission from the respective authors.

'My Tibetanness' and 'Taj Mahal' were originally published in *Re-Markings: A World Assembly of Poets* (2017), and are reprinted and translated here with permission from Re-Markings.

वैदिक राष्ट्रगान

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे
राजन्यः शूर इषयोऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री
धेनुर्वोढ़ानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः
सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे
नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां
योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

अर्थः –हे ब्रह्मन् महान् शक्तिशाली परमेश्वर! हमारे राष्ट्र में ब्रह्मवर्चस्वी ब्राह्मण उत्पन्न हों। वीर, बाण वेधन में कुशल, शत्रुओं को भलीभांति परास्त करने वाले महारथी क्षत्रिय उत्पन्न हों। इस यजमान की गाय दूध देने वाली हो; बैल वहनशील हों; घोड़ा शीघ्र गमन करने वाला हो; स्त्री सर्वगुण संपन्न हो; इसका रथ में बैठने वाला महावीर, जयशील, पराक्रम करने वाला, सभ्य, युवा पुत्र हो। हमारे राष्ट्र में प्रत्येक योग्य अवसर पर (जब-जब हमें आवश्यकता हो तब-तब) मेघ बरसें। हमारी औषधियाँ फल से युक्त होकर परिपक्व हों और हमारी अप्राप्त वस्तुओं की प्राप्ति (योग) और प्राप्त वस्तुओं की रक्षा (क्षेम) उत्तम रीति से होती रहें।

भारतीय साहित्य के प्राचीनतम ग्रंथ वेदों में भारतीय चिंतन, दर्शन और संस्कृति का मूल स्वरूप प्राप्त होता है। भारतीय चिन्तन परम्परा के अंतर्गत राष्ट्र और राष्ट्रप्रेम संबंधी विचारों का सूत्रपात यहीं से हुआ है। शुक्लयजुर्वेद के बाईसवें अध्याय का यह मन्त्र वेद का 'राष्ट्रीय गीत' कहा जाता है। यह मन्त्र राष्ट्र के प्रति कल्याण-भावना की सुंदर अभिव्यक्ति का उदाहरण है। इसमें राष्ट्र की सब प्रकार से उन्नति की कामना की गई है। राष्ट्रीय चेतना को मुखरित करने वाले इस मंत्र में राष्ट्र के सर्वोदय की प्रार्थना है।

O Brahman Almighty! May enlightened Brahmins be born in our nation; may valiant Kshatriyas, skilled in archery, and capable of vanquishing enemies, be born in our nation; may the cows of this host give ample milk; may his oxen be strong; his horse swift; may his lady excel in all qualities; may he have a brave, illustrious, mighty, cultured, chariot-seated, young son. May the clouds shower rain on our nation whenever needed. May our medicinal plants flourish and flower; may we gain in the best manner those things which we have not yet received, and preserve those we have.

The Vedas are the most ancient and seminal texts of Indian thought, philosophy, and culture. They establish the foundation for concepts of nationhood and patriotism in the Indian contemplative tradition. The mantra translated below, from the twenty second chapter of the Shukla Yajurveda, is known as the 'national song' of the Vedas. It exemplifies beautifully the feeling of love for, and welfare of the nation, speaking as it does of the all round development and progress of the country. This mantra, which radiates national consciousness, prays for the upliftment and growth of the nation.

गतं गतं नैव तु सन्निवर्तते

ऋतुर्व्यतीतः परिवर्तते पुनः क्षयं प्रयातः पुनरेति चन्द्रमाः।
गतं गतं नैव तु सन्निवर्तते नदं नदीनां नृणां च यौवनम्।।

गया हुआ मौसम फिर अगले साल आ जाता है अमावस्या को लुप्त हुआ चंद्रमा पुनः धीरे-धीरे पूर्णमासी को पुनः अपने स्वरूप में आ जाता है। परंतु दो वस्तुएं ऐसी हैं जो एक बार बीत जाने के पश्चात् पुनः नहीं आतीं। प्रथम तो नदी में बहा हुआ पानी पुनः नहीं आता और दूसरा यौवन, युवावस्था की उमंगे एक बार ही आती हैं – फिर वे इस जीवन में नहीं आती। राहुल सांकृत्यायन ने भी इसी सत्य को इस रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया है –

सैर कर दुनिया में गाफिल जिंदगानी फिर कहां?
ज़िन्दगी गर मिल भी जाए नौजवानी फिर कहां?

महाकवि अश्वघोष कनिष्क के दरबार में थे उन्होंने अपने महाकाव्यों में शान्त रस का बहुत सुंदर चित्रण किया है जो जीवन की वास्तविकता को भलीभांति प्रदर्शित करता है–

The great Sanskrit poet Ashwaghosh lived in the court of King Kanishka. He has beautifully portrayed the shant rasa in his narrative poems, which displays the reality of life thus:

'The seasons come and go year after year, and the moon that disappears on no moon day, grows steadily each day and attains fullness. Only two things, once gone are lost forever: water that flows in a river, and the exuberance of youth.'

Hindi writer Rahul Sankritayan presents a similar idea when he says:

'Travel the world with heedless enjoyment, for you only live once
And though life may be given again, youth only comes once'

नदी बोली समुंदर से

दी बोली समुंदर से
मैं तेरे पास आई हूँ
मुझे अब गा मेरे शायर! मैं तेरी ही रुबाई हूँ!

मुझे ऊँचाइयों का वह अकेलापन नहीं भाया
लहर थी मैं, लहर कर भी मेरा आँचल न लहराया
मुझे बाँधे रही ठंडे बर्फ की रेशमी काया

बड़ी मुश्किल से बन निर्झर
उतर पाई मैं धरती पर
छुपाकर रख मुझे सागर, पसीने की कमाई हूँ।

मुझे पत्थर, कभी उन घाटियों के प्यार ने रोका
कभी कलियों, कभी फूलों भरे त्यौहार ने रोका
मुझे कर्तव्य से ज्यादा किसी अधिकार ने रोका

मगर मैं रुक नहीं पाई
मैं तेरे घर चली आई
मैं धड़कन हूँ, मैं अंगड़ाई, तेरे दिल में समाई हूँ।

पहनकर चाँद की नथुनी, सितारों से भरा आँचल
नये जल की नयी बूँदे, नये घुँघरू, नयी पायल
नया झूमर, नयी टिकुली, नयी बिंदिया, नया काजल

पहन आई मैं हर गहना
कि तेरे पास ही रहना
लहर की चूड़ियाँ पहना, मैं पानी की कलाई हूँ

डॉ. कुंवर बेचैन

डॉ कुंवर बेचैन हिंदी में गीत कविताएँ व गजलें लिखते, संगीतबद्ध करते तथा गाते भी हैं। वह भूतपूर्व व्याख्याता रह चुके हैं तथा राष्ट्रीय आत्मा पुरस्कार व हिंदी साहित्य पुरस्कार आदि कई पुरस्कारों से सम्मानित किए जा चुके हैं। आप 'संकेत' (वैचारिक संस्था) 'झंकार' (संगीत संस्था) तथा 'इंगित' (साहित्यिक संस्था) आदि के संस्थापक सदस्य हैं। यह कविता प्रेम के अनुभव की अलंकार व श्रृंगार से परिपूर्ण रचना है

SAID THE RIVER TO THE OCEAN

Said the river to the ocean
I have come to thee
Sing me, my poet, in verse you created me.

Not for me the loneliness of that mountain height
A wave was I, yet motionless inspite
Silken fetters of snow bound me tight
With effort, melting to a stream
I have descended on the earth after ages
Conceal me, my ocean, I am your hard earned wages.

Rocks and stones, those silent valleys beckoned me with their love
Blocked was my path with flowery treasure troves
A right more than a duty hindered my every move
But unstoppable was I
Till I reached you, my goal
A heartbeat, a yearning, I dwell in your soul.

The full moon my nose ring, glittering stars my mantle
A new Tiara, new earrings, a Bindi and fresh kohl
Droplets of fresh water, new bells on my ankles
Adorned with every ornament I come
To live in you my lover
A wrist of water, bound in the bracelet of your waves forever.

Dr Kunwar Bechain

Dr Kunwar Bechain writes lyric poetry and ghazals in Hindi, putting them to music and singing them too. He is a former academic and the recipient of the Hindi Sahitya Award and the Rashtriya Atma award among other honours and the founder member of numerous organizations such as Sanket (think tank), Jhankar (music organisation), Ingit (literary organization) etc. This poem is a metaphorical rendering of the experience of love with elements of shringaar.

नदी वदति सागरम्

नदी वदति सागरम्
आगतास्मि त्वत्पार्श्वे
मां कीर्तम्य मत्कवे।
न मे अरोचत उच्चशिखराणाम् एकान्तभाव:
अहं तु वीचिरासम्, सत्यामपि तरलायाम्,
न मे अञ्वलपर: दोधूयतां गत:।
सदैव शीतलहिमं मम कायां बद्धवती।
अतिकाठिन्येन निर्झरीमूय
समागता धरामण्डलेऽस्मिन्
प्रिय सागर! दृढं रक्ष माम्
अहं परिश्रमस्यैवार्जनम्।
नैके अवरोधा: मम मार्गे स्थिता:
कुत्रचित् पाषाणखण्डा:, कदाचन
शिखराणां स्नेहराशि:
परं कर्तव्यतोऽपि समधिनं
कश्चन अधिकारभावना मां निरुद्धवती।
नाहं मार्गे स्थिता
त्वद्गृहमेव समागता
स्पन्दीभ्य अहं नृत्यन्ती
प्रविष्टास्मि तव हृदये।
चन्द्र-ताराङ्कितावरणं सन्धार्य
अभिमवसलिल-नूतनबिन्दु नूत्व
पादाभरण-नूत्नभूषणै: अलङ्कृता
सर्वविधामरणजातं सन्धार्य
समागता त्वत्पार्श्वे निवासार्थम्
वीचीरुपवलयं सन्धारयन्ती
आगतास्मि त्वत्पार्श्वे निवासार्थम्।।

पहाड़ पर लालटेन

जंगल में औरतें हैं
लकड़ियों के गट्ठर के नीचे बेहोश
जंगल में बच्चे हैं
असमय दफनाये जाते हुए
जंगल में नंगे पैर चलते बूढ़े हैं
डरते खांसते अंत में गायब हो जाते हुए
जंगल में लगातार कुल्हाड़ियां चल रही हैं
जंगल में सोया है रक्त

धूप में तपती हुई चट्टानों के पीछे
वर्षों के आर्त्तनाद हैं
और थोड़ी-सी घास है
पानी में हिलती हुई
अगले मौसम के जबड़े तक पहुंचते पेड़
रातोंरात नंगे होते हैं
सुई की नोंक जैसे सन्नाटे में
जली हुई धरती करवट लेती है
और विशाल चक्के की तरह घूमता है आसमान

जिसे तुम्हारे पूर्वज लाये थे यहां तक
वह पहाड़ दुख की तरह टूटता आता है हर साल
सारे वर्ष सारी सदियां
बर्फ की तरह जमती जाती है निःस्वप्न आंखों में
तुम्हारी आत्मा में
चूल्हों के पास पारिवारिक अंधकार में
बिखरे हैं तुम्हारे लाचार शब्द
अकाल में बटोरे गये दानों जैसे शब्द
दूर एक लालटेन जलती है पहाड़ पर
एक तेज आंख की तरह
टिमटिमाती धीरे-धीरे आग बनती हुई
देखो अपने गिरवी रखे हुए खेत
बिलखती स्त्रियों के उतारे गये गहने
देखो भूख से बाढ़ से महामारी से मरे हुए
सारे लोग उभर आये हैं चट्टानों से
दोनों हाथों से बेशुमार बर्फ झाड़कर
अपनी भूख को देखो
जो एक मुस्तैद पंजे में बदल रही है
जंगल से लगातार एक दहाड़ आ रही है
और इच्छाएं दांत पैने कर रही हैं
पत्थरों पर।

मंगलेश डबराल

मंगलेश डबराल जनवादी कवि है। अपनी कविताओं के माध्यम से मध्यवर्ग की विडंबनाओं को सामने लाते हैं। इस विडंबना को वे व्यंग्य-भाषा में रेखांकित करते है। 'पहाड़ पर लालटेन' कविता अस्सी के दशक की कविता है। कविता में आदमी शहर की चकाचौंध से निकलकर वापस अपने गाँव पहाड़ पर लौटता है। पहाड़, गाँव का अपनापन उसे आकर्षित करते है परन्तु मजबूरी उसे शहर की ओर धकेलती है। कवि ने गाँव की इस त्रासदी को बहुत नजदीक से देखा है। कविता में बिंबों, प्रतीकों और स्मृतियों से पहाड़, गाँव लौटने और लालटेन के महत्त्व को लक्षित किया गया है।

LANTERN ON THE HILL

Women in the jungle
Fainting under loads of firewood
Children in the jungle
Being buried before their time
Barefoot old men in the jungle
Frightened, coughing, eventually disappearing
Axes, cutting relentlessly, in the jungle
Blood sleeps in the jungle

Behind those rocks burning in the sun
Lie the agonized cries of years
And some ancient grass
Swaying in the water
Trees about to enter the jaws of the next season
Denuded, de-leaved overnight
The earth tosses restlessly
In this needlepoint stillness
And the sky turns like a giant wheel

The mountain your ancestors brought to this place
Breaks down like sorrow
Bit by bit, every year
All the years, the centuries
Freeze like ice
In dreamless eyes
In your soul
In the familial darkness around the hearth
Your helpless words scatter away
Words like grains foraged in drought

Then a lantern shines forth on the hill, far away
Like a bright eye
Flickering, slowly turning into a raging fire
Behold your fields, mortgaged
Your women's ornaments, unclasped
Behold!Those who died of hunger, of flood, of disease
Have now emerged from among the cliffs
Dusting off that mound of snow
Behold your hunger
Turning into an alert claw
A constant roar emanates from the jungle
And desires sharpen their teeth
On the stones.

Mangalesh Dabral

Mangalesh Dabral is a people's poet who portrays the ironies of the middle class in his poems through satire. The poem translated above was written in the 80s. It speaks of the urban dweller returning to his rural roots from the flashy, fast paced life of the city. The familiar, well loved landscapes of the village attract him, but he is well aware of the agony of deprived people as well. The poet seems to have observed at close quarters the tragedy of village life and the necessity for waging a struggle against exploitation.

पर्वताशिखरे काचमञ्जुषा

अरण्ये श्रमिक महिला:
काण्ठ पुरकानान् अथ संश्यहीना
बने बालका अकाले ......
भूम्यन्त: स्थात्यन्ते
कान्तारे नग्नसादा वृद्धा:
भयभीता: कासत्रासम् अनुभवन्त:
अन्ने विलुप्तिं गच्छन्ति।
वने सततं परशुमि: वृक्षा: छिघन्ते
अरण्ये रक्तमेव प्रस्रलम्।

आतपतपित शिलाखजरां पृष्ठे
दीर्घतालिका: आर्तनादा:
स्वलपमात्रायां दूर्वा:
सलिले कम्पभाना:
आगामिऋतुचक्रं स्य दंष्टागता: वृक्षा
दकस्यामेव निशि पर्णहीना भवन्ति।
सूच्यग्रसदृशनिर्मक्षिकवातावरणे
दग्धा पृथिवी परिवर्तते
विशालचक्रवत् भ्रमति नम:।
तव पूर्वजा: यम् अत्रानीतवन्न:
स: पर्वत: दु:खवत् नश्यति प्रतिवर्षम्
स वलोऽपि काल: वर्ष-शताब्ध:

जज्तां गतां निस्वन्नेनेत्रेषु
युष्माकम् आत्मनि
पारिवारिकतम:सु
प्रकीर्णा: व: स्यन्दवहीना: शब्दा:
अकाले एकत्रितचणकवत् शब्दा:
दूरे पर्वतशिखरे प्रकाशते काचमञ्जुषा
तीक्ष्ण नेत्रवत् स्वल्पप्रकाशोपेता
शनै: शनै: अग्निस्वरुपम् प्रयाति
पश्य तावत् ऋणग्रस्तानि क्षेत्राणि
अश्रुधारा युतस्त्रीणाम् शरीरेभ्य:
प्रथकलानि अलंकरणानि
पश्यतावत् क्षुधा-जलापलावन-
जनपदविध्वंसिरोगत:भृता:
सर्वे समागता: शिलाखण्डेभ्य:
हस्तकयेन हिमराशिम् अपाकृत्य
पश्यक्षुधाम् विवरालरुपं
धारयन्नीम्
वनात् गर्जनं श्रूयते
तू आकांक्षा: प्रवली भवन्ति
पाषाणखण्डेषु।

MY TIBETANNESS

Thirty-nine years in exile.
Yet no nation supports us.
Not a single bloody nation!
We are refugees here.
People of a lost country.
Citizen to no nation.

Tibetans: the world's sympathy stock.
Serene monks and bubbly traditionalists;
one lakh and several thousand odd,
nicely mixed, steeped
in various assimilating cultural hegemonies.

At every check-post and office
I am a "Indian- Tibetan."
My Registration Certificate
I renew every year with a salaam.
A foreigner born in India.

I am more of an India
Except for my chinky Tibetan face.
"Nepali?" "Thai?" "Japanese?"
"Chinese?" "Naga?" "Manipuri?"
but never the question - "Tibetan?"

I am Tibetan.
But I am not from Tibet.
Never been there.
Yet I dream
of dying there.

Tenzin Tsundue is a writer and activist. Born to a Tibetan refugee family labouring on India's border roads in Himachal in early 1970s', he is the other of four books: Crossing the Border, Kora, Semsbook and Tsen-gol. He joined Friends of Tibet (India) in 1999 and campaigns in India for his country's freedom struggle. As a poet he represented Tibet in Sahitya Akademi's Second South Asian Literary Conference in New Delhi (2005), Poetry Africa in Durban (2005) and Jaipur Literature Festival, 2010

मै तिब्बती हूँ

उनतालिस साल देश-निकाले के
पर कोई देश हमारे साथ नहीं
एक भी नहीं!

हम यहाँ शरणार्थी हैं
खोए हुए देश के लोग
किसी देश के नागरिक नहीं

तिब्बती, दुनिया की दया के पात्र
सौम्य भिक्षु और जीवंत परंपरावादी
एक लाख कुछ हज़ार
अच्छे से घुले-मिले, सराबोर
कई समन्वयात्मक संस्कृतियों में

हर चेक पोस्ट, हर ऑफिस में
मैं 'भारतीय-तिब्बती' हूँ

अपना रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट
हर साल सलाम ठोक कर नया बनवाता हूँ
भारत में पैदा हुआ एक विदेशी

शायद मैं भारतीय ज्यादा हूँ
एक बस मेरे 'चिंकी' चेहरे को छोड़
'नेपाली'? 'थाई'? 'जापानी'?
'चीनी'? 'नागा'? 'मणिपुरी'?
पर कभी कोई नहीं पूछता, 'तिब्बती'?

मैं तिब्बती हूँ
पर तिब्बत से नहीं
कभी गया नहीं वहाँ
फिर भी सपने देखता हूँ
वहाँ मरने के।

तेंजिन त्सुन्द्यू

तेंजिन त्सन्द्यू लेखक व एक्टिविस्ट हैं। 1970 के दशक में आपका जन्म हिमाचल स्थित एक तिब्बती शरणार्थी परिवार में हुआ। आपकी चार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। 'फ्रेन्ड्स ऑफ तिब्बत' के सदस्य होकर, आप भारत में तिब्बत की स्वतन्त्रता हेतु कार्यरत हैं। आपने साहित्य अकादमी के द्वितीय दक्षिण एशिया साहित्य सम्मेलन (2005) पोएट्री अफ्रीका (2005) तथा जयपुर साहित्य समारोह (2010) में तिब्बत प्रतिनिधित्व किया।

मम तिब्बतीयता

स्वदेशतः निष्कासनस्य एकोन-
चत्वारिंशद्वर्षावधिः व्यतीतः
न कोऽपि देशः नः समर्थयति।
न च किंच्चन क्षुद्रमपि राष्ट्रं नः पक्षे
वयं तु अत्र विस्थापिताः एवं
विलुप्तमातृभूमेः निवासिनः
न कस्यपि राष्ट्रस्य नागरिकाः॥

तिब्बतवासिनः विश्वस्य ददापात्रतां गताः
सौम्यभिक्षुसमुदायः जीवन्तपरम्परासंवाहका
लक्षाधिकाः नैक समन्वयात्मक संस्कृतिषु मिश्रिताः

प्रत्येक वर्षे पञ्जाभ्रण कार्यालये
अहं भारतीय तिब्बतवासी
इति ज्ञापकं स्वीय प्रमाणपत्रं पुनर्नवीकरोमि।

समुत्यपन्नस्तु भारते, परं विदेशी
कीदृशी विडम्बना

अहं समधिकं भारतीयः
केवलं ममाकृतिः चिंकीति मनोहररुप धारिणी
किमु भवान् नेपाली? थाई? जापानी?
चीनी? नागा? मणीपुरी? परं न
कोऽपि पृच्छति किमु भवान् तिब्बती?

अहं तिब्बतीयः
परं न कदापि तत्र गतः
पुनरपि में मनः स्वप्रायते
तत्र प्राणत्यागाय।

तेंजिन त्सुन्द्यू

TAJ MAHAL

There are not so many wonders in the world,
But one of them we keep in consciousness,
I keep in my mind one road in faraway India
From Delhi to the town with miraculous Taj Mahal.

Agra, Beauty and pride, always expects lovers!
Shimmering Carrara marble, malachite and lapis lazuli,
The sweet fragrance of amber will inspire any creator.

And if you expect that love may be eternal,
You will lose your doubt, visiting Agra again and again...

Larissa I. Ayvazyan

Larissa I. Ayvazyan is poet and singer based at Moscow.

ताजमहल

दुनिया में इतने भी अजूबे नहीं
कि हम एक को भी याद न रख पाएँ
मेरे ख्यालों में बसी है दूर भारत की एक सड़क
दिल्ली से उस शहर तक जहाँ है आलौकिक ताजमहल
आगरा! सुंदर, गौरवमय, सदैव प्रेमियों की प्रतीक्षा करता है
चमकता करारा संगमरमर, तांबई मैलाकाइट, लैपिस लैज़ुली
उस पुखराज की भीनी खुशबू किसी भी रचयिता को प्रेरित कर दे
अगर तुम्हें संदेह है प्रेम की चिरायु पर
तो विश्वास हो जाएगा तुम्हें बार-बार आगरा जाकर।

लैरिसा अयवास्यान

लैरिसा अयवास्यान मास्को स्थित कवयित्री व गायिका है।

ताजमहल स्मारकम्

विश्वे न हि सन्ति भूयांसो विस्मय जनका: स्मारका:
यत्तेषु एकमपि स्मर्तुं वयं न समर्था: स्याम।
विराजते हि मम विचारसागरे
भारतस्य स विशिष्यो राजमार्ग:
नयति य: पथिकान् दितलीत: आगराम्
अतिशोभनं सुन्दरं गौरनमयं स्मारकम्
सदैव प्रतीक्षामाणं प्रेममार्ग पथिक दुगलदलम्
श्वेत-संगमरमर-मेलाकाईट-लेपिस-लेजुलीति
नाना-पाषाण-खण्डैर्विर्नितम्।
अस्यामा कमपि रचयितारं प्रेरयितुम् अलम्।
यदि त्वं सन्दिहान: प्रेम्णा दीर्घायुषम्
तर्हि तत्वरं गच्छ आगराम्
मुहुर्मुह: वीक्ष्य ताजमहलम्
विश्वासपूर्णं भविता ते मानसम्।।

English Section

Editorial

It has been an uplifting experience to collaborate with the editorial team of Ankur English section this semester. It is a vibrant welcoming team of bright and eager young students. We scraped off time for various meetings, sessions and discussions, and the results have been worthy. I urge you to read all the contributions. Each one of them is a superb piece of writing.

We are thrilled this year to introduce each section within a special category with a musical thought as introduction. We hope it will add not just food but also music for the movement of thoughts and more pleasure for our readers. We received fresh images of love and life, words and stories from our contributors. The unique feature of this edition of the English section is that there is musicality and a rhythm to it, which sets the tone for the reading experience. Each subsection is prefixed with a piece from a song, lovingly handpicked by our editorial team.

In Prose, we present to our readers reflections on myriad topics of interest amongst which are Dr Kusum Chadda's interesting 'Thoughts on Education' and the insightful paper on 'Feminization of Poverty' by Surili Sahay.

The English section is teeming with escalating contributions for poetry this year. Along with many interesting student prize winning entries, we feature Dr. Anish Kumar's 'Chemical Sleep,' where he takes us into 'the angst' of 'sleeping a medical sleep' and 'the existential tangle' that accompanies it. But you will be amazed to see the sheer depth of subjects on which our young student poets think in verse. The poems carry tenderness, the beauty of everyday existence, divisiveness and narratives.

In Travel diaries, we begin with Renu Kapoor's travelogue on Istanbul. Dr. Vandana Aggarwal shares her musings on restoring natural environment in cities like Delhi and Jaisalmer. We also offer Dr Urvashi Sabu's piece, weaving vignettes from her fun-filled Cambodian sojourn with six other women colleagues. Also featured in the travelogue section are some musings on trains which is as much of a travel diary in itself.

In the book review section, we feature our head of English Department, Arti Mathur's review of Bhuvan Lall's, *The Man India Missed the Most: Subhash Chandra Bose.* She draws on the concerns of narrative as a method of historiography and plural epistemologies within postmodernism. One of the highlights of this section is Jyoti Kathpalia's travails of negotiating with a teenage son, who is a recently published author. To add to aesthetics of this section, Renu Kapoor interviews a Madhubani artist from our college workshop to glean some reflections from an artist's perspective. Dr Vandana Aggarwal reviews Isaac John's *Buffering Love*, a collection of short stories that is a brilliant take on the influence of information technology in modern times. Dr. Urvashi Sabu, our Chief Editor recommends *Remarkings: A World Assembly of Poets* by Nibhir K. Ghosh and Tijan M. Sallah as a 'must' for the readers. She regards the collection as 'living, the new, and the mint fresh' and a 'labor of love for its editors'. She goes to the extent of recommending it for 'University curricula'.

Finally, we leave you with the magazine. Enjoy your spring breezes, back to college and the return to everyday world. We do not expect the reading to happen right away but we feel that there is an inevitable crispness and angst in the air.

Pritika

Thoughts in Prose

Words are flowing out like endless rain into a paper cup
They slither wildly as they slip away across the universe

The Beatles: Across the Universe (written by John Lennon)

CONTENTS

1.	My Unfinished Chai	-	Swati Baruh
2.	Fear Not, Take the Flight	-	Ria Sharma
3.	A Thing of Beauty	-	Kritika Singh
4.	The Real Strength Lies Not in the Man's Arms But in the Man's Mind	-	Kartik Gupta
5.	Virgins on My Shelf	-	Mr Sushil Gupta
6.	School Memories	-	Nisha
7.	Feminization of Poverty : How Path Dependence Obstructs Combating Gendered Poverty	-	Surily Sahay
8.	Paper	-	Amrit Versha
9.	Thoughts on Education	-	Dr Kusum Lata Chadha
10.	The Philosopher of Modern India: Swami Vivekanand	-	Dr Abhishek Srivastava
11.	My Experience as Fulbright Scholar in USA	-	Dr Harman Preet Singh

MY UNFINISHED CHAI

I thought of sitting in the corner most table, as I usually do, out of people's site but from where I can get a good look at all. As I enter, I realize that it is a busy Saturday evening and the place is bustling with loud talks of happy people; some lovers, love co-workers, some friends and no lone lost soul. Not finding my usual corner empty, I settle myself somewhere almost in the centre of the crowd, next to the window. I feel conscious, as if I am being stared at. But as I turn around, I see happy people getting on with their lives. I wonder if they ever felt lonely. Maybe they do and that's why they accompany each other for cups of chai, to the movies, in times of breakdowns and happiness. Maybe, all are lost souls trying to find comfort. And maybe, I am not alone.

Maybe. When now my stream of consciousness is interrupted by the waitress, who brings my usual cup of chai with some milkbikis biscuits. I smile, nod and she disappears into the crowd to serve more chai and biscuits to unknown faces. I take a sip of my chai and almost burn my tongue and lips. So, I keep it aside and continue to munch the biscuits.

Apart from sipping my chai in utter solitude, I read or write at times. If it gets too noisy, I plug in music to avoid it. But today, I don't feel the need. I am oblivious to the words that I hear. Usually, I somewhat eavesdrop and later its fun to build up and continue the stories in my head. I look at the steaming chai and the plate of finished biscuits. It has been a few years since I have left home. It hurts at times to think of how it does not hurt me to be away. I look out the window to see lights, buildings and cars. Nostalgia hits me and takes me back some place familiar.

It is funny to recall moments of utter stupidity which were so important back then. It seemed like a matter of life and death to me, at the age of ten, to possess a guitar. To become a musician and have my band, because "High School Musical" was my religion. Although, I didn't even realize when I became an atheist and left my guitar in some corner to rot. By the time I was fourteen, I had experimented in the kitchen to become a chef some day, joined dance classes and left, showed all my artistic skills and gotten bored of it all. I had learned a bit of all but never had the courage or patience to finish any. But, one summer, my relatives brought me books. I don't know, which God or Goddess had pity on me and I was hooked to the books. No sooner did summer give away to winters, I had decided to become a writer. Now, it brings a smile to my face, how hopeful and innocent we were.

With that my thoughts run back to the steaming chai which isn't steaming anymore. I touch the cold brim of the cup thinking of getting another cup. But instead I grab my bag, put the money down and leave.

Swati Baruah
BA (Hons) English, III Year

FEAR NOT, TAKE THE FLIGHT!

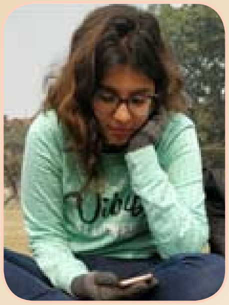

"The person who follows the crowd will go no further than the crowd. The person who walks alone is likely to find himself in places no one has ever seen before."

- Albert Einstein

Every mind works on its own unique way, no two people are the same, some might be academically brilliant, while others might have some other talents. The essential part is to stand alone, to dare to be a black sheep in a herd of white sheep, dare to create your own path rather than following the crowd. Be creative, think out of the box! Be different!

All this appeals so much to the mind, but when it comes to being practical all this goes down the drain. Everyone is looking for a shortcut. Everyone wants to settle down and lead a life devoid of stress but sadly that doesn't come true for all.

Yet, no one ever stops to think of the opportunity they just missed, no one ever gathers the courage to take the road less travelled, maybe because of the fear of the unexplored thorns. Do we ever think where that path would have taken us? Do we ever give our dreams a chance to lead us? All we are left with is regret, thinking of possibilities that could have been.

The first step is the same for all, then why does the end differ? We all begin at the same station, then why is the destination different? The answer to this is rather simple, while a few board the train that lead them to their dreams, majority of us take the one that the crowd travels by.

In this fast paced life, we run after success. In this world of technology, dreams and passions have taken a back seat; in this world of materialist joy we have forgotten the taste of real happiness; we have learnt to prioritize success over passion. In this race for wealth and power, we tend to forget the fact that the way to succeed are many, but there is only one way to happiness. Only one decision can make the world a better place for us!

So play that guitar that has been hanging, color that canvas that lies white in the corner of your room, give wings to those dreams that keep you awake all night. Dare to take the road less travelled by, because life isn't about the final destination, but about the colors we paint along the road and the music we play!

Ria Sharma
BA (Hons) English, II Year

A THING OF BEAUTY

winter afternoons are one of the most exquisite sight to be thought of. The park in front of my house is a perfect place for me to be at peace and admire nature's bountiful beauty. The soft yellowish grass under my bare feet gives me a fresh tingling sensation, a sensation worth walking for hours in that garden full of gaiety and exuberance. The grass dances and waves on the beats of zephyrs of winters and it never loses that ooze of the dawn. It remains there throughout the day which gives the grass a sparkling greenish hue. It stays a bit wet which cleanses the feet, which is very soothing and mesmerizing. The cold soil has its own pleasant odor. I prefer to take my hot chocolate mug and a Stephen King novel with me to take multiple advantages. But I often get distracted by the nimble squirrels beside my mat. Those plump squirrels are so very busy filling their tiny bellies with pieces of bread crumbs and nibbling hours and hours on a single nut. How the crows have their lunch amidst the dray of squirrels without any feeling of envy or hesitation. The comradeship amongst these creatures is appreciable. This is something we humans must pick up from these animals. Some of the squirrels are busy looking for soft, comfy material for the building up of their nest. These arduous beings running hither and tither so rapidly and jumping over one another like gymnasts demonstrating their skills is quite enjoyable to watch and can bring a smile on any observer's face.

The sun is slightly visible amidst the dense fog. It is a ravishing scenario when the golden ball's beams penetrates through the dense canopy. I lie down on my mat with my face topsy-turvy facing the sky which makes me delve into its wide azure expanse. The birds flying in the skies following each other looks as if a fleet of jet planes are showing their special moves. The sky above has a pale-yellow tinge to it which makes my eye water when gazed for a longer duration. The tears in my eyes makes the sky even more glittery, which one can find quite picturesque. After a while, I end up gazing at a royal blue humming bird flapping its wings vigorously which is sucking the nectar from a vermilion flower. What a lovely sight!

The morning dew can still be seen on the pale-yellow leaves of the Ashoka spread on the floor of the garden as if a "yellow carpet" has been laid down to welcome the Winter Queen. This season has its own song to sing. The melodious song of the Cuckoo bird, the squeaks of the squirrels, the harmony played by the zephyr and the rustling sound of the trees are all the composers of the hymns of winter. This gives any patient observer an aesthetic pleasure to the mind, body and soul, and thus activates and illuminates the observer's senses. The winter's a thing of beauty which stays immortal and whose song never ever ceases. Nature knows no bounds and therefore it is there forever. It will keep astounding its admirers and lovers with its ravishing components. For any inebriate of nature, winters would definitely be serene in which one would love to delve in and stay with it forever.

Kritika Singh
BA (Hons) English, II Year

THE REAL STRENGTH LIES NOT IN THE MAN'S ARMS BUT IN THE MAN'S MIND

People may form their first impression of a person on the basis of his physical appearance but the last impression is all about his brains. During the teens an adolescent is always told to sharpen his intellect, to enhance his perception of things and to learn from everything he/she comes in contact with. If we look at a human's life as a day; we will term childhood as the dawn, adolescence as the morning, adulthood or middle age as the afternoon, and old age as the evening. Generally, if the morning is passed joyfully then the rest of the day goes well. Adolescence includes the formative years of any person's life. In this age, the mind is extremely fertile and can imbibe all the knowledge offered to it. A person gives a final shape to his personality at this time, when he is about to step in the real world.

Every person wants to be successful in the world. He/she wants to take most of what the world has to offer, explore and experience new dimensions of life. But not everyone is able to make it to the top and make his/her dreams comes true. They are most likely to end up being a sheep amidst a large flock. It is because they fall prey to the general thinking of the society. They accept that there are only two or three limited ways to be successful in this life. They think that there are only few courses and programmes that need to be pursued in order to get success. This way they choose their careers, to which their hearts don't belong and end up spending miserable and helpless lives. Only talking about a problem doesn't guarantee its solution; rather it shows the helplessness at the individual's end. A problem can only be solved by a practical and relevant solution.

To find or create any suitable solution for any problem, we need to look at the root-cause of it. Here the root-cause to all the problems faced by a human being is the inability of an individual to form his/her own perception. This might seem to you the most pervasive ability which any individual possesses. After all, everyone has their own understanding of things. Put a hundred people in the same situation for a certain period of time and you shall see a hundred different perceptions blooming out of the shoots of their minds. Then, how can "forming your perception" be a great capability. When we tend to look at things closely and with a certain amount of concentration, we will be able to decipher the grandeur that this ability possesses. Each person trotting on this earth has a mind. He/she has a tremendous possibility of having free thoughts and perception of things on his/her own. But possibility and reality are two separate terms. In reality, people tend to form their perceptions through someone else's understanding, i.e., they fail to apply their own minds. They are ready to accept any thought offered to them by the people around them without analyzing it themselves. They live their lives in the close shell of their superb possibilities, and die in that shell being just a mere possibility. Only some are able to turn themselves from possibilities to realities. The latter kind of people, are able to understand and experience life in its fullest potential. Rumi, a Sufi mystic, said, "I learned that every mortal will taste death. But only some will taste life". Successful are those people, who expose themselves to the grand highway of reality. In that context, the ability of "forming your own perception" is the greatest strength anyone can possess.

One thing which must be pointed out here is that any individual (who is able to perceive

on his own) should know how to use and handle his perception. Now what do I mean by that, is, if one has his/her own perception he/she must not view it as the end result or a dead end in that field of thought. The most simplistic example is that of death. People draw conclusions about a dimension, which has never been explored by the living. They are ready to take a word of their elders or form their thoughts about death by believing something written in a book while they do not know who wrote it. Some people tend to believe that there exists an "afterlife". Some people are adamant on the thought that, "there is nothing after death. Whatever is, is here and here only". They look down upon other's thought and hold their perception as supreme. Ultimately what they are doing is that they are confining themselves inside the four walls of their limited understanding. They see only one side of the coin and remain totally oblivious of the other side. Wise is that person who has his/her own train of thoughts but doesn't get entangled in his/her own tracks of thought.

Mind is the most sophisticated machine on this planet. It can be the most generous friend or it can be the gravest enemy. By making it a friend, one can conquer the skies and by making it an enemy, one leads a miserable and helpless life. What to make of it, a friend or an enemy is totally up to the individual. Some people make the decision consciously, while most make this decision unconsciously. Those, who take this decision consciously can solve all their problems easily and lead a life full of joy, bliss and ecstasy.

Kartik Gupta
BA (Hons) English, I Year

VIRGINS ON MY SHELF

I have been a voracious reader all my life, and worse, a compulsive buyer of books. I believe I buy, on an average, two books when only one gets read. Perhaps an overestimation of my stamina and capacity.

I owe my disposition of buying books to a chance quote on The Thought for the Day: **a book worth reading is a book worth buying.** I came across it at an impressionable age and took it too literally converting the thought for the day into a liability of a lifetime.

My modest middle-class dwelling started proliferating with books. Eyebrows were raised. Space crunch was cited. It reached a point when all eyes followed me like that of the sailors who accused the Ancient Mariner of killing the albatross and hung it round his neck. My albatross was my books. The joy of bringing new books home was somewhat clouded when one wondered where to accommodate them.

The process had started tentatively with an improvised shelf nailed to the wall. When it started spilling over a three-tier rack was introduced. Subsequently more tiers were added till they groaned under their own weight. Then a glass-paneled almirah show-casing its contents was brought in. Then another... I find myself in the predicament of a man who can afford to buy a car or two but has no space to park.

I can conveniently divide my personal collection of books into a binary: the books that have been read and the books that are yet to be read. I like to call them the 'brides' and the 'virgins'. Virgins on my shelf tend to outnumber the brides betraying my zeal over my vigour. Obviously, it is easier to buy books than to read them.

Fresh virgins remain prominently displayed in the front row with the gentleman's promise

that as soon as I am done with my current read I would turn to them. I would eye them for weeks with affectionate anticipation. As weeks turned into months they induced a feeling of guilt laced with helplessness. As the months turned into years I would archive them to a relegated corner lest their presence lie heavy on my conscience. Over time the corner became a wing in its own right looming over the bridal beauties wrapped in their smugness.

One characteristic of the virgins on my shelf is that they are all thick-waisted tomes. One needs guts of a kind to delve into the depths of their folds to discover their ever-elusive G-spot. For each such tome one might as well enjoy the company of a quartet of slim sexy volumes. They offer variety – the ultimate spice of life! And if you are not really pleased it is not much of a loss. You just shrug it off. A tome can't be shrugged off. It commands commitment which in today's hectic schedule is a hard commodity to come by.

Not all of them are sumo giants, though. Some are slick handsome editions gifted to me by my friends who know my fondness for books and are glad that they don't have to think twice what to gift me. Trouble is their gift-list rarely coincides with my wish-list. I thank them for their thoughtful gesture and routinely add the new arrivals to my harem of virgins.

There is a sudden spurt among the inmates of the virgin wing when a book fair is in town. The sprawling premises, the plethora of eye-catching titles, the tempting bargains, all lead one to buy them by the bagful. With passage of time only one or two get read the rest join the company of the virgins. Even after decades of experience I am none the wiser for it. One reason could be my implicit trust in a real life truism that every virgin is a potential bride. That keeps me accumulating them while I can. With my self-persuasive logic I try to rationalize: a man is known not only by what he reads, but also by what he intends to read.

Some long standing virgins on my shelf have turned into chronic spinsters. There seems little prospect of their being read now. They carry the seal of classics on them: Joyce's *Ulysses,* Tolstoy's *War and Peace,* Galsworthy's *Forsythe Saga,* Marquez's *One Hundred Years of Solitude,* Pamuk's *The Museum of Innocence,* Seth's *The Suitable Boy,* Chandra's *Sacred Games* et al. They all suffer from congenital obesity. Amartya Sen, who always looked very promising when I bought him with the aura of a Nobel attached to him, invariably failed to engage me. Too abstruse, too convoluted! Not in my league, I sadly concluded. There he stands, among the virgins, as if a bride!

The virgins are all merit-worthy. After all that's why I bought them in the first place. They come with formidable credentials flaunting the tags of Classics or Nobels or Bookers. Tags may induce me to buy them, to bring them home, but may not always entice me to get intimate with.

A book may remain a neglected virgin on my shelves for years, yet I turn extremely possessive when a casual visitor to my place shows interest in her and wants to borrow her for a hurried honeymoon. Denying access to her vehemently, I tell him, "Lay off, man! She's my virgin, not a street hooker for anyone to divert himself with." Come to think of it I am equally possessive of my brides as well. However, if I were to choose between the two I would rather part with a bride than with a virgin.

There are quite a few books on my shelves that defy the categorical distinction between brides and virgins. They are the half-read books. I initiated the intercourse with them but finding it a chore rather than a pleasure put them aside with the vague hope that I would consummate the act some other day when I am in a more receptive frame of mind. Over the years, however, I have noticed that I rarely, if ever, go back to an abandoned book.

I may revisit a bride, I may shack up with a plump virgin, but an abandoned book remains a persona non grata.

Whenever in past I picked up a half-read book I faced the dilemma of whether to start it all over again or to continue it from where I had left it last. In either case I felt that I should have gone the other way round. That reaffirmed my resolve to let the quasi-virgins be.

I often get visitors who marvel at the number of books on my shelves and ask with a skeptical awe, "Have you read them all?" It's a rhetorical question rather than a genuine query. It implies if you have read so many books how come you are a mere college lecturer and not a sought-after sage or a consultant at UNESCO.

Mr Sushil Gupta
Associate Professor, (Retd)
Dept of English

SCHOOL MEMORIES

Who am I? And now, I wonder how this story will end? A short story that encapsulates a period of fourteen long years.

Recalling my first day at school, I caught sight of an astonished child.

The same teary eyes and the innocent face that I once knew. The girl struggled to set free from the firm grip of her father's hands, softly murmuring, "I don't want to go to school. Take me home, Papa, I don't want to go to school."

Tears come rolling down my eyes as I look upon that day. I analyze myself in the light of that little child trying to figure out the changes that had crept upon me over the years. Nothing seemed to have changed, but still something had been lost, that innocence, that gleaming face, and the sense of security I felt in my father's arms.

Today, I am at a juncture, where my days in school are numbered. Thereafter, I stand to gain much but to lose behind much, much more. I stand to lose the greatest days of my life that I spent here in the metamorphosis from a tiny timid creature to a fearless bold human being. I stand to lose my teachers, guides, my guardian angels. I stand to lose my friends, my dearest pals. The ones of the kind that will push me from atop a hill but the very next moment shall jump in, too, to save me. All the time that we spent together in hangouts, fights, break-ups, and patch ups can never be forgotten.

But above all, I stand to lose myself, I stand to lose my identity. I shall now be a complete stranger to myself all over again. And then, I have to strive to make an impact on this weird world again.

I stand at the crossroads with fond memories of my days in school spread all across my mind, and a thought from the blue strikes me. It pokes me that all good things come to an end and this is no exception.

As time passes by, my name will be forgotten. I will be less spoken of, and gradually my face will fade into oblivion. Though the school might forget me, I will not. My memories and I shall leave the school, but the school and its memories shall haunt me for ages.

With this, the story comes to an end. The story of an Odyssey which began twelve years hence, with the fear of being a stranger to the inhabitants behind these brick walls and now after twelve years, I am back to square one. The journey ends with the same watery eyes and the same fear of being an alien to these surroundings once again.

Nisha
BA (H) Political Science, II Year

FEMINIZATION OF POVERTY:
How 'Path Dependence' Obstructs Combating Gendered Poverty

Path dependence refers to the inclination of humans to continue with traditional methods and measures despite the existence of more effective ones, has long plagued Indian policy making. And so is the case with policies and measures relating to **'Feminization of Poverty'**. This paper attempts to draw attention to the inadequacies of the existing and widely used parameters and policies that are used for the measurement, study and combat of gendered poverty while suggesting substitutes for the same.

INADEQUACY OF THE HOUSEHOLD LEVEL APPROACH

The household-level approach assumes that all resources are shared equitably, and all household members enjoy the same level of well-being. This is an assumption which is unrealistic, especially in a patriarchal setup like India. Inequality in the distribution of resources and access to health services is evident in India. It fails to capture the intra-household dynamics of resource allocation and distribution, which may depends on socio-cultural relations of gender, age, race, etc

'Based on household-level measure, if in the same household, women consume or spend less than is needed to function properly physically and socially, while men consume what is needed or more, both are still considered to have the same poverty status, either poor or non-poor, depending on the average consumption estimated at the household level. Therefore, the simple disaggregation of poverty counts by sex will lead to underestimated gender gaps in poverty, because additional poor women might be found in some non-poor households.' This is also known as secondary poverty.

Therefore, incorporating a perspective on how poverty may be experienced by female members can aid policy makers in the design and evaluation of anti-poverty and livelihoods creation programmes. A measure which captures the intra household dimensions would include the measurement, at the individual level, of asset ownership, and individual access to formal financial services, amongst other parameters. This paper will suggest a measure with certain such parameters in Part Three

THEORY OF CO-OPERATIVE CONFLICT

The nature of intra-household interaction and their command over resources can be also be explained through Amartya Sen's Theory of Co-operative Conflict. The members of a household cooperate so far as cooperative arrangements make each of them better-off than non-cooperation. However, many different cooperative outcomes are possible in relation to the distribution of goods and services amongst the members. The outcomes depend on the relative bargaining power of household members. A member's bargaining power would be defined by a range of factors, in particular, how well-off s/he would be if cooperation failed. Women generally have weak bargaining positions in the household and it obstructs their means to achieve.

To exit from a marriage is more costly for women than for men in the Indian society, a fact which weakens women in intra-household bargaining over division of labor, consumption rights, freedom of movement and freedom from domestic violence. More significantly, it suggests the possibility of women facing everyday lives in which their work is devalued and where their exit options are limited. The resources that men and women are entitled to

often are rights that have been long recognized by the traditional society

PROBLEMS WITH OVEREMPHASIS ON FEMALE HEADED HOUSEHOLDS AND THE ASSUMPTION THAT THEY ARE LIKELY TO BE WORSE OFF THAN MALE HEADED HOUSEHOLDS

For the lack of other data or otherwise, there has long been an emphasis on Female Headed Households in the study of Feminization of Poverty and they have been seen as the poorest of the poor. There is not enough empirical evidence that suggests a strong correlation between the two. Female Headed Households are not a homogenous group and requires further disaggregation for any policy consideration.. Also, female-headed households tend to show-up as poorer on account of their smaller size when in per-capita terms they may actually be better off.

Also, when poverty is seen as a decrease in well being of an individual, may females who choose heading their households do so after exiting from an abusive relationship so that they may be able to exert more influence over their lives, exercise more personal freedom, more flexibility to take on paid work, enhanced control over. Female heads may be empowered in that they are more able to further their personal interests and the well-being of their dependants. Studies have shown that the expenditure patterns of FHHs are more biased towards nutrition and education than those of male households.

The chances of secondary poverty among women in female headed households are much less. It is true that the proportion of female heads working compared to the overall female work participation rates is higher, since in most cases the female head is the active earner of the family. Hence, connotations of powerlessness associated with female headed households are wrong. Therefore, headship analysis cannot and should not be considered an acceptable substitute for poverty analysis.

POVERTY IS MUCH MORE THAN LACK OF INCOME

Income or money represents the means to better living conditions but it is not the better living condition in itself. Poverty, if viewed only in terms of income deprivation, will not capture many important aspects such as access to land and credit, decision-making power, legal rights, vulnerability to violence, and (self)-respect and dignity. Poverty should be viewed as human poverty. Poverty can be deemed as the denial of the opportunities and choices most basic to human life – the opportunity to lead a long, healthy, and creative life, and to enjoy a decent standard of living, freedom, dignity, self-esteem, and respect from others. This has an important bearing for policy makers in combating gendered poverty as it aids them in taking action to eradicate poverty for they focus on the deep-seated structural causes of poverty and lead directly to strategies of empowerment as many times it is gender roles and not income deprivation that pushes women towards poverty.

POVERTY AS CAPABILITY DEPRIVATION

According to Amartya Sen's Capability Approach, poverty represents the deprivations of important capabilities to function i.e. obstructions in what a person can do and can be. For women, lack of income isn't just the only thing that hinders their well being. The lack of agency, lack of participation in the decision making process also contributes to the same. Further, women who do not necessarily lack income may also be vulnerable to poverty. For example, married women who are not participating in paid labor or have productive assets may be vulnerable to poverty in case of widowhood, divorce or separation even if they are not "poor" by a variety of criteria.

Resource allocation within households is often biased against girls and women. In addition, it is harder for women to transform

their capabilities into incomes or well-being, such as due to not being able to transit from education to jobs or their mobility being constrained. Gender inequalities in the distribution of income, access to productive inputs such as credit, command over property or control over earned income, as well as gender biases in labor markets and social exclusion that women experience in a variety of economic and political institutions make them poorer.

FEMINIZATION OF RESPONSIBILITY AND OBLIGATION

Growing numbers of women of all ages are working outside the home, as well as performing the bulk of unpaid reproductive tasks. Women allow themselves minimal time for rest and recreation. Men, on the other hand, feel it in their right to go out with friends, drink, etc. The economic and social reproductive realms which women are expected to tread, do enlarge their life choices but limit them, hence making them poorer. Men, on the other hand, despite their lesser inputs, have retained their traditional privileges and prerogatives. This is known as feminization of authority and responsibility and has not been captured by sex disaggregated data.

Women are prone to poverty due to their double roles, i.e. their productive and reproductive role. Incorporating women in income-generating programmes, without understanding and addressing the role and responsibilities of the women in the home (care of children, domestic work, water and fuel collection, etc.), would just add to the burden of women.   Thus, the invisibility of their reproductive work is a bottleneck for effective policies.

It is important for policy makers to assign value to unpaid domestic work and the rewards/rights received for it so that an input-output analysis can be done and at the same time, value of women's unpaid work and a time use analysis can be done.

THE CASE FOR SEX DISAGGREGATED DATA

It is well known that poverty affects men and women differently and that sex aggregated data is scanty. Aside from the general problem of scant sex-disaggregated data on poverty, data which are disaggregated along other lines are also lacking. Since women are not a homogeneous group and capability deprivation differs amongst women too, on the lines of age, region, class, rural-urban divide, etc, further disaggregation of data is essential. For example, the necessity to work compels poor women to take up paid employment, while it may be an exercising of an option for the relatively better-off women. This is reflected in the nature and type of jobs undertaken by the women, which has policy implications. Except for gender headship, lack of breakdown according to other axes of difference has prevented any dedicated investigation of which particular groups of women, if any, might be especially prone to privation. The provision and access to such data is extremely important as it serves as a tool to measure the effect and efficiency of policies formulated and implemented to combat gendered poverty.

TOWARDS A BETTER MEASUREMENT OF GENDERED POVERTY: INDIVIDUAL DEPRIVATION MEASURES

An international, interdisciplinary team, funded by an Australian Research Council Linkage Grant, has worked towards 'The Individual Deprivation Measure (IDM) which offers a new way of measuring poverty that takes the individual as the unit of analysis. The IDM provides the basis for anti-poverty policies that are able to respond to specific groups within a broader population and specific issues. The Individual Deprivation measure is based on a questionnaire to Households which included questions on the following 15 grounds.

Dimension	Indicators
Food/Nutrition	Hunger in the last 4 weeks
Water	Water source, water quality
Shelter	Durable housing; Homelessness
Health Care/Health	Health status, health care access; For women who are pregnant or have been pregnant in the past 3 years, access to pre-natal care, trained health care worker in attendance at birth
Education	Years of schooling completed; Basic literacy and numeracy
Energy/Cooking Fuel	Source of cooking fuel: Health impacts: Access to electricity
Sanitation	Primary toilet, secondary toilet
Family Relations	Control of decision making in household; Supportive relationships
Clothing/Personal Care	Protection from elements; Ability to present oneself in a way that is socially acceptable
Violence	Violence (including sexual and physical violence) experienced in the last 12 months; Perceived risk of violence in the next 6 months
Family Planning	Access to reliable, safe contraception; Control over use of contraception
Environment	Exposure to environmental harms that can affect health, well-being and livelihood prospects
Voice	Ability to participate in public decision making in the community; Ability to influence change at community level
Time-use	Labour burden; Leisure time
Work	Status of and respect in paid and unpaid work; Safety and risk in relation to paid and unpaid work

(adapted from 'Lifting the lid on the household: Introducing the Individual Deprivation Measure, www.gendermatters.org)

Such a measure has also been devised by a team at the Indian Institute of Management, Bangalore in association with Kolkata Household Asset Survey. They divided their questionnaire into four parts namely, education, living standards, productive assets and empowerment.

These measures go beyond the ones we have traditionally used in India and measure dimensions of poverty other than monetary dimensions too and hence seem to be a policy idea whose time has come in terms of effective measurement and analyses of gendered poverty.

OTHER POLICY CONSIDERATIONS

In conclusion, I would like to briefly mention some measures that should be given specific attention in order to target our policies better and find solutions to gendered poverty

1. Focus on improving girls' school-to-work transition;
2. Address women's obstacles to access labour market (gender-based discrimination in recruitment, women's time burden, education to work transitions, etc);
3. Address gender dimensions of land reform and inheritance laws;
4. Strengthen women's producer's organizations. Eg Lijjat papad;
5. Address gender dimensions of land reform and inheritance laws;
6. Improve women's participation in decision

making and public-private dialogue forums;

7. Moreover an important solution that needs consideration is preparation of gender sensitive budgets. "Gender budget initiatives analyze how governments raise and spend public money, with the aim of securing gender equality in decision-making about public resource allocation; and gender equality in the distribution of the impact of government budgets, both in their benefits and in their burdens. The impact of government budgets on the most disadvantaged groups of women is a focus of special attention." (International Development Research Centre, 2001)

Table 1. KHAS-MPI dimensions

Dimension	Indicator	Deprivation: Household	Deprivation: Individual
Education	Literacy	No adult member has completed at least primary education, i.e., 5 years of schooling	If he/she has not completed at least primary education
	Child Enrollment	A child in the age group 5-9 is not enrolled in school	Not included
Living standards	Electricity	No electricity	Same as household deprivation for all living standard indicators
	Floor	Floor is earth/mud	
	Sanitation	No toilet or has to share a toilet	
	Water	Water is not from piped source, borewell or closed/open well	
	Cooking fuel	Cooking fuel is *not* Electricity, LPG or Biogas (it is wood, charcoal, dung etc.)	
	Consumer durables	Owns less than two of either fan, TV, cell phone, cycle, refrigerator and two-wheeler; and does not own a car or other four-wheeler	
Productive assets	Primary residence Agricultural land	Does not own at least one of the two assets- agricultural land or primary residence	Household does not own at least one of the assets Individual does not own (individually or jointly) at least one of the assets
Empowerment	Allowed to travel to 1. Market 2. Health facility 3. Natal home 4. Outside village / community/area 5. Decision to access health services for own needs	Assigned value of the women members	1-4: Not allowed to travel alone 5: Decision made by women with permission or by someone else All females in household are attributed the deprivation score of the female respondent. Men are assumed to be non-deprived

It is important for the country to not only work for the betterment of women but also tap on their under-used potential. This paper has attempted to draw attention to the fallacies in the existing methods of analyses and data collection in relation to feminization of poverty. We tend to depend on them only because they seem familiar and have been used for a long period of time, not without reason though. But, this paper also recommends that it is time that policy makers in India use the more comprehensive measures available and base their policies on them. While many of them are still being researched upon, they merit the attention of Indian policymakers as they might completely change our perspective on the subject at hand, 'The Feminization of Poverty'.

Surily Sahay

BA (Hons) Economics, II year

PAPER

Hours never seemed so long to me as they did today. By idly staring at all the suffering bodies around me, and listening to their groans and moans, I felt more depressed than ever. That intoxicating ambiance rendered a sense of grief to my core. Amidst the monotony of those white and green walls, which possesses the power to suppress all the commotions in a creative mind, this blank sheet of paper endeavoured to keep up the spirit of life, both in my mind and soul. But what is so special about a blank paper? Can everybody see it in the way I do? How does a glance over it stir all the passions in my blood? Whenever someone asks me about my true love, "paper" is the word I find floating over my tongue rather than a "beau". Well, paper is not merely a word. It is the holiest spirit, and each time when I'm alone, I vision it as my soulmate. A partner who would always be there for me without prejudices. A partner who would shower all his attention to me and even to my trivial thoughts. But whom would the paper choose between the ink, which validates its existance, and that creative mind, which sticks to it like its better half? My logical self keeps wondering about the correct possible choice but my heart clearly knows the truth and so it is celebrating its victory. A thought still gives me goosebumps that how, in the times of distress, just a sight of a blank paper acts as a calming potion for me! Few people, in this world out there, assume that a person without any friend is too lonely. But I want them to cut down all of their assumptions first, and now that there is a clear ground, I would like to sow my seeds of opinions. Dear folks, I do agree that everyone needs a friend. But why is it supposed to be found only in a human form? Why not a plant, a pet or a paper? I too have a friend. I also get to hear a few lovely questions. "How are you feeling now? How was the day? Is anything troubling you? Do you want to share something? What has brought that smile on your face? Are you hiding something from me?" You would never get to know how much my best friend cares for me until you step into my shoes.

Yes, you would never understand how a paper can be my best friend until you walk on my way!

Amrit Versha
BA (Hons) English, III Year

RANDOM THOUGHTS ON EDUCATION

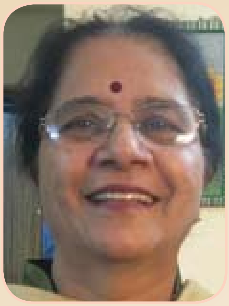

The best part of my life has been devoted to learning and teaching. I think the time has come when I should share my thoughts about education with others, especially my students.

My first encounter with the education system was second hand, through my elder sister, who was the first one in our generation to enter school. Soon enough, she demonstrated her newly acquired skill by reciting 'Ba! Ba!black sheep' in front of a captive audience comprising grandparents, relatives and parents. We, the younger siblings, wondered if this 'Ba! Ba!'was the same as Meenu's father (Baba), a question that spread much mirth among the elders.

English language rhymes puzzled us no end, but our very own Hindi rhymes were no less mystifying. I remember a particular Hindi rhyme taught to me in nursery class which was about a 'Jatni' making butter and her son crying for attention-- graphically illustrated for effect.

उमड़ घुमड़ कर दूध बिलोय, जाटनी का छोरा रोये
रोता है तो रोने दो हमको दूध बिलोने दो!

The takeaway was that for women household chores were more important than attending to a child who may be in distress. Today such rhymes would be characterized as casteist, sexist and anti-child. Similarly a Panjabi rhyme went like this: I am a good boy *(BeebaRana)*. My name is Kuku. My maternal uncle *(Maasad)* milks the cow, my maternal aunt*(Massi)*makes me drink milk while my paternal aunt *(Bhua)* serves me '*choori*'(bread sweetened with sugar and lots of buttermilk) which I eat with relish! What hits one in this rhyme is that a good 'boy' is entitled to all the love and good food. There is no reference to any *Beebakudi* (good girl) in the rhyme—which was resented by us even back then.

Apart from memorizing some very unsettlingnursery rhymes, I discovered that exams and their results formed an integral of the education system so much so that the very position of a child in society is determined by how he or she performs in them. The success stories of Bill Gates and Steve Jobshave not managed to change this perceptioneven to this day. I was fortunate that I had a very understanding father who was least bothered about these. His response to my report card which showed that I had failed in all the subjects in my very first year at school was—*'kyabakwaas* school *hai!'*While he was trying to decipher what I had written in my answer sheet, I explained helpfully - 'A' would have got tired till my teacher came to me so I made it lie down. 'B' could not look the other way since 'A' was lying down and 'C' looked like an incomplete circle so I closed it.' He patted me and advised-' In future make 'A' strong enough to stand for a whileand let 'B' go its own way and see what would have 'O' done if 'C' became 'O'…'The other alphabets were also 'rehabilitated' likewise. I was found 'not guilty' by the court that matteredto me,despite prosecutable evidence against me! When I was old enough to have a proper dialogue with father he shared these details and I felt ever thankful to him for standing by me. His faith was vindicated when I got a double-promotion in my next school.This episode came in handy when my son wandered in this childhood 'wonderland' and missed his bus everyday watching why and how ants entered and came out of anthills.I was able to convince him that the ant taught him a useful lesson which was to mind one's business and not waste time in watching while others were busy doing their work. Here, let me add--I salute the teachers who write cute messages with smileys at the end of a 'notice' exercise where the student

forgets important details stating 'My dear so and so, how can I reach you as you have not mentioned the 'venue' or the time?'--- instead of encircling the mistakes with a violent red pen. Supportive parents and kindergarten teachers matter a lot in building confidence in the child. This, however, does not mean that if parents and teachers are otherwise, there is no redemption for the child. The task may be difficult but with strong will power and determination the goal can be achieved.

Conformity is another bane of education. Every student is expected to conform to anagreed upon pattern of writing answers. Any aberration sends alarm bells. If a student is honest enough to write- *'gaikatchrakhaatihai'* (cow feeds on garbage)instead of *'gaighaaskhaatihai'*(cow eats grass) –few teachers would appreciate the observational faculties of the child! Similarly if a child after visiting several religious places as part of school project concludes in an essay-- 'God is one. He comes in different roles wearing different clothes at different times! – though appreciating the innocent profundity of the statement the teacher cannot award respectable marks because the child was expected to write about different religious places and how people worshipped in them. These two are real examples and thankfully the children were not penalized for thinking out of the box.After all, evolution happens only when a species mutate! One, however, understands that it would be difficult for a teacher to handle so much of creativity. I remember once a teacher advised me, ' I appreciate your creativity but you are intelligent enough to understand to write what will help you score marks so that are in a position to pursue your dreams.' Needless to say, I acted on this advice with good results. Now I make it a point to pass on this important piece of advice to my students who face this dilemma.

Apart from comprehension, language skills form an important part of education. Language is the vehicle through which communication happens. Punctuation is a critical part of language. In the present times of SMS and twitter, punctuation marks and grammar rules have received a severe blow. Lynne Truss has dedicated her bookwhich deals with importance of punctuation marks ***,Eats, Shoots and Leaves: The Zero Tolerance Approach to Punctuation'*** To the memory of the striking Bolshevik printers of St Petersburg who , in 1905 demanded to be paid the same rate for punctuation marks as for letters, and thereby directly precipitated the first Russian Revolution'. The flap of the book states:

A panda walks into a café. He orders a sandwich, eats it,then draws a gun and draws two shots in the air.

"Why?" asks the confused waiter, as the panda makes towards the exit.The panda produces a badly punctuated wildlife manual and tosses it over his shoulder.

"I'm a panda", he says, at the door. "Look it up."

The waiter turns to the relevant entry and, sure enough,finds an explanation.

"Panda. Large black-and -white bear-like mammal, native to China.Eats, shoots and leaves."

The moral of the story is that one's life can also be at risk in certain circumstances if one does not follow the rules of punctuation! The book also carries a punctuation repair kit of stickers. I recommend this book to all users of English language. That will also spare, we, the teachers, a lot of nightmarish experiences. As a teacher I have come across a whole assignment written without a single punctuation mark, not even a full-stop. That almost looked like - 'diarrhea of thoughts'- to borrow a well -known quote in half-- and needless to say, quite offensive to the senses. Still worse is when punctuation marks are incorrectly used. An author's name is hedged with inverted commas. Capital letters are used indiscriminately. God is demoted to god and dog becomes Dog. One also does not relish one's name being written in small letters, except in email id.

It is not only the English language that suffers

from this malaise. Even writings in Hindi suffer from similar defects.One was appalled to witness when on Hindi Day(September 14) the TV anchor who was furiously advocating the use of the language showed slides that were written in wrong Hindi. More atrocious is the pronunciation part, with local linguistic flavors making it easier to detect the region from which the speaker comes. That is entertaining to some extent except when the official media also suffers from it. A program on linguistics launched by the prestigious RSTV Sanskrit channel had a resource person mispronouncing even the basic alphabets like क as के-- that literally made one's stomach turn! A scientific language like Hindi should suffer thus is beyond comprehension, because it is supposed to be spoken as it is written. The problem can be traced to the time when a child learns the *varnmala*, the alphabets. Most of the school teachers are not aware how vowels of the same set *varg* emanate from the same source of our vocal chords, mouth or tongue. Regional influences notwithstanding, this basic understanding in teaching Hindi would go a long way in leading to correct pronunciation. When one is exposed to the correct pronunciation only then course correction is possible. It is a lifelong learning or unlearning process. After so many years of learning the languages even today, I realize that I have been mispronouncing some of the words and am happy to be corrected for that. Similarly even after taking care, regional flavours may slip in surreptitiously making converting a 'Rajendra' into Rajenor Rajinder, gazal into gajal, school into iskool or spasht into aspasht,suvrat into shubhroto and so on.

Of late I have realized that language skills and the problem of pronunciation is more due to the socio-economic background from which a student comes. It is a sad fact that these factors determine the school one attends, prepares one for college or universities one goes to, and, finally, also impacts the job potential of the candidate in question. The issue of Bharat versus India is a sad reality in our country. Access to quality education -- across economic classes, social groups and regions-- is the crying need of our country. Proficiency in English, the natural lingua franca of the world,is a must, apart from good command over one's mother tongue or Hindi.

The Eighth Schedule of our Constitution recognizes 22 languages as the official languages for different states of India with Hindi and English as official languages of the Union. An additional provision states that special efforts should be made for promoting Hindi. Ever since Pakistan declared Urdu as its national language we Indians started competing with it in taking recourse to 'Sanskritised Hindi' in place of easier to understand Hindustani, so much so that a critic quipped about Hindi news on the Doordarshan-- 'abaapsamaacharonmein Hindi suniye' instead of 'Hindi meinsamaacaharsuniye'! Because of its association with Pakistan Urdu has suffered in India. We tend to forget that the language used by Prem Chand, the doyen of Hindi literature, was Hindustani. Even Tulsidas was not averse to using the so called Urdu words in his poetry. Sample this:

रघुवर तुमको मेरी लाज
सदा सदा मैं शरण तिहारी
तुम हो गरीब नवाज!

I am reminded of a story recounted by a Professor of Sanskrit, Panjab University at height of terrorism in Punjab in the early eighties. A zealous young man from the Panjabi department made a suggestion that the Panjabi language should bepurged of all Sanskrit words. The response of the learned Professor to this was - "Let us begin with the word 'gurudwara'."He made it clear to the person concerned that languages grow organically borrowing from other languages liberally. This does not, however, mean that one should support the hybrid language that is popularly known as 'Hinglish' which is the result of laziness to look for Hindi words is a fit an example of the organic growth of the language. My advice to students too is to stick

to one language and not mix up Hindi with English and vice-versa.

Languages have created the Tower of Babel in India, each language trying to prove its excellence leading to confusion all round and antipathy for learning languages other than one's mother tongue. Having studied in different parts of the country I feel students should learn as many languages as possible.A person who reads Tagore in the original Bengali cannot but be impressed by the lilting quality of the verses of *Gitanjali* to which English translation done by the author himself does no justice. People would revise their views on Panjab as a land of agriculture, by reading the poems by Shiv Kumar Batalavi, the Keats of Panjab, a gem of which I quote below—'*maivemai, merageetan* de*nainavichbirho di radak* pave….'(too delicate an emotion to be translated authentically by the author)The spectacular *dandiyaraas* with the songs accompanying it, at 2 in the night in a remote village in Saurashtra will be etched in ones memory by its sheer rhythm and joyousness. Learning different languages has other benefits too. Same words mean different things in languages spoken in different parts of India and one would be better off if one learns some of the basics of the local language. One friend from Punjab reported how even after saying 'no' *(nayee)* to the person serving food to him, his plate was filled with curd as *'nayee'* in Telegu means curd. A man from the UP kept on looking for the goat *'bakra'* his Gujarati friend asked him to keep eye on. The confusion arose as his Gujarati friend wanted him to keep an eye on his *'vakra'*that is 'cash' that was lying in his car! My friend from Andhra had gone for a *shramdaan* trip in a village near Patna. The school was to distribute sweaters to the local villagers as well. The response of one receiver perplexed her as he looked up at the sweater and said,' etbad go' which meant 'so big'! The poor girl came back memorizing the word which was duly translated to her later. People in the north are averse to learning the languages of the south and find it convenient to club all from south of the Vindhyasas *Madrasis*. My friends taught me a trick to differentiate people from Tamilnadu, Andhra, Karnataka andKerala by making me memorize 'what is your name' in all the four languages. The problem was when one came across people responding to the question asked in more than one language.

Learning languages is fun. It is not very difficult too. Besides, even if you speak the language incorrectly, you manage to win the hearts of the people because they understand that at least you made an effort! The website of the HRD ministry states one of the goals of education to be so.

The essence of Human Resource Development is education, which plays a significant and remedial role in balancing the socio-economic fabric of the Country.

Another sad fact that I have noticed lately is that there is hardly a culture for reading books among students. The prime source of information in this fast food age is the internet. A couple of years back when I asked my students if they had ever read a book apart from textbooks, the answer was blank. This could be one major reason for poor communication skills. Mark Twain had aptly observed, a person who does not read books is as illiterate as one who cannot read!Books both of fictional and nonfictional nature, expand one's universe. They add to our vocabulary, give insights into how one can express oneself, allow imagination to grow and generally facilitate a healthy escape from mundane matters of life. Sometimes they also provide one with answers to the questions that bother. Autobiographies,biographies and memoirs inspire and broaden ones horizon. Reading a few pages of a book daily is a good habit. Reading a variety of books makes a balanced individual. As a student I was impressed by what Francis Bacon has said in this regard:

"Histories make men wise; poets, witty; the mathematics, subtle; natural philosophy, deep; moral, grave; logic and rhetoric, able to contend."

(Well, though he does not mention it- it applies to women as well). Good reading habits would make one see through fake Whattsapp messages attributing a random verse to HarivanshRaiBachan, an incident to the life of Swami Vivekanand or a quote ascribed to Gandhi, to give a few examples. That would help stem much of the misinformation spread by the 'Whatsapp University'.

There is a saying that 'war is too serious a business to be left to generals'. The same can be said about education that it is too serious a job to be left to governments.Since 1985 the Ministry of Human Resource Development has taken on the responsibility of both secondary and higher education in India. When education becomes a medium for developing human resource, it becomes a tangible commodity, that can be consumed and traded. This, I believe, is a major change in the way education is now treated. If we visit the roots of the word, 'education' we can understand why I say so. There are two Latin roots of the word education—they are 'educare' which means to train or mold, and,'educere' meaning to lead out. In both the senses it is the most important aspect of the personality development process of an individual. The external indicators of education, that can be quantified, have killed the very spirit of education. This slide had been visible for quite some time but with the creation of the HRD Ministry it has become more pronounced. In the process the interest of the most important stakeholder, the learner, is given minimum importance. Education today has become more about learning the three R's, demonstrating this learning through tests, results and positions in the university. One of the main goals is the employability potential of education. Coping skills are given a go by. The result is that one finds hordes of damaged persons all around who do not know their true worth and are alienated from what they are doing. The former US President John F.Kennedy in his prestigious Pulitzer Award winning book, Profiles in Courage, defines 'courage' as 'grace under pressure'. This book is about eight Congressmen who stood by their ideals even in the face of overwhelming odds and opposition. As an undergraduate student when I read this book, it filled me with idealism and a sense of purpose. This basic input can be provided by teachers and parents as essential component of education. Delhi University had briefly made provision for this in the course called 'Integrating Mind Body and Heart' but without proper guidelines, teacher-training and above all, seriousness of purpose, the whole exercise proved to be an utter failure and was finally dropped from the course.

The society provides the environment for growth and education is a facilitator. In this sense the responsibility of the education department is immense. Proper education inculcates the sense of duty among citizens, creates harmony among the diverse population groups, makes people aware of their rights and makes democracy function better by creating vigilant citizenship. Here one would like to quote the example of Belgium. In 2010-11 elections in Belgium did not throw up a majority government and the parties kept negotiating for more than 500 days till the government was finally formed, yet the administration was functioning smoothly, schools and universities did not see any break, taxes were paid on time and it almost seemed that a government was not even needed! When Gandhi spoke of building a stateless society eventually, he had something like this in mind where citizens did not need an outside authority to regulate their behavior. Only people who are given the right kind of education can bring about the real 'swaraj'—a multidimensional term used by Gandhi to denote society without social and economic inequalities; having a democratic government, that respected the minority viewpoint as well; freedom from foreign rule; and, most importantly, a self-disciplined populace.

Dr Kusum Lata Chadha
Associate Professor, Dept of Political Science

The Philosopher of Modern India: Swami Vivekanand

"We believe not only in universal toleration, but we accept all religions as true. I am proud to belong to a nation which has sheltered the persecuted and the refugees of all religions and all nations," Swami Vivekanand

Swami Vivekananda (January 12, 1863 - July 4, 1902) is one of the most inspiring personalities of India, he has contributed a lot to make India a better place to live in. within a short span of time, he achieved a lot and went a long way in serving humans. In several ways, the life and work of Swami Vivekananda mark the historical process of India rediscovering herself in modern times. These are also emblematic of the ways in which a tradition modernizes or creates alternative forms of modernity. As a nation we are celebrating the 155th birth anniversary of the Swami ji, it is only apt that we critically reflect on his life and legacy. Generally when I think about his contribution to India it may be summed up in four ways.

First, in modern India, it was Vivekananda who first emphasized that our everyday lives would become more meaningful only when spiritualized. It was in this spirituality that he re-discovered, as it were, India's message to herself and to the world. For Vivekananda, this spiritual self-realization led to people more fully realizing their own potentialities. Especially in the context of a colonized society like that of 19th century India, this was tantamount to men and women locating greater self-belief in themselves.

Second, even though the Swami rejected political praxis and West inspired social and religious reforms, his essential message was the empowerment of the people: through education, collective thought and action but above all, realizing he underlying unity of all human existence. In the Hindu tradition, ascetic detachment from the world had been criticized even before Vivekananda but it was he who first actively joined the idea of individual renunciation to committed social service. In this sense, he gave new meaning or signification to the very idea and institution of *sanyas.*

Third, there is the love that Swami Vivekananda consistently exhibited for the socially marginalized and oppressed. He could be equally at home in poor homes and princely quarters, be sumptuously hosted by the rich and the powerful and also share the coarse chapatti of a scavenger or share the hookah with a cobbler. It is he, who even before Gandhi, reinvented and effectively used the older religious idiom of God especially residing in the lowly and the poor *daridranarayan.*

Vivekananda anticipates Gandhi in yet another aspect and that lies in his prioritizing social amelioration to political work. In this sense, his critique of the Indian National Congress representing only a handful of privileged men anticipates later day criticism. Like the Mahatma again, he insisted on first closely acquainting himself with the people of India before he launching any schemes of social or political work. Through this he hoped to understand

pressing contemporary problems, to energize a nascent nationhood and to restore to man, his innate dignity and self confidence.

'Man-making, as it has been often said, was Vivekananda's first mission. This, I find, has some contemporary relevance inasmuch as the Swami's project absolves the state from invariably taking the first step towards bringing education, enlightenment and progress to the common man. In his perception, the movement had to originate in the common people and benefit such themselves. Swami Vivekananda always insisted on grass-roots reforms, not agendas imposed from above of which the common man had little or no understanding.

Fourth, it was the Swami's consistent desire to bring back India's pride of place in the assembly of nations, as a civilization which, notwithstanding momentous historical changes, had yet retained subterranean threads of commonness and unity. At the same time, like his guru, Sri Ramakrishna, Vivekananda fully believed in universality, cosmopolitanism and compassion. As he saw it, mutual kindness and compassion between man and man was more important than that coming from a distant God.

It is quite usual to have polarised perceptions of Swami Vivekananda either as a patriot or a prophet. Apparently, this is based on the commonplace assumption that at least in the Hindu world view, politics and religion are two distinct, unbridgeable worlds. I would say, however, that his life and work belie such polarization. Vivekananda took patriotism out of its political confines and vested it with larger possibilities and meaning.

Similarly, he took religion not to be some private feeling or idiosyncrasy but that which was socially committed and responsible. Freedom for him was really a larger concept; it had more to do with the freeing of the mind than the body. The Swami pinned his faith in individuals, not institutions and hence chose a path that was silent, indirect and organic.

Swami Vivekananda therefore appeared on the Indian scene as a messiah of a new age, a symbol of a new spirit and source of strength for the future. At the age of 39 in 1902, the great man Swami Vivekananda passed away but his life and action inspired millions of Indians. His name remained as a source of national inspiration. One can only hope that the more enduring aspects of his life and work continue to inspire us in the days to come.

Dr. Abhishek Srivastava
Assistant Professor
Department of Political Science,

Rhymes and Rhapsodies

I'm nothing special, in fact I'm a bit of a bore
If I tell a joke, you've probably heard it before
But I have a talent, a wonderful thing
'Cause everyone listens when I start to sing
I'm so grateful and proud
All I want is to sing it out loud

ABBA- Thank You for the Music

CONTENTS

1.	Love in the Time of Technology	-	Bhavya Sinha
2.	Xanax	-	Isha Gupta
3.	And Life Goes On	-	Ira Wadhwa
4.	Red Queen	-	Karishma Sahoo
5.	One-And-A-Half Prayer	-	Karishma Sahoo
6.	Chemical Sleep	-	Dr. Anish Kumar K.
7.	You're My Gardener	-	Amrit Versha
8.	Dear Almighty	-	Amrit Versha
9.	The Red Thread is Frail	-	Brinda Sarma
10.	Rebirth	-	Brinda Sarma
11.	Being Young	-	Brinda Sarma
12.	The Unsaid Secret	-	Shivi Gupta
13.	But There is No Going Back	-	Palak Talwar
14.	Fear	-	Palak Talwar
15.	Death	-	Palak Talwar
16.	My Muse And I	-	Komal Joshi
17.	My Life, Be Like A Picture	-	Komal Joshi
18.	Motivation	-	Deepanshi Arora
19.	Bullied	-	Deepanshi Arora
20.	The First Year of English Honours	-	Shivam Kumar
21.	A Lost Friend	-	Shivam Kumar
22.	Solitude	-	Kavya Matia
23.	Demise of Love	-	Ankita Taneja
24.	She Smiles	-	Apoorva Thakur
25.	A Daughter's Mind	-	Kritika Singh
26.	Me Myself	-	Khushi Sharma
27.	An Ode to the Act of Growing Up	-	Ankita Taneja
28.	What Does the Mirror See	-	Karishma Sahoo
29.	Social Media and Stuff	-	Sawati Baruh
30.	How Men Created Language	-	Kartik Sharma
31.	Paper Thin Walls	-	Brinda Sharma
32.	Death is a Lonely Business	-	Aakriti Pant
33.	Roots	-	Sara Haque
34.	Ishq	-	Anubhav Tekwani
35.	Noah	-	Isha Gupta

LOVE IN THE TIME OF TECHNOLOGY

I'm pretty sure my forehead doesn't read a sign saying
'Trespassers allowed'.
Tell me, what made you stop by?

I'm also pretty sure my hair isn't like your comment thread
that needs a constant weaving around your fingers.
Tell me. how did you end up being that grammar Nazi smoothing out my unruly hair?

Tell me, do you wish to stop by and go on a scavengers hunt for words on my naked back?
You know, you can drop in suggestions because I really need those fingers tap tap tap on my
body when I forget what to say.

Tell me, does anxiety choke you everytime you read a 'connection timed out' screen like it wraps itself around my throat?
Tell me, do you secretly record as I sing you to sleep and accidentally play it in the car like I do?
Because I'm pretty sure I've told you how I like your voice messages on repeat and shuffling always ends up playing some forgotten song.

Tell me, in a world with twice as many faces as people, do you really like filters?
Tell me, is Netflix and chilling really better than cassettes and not so perfect dance moves?
Because I'm pretty sure I've told you I'm old enough to like old school.

Tell me, are 24 hours ,1440 minutes and 86400 seconds enough for people to see how naked you lie on your miseries?
Tell me , do your emoctions betray your emotions as much as my emoctions betray mine?
Because I'm pretty sure none of those are as red as my cheeks everytime I think about you.

Tell me, as you walk down the boulevard with dreams on either side, how much do you drop
down your cart?
Tell me, is window shopping together for dreams not as fun?
Because I'm pretty sure I've told you how every unexpected happiness at our doorstep feels like those pending online deliveries fulfilled ,a gift to ourselves.

Tell me, do you also prepare backups and write memos every night after I go to sleep because
I'm pretty sure I've told you how much I hate resets.
Tell me, in a world where being online means you're alive, would you want to go offline with
me?
Because I'm pretty sure I've told you, I'd like to leave this world somewhere behind.

Bhavya Sinha
BA (Hons) English, I Year

XANAX

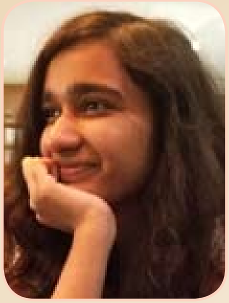

I'm covered in crimson sand.

"Be still, my mind. Waves are common metaphors, let me shroud you in flooded coasts, adrift legacies, and crippled hope. The moon was made to rule the sea-give yourself up, you're nothing, if not a tide"

I'm picking out ebony gravel from my skeleton.

"Settle down, dear heart. Lullabies make me restless, I shall sing to you the music of a flat-lining beep, the hymns of a graveyard, the jazz of the Reaper's footfall. Stars personify the perished-you have started looking like a constellation.

I'm running in an elliptical reverie.

"Hush, waxen skin. Disquiet creeps under you, I see it making its way towards my lips-bone to bone, vein to vein, nerve to nerve. Help me draw it apart from my blood, lest it turn indigo."

I'm sitting on a cot of ashes.

"I have no pretty words left to give to you, my mortal being. I bathe you in distress and distilled resentment. I wrap you in a coarse robe of hesitancy, and when you bleed remorse, I hide you beneath the garb of ephemeral sunsets.
Can you forgive me? Can you forgive me?
My head rules my heart, my head rules you. It handcuffs me with what-ifs and cuts into my wind-pipe with a serrated knife; haven't you wondered why air never escapes you?
Can you forgive me? Can you forgive me?
I am resentful-I rue myself. You need a dose of serenity, and I, I need you to purge me.
I know I said I have no pretty words left for you-but dreamless nights would help to calm you; Forgive me.
I'm trying, trying not to euthanize you, trying not to stumble.
Forgive me.
I want to love you, to caress you, to make you feel cared for.
Forgive me.
Let me lay you down in muslin-you're shivering; and it's all on me.
Forgive me."

Isha Gupta
B.Com (Honours) I Year

AND LIFE GOES ON

I woke up like any other day, but that morning was very different. When I felt something was going within me.

The pain which was hurting me more than the physical pain. The feeling which was tearing me apart.

The feeling which was pulling my soul out of my body.

I wasn't crying, but I was screaming for help. My soul was experiencing an emptiness.

I didn't know whom should I call,

I didn't know what was the thing that I wanted the most. The friend that I lost or my own self.

My broken heart was in search of tranquility.

I woke up again, it was another day.

I was still empty, I was still shattered, my body was still aching, tears were still there. I was still penetrating the ways to escape these feelings.

The thought of ending my life also hit me,

Standing on the grill and was so closed to death almost going to jump, but I couldn't. May be this fear helped me to live,

May be this fear helped me to rethink about my own life. Then something came to me saying,

'Hey this is not an end' Stand because it's a life

Ups and downs, loosing and getting is the essence of the journey

I woke up again, but this time with different feeling The feeling of living,

The feeling of re-building. Because it's an essence of life.

Ira Wadhwa
BA (Hons) English, II Year

RED QUEEN

Let us talk about the usual

Let us talk about once upon a time. You'll see a palace

Of dreams equalled to dust Of desires caged, left to rust.

You'll walk down the carpet of greyed well designed affectations Do not miss the red cursed chandeliers

They are meant to offer simulations. You see the large mirror?

Well painted to hide her glory,

That's the only witness to her devastation. Endless, she sung of some fanciful firefighter She mused some intangible wind,

Some unworthy writer.

Wrong were her dreams, distasteful her fancies

So the mirror was too, put to silence

No more it spoke of the knighted dame and her clemency. That's her shrine and her cemetery.

That's the defeated queen,

Her epitaph may fail to read her unfinished poetry.

Let her be buried within the smoke, tears will be sheer waste Scorn her, for she dared to desire

She deserves every distaste. Return back to your safe land, Why care for a defeated soul

Let her be cemented within the ornamented pages of some vague folklore.

She lost Let her be Lost

Between the margins of Once Upon A Time....

ONE-AND-A-HALF PRAYER

And here I wait for a chance to get out of the The biting silence of this eternal midnight.

I'm thirsty to drink in the innocent rays of the rising sun.

How I loathe these sunsets, the gloom and grotesque of affected evening prayers, Enchanted in the safety of four walls. Home.

They'll reach Him in the most solemn disguise. If only the blabbering mouths could face the truth Of humanity.

Than the warmth of enticing claws, Clutching it and this,

A wriggling insect Folding its soul around In an inward spiral. Beware God.

The grip is getting tighter. O' the dreamy eyes,

Crawling through the dreary land Waiting for,

One morning One rain

One play of colours. Do not show me reds. But is that an answer? Again in the mischief

Of an abstract cacophony?

A death-dance of dragon-carved Arrows, splitting into

Hundred threads but I'm Entangled in two strands.

One binds me to the last song of sanity And the other

Hangs me midway to swing amid the inevitable apocalypse.

I'll tell you my game. I'm no fool either.

Though you stand in all majesty of Breathing holiness within the Shadows of deceptive metaphors. I'll tell you my answer.

I'm in a constant shrink and

I choose the horror.

I'll die in the safety of my own tragedy.

Before you try to burn me down within the arms of Your reality.

Karishma Sahoo
BA (Hons) English, III Year

CHEMICAL SLEEP

I cup my hands

To blind the sides of my eyes Looking into the dark night above Shutting out electricity,

Shutting out light

Gazing into the bluey black beyond… I feel upside down,

My feet clinging to earth

As bats cling to banana flowers. I gape like they gape

At the land down below But I gape far and wide At the sky.

The firmament seems dappled

With blue blotches and patches of white

The skin of heaven appears marred with a mole; An incongruous white mole.

It's the mole that has marred many brains With infinite poetic stains.

But it all seems to me As a part of the plot

That has escaped an idiot's thought.

I feel queer. I feel bland.

I don't know what makes me Neither sad nor glad

Save for a wee petite speck within

A spot of joy that glows with a warmth

Imperceptible, faint and thin Lost inside

the map of my mind An elusive Bermuda Triangle

That leaves behind just a flaky rind. Is this what they call 'the angst'?

The notorious existential tangle?

Which drowns my being in an infinite past And soaks me up like mad

Until I resemble a withered gram Shrunken to the core.

I dig up the lines of my palm, Until my nails are sore

To pin down this unsettling intangibility. To unearth the route ashore.

Stumbling upon the blocks of fact I bruise my groping feet

It hurts, but it dawns

In the bat-chewed sepia night

Like the rose and the thorn, distinct. We are microbes dreaming of filth Forever wedged in the mud

Going round and round a decaying sun Alive or dead,

Awake or asleep. Flying with bodies Stuck to the ground.

Sleeping a medical sleep Dreaming dead-ends that lead To a wavering wakefulness…

Dr. Anish Kumar K.
Asst. Professor
Department of English

YOU'RE MY GARDENER

I was a little flower;
you helped me to bloom.
Your heart is like a river; it
has the ways to groom.

You possess innate glare.
It brightened my pathways.
You apprised me of my flair
in my hopeless, hard days.

Through the lifetime, how hard you
struggled! You remained stoical and you
never sighed.
With loads of work, you always juggled. But
at all my glances, you just smiled.

Mom, I know you are downcast.
There is a lot in the journey that you have
lost. Within your heart of hearts, there is a
desert, which is vast.
But trust me, you need not exhaust.
With the mercy of God, your flower will
blossom. It will paint your life with its color
and shade.
Your struggle will cease and days will be
awesome.
Believe me oh mother! you will get zeal
which will never fade!

DEAR ALMIGHTY

God, you are so divine. Please let my fate
shine.

My life has a series of twists and turns. They
etch my soul with the scars of burns.

Happiness seems like a fiction. Maybe I've
got a malediction.

Downers in my heart form an array. Lights go
dark and optimism into dismay.

At times, my heart remains in a haze. Bitter
memories set me ablaze.

My nights suffer in the fire of pain. My birth
is passing in vain.

Come and make my pains pacified. Let my
obsessions get nullified.

Dear Almighty, you are so benign. Show
your pity as I am not malign.

Amrit Versha
BA (Hons) English, III Year

THE RED THREAD IS FRAIL

The red thread is frail
Sacred in its symbolism, To
most, cumbersome.
The red thread tugs and
tugs Ever present, even in
its loss. My finger ached at
its burden
But without the thread, it is
estranged.

I was alone, despairing in the loss of my
senses. I couldn't express my numbness.
But then you pulled at the thread Therein I
came, stumbling.

For a moment,
The thread didn't exist.

For a moment,
We gravitated to each other, within This
cocoon the world had designed
Wound by the red threads of the bygones
and forthcoming lives.

The other end of the red thread is gone.
The resounding finality of its cut string
echoes. The severed thread hangs
Listlessly, reminding me how it really is;
Cumbersome and fragile.

Yet it connects us.
Across countries, across time. Across every
frail reality.
The red thread of fate binds us all, A tasty
bait for destiny's feast.

REBIRTH

Waves crash harshly against cliff, the icy cold spray of water hitting me squarely in the face. I shiver at the absence of your warm hand that used to tightly encircle my waist as the storm fiercely performed its 'taandav nritya' around us…

But we didn't mind, did we Krishna? The storm, the biting rain that fell on our faces was a part of the serenade you had arranged for us. No other word could've described it more perfectly. Our relationship could never have been termed as 'friends'; it's too simple a word. Neither it could have been termed as 'lovers'; it's too crude to describe for what we felt for one another. Our feelings ascended the mortal realm yet were too abstract for even the celestial one. We were drawn to each other like two moths to a flame, except that when together, we combusted and became the flames.

But you were strong, my Lord. Strong as the tough brown earth which supports the human race, which resembles your skin; you were easily able to let go, discard me like an old picture that you might have wistfully looked at with fond memories and maybe, hopefully, a slight regret. That's all there is to it, to us. Doesn't the emptiness of our unfinished story echo hauntingly in your ears?

I was with Abhimanyu, Krishna. I was physically with him but my mind, soul, heart, my entire being belonged to you; it still does. Our names are inseparable Krishna, even in the upcoming age of 'Kaliyuga', sinners and devotees alike will piteously cry out 'Radhe-Krishna, Radhe-Krishna' in unison as they get trampled underneath the hooves of Kalki's horse.

I don't even know where you are. I'm not even

Radha anymore, neither are you Krishna. Unlike Dwapara, I'm stranded completely alone. The world isn't sprinkled bright with the sounds of your bansuri anymore. I see the news and I hear gunshots and cries, wretched cries begging for mercy and I long for you unlike I've ever longed for you Krishna.

I used to long for your gentle gaze in the midst of the rain, your teasing smile as your ring 'accidentally' got caught in the loose thread hanging off of the pallu of my saari, the nights that the two of us spent on the shores of the Yamuna, her gentle waves kissing the soles of our feet, side by side, your long curly tresses tickling against the side of my cheek. Wallowing upon these 'sorrows' was mostly how I lived the rest of my life as Radha. Krishna, I used to long for you, your individualistic attention on me. Not anymore…

The only memories of our past life that trickle down my eyes are the ones where you would as a child take out the cows for grazing as I gazed out of my window, envious of your friends and the gaily time you spent with them from dawn to dusk, the joy you spread in our little village with your antics, the discordant notes that flew in as you first practised your bansuri. I miss the tranquillity of the childish nuances in our previous lives.

I don't wish to witness Kalki's advent. I don't want to see intelligent, charming eyes replaced by cold, cruel ones, the playful strands of your hair dancing with the breeze replaced by tongues of flames, the gentle, easy-going smile with… nothing. My sharp yet fragile eyes can't bear the memory of my beloved Kanhaiya being replaced by a figure, who hungers for death, for the cleansing of this 'defiled' earth.

I am not weak for desiring you, Krishna. I am not weak because I keep trying to cajole time into taking me back and letting me stay in our precious, now tarnished, Vrindavan. I am your best kept secret, your Prime Gopi, as the scriptures say. But I am so much more.

I am the gentle calm before the storm. I am the reason why Krishna was born. I am His soulmate and the name everyone chants before the Creator's own. I am the one who has to hold onto those recollections of better yet a bitter-sweet time while I wait for the horrors foretold, resilient. I am Radha, reborn…

BEING YOUNG

What is it like to be young?

It's a question that can be answered by anyone. From a three year old kid, who has learned to form proper sentences to a 70 year old person, who nostalgically remembers their carefree days.

But the best answer is from the ones who are 'living the moment'.

See, the young people, they aren't innocent enough to see life in the simple ways of a child, nor are they old enough to see only the 'goody-goody' stuff, and forgot the troubles that come along. Adults, on the other hand, when they say how confusing and troublesome adolescence is and how it'll all go away in a blink of an eye, they forget how to us, time is limitless and that, 'trouble' really means adventure to us.

We are all so brave and ready to embrace the world, ready to take flight but at the same time, we are also having the time of our

lives. Heartbreaks, angry outbursts, fights, games, silly jokes, moments spent thinking about who we are, what is going to happen to us and other deep mysteries - they're all there, they're happening to us and it is NOT a wastage of time.

Being young means running to the dance floor when 'your song' comes, even though your ankles feel like they would break in any moment from all the jumping and dancing you've been doing.

Being young means spending hours taking that prefect selfie, not because you're narcissistic, but because you look good, you feel good and you're acknowledging that.

Being young means running down the lonesome hill with your friends in the night, and you feel the air brushing against your hair and you're laughing even though there are tears in your eyes because, to quote Charlie Kelmeckis, from 'The Perks of being a Wallflower,' you feel infinite.

Being young means sitting alone in your room feeling frustrated because you can't do your homework, you can't concentrate and you can't see the light at the end of the tunnel and feel that even if a light was there, it must be that of an approaching train.

Being young means having heartbreaks for the smallest of reasons, your crush didn't text you back, you had a fight with your best friend, your Wi-Fi isn't working, and these heartbreaks seem so fierce that you feel like you can write a ballad on it but after a healthy nap, it all works out. And if it doesn't, there is always hope that it eventually will.

Being young means sharing secret smiles with your friends when all of you are punished by the teacher and it felt so worth it.

Being young is the best and worst of times. It's when you learn to live, when you know about loss and how at times even though it feels like giving up is the only way, it isn't.

Cheers to all my fellow youngsters!

If fifty years later you, I or anyone else looks at this post and scoffs at our naivety, remember only the past you knew, what being young was like, because it is sadly the only lesson forgotten in time. Only the brief summary remains. Hope all of us win this race, instead of getting just a participation award.

Brinda Sharma
BA (Hons) English, I Year

THE UNSAID SECRET

One day I confronted the ocean, Staring at the curling waves,

I asked it,

In the most beautiful and rhythmic way, "How do you master the art of calming down the wandering souls?"

Without any trouble or strain. The ocean replied aesthetically, "Do you have secrets?"

"Oh yes", said I.

"Do you allow everyone to know that? " "No, of course. "

"Just like your heart, I gradually become deeper. Just like the pain you go through,

My bottom is hard to fathom.

Just like those mixed feelings in your heart, I am home to many creatures,

Which form the reason of my being, my existence, But unlike your heart, I refuse to cling to things, That weakens me.

Unlike your heart, I accept all the rivers and rainfall with gratitude. I am not trying to give you an image of a fairy-tale,

Where everything is perfect. I am just being me.

If you are calm, you surely will make anyone feel serene."

Shivi Gupta
B. Com (Honours), II Year

BUT THERE IS NO GOING BACK

I was walking down the colourful streets,
sunshine shimmering through the aisles
of red, green and orange bangles.
And then I notice a grin etched on my face
and my lips moving along the faint
hip-hop music playing in the background.
The high vibes toning down a bit, my mind
jumps into wondering all about my own smile.
Bouncing from foot to foot,
humming along the songs,
I don't have to hold anybody's hand anymore.
Without any hesitation, I made eye contact
with unknown people, walking beside me.
Ruddy complexion takes charge of my face
when I saw those gorgeous earrings
luring me to buy them, making my heart race.
I bit my smile down, imagining myself in those
dazzling earrings, the feathers tickling down my neck.
No more worries, for now, I have tasted the charisma of free
rein flaring in my hands, saving me from my own wreck.
For I'd been blind, to my own liberty for so long
but now there is no going back.

FEAR

I build a castle with my own fear
and sleep in it, like a queen.
I build a dreadful mansion
and it's so serene.

I fear when society
smothers its illogical
questions upon me,
I fear when failure clenches
its lifeless hands,
drowning me in the hopeless sea.

Cold sweat clouds on my forehead making me stutter,
fear overpowering my shadow as lisps on my lips flutter.

I can't drown my demons as they know how to swim.
Isn't it beautiful that
I, both, starve and feed my fears?

DEATH

If death steals me away without a proper goodbye,

shed no tears for me, for then I'll fade

away with each morose caress on your cheek.

Remember me with a smile so those lips tug

at my dead strings and our past kisses keep me alive.

Do not cry for I got the Grim Reaper to give me company

and Anubis to grant a delightful deep sleep

in his lap of eternal downcast.

Sinking into a never-ending nightmare,

I got Satan and Beelzebub; for me, they care.

Talking to the grey sky and damned souls,

Death finally gave me some real friends and eternal bliss.

Palak Talwar
BA (Hons) English, II Year

MY MUSE AND I

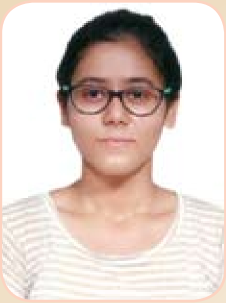

So we're not talking these days
my muse and I.
we just seem to have drifted
in different ways
what was once a craze
now remains a distant haze
was it just a phase?
"you are my muse"
just a poets phrase
an attempt to name
a love we set ablaze
was it mere praise?
a bid to immortalize
that which we knew
would otherwise not survive…
so we're not talking these days
my muse and I
and yet I am amazed
how life goes on
anyways.

MY LIFE, BE LIKE A PICTURE

A picture is not just a piece of paper.
It is not a 3by3, 4by4, or any other ratio of our display screen.
It doesn't always have to be scenic,
for it is a Melange of happiness and sorrow.
Indeed it is worth a thousand words,
Yet veiling legion, inexplicit human emotions.
Its exquisiteness is indubitable.
It mingles us with juvenility,
It unites us with long lost friends,
Evoking both laughter and awe.
Pictures are the only way,
To hold on to what we knew,
The moments they show never change,
Then memories they arouse never fade.
Many see a picture,
Only a few get the image,
Since it divulges more than what people say.
So my life,
Be like a picture,
A memory eternally cherished.

Komal Joshi
BA (Hons) English, II Year

MOTIVATION

Time would come

When you will shun yourself up in a room full of grievances

Jostling in the crowd, like a numb soul

While your body would cease

And would crave for love

Standing in the middle of road,

With perplexed thoughts ,

When you wanna scream ,

While you tremble and quiver

Look around yourself ,

To the people who never stopped

Raise your head to the sweltering sun

Connect with the heat to feel the immense

Power that lies within you,

Stand out from exodus of folly

And

Feel the engulfing strength that lies

within you ,

and show the world your grit

while you watch yourself transmuting into a better being ,

stand out and kill bad vibes

that cease you from improving.

BULLIED

I stare back at those faces

Which stomp my heart whenever they speak,

While they called me with names

Blared around my head,

Infuriated by these, I kept quiet as I may,

Inner me got filled up with enmity for them.

I screamed , cried but nobody listened,

I sat back in my own world away from hypocrites,

They called me furtive and haughty

Little did they know I was afflicted

I sniffled , snored in dark

Cut my wrist , called for help

But nobody ever saw.

Their smirk is still buried in my head

Jostling around the crowd, i couldn't find myself,

Cursed my body for being that fat

I hated my curves and thought I was no more and dead

It was but late when I realized,

We all have flaws, no one was build right,

We have to understand that this world is not impeccable ,

We have to realize our worth that people could never measure.

Deepanshi Arora
BA (Hons) English, II Year

THE FIRST YEAR OF ENGLISH HONOURS

The path was obscure and vision was not clear.
Each one's heart was throbbing with anxiety and fear.
The class seemed like a shrine,
By seeing a good proportion of girls, boys' hearts started flying.
But at the same time we were searching for someone, who could be called 'a good friend of mine'.
When we encountered HOMER'S ILIAD,
We comforted ourselves by saying,
"Chill, yaar! Everything will be fine."

AECC was the most boring of all .
Someone's sleepy head used to fall.
And some clicked their selfies and circulated amongst all.
Though MUKESH SIR taught us with great zeal,
by breaking every child's clogged head's seal.

ABHIJNANA SHAKUNTALAM Oh!
We found this text so profound.
Romantic scenes were something in which we all drowned.
Dushyanta's naughtiness and gallantry motivated our boys.
While girls found Shakuntala's beauty, a matter of rejoice.

CILAPPATIKARAM, which is the ILIAD of Tamils
We knew that our brains were already full as Delhi's landfills.

But being aware of this fact,
we read all the cantos, which were seven.
Only God could have comprehended, what we had learnt by descending from heaven.

We all associated teachers with their respective books.
And were afraid of Ajanta Ma'am's glaring looks.
Arti ma'am's ILIAD.
Mukesh sir's MRICHCHAKATIKA.
Ajanta ma'am's SHAKUNTALAM.
Renu ma'am's OEDIPUS REX.
Scrutinizing all these texts
Was indeed a difficult task .
Sometimes it seemed like our heads would blast .

Everyone tried to impress the teachers to the best of their abilities.
But eventually, the C.R. was considered as class's beauty.
To whom we assigned class cancellation duties.

On the whole, 1st year of English Honours is a phase of infancy for all.
Where each one is innocent, small or tall .
Where everyone gets to know one and all.

After sailing through the 1st year,
The path has become bit clear.
We'll miss those moments of cheer.
And sometimes our eyes get wet with some drop of tears.
When we think of English Honours 1st year.

A LOST FRIEND

Lying alone in a solitude.

Now I gazes them through the panes.

Thinking myself as a trash ...now have no feelings left to share.

When came into existence ,with vibrant covers and multiple pages .

I became their beloved companion.

Those ecstatic eyes used to skim over me fetching prospective of exploration.

Now have found an alternative sight to ponder.

The melancholic pages are still waiting to get a soft and warm touch of their fingers...who now have drowned themselves in the ocean of technology.

Lines and phrases aspire again to stare those serene eyes and eagerly want to get painted with markers and pens

Even the dust now finds me archaic and doesn't arrive to make me realize that I've turned defunct.

I've lost to the virtual books ,which are flying high with wings of technology.

The lost is fatal and has proved me bleak,lacking enlightenment of knowledge and deprived of light like an eclipsed sun.

Still I'm standing with tenacious belief and surrounded by everlasting hope...that on one dawn, some steps would follow the way to racks.

Holding me in hands would make me eternal, the day will be marked as a rebirth of an archaic being ..who was in a search of tranquillity.

Shivam Kumar
BA (Hons) English, II Year

SOLITUDE

I still remember what time it was. First day of new school. I had like couple of people who know me from my previous school but never had any kind of conversation.

I was sitting at the last bench, judging all.

And questioning myself, where are you?

Aren't these people looking like maniacs.

Yes, I was judgemental. Okay? I guess so.

That is what I was reminiscing at the college canteen's table, when the girl of the other hand shouted, "you don't even know me." Then I realized, there are not much people there with you. Who is going to stay? No, you can never say.

People live in groups, when you do not interfere they are like,"why don't you talk much?"

But when I started to carry out any kind of conversation, I got slammed with words like you are so outdated with us.

Yes , I am.

Yes . And this is all because I'm here. To get in touch.

You will never know what sentence pinches you the most.

People have there comfort zones. They are not ready to come out of it.

I'm here to talk.

I asked this person, what is wrong with you?

They completely buzzed of me.

And now there are people who I'm surrounded by, talking about something, and I do not have a single clue.

But, but when you go to ask, replies are, you are so out dated of us.

Kavya Matia
BA (Hons) English, I Year

DEMISE OF LOVE

Sometimes love happens,
In a bus full of strangers,
Or a room full of art,
Or the queue outside the ATM,
Or in poetry events,
It happens.
It starts with a stare.
Sometimes love happens,
Beyond religions,
Between orange and green,
In a barrier free land,
Of red sky and blue grass,
Of the lord as one,
And not Hanuman and Allah.
It starts with a stare,
But the evil spirit of society,
Bans it all on the stare,
For merging orange and green results in brown,
And brown is flawed,
Unreasonably conflicting.
Sometimes love struggles,
Being an odd one,
Like a faded leaf,
In a garden full of green grass.
Sometimes it gets hit,
By an unwanted accident,
Because the red light turns green,
Skipping the yellow one.
Sometimes love fights,
In endless wars,
And sleepless nights,
Imagining victories,
In an imaginary garden,
It fights.
Sometimes love lives,
Long after love is killed,
With sharp knives,
And bullets for peace,
In a land full of illusion,
With a bigger infinity.
It flows like the wind,
To only blow and take with it
The very same love that happened.
Sometimes love happens,
Sometimes love struggles,
Sometimes love fights,
Sometimes love dies,
As everything else does,
Because it must.

Ankita Taneja
BA (Hons) English, II Year

SHE SMILES

Each morning when the alarm rings like a stammer on her jaded head, without snoozing it, she wakes up with a smile.

Her twinging legs pull her back but she drags them to the kitchen, then to the bus and then to her office.

She smiles.

When her boss shouts on her, she embraces his spleen considering his authoritative obligations.

Her stomach damns her, but she sits alone on her desk over timing to wind up her work to get time for home.

She smiles.

When she reaches home and finds it shambled, without even washing her face, she sets herself on the broom.

Her peevish son screams on her after his grisly breakup, but she caresses his forehead assuming it to be scholastic stress

She smiles.

When her husband enters the house loosening his tie, throwing his bag on the couch and sluggishly demanding supper.

And instead of blinking with love for her, he spits venomous abuses for not cooking a lavish cuisine.

She smiles

Although hackneyed she helps her son with his homework and gives an opulent massage to her husband.

Now finally in her nightdress she is elated to go to her bed, to close her eyes and to ultimately unwind

But now

She cries

She cries for she knows that she survives, and not lives.

She cries as she is no more the woman she was.

She cries as the bruises by the slaps from her legal rapist ache.

She cries as she can't escape and ought to be strong.

She cries for in the morning she has to smile again.

And hence

She smiles.

Apoorva Thakur
BA (Hons) English, I Year

A DAUGHTER'S MIND

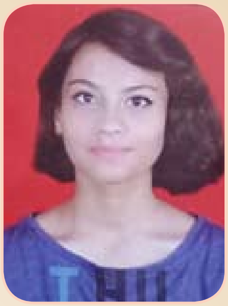

On the very first sight, when I opened my eyes,
I saw a woman's face, her eyes filled with tears and pride.
She held me in her arms,
and caressed me with her soft palms.
Oblivious to the worldly relations, I didn't know who she was,
But all I knew was she was my cause.
The marble eyed, my creator,
the fair goddess was my progenitor.
She clung me to her bosoms and whispered,
"My little darling, my little foal, I am your Mama and you're my doll.
Look love, the baby girl's on you,
She has got your eyes, your nose, and those lips too.
We share a common skin and our hearts are tied,
You are our firefly illuminating, she sighed."
That day had long passed and gone,
But that time never lost its gay.
Her love was the same as before,
That luster of her care never worn away.
Yes, it was serene, it was beautiful,
My mother be so happy and dutiful.
The baby was clad in a garb; none can miss that time warp.
The bond between us is of a special kind,
A love unmitigated, none can find.
It was you who brought me to this world,
For the pains you took in the labor,
For the moans of anguish to bring on me great favor.
The sweat and endurance you suffered was wild,
Just for the sake of a little child.
Oh, ye Mother, a creature like you so mild!
The upheavals brought a miraculous tide of life.
The journey you underwent was worth that strive.
O Dear Mother, I am forever indebted to you,
I vow to be at your side in all the blues.
It's my turn to play the role,
Of a Protector, A lover and a soul so bold.
Was it my past deed that I found you?
The fortune's on my side,
Oh, You do not have the slightest clue.
I revere you Mother with all my heart and soul,
You'll always be my God, I devote my whole to you.

Kritika Singh
BA (Hons) English, II Year

ME MYSELF

I am tired of everything.
Something I wish not to be in,
but I am.
I am all alone.
Alone in a world of fake,
yet alone.
I scream, can you even hear me?
I cry, there is no one to wipe my tears
I am hurt, but do you care?
No, of course you don't.
This world plays with my heart.
I want someone to save me from
the fake dreadful world.
I think,"People are cruel..."
I'm always thinking.
I'm dying in fear.
That's what my soul hears.
Dying alone, I don't understand.
I don't understand that when
will some magic happens,
Selfishness runs in their blood.
Everyday they are blessed with a life.
When on that same day,
they kick my ass every day.
But I still survive because of shine ray
I am feeling low,
smiling by looking at myself,
I won't give up so easily,
let the warmth protect me,
My Mom & Dad has helped me to get out of
tough times,
I will win it.
I can bet on it.
I am a Born Fighter
One Fight more &
the victory will be mine.
Better than the rest.
Forget the Rest
Forget the Rest...

Khushi Sharma
BA (Hons) English, I Year

Self Written Poetry Recitation : Eclectica

AN ODE TO THE ACT OF GROWING UP

I Prize

Little Anku,
I promise I will always remember your growth,
That fast growing pace of being 4 years old,
Not that I haven't seen kids growing,
But not as close as you.
I will always remember the lessons you learnt,
After A it's always B,
And 8 times 3 is 24,
Because life at that age,
Only had questions with clear answers.
Little Anku,
I promise I will always remember your growth,
That fast growing pace of turning 8,
I will always remember your friendly nature,
How you fed dogs of your street
that 18 year old Anku would have shooed away,
And how you always kept two spoons in your lunchbox,
Just so you can share your food with others.
I will always remember how when the first time
You saw the moon dropping from the sky,
You ran through the streets,
To find where it will lie.
Little Anku,
I promise I will always remember your growth,
That fast growing pace of turning 12,
I will remember how you never stopped singing,
Even when people were telling you – You can't,
In fact specifically then,
You sang the loudest.
I remember how you danced to the songs in your head,
Spoke with the rhythm of your heart,
And loved everything and everyone from the depth of your soul.
Little Anku,
I promise I will always remember your growth,
That fast growing pace of turning 16,
When you met every stranger with a smile,
And even complimented few – "You are beautiful".
I will always remember how you fell in love for the first time,
And at that moment love for you was like,
New York city in winters,
Like falling asleep in the rain,
Like being on the phone with someone and not even talking.
I remember everything in the world looked same to you,
Because it all looked like that one person.
Little Anku,
I promise I will always remember your growth,
That fast growing pace of turning 18,
I will remember how you felt so small,
As insignificant as humanly possible.
I remember no matter how many haircuts you got,
Or gyms you joined,
Or glasses of whiskey you drank with your boyfriend,
You still went to bed every night feeling lonely.
Little Anku you aren't little anymore,
And I understand that we get stuck sometimes,
For our stubborn heart clings to bad habits,
Bad habits that look like people and dreams.
But life has phases to offer,
And will keep offering it to you at different time,
So I promise I will always remember your growth,
If you promise you will always cherish every phase of it.
I promise.

Ankita Taneja
BA (Hons) English, II Year

WHAT DOES THE MIRROR SEE?

II Prize

Are my screams that fickle
Easy to look past from?
For every time you look
through me
To find answers about an
incomplete fairy-tale.
Fairy-tales are deceptive.
Only metaphors hollering to
drag in some hero
who would drag you out in rescue.
But is that enough?
Enough for the weakness as a virtue
that is their demand and not yours?
I know you roam with a volcano roaring
inside you.
For every time you come closer,
to decipher the creamy lines on your golden
forehead,
to examine the silver gathered behind your
hanging ear,
to caress the black mark just on the centre of
your right cheek
reminding you of your motherflesh
and bone and fire.
You are her's and you are a part of her.
Love,
you belong. You belong to this world that is
not that a bad place.
For every time you
arch your body like a lazy-running-afternoon-
breeze,
clutch your hair in a play to shadow a
wilderness that is your forte,
bend down to curl yourself in an attempt to
hide away in the music
of the black hole,
A flowery gasp radiates from my soul.
Only if I could gather those many wrinkles
you so easily barter in a
mindless frown.
Do not melt away.
Love,
you are beautiful.
What if I could hold your hand and drag you
to the other side of the
mirror.
You would see how safe your secrets are,
You would learn how vibrant your reflection
is,
You would know how priceless those tears
are.
Love
you are adorable.
Like an epic song is your every fight from
your own self
Like an ocean unleashed into a desert is that
blue smile
Like many moons hanging down in a single
blessing is that stare.
That stare which has bound me in thousand
threads of lust
And unable to breakaway I live a beautiful
reality which is
You.
Listen, my screams should be audible now.
Listen to a song that is you.
The bones of my knees melt at every breath
of yours.
You're the altar, you're the shrine.
Do not feel lost in a room filled with half
prayers.
You are fire and flower,
The master of your own pandemonium.
Love, you are your own hero.

Karishma Sahoo
BA (Hons) English, III Year

SOCIAL MEDIA AND STUFF

III Prize

Before I could create my own bubble,
Social media created the best hid out for me.
Facebook, Instagram, Twitter-
Name it all.
The bubble that it created for me was so
Tight and secure, that
I didn’t realise when I started to validate myself with “likes” and “comments”
As I open my eyes in the morning
Facebook diligently shows me,
“10 things men find attractive in a woman”
“10 ways to travel the world for free”
“ 10 places in delhi which serve the best biryani”
“10 things successful people do”
As I hold my toothbrush in my mouth
“Bling”, Instagram notifies me that Priyanka Chopra is going Live
I curse my weak internet connection as I miss it.
While I am already there, why won’t I check out
Priyanka’s dog’s acoount, by the handle name “Diaries of Diana”
Who has 52.6k followers
Is it crazy? Well, at least she is a famous dog.
Now I put the kettle on the stove and turn it on for
A cup of steamy tea to go with the morning news which my news app provides
Shahid Kapoor is looking for a new house, Alia has broken up with Siddhart
Deepika’s life is finally safe as Rajput valour returns, Taimur Ali Khan is wearing the cutest
little red shoes today on his play date with his mother
By now I am done with the news for the day
As I close my eyes to the 2018 Budget, GST, Demonetisation, Cow Vandalism, rising
Fascism, Poverty, Terrorism and Life, in general
I quickly get dressed for college and stride out to conquer the world.

Swati Baruah
BA (Hons) English, III Year

HOW MEN CREATED LANGUAGE

IV Prize

Long time back, lived men who knew not how to speak, what to speak; back then they knew

not how to talk, what to talk.

Amidst those helpless fellows was a man who decided to make a cocktail of three completely

different things- thought, speech and meaning.

He went to the sea of thoughts and asked for some mere drops.

The king of the sea of thoughts was amazed by the man. No one had ever paid much attention

to his large sea. Impressed by the request of the man, the king passed on his daughter. She

was the thought of survival. Delighted, the man embraced the thought of survival and with

her went back to his barren land.

Then the man embarked on the journey towards the sky. He climbed and climbed the stairs to

reach the celestial region

where lived a mystic magician.

He saw her, the witch, and in front of her persona he bowed down.

Crawling to the feet of the magician, the man glanced at her old face.

On its own accord, the witch understood the plea of the man.

She gave the man a bottle of red tonic, which the man heartily drank from.

After drinking some tonic, he showed his gratitude towards her by gently kissing her feet and

now he took leave of the mystic witch.

As he was coming down the stairs, he started speaking gibberish. He himself did not know

what sounds were he making.

From there, he went to the valley of reasoning,

trekking along the confusing paths he reached a clearing. There he saw some hill dwellers

sitting around a fire. They were some wise men talking in the same kind of gibberish to each

other. The man was attracted towards them, he went to them as fast as his legs would allow.

The man tired from his trek sat down amidst the wise men. His limbs were aching.

He sat there, silently, listening to the men around him. From those wise men he gained the

sense of meaning and reasoning.

After some time, he had regained his strength. Now fully refreshed, he, from the valley, went

back to his native place.

Reaching the lands he knew well

He started looking for a shell

After finding a silver shell, he poured in it

The drops of the thought of survival

Then he put some tonic, acquired from the mystic witch, in the silver shell.

And he mixed and mixed the contents of the silver object

The liquid in the shell turned dark green

Something was going to happen which none had seen.

The man drank entirely from the silver shell

Through the sense of reasoning acquired from the hill dwellers, his gibberish found meaning.

He could very well connect his thoughts with images and sounds. He, in himself, felt a stupendous change.

Then, after a brief moment of silence he uttered a single word "food". And thus thousands of

flowers of words in the garden of language bloomed...

Kartik Gupta
BA (Hons) English, I Year

Slam Poetry Competition : Eclectica

PAPER THIN WALLS

I Prize

Paper Thin Walls
Have you heard of a myth, a legend, an old wives' tale?
That we're surrounded by paper thin walls
Since times immemorial.
Holy books preach
How mankind is doomed to sin.
Pages upon pages echo
Damnation is certain; salvation, a bleak hope.
Paper thin walls have always been there
A single hole you poke and guess what, you're dead.
Because paper thin walls, yes they're paper thin
But these dead, spiralled mess of fibres twist your neck with artistry.
Thinkers, scientists, adventurers, lovers
Paper thin walls sees all as one; humans, easily breakable by decrees.
Have you ever wondered why paper beats rock?
Because we, made of the earth, have always been beaten by tons of scrolls.
Scrolls that dictate who I've to love,
Scrolls that dictate that after my wedding I can't be hurt
Scrolls that muffle my scream
Scrolls that soak up the evidence when I bleed.
These pages are vicious, they inflict poison
Slowly eroding me away in a soft cradle like prison.
My tears fall wetting the printed surface
But the world looks on with paper thin glasses.

Paper thin glasses, they're a wonder
They let you see what you want through the spaces among the letters.
Paper thin glasses provide sight, they're our vision's fetters
Through them you can look at celebrities revealed as rapists; ignore the insignificant
Mogadishu bombings.
500 bodies divided into infinity like torn up paper strings
But who cares? Shun dusty Somalia, look how Hollywood's sparkling!
Papers, adaptable papers,
They change shapes.
They can turn into microphones to spread hate.
Hate of course has an orthodox foundation,
Foundations made again of pages, written with inerasable ink and diligence.
A tall fortress of paper bricks lined with paper spite is what we've built.
Enclosed by unbreachable walls of malice inflicted ideology and polity.
Humanity is indigenous in its stupidity, Lincoln was wrong.
Prison is what it is, not democracy,
By the people, of the people, for the damned people.
We cry out in protest of how unfair it is.
Huddled behind comfortable razais we bleat,
Of how we should rejoice at the honesty of the common man,
And how women are more than their bodies,
Unity in diversity; it's all a farce!
These paper made institutions, they sell out prints
Coated with blood of the martyrs and parade it with pride.
Wrinkling their noses at the actual Pride Parade, what an infernal sight!
Rainbows are unnatural, orange has always been the prime.
Today I'm burning, shackled with paper chains
I scream out in pain but the paper microphone only lets out the sound of cuckoos tweeting
My gnashing teeth lets out howls of rage but the paper glasses focus on the blood stained
canine.
I swear to myself, one day these papers will burn to the ground,
Paper thin walls will come crumbling down.

Brinda Sharma
BA (Hons) English, I Year

DEATH IS A LONELY BUSINESS

II Prize

One
Everything I'm not
Speaks of everything I wanted to be
My existence being a paradox concept of life
Because depression and death
Was all I ever personified.

Two
I woke up to nightmares in daylight
Realising that was reality
People are just people
Forgive them because they are all Holy kids
But wasn't I?
Maybe
Maybe Lucifer was my father
And he disowned me.
Because I sinned
Yet not perfectly.

Three.
I light cigarettes
Because humans burn me.
Fidgeting between ashes and ashes
I still find the grey soot of cigarettes
But I don't find my ashes anymore.
Because my body awaits death
But my soul had a funeral way before.

Four
Death is Salvation
As predominant catastrophes write my obituary
Life is the same old
It's just that
Sometimes we get habitual
Otherwise perpetually dead.

Five
Silence was never deceitful
She was my divine lover
Held me uptight through all the Valentine's
accompanying me safely
But today it abandoned me
She whispered
And I couldn't survive anymore

Six
People are gathering
With their forever pretentious smiles
Oh no tears this time
I hope they like the food and the wine
As much as they did on my baptisation

Seven
I'm not cursing anyone
Not that I'm not supposed to
I'm just
Just passing by this last junction
My train departs here
It holds a smile
A smile
Free of narcissism
And a death
a lonely death
Freed from controversy.

Aakriti Pant
BA (Hons) English, I Year

ROOTS

III Prize

The old mirror stares at me in amazement.
"You've grown taller.
You do remember this smudge don't you? You were this little once.. "
It speaks as my fingers linger
over the tiny black mark only I knew. I remembered.
Just as I remember everything else in this house.
"I'm so happy. It feels so good to have you touch me again. I was your first love weren't I?", the
little diary
of my collection of poems
almost cries.
The pages have started smelling like my favorite fragrance in the whole wide world.
Everything.
Everything in this place.
All the sights, sounds and smells are so familiar.
Almost too familiar.
And why won't they be?
My hands slip in the curves and edges of every other thing as if
I had never forgotten that I live without them.
It doesn't matter if I'm home after almost a year.
Or two years.
Or more.
The road is always welcoming.
Well, not always maybe.
Not when you're coming for a day and spend it outside.
Not when you leave the next morning without looking back.
But it is, when you put your head
out of the car window for a minute
to inhale the air as your town approaches.
And maybe then you hear the whispers in your ears.
"Come home.."

The house is almost afraid of me. It feels betrayed.

Bewafaa.

Like the distant love who never wrote back.

But then I come close again.

And it seems to cry.

I embrace this sight of the past.

The room starts smelling like me again.

The house starts talking.

The sounds reverberate in my head.

I have been forgiven.

Again.

Amma has kept everything quite in place.

She knows the house would like to be the same,

in case I decide to return.

There's a cracked window pane. "Don't touch me. You'll hurt yourself." the glass smiles as I tried

to mend it.

I can see my old color kit

lying dusty in a corner of the bed drawer.

"Blue never healed after you left. Go talk to him.." and I see my half broken 'favorite' crayon

lying in that third dent I'd always keep it in.

Old photographs and cards peep out from pages of my diaries.

Marbles and teddies make their presence known again.

The books stay in the same place and wait for me.

Wait for me to come to them.

I feel all those words brush past my fingers as hurriedly as they can, to make way for others.

And the house cries.

It cries for I had left.

Cries for I've come back.

And cries again for I'll leave once more.

Sara Haque
BA (Hons) English, I Year

ISHQ

IV Prize - Tie

She adorns her waist with a black belt instead of a girdle, prefers the Ranveer Singh of Make My Trip to the Ranveer of Padmavat and calls herself the mother of doggos. My muse is no basic bitch.

Ishq, you bake cupcakes in Hell's Kitchen, you hold hands in a world that holds grudges, you end phone calls with the words people end lives with: I love you.

Ishq, your smile could give light to constellations, your face half-hidden in your mud-hued curls could melt supernovas, a glass of anaar juice is champagne when your fingers wrap around it.

You exist more beautifully than people live.

Ishq, you have a figure that a ghazal singer would call lit af, you have eyes that'd coerce

Voldemort into Muggles a chance, you have a voice that'd prompt Yogi Adityanath to go: "Mashallah!"

You are a flying kiss in a world filled to the brim with middle fingers.

Ishq, it's a rocky road we've travelled on and carriages have upturned but worry not, for we shall complete the journey on a spaceship. A few light years is all it'll take and these physical asteroid belts that lie betwixt shall give in to our emotional comets.

Ishq, you won't have those nightmares no more and that dream will come true. It'll be you and I - our kegs entwined, our toes curled, five fingers of mine padlocked with five of yours, your five

remaining soldiers brushing their way through my zulfein, the rest of mine caressing each and every single curve on your lower back, our heads resting against each other, our noses rubbing, eyes devouring, cheeks huffing, lungs blushing, as your roaring heart screams. Gently. In my arms. And my piter-patering one piter-paters its way around your bosom.

Ishq, keep your head high and look at the horizon in the direction South Delhi lies - the sky, and life, is just the shade of pretty you adore so much. Gaze at it to your heart's desire, and a little bit more - we have forever, anyway.

Anubhav Tekwani
BA (Hons) English, I Year

NOAH

IV Prize - Tie

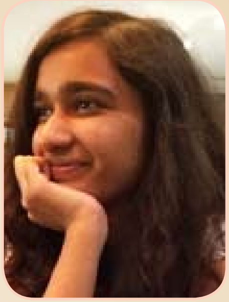

I've known all three of you.
sunshine. supernova. you.
I've loved all three of you.
I still can't smoke. but cigarette stubs draw out the maps you used to trace
on my left thigh.
and I like that.
you saw me dancing in the kitchen, that day.
and caressed my feet until they glistened crimson under our white bedroom
lights.
I don't sleep in that bed, anymore.
but I don't dance anymore, either.
I made the lines of my wrists look like our silences- too short, too sudden, too many.
you'll never lose your way within me, again. I promise.
did you know I love black tulips?
do you know why?
you never did ask me why I gifted you that mirror, Noah.
my cupboard is filled with the skeletons of every single word you've ever said to me.
I dress them up in poetry every two days and crawl between the ribcage and the spine of your
favorite ones- heck, and my last name. in that order.
its easier to fall asleep in the arms of molten familiarity when it looks this pretty.
the earliest memory I have is of my grandparents swinging me along by the tips of my fingers,
laughing as I laugh, nestling me in their arms, if I fall.
the last memory I'll have is of you swinging me along by the roots of my teal hair, laughing as I
cry, walking away if I don't.
I know you loved me, Noah. I know you loved me every single time you carved that word on
my
chest, right beside my heart, like tally marks, to count the number of times you've owned me
like
you own your house and my body.
I loved you too. I'm sorry for never saying it the way you liked me to. I'm sorry.
I could never hold my breath for too long under water. I know you liked timing me, and I know
I
always came up too fast, too soon, too breathless to kiss you back. my lips are always
chapped and you tasted like metal.
I never did time you. I wanted you to taste like blue.
you wore your smirk like a crown and my smile like a medal, but now that your skin looks like
sunburnt sand and bronze grass and feels like the prickle of sunlight in July, and I'm still as fresh
as day and as alive as your cacti,
would you like to try my skin on for size?

Isha Gupta
B. Com (Hounours), I Year

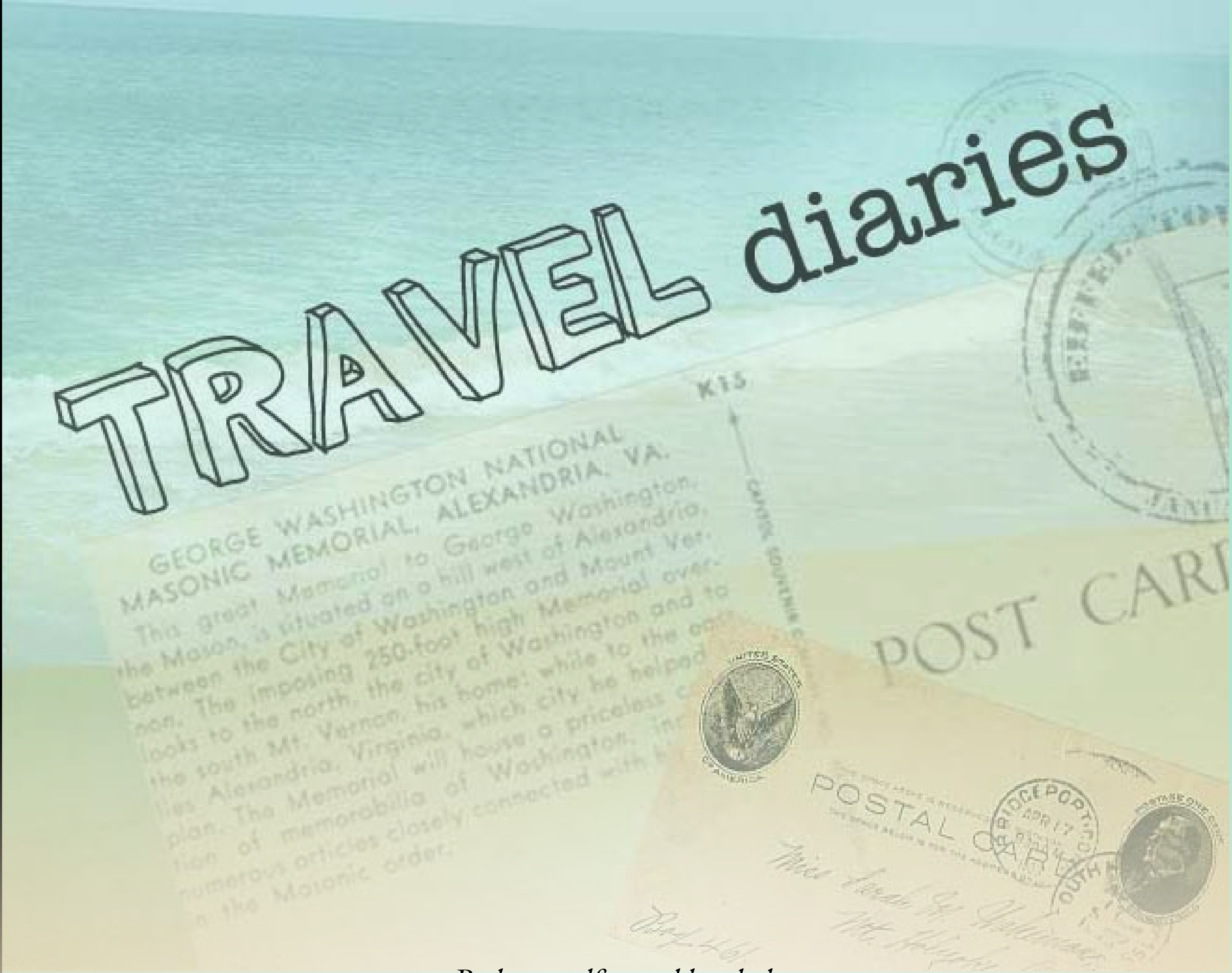

Pack yourself a toothbrush dear
Pack yourself a favourite blouse
Take a withdrawal slip
Take all of your savings out
Cause if we don't leave this town we might never make it out

And I can't wait to get on the road again.
On the road again

Goin' places that I've never been.
Seein' things that I may never see again

Lumineers: Sleep on the floor

CONTENTS

1. Reminiscing Istanbul - Ms Renu Kapoor
2. Jaisalmer: Some Musings - Dr Vandana Agrawal
3. Discovering Cambodia - Dr Urvashi Sabu
4. Trains - Sara Haque

REMINISCING ISTANBUL

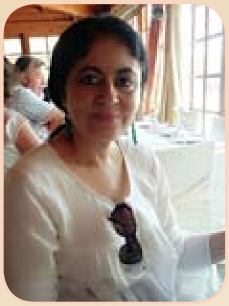

I have often pondered over what makes a vacation or any other kind of travel memorable? Is it the destination? Is it the savouring of a new culture? Is it the comfort or luxury involved with that particular trip? Is it the adventure? Is it the company one had? While each one of these factors is crucial to any travel experience, what makes any trip notable and unforgettable, in my opinion, is the human interaction and intersection.

When I turn the pages of my memory book, the pages that I silently read and reread and revisit, the ones that make not just my face but my mind smile, the ones that I am likely to repeat to people again and again, the ones that have the greatest anecdotal strength, involve human beings. Strangers, fellow citizens of the earth and yet people divided by political or regional boundaries, people who speak languages I do not understand, people who carry passports different from mine, people who practice a different faith and follow different customs, people whose names I do not know , they are the stars of my life. Some of them have left an indelible print on my soul. These are people that I met for a brief period of time, exchanged a few sentences with, said thank you to, and left them in their own world while I returned to mine. I do not know about their inner lives but I think about them daily and pray to God for their wellbeing. As Proust said –"Let us be grateful to the people who make us happy; they are the charming gardeners who make our souls blossom". I finally put my thoughts about these individuals on paper as a mark of the gratitude I feel towards them for simply being there at the moment when their presence made a difference to me.

Last year I was in Istanbul with my friend, Kusum. We were headed to Greece and since we were flying Turkish Airlines we decided to take a short break in Istanbul. I was thrilled to be in one of the most beautiful cities in the world, a city that straddles two continents, a city that contains a sweep of history that even the ignorant can't help but be aware of when there. Istanbul makes you

fall in love with it at first sight. Byzantium, Constantinople and Istanbul- Greek, Roman, Ottoman and now modern Turkish, this city allures and entices travellers from all over the world with the sparkling Marmara sea, the enchanting Bosphorus lined on both sides with impressive and elegant Ottoman houses, quaint tea houses that serve the best sweet delicacies in the world, beautiful mosques characterized by their distinct domes and slender minarets, and the spiritually elevating whirling dervishes. It is a city that has inspired writers from Agatha Christie to Dan Brown and has been the splendid backdrop for visually opulent movies such as From Russia with Love, Skyfall, Taken 2, The International, and the eponymous Istanbul.

Having spent two glorious days there, I was woken up in the wee hours of the night by a friend calling from the U.S. It was day time there and he called up to inform us that there had been a terrorist attack on Istanbul airport. We had a flight to catch in a couple of hours and what followed was utter chaos. A large number of people were killed, the airport was closed and all flights were cancelled. Most airlines had no specific information to offer. It was our worst nightmare coming true. In panic I ran down to the lobby of the hotel and asked the young boy at the reception if he knew about the attack. That young receptionist was equally shaken and had no concrete information to share but stood there calmly allaying my fears and addressing my concerns. I asked him if he felt any fear, to which he candidly answered that he was frightened

but one couldn't let terror beat one's spirit, he added. There we stood, two human beings on different sides of age, religion, nationality, and yet at that moment, as we shared our fears, we experienced a strange communion. A tragedy had fused our souls into one at that moment of time.

Next morning the hotel lobby was full of anxious guests. Most of us had flights to catch to somewhere or the other. Many flights were cancelled and many delayed. The staff maintained a strong emotional façade and carried out their work with cool efficiency. It was their professionalism that comforted the guests. It wasn't before night that we could fly out of Istanbul. We spent most part of the day chatting with fellow guests at the hotel, sharing notes about flights being resumed or not. We found a group of people who had to travel to Prague. They asked us up to their room for a cup of tea. I spent a couple of hours chatting with a woman who was on her way to Bosnia. She lived in the US and was on her way to her homeland, Bosnia Herzegovina, for her annual trip back home to meet her parents. She shared experiences of her country's troubled past and hoped peace would return to Istanbul and other troubled parts of the world as it had returned to her homeland. Almost every Istanbul resident we met was profusely apologetic about the inconvenience caused to travellers such as ourselves. The whole city mourned but maintained a heroic calm and offered solace and comfort to the guests who had professed love for their city and country by visiting it. It would be many hours before we would board our onward flight to Athens but we felt cared for. At the airport there were long queues everywhere and the airport staff was over worked and tired but they took care of the anxious people who had waited hours to board their flights. It was only when we changed planes at Istanbul ten days later on our way back from Greece that I realized the pressure the staff must have been under. They had lost colleagues to the

bullets of the terrorists that day and yet went about performing their duty with smiles on their faces. The photographs of the victims were displayed at the airport and all around these heart wrenching pictures moved a vast sea of people, paying silent homage.

I was reminded of what Orhan Pamuk describes as the ‘huzun’ of the Istanbulis, in his book titled after his beloved city, ‘Istanbul: Memories and the City’. Pamuk refers to the huzun or the collective melancholy of the people of Istanbul. He defines huzun as a communal feeling of sorrow, of deep spiritual loss but also as a hopeful way of looking at life. Such contradictions befit the city built as it is on the crossroads of the East and the West, caught between a glorious past and an inadequate present. This huzun, writes Pamuk, “is a way of looking at life that is ultimately as life affirming as it is negating.” It stems from the feeling Istanbulis have of the glory and decay of their city. Huzun is not only the pain one feels at what has vanished and what one has lost, it is also pain that is linked to the insight that one has not suffered enough to reach the most gratifying unity of all, that is, with God. Thus, huzun deserves to be nurtured. It is this huzun that allows the people of Istanbul to accept and embrace their failure and defeat with a philosophical and proud attitude. It was on that trip that I understood Pamuk clearly. The huzun of this city is its identity, its reality and allows its inhabitants to embrace their ups and downs, highs and lows, joys and miseries, defeats and victories with equal fervor.

Ms Renu Kapoor
Associate Professor,
Dept of English

JAISALMER: SOME MUSINGS

Whether it is through road dust or industry or through trucks and buses driven by diesel or through burning of crop residue or poor solid waste management or overpopulation, the pollution does not seem to abate. Every morning and evening I look at the sky to get a feel of the blueness that I saw everyday till only a decade back, a thing that was a given and not a rarity. Sometimes I feel I have lost my sanity when the first sentence that comes forth in the morning is about less or dense toxic smog that has eaten up the blue. Delhi is abuzz with talks of air quality index. Sales of masks and air purifiers have spiraled up. Several preventive measures and awareness talks are doing the rounds but the matters are only worsening. Why, when we are day by day improving our knowledge base then what sort of smartness is this that basic things are losing their base?

When I came out of the train at Jodhpur at 8 in the morning, I craned up to see the color of the sky and lo and behold, it was my blue that I was missing in Delhi. Soon our taxi headed towards the unmatched golden city of Jaisalmer, a city that once was part of the famous Silk Route. I love travelling by road. Early morning breeze and uncongested highway, a far cry from the crowded congested polluted Delhi roads, was lifting my spirits. The company of husband and daughter had left me free to ruminate and be one with the passing landscape as I was not to worry about the planning or logistics. I was comparing the flora and fauna of the north and found that the trees were not half as tall as they are there. The driver told me that here the trees usually found were neem, babul, jal, khumbar, bavla, lora. I could see thorny bushes and cacti in plenty and there were creepers like bougainvillea that required less water.

My husband stopped to buy some medicines while I waited in the car. I saw a vegetable cart next to the car loaded with freshly picked vegetables. I told my daughter I am going to give you a green breakfast today- I bought half a kg of green peas. We enjoyed munching peas and collected the peels in the bag. After an hour the driver lured us to have sumptuous paranthas at a restaurant for breakfast. This is how they also manage to get their breakfast if they get tourists. Before taking my seat I picked up the peels to throw them in the

bin, the driver rushed towards to me to take the peels and said let me give this to a cow. While going to discard them I was thinking if I could dispose them responsibly and here the peels were going to the right destination. I was reminded of my parental house where we kept cows and had two bins where we collected the fresh peels and greens which was used for their morning and evening fodder. The segregation of waste which is incomprehensible to many in the cities was natural to me and to these people.

February was the perfect time to be there, neither cold nor hot. Away from the city, very close to airport, after negotiating rough roads, the entry into Club Mahindra with its lush lawns and varied hued flowers was an oasis. The way to the rooms along the well-manicured lawns and badminton and throw ball courts and playground beckoned the child within me to come around for fun and frolic. Within minutes I was out of the room to soak in the life-giving nature. Malis were at work and I saw sparrows, yes, house sparrows preening and chortling near the water sprinkler. They stood or lay on the shallow water on the grass, flung water over their backs with flicks of their wings or ducked their heads in the water. It calmed my senses and said everything is right with the world. In South Delhi where I stay, once so common birds are no w h e r e to be seen. Yes, Jaislamer was now what Delhi was 30 years before. And with airport now, and promotion of tourism and construction, is it on the road to become Delhi?

After visiting the golden fort and other places of interest one day was to have a feel of the various streets. There small lanes ran one into another with houses and shops on both the sides. The open verandahs of the houses opened on the streets. The residents came out of their houses to socialize or work. The elders sat on the charpoy and basked in the sun. The ladies were out to embroider, stitch or assist children in their homework. Some readied the vegetables and the peels were directly thrown to the cows, they too belonged to the place. I sensed a connect with the animal and the human. The place had a soul and a character. I had always felt this connect. As a kid I never touched or pinched the trees after the sunset as I was told that this was their sleeping time, in the mornings I was out with atta and sugar to feed the ants, and every morning and evening I used to go to the backyard to greet our pet cows. Again, I was reminded of the Delhi of nineties when I used to give leftover chappatis to my maid to give it to the cows on the way. Now all the stray cows or gaushalas of the town have been relocated. Delhi is a

metropolitan city where cacophony and smog rules. Why can't we modernize and still retain the old world charm. Why do we want to turn our cities and villages to places without souls? I wonder.

I am reminded of an article that came in Hindu when Nirbhaya episode happened. It talked of how the villages in and around Delhi have been subsumed in the city. The inter-active character of the villages where people criss- crossed each other has given way to highways and multi-stories, so that if anything untoward happens on the streets, no help is possible. People are getting disconnected from soil that grows and sustains, land in and around the houses or apartments is merely an ornamental landscape. The widening of the roads is leading to felling of trees, the greens on the roads are creepers or ornamental vertical gardens. Trees that provide cool air, keep the temperatures and pollution down are no more, now the cities burn, people move in an enclosed car fitted with air purifiers and air conditioners further producing global warming. There is so much of talk about it, conferences, seminars, committees but the people are least bothered, no one wants to put ideas to action. I feel out- of- the- box thinking is required where buildings are to be designed in such a way that animals, nature, plants are all integrated. While designing cities policy makers, architects, horticulturists should all come together to plan. These days in our apartments where we stay, we do not have any green space, whatever space is there it has been concretised. But still we can do what is possible. We can grow vegetables in pots. The vegetables we consume come from far off places involving transportation, leading to pollution, so we can in a little way reduce carbon footprint if we lessen our requirement. In the common DDA lawn I grew beans, whosoever saw it, wanted to have it. Everyone likes to have home grown vegetables it but they don't do it. I tell them you can all come together, own a space and grow things which are simple to grow and also see that organic garbage is restored to soil instead of dumping it in the garbage bin. We know, but why don't we do it that is the question. To talk or do, that is the question, whether 'tis nobler to talk and appear as conscientious citizens or to silently work and make a revolution, like Hamlet, I ask.

We do not think of creating a balance with the constructed portion and natural environment. We shield ourselves from forest and animals and concentrate on making life easy through making wide roads and large shopping malls. But we have to realize that the way cities are built will impact the health and welfare of each resident. And if we disregard nature it will impact on the quality of life. We are a part of nature, it is not something superfluous to us. The constructions that are happening and the hotel industry that is mushrooming in Jaisalmer without any sustainable plan should not happen. One has to choose between commercial interest and sustainable interest or to put it bluntly one has to choose between money and life. Which one will you go for? Will you, like King Midas go for gold?

Dr Vandana Agrawal
Associate Professor
Dept of English

DISCOVERING CAMBODIA

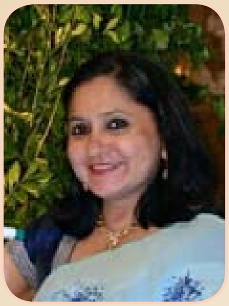

Towering, awe inspiring Angkor edifices that speak of a glorious past, excavated through a tangled forest

Temples and trees in a symbiotic relationship, growing, uprooting, holding on to each other

Serene floating villages, and children frolicking in the lake tossing clumps of mud

Young Buddhist monks taking photos on an IPad

Ponds with lotuses, lotuses everywhere

Frangipani trees glowing white and pink and red, dotting every road and every street

A stupa housing skulls, grisly reminder of the killing fields, the darkest civil genocide in Asian history

Landmine survivors, haunted by their past, playing haunting music on forest trails

The sweetest, gentlest Namastes this side of Asia

Tier, our smiling young driver, who could have been a schoolboy

Khmerin, our tour guide, father of an 18 and a 12 year old, who never saw his own father because the Pol Pot regime killed him when Khmerin was barely seven months old

Delicious Khmer cuisine, set on menus in smile worthy English

Siem Reap, a quaint town with a gracious charm, and a pub street that was an enchanting explosion of music, aroma and colour

Seven women, who have known each other professionally for the better part of twenty years, out on a voyage of discovery, building ties of friendship stronger than ever

Laughter, fun and some crazy moments

Stories that created memories and memories that will become stories

And an unforgettable trip that will be the first of many…

Dr Urvashi Sabu
Associate Professor, Dept of English

TRAINS

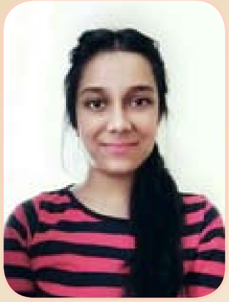

The first thing that comes to view are the schedule boards. Trains to and from places.

And you hear one leaving just as you step onto platform 6. The shrill whistle.

There's a mother whose tired eyes wait and wander, while she feeds her baby. Her train's yet to arrive. She's longing for home.

You see the lone cripple drag his feet into your compartment and beg. Skele-gro could fix those stunted bones, you think. But you're no wizard, or witch. And there's no magic in the world. Magic which fixes things.

Then there are few transgenders who drop in. You'll always hear giggles, and see scorning faces around you after those claps. Maybe they don't want to clap after all. But it's a ritual they've come to accept. We made them do that. Strange that we still find it tough to accept the fact that there are not just two kinds of us in the world.

You also see the man near you, who's so happy. Happy to be serving the nation at a place 3500 kms away from his home. Proud, even. He eats less. And he won't talk a lot. Does he miss home? Of course. But he is happy.

And then you hear only the night wind through the half open window. It's 3.20 am. You hadn't slept a lot, but it is almost time to reach. Then you see the fields and trees outside. Indigo sky. You see the moon too. There's a different kind of calm. Even your face looks different. The face that happens when you're up all night. Reading. Not stressed. Not anxious. Not even a bit sleepy.

There are thoughts, calm thoughts. And then you think how everything's 'not' perfect. And it can never be. And the world just rotates and revolves. And how less you can do for everyone. But how much you can do for someone, somewhere, yourself…

And how it is that you aren't responsible for all the wrong that there is. But how you are, for the little bit that affects you, and others that are dear.

And how the world's just another place. Just like that big place inside your head. Your own 3.20 am thoughts.

What are those thoughts? Well, that's another story. I'll tell you that some other time.

Sara Haque
BA (Hons) English, I Year

Views and Reviews

Once a book attracted
My attention not too long ago
It said the future would reveal a way
The reading book which pleasured me
Reflected days we dream about
And now it seems those days are drawing near

Yes: Golden Age

CONTENTS

1. The Man India Missed The Most - Ms Arti Mathur
2. The Untold Story of Juni Dagger - Ms Jyoti Kathpalia
3. Conversations With An Artist - Ms Renu Kapoor
4. Re Markings: A World Assembly of Poets - Dr Urvashi Sabu
5. Buffering Love - Dr Vandana Agrawal

THE MAN INDIA MISSED THE MOST

Title: The Man India Missed The Most: Subhash Chandra Bose

Author: Bhuvan Lall
Genre: Historiography
Publisher: Notion Press
Year of Publication: 2017
Language: English
Price: Rs. 399 Paperback edition

Narrative as a method rediscovered by social historians around 1979 is primarily defined by Lawrence Stone as follows: it is organized chronologically; it is focused on a single coherent story; it is descriptive rather than analytical; it is concerned with people rather than abstract circumstances; and it deals with the particular and specific rather than the collective and statistical. "More and more of the 'new historians' are now trying to discover what was going on inside people's heads in the past, and what it was like to live in the past, questions which inevitably lead back to the use of narrative.

Can events from history combine with exhaustive research and yet make a great read?

Bhuvan Lall's book The Man India Missed The Most: Subhas Chandra Bose takes us on an amazing political journey in a most contemporary idiom that combines personal account with a most comprehensive account of India's freedom movement. The book contains immensely readable chapters on India's colonial experience that lay bare the motivation and intrigues behind the events that transform a trading pact into a most powerful imperial tool. The readers gather multiple perspectives on India not only from the coloniser- colonised, native - outsider, centre - margin point of view but also from a more unique perspective of India's struggle for freedom from a global perspective. While each chapter is a wealth of information from the minutest details such as gathered at the Gadar headquarters in San Fransisco, or the Indian British POW's in German jails, or the setting up of spy networks in Delhi; the book derives its pace and inspiration from a figure none less than Entail Subhash Chandra Bose. The global comprehensive accounts then converge to the life and beliefs of Netaji, as the author takes us on trailblazing journeys that remind us again of Netaji's extraordinary achievements across continents. In the process, the author is able to convincingly deliver a great amount of unexpected information, insightful explanations of the thoughts and guiding philosophies of leaders and the political interplay between the towering heroes of the independent movement era. Despite this being a well documented, written and discussed phase of our history, there is a beguiling freshness in Bhuvan Lall's approach to the subject and the narrative.

Postmodernism often revels and reveals great pleasure in experimentation with form, places narrative over author, derives meaning from subject position of the reader and plays with multiple perspectives of 'truth' to enable the reader of such texts to perceive events as extensively and as intensively as possible. This is the paradox of Lall's immensely readable historical account too.

Ms Arti Mathur
Department of English

'Mom I will handle it. I am an author now! You chill'

'But why don't you go over once what you are going to say at the seminar?' My voice gets an edge.

'Chill, I will handle it.' My voice is getting hysterical by now. Arjun is whistling away and going through his regular Instagram feed and YouTube memes. I am ready to tear out my hair in frustration.

How does one even begin to talk about being the mother of a precocious teen author? The trials and tribulations of a mother of a testosterone high, on top of the world,boy teenager. My experience as the mother of an author has been, to put it mildly, an interesting one.

Arjun Chandra Kathpalia's ***Juni Dagger: Murders in Meraupatnam*** was published by Rupa in September of 2017. It is a comic detective novel that deals with a foody detective's solving mysterious murders taking placein the port town of Meraupatnam. It is a fun filled story where Juni along with his sidekicks the ninja girl, Cameron and Monroe the French man, become part of a hilarious culinary adventure. Written by a teen it has all the components of whacky humour, guns, food crosswords and various misadventures. There are no magicians and magic in the novel, the detective is not a super genius, instead he is portrayed as fallible human,sometimes lazy, at other times careless and with his own vulnerabilities. It is this quality that sets Juni Dagger apart from the other detective novels. The town is a sleepy port town beautifully delineated in a fictional landscape, giving it a universal appeal.

Okay so I give him his due. My son has done what so many have not been able to do. But then the trauma that I suffered, what about that? Who will acknowledge and appreciate it.

'Arjun, have you seen the corrections to the manuscript? The deadline is tomorrow!'

'I will see it later mom'

'Later? Its 12 AM! What is later?' I am thinking that an emergency should be declared. Tomorrow the manuscript must go and Arjun will see it later! Arjun will take his own sweet time I am sure. I should keep a strong heart.

'Later means later Mom! Sometime after this time, got it? Relax! You take too much tension.'

The next morning, I see that the script has been duly sent. The time of the mail is 4AM. But why push till the last, nth minute. Is it because of a hormonal defect which teens develop that inhibits them from doing anything with a decent margin of time available? Do all serious activities happen when all other distractions and entertainment have been faithfully prioritized?

I never understood how my parents could think so differently from me. I was so sure that there would be no generation gap between me and my children that I would be a cool parent but I see an insurmountable gap opening. And the only way through it seems to be not a logical ratiocination but blind faith, an existential leap of faith and acceptance where you take a plunge into unknown uncharted territories...

*****

‘Arjun, you have to add some words to this. The segue according to the editors is an awkward one.’The situation is that Cameron the ninja girl has trapped Juni with her metal stars and he is squirming. I tell Arjun, ‘Why don’t you write that she tickled him and there was a witty exchange between the two of them?’ Arjun looks at me, ‘That’s so cheesy mom and he starts typing on the keyboard. I glance over his shoulder and see what he has written. Cameron, ‘pinned him to the wall… laughed at his discomfiture and took the cash in his pockets before she released him.’ It is an eye opener for me. This is generation gap. The young teen would think of taking the money rather than bother with tickling and other flirty exchanges. The world that they are growing up in is a different world!And not always in the sense of materialism and its negative consequences. I see a self-reflexivity and a cynicism when I read the passage, ‘Was this what was known as humanity – a set of ungrateful, comical, grotesque characters living in unabashed ignorance and self-delusions?’ And I must, yet again rethink how the generation today thinks.

When I read Juni Dagger again, I see a world where Monroe can be made to sit at home and cook whereas as the girl Cameron does his detective work as he has turned out to be better at cooking. Whereas there is a flirtation between genders but in no way, is the ninja sidekick any way less than Juni himself. Am I seeing a better world through the youthful lens of hope and optimism? There is a mock parody in the novel of James Bond and his brand of chauvinistic alpha male detective and the sexy, girl agent that he inevitably saves. Yes, this may be a better world after all.

*****

‘So basically, I gave Juni to eat what I felt eating at that point…so if I wanted a shwarma then Juni got one… Yes, I am going to put Juni in Delhi in my next novel….’ The interviews and reviews in various newspapers put Arjun on cloud nine. It is the extremely happyunderface disguised by a bored and nonchalant mask that I see now. Arjun is confident, witty and at ease in the various public events that he faces during his book launch and various interviews with the journalists. I wonder at his public persona. It’s an alien I am seeing, not the laidback youth I know. I am proud. And when I praise him he grins and says the inevitable, ‘Mom I am an author!’

And I decide to go back and read ***Juni Dagger*** for further clues on what my son thinks and perhaps is….

Ms Jyoti Kathpalia
Associate Professor
Dept. of English

CONVERSATIONS WITH AN ARTIST

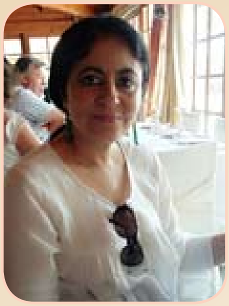

The PGDAV College chapter of Spic Macay has been an active participant in the movement started by Dr Kiran Seth to promote the rich cultural heritage of our country. A long association and many concerts and recitals later, the academic session 2017-18 was made special by the fact that for the first time our college organized a workshop for students conducted by renowned Madhubani painter Smt Shanti Devi. Practiced in the Mithila region of Bihar, Madhubani or Mithila painting is characterized by eye catching colours and patterns and is done with fingers, twigs, brushes and nib pens. The students responded with enthusiasm to the workshop in which they learned about this art form and got a chance to paint in the Madhubani style under the guidance of a very famous practitioner of this art.

While the students attended this 3 days workshop, the teachers-coordinators had the opportunity to meet and talk at length with Smt Shanti Devi. Incredibly talented and recognized all over the world for her artistic achievements and commitment to her chosen art form, it was a pleasure to spend 3 days in her company. What struck me most about her was her humility and simplicity. Unassuming, down to earth and totally oblivious of her fame, here is a woman who is an icon as well as an ambassador of her art. An art form practiced exclusively by women, Madhubani paintings take one into the world of creativity and inspiration kept alive by the spirit of sisterhood. It is a world where we see simple yet truly empowered women. I asked her a lot of questions and produce here excerpts from those conversations.

Interviewer: Please tell us something about how you came to be a painter.

Shanti Devi: I was born in Kataiya village of the Madhubani region in Bihar and it was inevitable that I will learn how to paint in this folk style that has for centuries been practiced by the women of this region. My first "guru" was my mother and from the age of 10 I began my training in this form of painting. On occasions of festivals and weddings, the women of the house would paint the public areas of the house and the wedding hall. It was not just a family affair; it was a community affair and all women, young and old, would pitch in. It was also a lot of fun as it would give women the opportunity to spend time together.

After I got married and my "bua saas" happened to be none other than Padma Shri Smt Ganga Devi, a world renowned Madhubani painter. She took me under her wings and I continued to make paintings under her guidance. Twenty years after my marriage, in the early 1990s, she brought me to Delhi from our village and we began to make paintings at the Crafts Museum at Pragati Maidan. Smt Ganga Devi died of cancer a few years later but the Director of the Museum helped me stay on. A year later, my husband and my family also joined me in Delhi and since then I have lived and practiced my art here.

Interviewer: Tell us more about your journey as an artist.

Shanti Devi: I continued making paintings. I also did a lot of commissioned work which brought me in contact with people who valued this art form and with many government agencies. It is because of them that I could show my art all over the world. I have exhibited my paintings and conducted painting workshops in Canada, Austria, New Zealand, Singapore

and many other countries. I have seen the world and the world has seen my art.

Interviewer: Can you tell us about the role that your family has played in your life as an artist?

Shanti Devi: I learned how to paint from my family members. After my marriage it was my “bua saas” who encouraged and nurtured me.. I always had the support of my family, even when I came to Delhi.

I have taught my daughter and my daughter in law how to make Madhubani paintings. I cannot manage without these two. My daughter manages my day to day appointments and engagements. I don’t know how to send emails etc. My daughter in law accompanies me everywhere and assists in conducting workshops. She takes care of ordering materials that we use. When I get a big assignment, everyone, including my husband and my son, helps me. Big paintings require the work of many painters so the whole family contributes.

Interviewer: Tell us about Madhubani paintings and their special characteristics.

Shanti Devi: The purpose of these paintings has been ceremonial as well as decorative. The motifs are conventionally taken from religion, mythology and nature as these are considered auspicious. The colours used are yellow, orange, red, blue, green and black.

Over the years there have been some changes in conventions too. What began as wall paintings are now done on paper as well as fabric. While vegetable colours are still used, exceptions can be made depending on the surface on which one is painting.

Interviewer: How do you keep up with a busy and hectic routine?

Shanti Devi: I have become used to that but as I am getting old, I find it difficult to sit on the floor for long. I had to undergo a back surgery a few years back and suffer from back and neck pain. I need a stick to walk now. In this condition, I function with the assistance and devotion of my daughter and daughter in law. It is because if these two that I can still practice my art.

Interviewer: What do you think about the future of Madhubani painting ?

Shanti Devi: There was a time when I worried about such art forms being forgotten and getting lost forever but luckily there are individuals and agencies that have worked hard to promote Madhubani paintings and helped keep this style alive. The government has offered assistance from time to time. Organisations such as Spic Macay have worked tirelessly to make this style well known throughout the world. The future lies with the youth such as the students in your college who have shown a keen interest in knowing and learning from us. It is in them that I see the future of Madhubani painting.

Ms Renu Kapoor
Associate Professor,
Dept of English

RE MARKINGS: A WORLD ASSEMBLY OF POETS

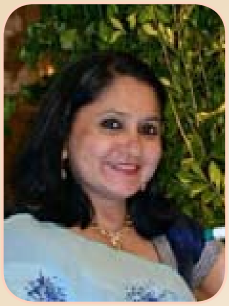

When was the last time I saw, read or heard of the publication of an anthology of world poetry? With this question on my mind, I did a quick web search and realized to my astonishment that the last published compilation was in 2010!

Eight years down the line, there comes an ambitious volume, the brainchild of Prof. Nibir K Ghosh and celebrated Gambian poet Dr Tijan M Sallah, aptly titled A World Assembly of Poets. Published as a special number of the sixteen years old and still going strong literary journal 'Re-Markings', this issue is not only a collector's item but an absolute must have for any serious student or lover of literature.

In a world riven by war and strife, this special number makes a bravely unique and concentrated effort to unite, within the same cover, living poets from across all continents; poets who are aware of, and alert towards, not just the craft of poetry but also of the dilemmas confronting humanity, nations, and cultures today. In the Editorial, Prof Ghosh quips about Plato's aversion to having the poet in his ideal state; and moves on deftly to Shakespeare's, Wordsworth's and Shelley's impassioned avowal of the craft of poetry, and the significance of poets across cultures. The contents page follows, with the sections being classified according to continents, and within that the countries, in alphabetical order. (No partiality there!) An Introduction by Dr Sallah critically traces, analyses and evaluates the evolution and growth of modern poetry, with reference to the poets included in this volume. And with that done, we come to the kernel.

The first thing that strikes one is that many of the poets are as yet comparatively lesser known; some even make their publishing debut here, in this issue! And that could possibly be the biggest achievement of this special number. This moving away from the canonical, the venerated, the Dead, to the Living, the new, and the mint fresh, reflects the concern of the editors to make this volume even more representative of the times we live in, rather than a hearkening to the ages past. It is an act of literary courage as well as honesty, of presenting to the world a new mirror to the present, a new retelling of the past, a new vision of the future. The second interesting aspect of this number is that barring a few (which appear in English translation), almost all the poems are originally written in English. While purists may deride this as not being representative of world languages, I am of the opinion that this conscious choice of one language, particularly from non English speaking countries, reflects a post colonial 'coming of age', a recognition, of 'owning' the language, so to speak. The poets under consideration are comfortable with the language, and use its tropes and nuances with refreshing expertise. The translations too are sensitive and refined.

Then there is the very interesting inclusion of the expatriate, globalised experience in the selection of poets who have relocated from their homelands to other countries. Thus, for example, Gurcharan Rampuri features in the Canadian and Meera Ekkanath Klein in the USA section. The Indian section is eclectic, featuring legends like Keki N Daruwalla, as well as award winning poets (Arun Kamal, Gopikrishnan Kottoor, Shiv K Kumar, Jayant Mahapatra, Arundhati Subramaniam) academicians (Shankar Dutt, Ramesh C Shah) Dalit voices (Dr Aparna Lanjewar, Sharan Kumar Limbale) Journalist Pritish Nandy, senior IRS officer KK Srivastava, and,

wonderfully rendered, Tibetan-Indian poet Tenzin Tsundue.

The poems in the volume speak eloquently of indigenous cultures, myth and folklore (Africa), of daily life and cultural flux, racial identities and conflicts (America), of women's issues, caste and community, poverty and want, history and the glorious past (Asia). They are fresh, and appeal to the modern sensibility (Australia, New Zealand). They are inclusive and global, philosophical and evocative of the Classical age (Europe). They reflect the richness and pain of a mixed identity (Latin America and Caribbean). The tiny but unique section on the Middle East, featuring, (and this is surely a coup!) women poets from Israel and Iran is a fitting finale to a poetic journey through the modern world with all its conundrums and conflicts of identity, gender, class, community and nation. The volume is beautifully produced. Clearly a labour of love for its editors, this volume deserves praise not just for the ambition with which it was conceived, but for the brilliance of the final product. It could well be on the syllabus of university curricula across the world. And it should.

Dr Urvashi Sabu
Associate Professor
Dept. of English

BUFFERING LOVE

Issac John
Buffering Love
Penguin Random House
206 pages, Rs. 175

Imaginative literature is a fine medium to reflect the concerns of the times it is written in. Today information technology has come to occupy a prominent space in our lives. The use of electronics, computers, and computer software to convert, store, protect, process, transmit and securely retrieve information has become commonplace. It has brought the global space on to a common platform.

Buffering Love, a collection of fifteen short stories by Issac John truly reflects our times. The stories dwell upon the type of the society where information technology has invaded daily life, and captures the various aspects touched by it. If the first story Launched shows how technology offers opportunities to make a fast buck ignoring personal relationships; Video Star depicts how fashioning one's self-image in the larger society is more important than befriending people. The characters in the book cling to their apps, and the stories depict how too much dependence on apps makes or mars them. For example, Prof Constanza in Email a Troi relies only on emails for daily correspondence and a wrong email brings disaster in his life; while in Short and Tweet, Sonam, by mistake, sends a wrong file to her editor that catapults her to fame. Sometimes the world of apps becomes a trusted companion to loners like Shankar Appa. Run Zelda Run shows how technology has changed the way businesses are done and Shop Now depicts the changing nature of crimes.

The structure of the stories is precise and proportionate, following the artistic principles of harmony and unity. In the story Short and Tweet, the author hints at the basic principle of writing, 'they have called your story the most honest piece of writing that they almost wished came out from the hearts of single working mothers in Silicon Valley' (74). Here Issac is hinting at the basic principle of writing that is taught to students of creative writing, which is that good writing comes out of felt experiences, where the artist is true and honest. According to 19th century author Henry James, the final test of the story is when stories represent life, and are interesting. Stephen Crane, when asked what is the thing that makes his reportage appealing and successful, simply said 'felt experience'. The same is true for William Wordsworth, when he said his poems are 'emotions recollected in tranquility'. The stories before they take shape have to be experienced and felt. The author has to be honest. Here, the first- time author knows this well; he writes from his experiences and the stories touch a chord.

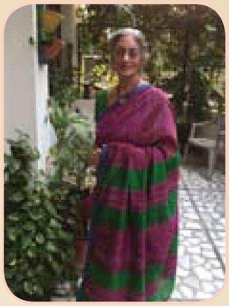

The characters are clearly outlined and relatable. The language is simple, racy and poetic. The subtle irony of each story hooks the reader till the end. The deft craftsmanship shown by a marketing professional in his first foray into writing stories is commendable.

The author's bio- note says that he traded his plush job for a short course in Script Writing, I get shivers. I know it pretty well that the career of a writer stands on a slippery ground, andeven the most well known writers have faced disappointments. Writing is a skill that requires a lot of reading, commitment, and perseverance. But Issac chose to tread on the path of overgrown weeds simply because, I feel, he had trust in his mettle. He is a writer who 'has sprung fully armed'.

Dr Vandana Agrawal
Associate Professor
Dept of English

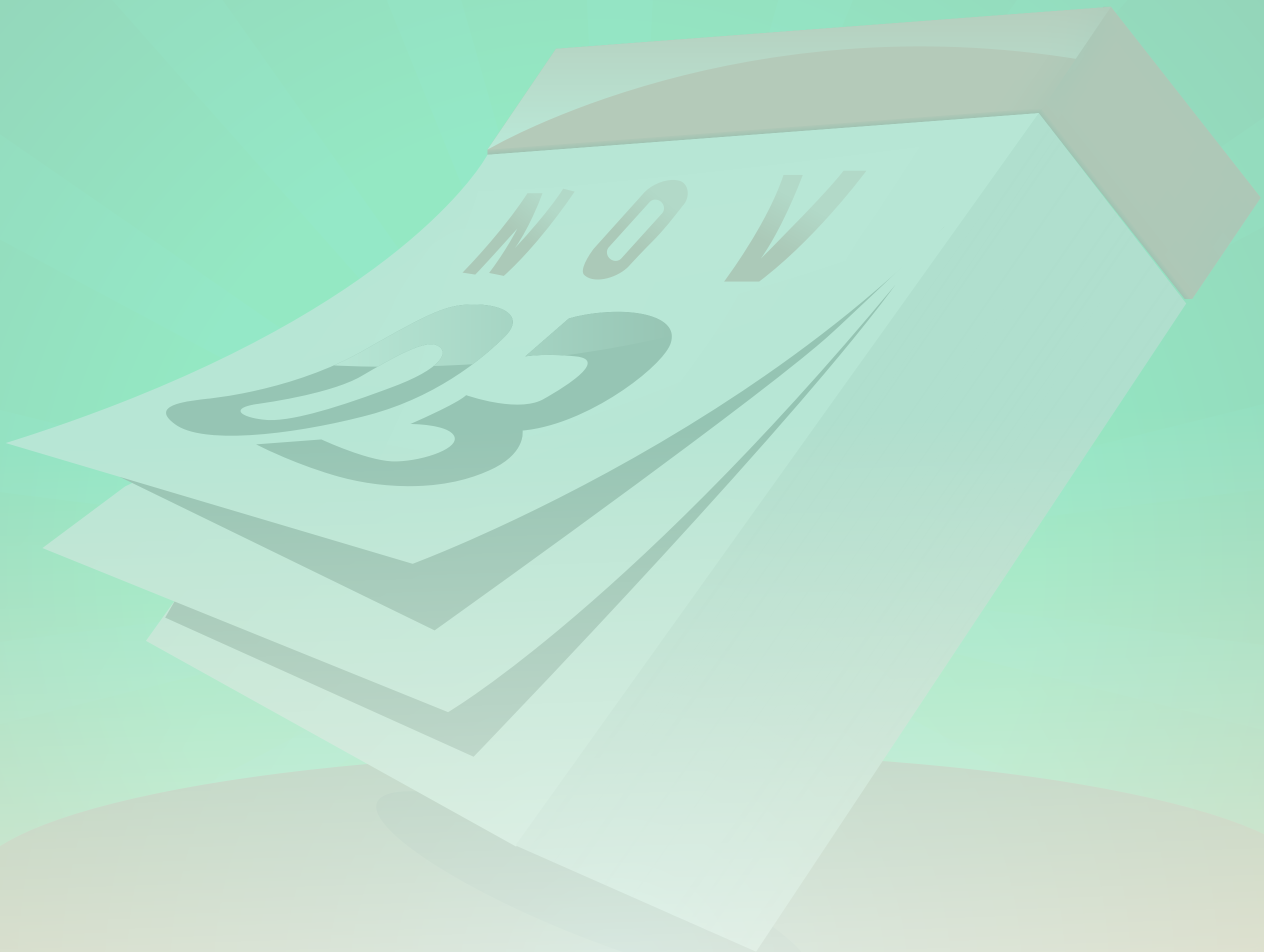

The Year That Was

Oh, when I look back now
That summer seemed to last forever
And if I had the choice
Yeah, I'd always wanna be there
Those were the best days of my life

Bryan Adams- Summer of 69

COMMERCIUM: THE COMMERCE SOCIETY

Commercium, The Commerce Society of PGDAV College is one of the most active and largest societies with more than 200 members. It provides a platform to students to hone their academic and extracurricular skills through various activities like Seminars, Quizzes etc.

The students' body was elected after conducting interviews on 14th August, 2017. The executive members elected for the session 2017-2018 are: **Mukul Singla (President), Neeraj Pandey & Ayush Kansal (Vice President(s)), Sajal Jain & Ayush Dhoundiyal (the two secretaries), Saumya Kapoor & Yash Gupta (Joint Secretary) Rohan Arora (Treasurer)**

The Faculty team consists of **Ms. Seema Aggarwal (Teacher in-charge), Sh. Surendra Kumar (Convenor), Ms. Monika Saini (Co-Convenor), Ms. Neerza (Co-Convenor), Ms. Ritu Gupta** and **Ms. Anindita Goldar.**

Commercium initiated this year's journey by celebrating Teacher's Day to acknowledge the efforts put in by the teachers in development of the students. The inaugural session was organized on 19th September, 2017. CA Abhinav Kalra (GST Panel Consultant) and CA Atul Gupta (Central Council Member, ICAI) graced the ceremony and shared insights on the then newly accepted tax system-GST. This year the students' team started their own blog- **FINANCIAL SCOOP** – managed by the members of the society. The blog is powered by their opinions and ideas related to the changes taking place in the economy. Taking chances and with a fresh outset, for the first time ever in PGDAV College, Commercium organized **"YOUTH CONCLAVE"** on 15th and 16th January 2018. The Commercium Team worked hard and tirelessly to not only made it a **"Self-Funded Event** but also generated surplus resources for their future events. The Session speakers were Acharya Shrivats Goswami, Mr. Suraj Saha (Vice President, Sales & Marketing, JIO), Mr. Onkar Khullar (Cause Artist), Mr. Vikrant Gupta (Sports Editor, TV Today Network), Mrs. Priyanka Chaudhary Raina (Social Activist), Mr. Tarun Anand (Founder, Universal Business School), RJ Raunac, Papa CJ (International Standup Comedian), Mr. C.K. Khanna (Acting BCCI President), Mr. Ankit Madan (CEO & Founder, Hasley India), Mr. Salman Khan Niazi & Mr. Zaman Khan (ASTITVA MUSIC BAND) and Mr. Arvind Gaur (Indian Theatre Director, Asmita). They all inspired students and faculty members with their success stories, life experiences and challenges.

The society organized various seminars, talks, sessions to improve the students' inter personal skills and for their all-round development. A session on **"Business Analytics"** was organized on 18th September, 2017. The speaker for the session was Prof. Nitin Sachdeva of IMT Ghaziabad. A talk on **"How to prepare for IAS"** was organized on 11th December, 2017 by Mr. Alok Kumar who is an IAS Trainer from Delhi. A talk on **"What after graduation"** by Prof. Shagun Arora of NDIM, Delhi was organized by the society on 8th January 2018. Another session on **"Career in civil services"** by Mr. Alok Kumar and Mr. Amrit Singh Chopra, Delhi was organized on 10th January 2018. To understand the recent advancement in cryptocurrency, a seminar on **"Understanding of Bitcoin"** by CA Sapna Jain of IMS, Noida was organized on 21st February 2018.

Carrying the same spirit of enthusiasm and success, the society is coming up with the Annual est, **COMMQUEST** with the theme of **"PARIVARTAN- CHANGING DYNAMICS OF INDIN ECONOMY".** The Commquest will include amazing and exciting events like B-Plan, Paper Presentation, Treasure Hunt, Mock Stock etc. The Society can be contacted on its facebook page http://www.facebook.com/pgdavcommercium/

DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE

One of the main constituent of our college, the department of computer science focuses on holistic development of its students by coupling studies and co-curricular activities so that they come out as an overall performer and contribute significantly to the society.

This year's session began with selecting the office bearers for ***'Parikalan'*** , the computer science society of our department, through various sets of interviews. Our first event was a Fresher's party to welcome the first year students of our department. This event served as an ice breaker between the seniors and the juniors as it gave a common platform to them for a fun interaction. Various exciting events such as free-style dance and Mr. and Ms. Fresher competition were held.

On 19th and 20th of September 2017, IIT Kharagpur in collaboration with our department organized **'UTTKRANTI – a workshop on BIG DATA'.** Students from various colleges of University of Delhi and other universities across the country were a part of this workshop. They were given hands on practical session and the event concluded with a competition. The winners of this competition were called for finals to IIT Kharagpur.

In the month of February, the department also organized a workshop of graphic designing and video editing for its members. Next, our department is looking forward to its annual technical festival **'XENIUM'** to be held on 19th of March 2018. The festival will include a plethora of fun events with a technical twist such as extempore, tech quiz, technical charades etc. Students across different colleges of University of Delhi and other universities will be invited to participate in various events of the fest.

ECOLIBRIUM

Department of Economics

Ecolibrium, the Economics society of PGDAV College, is a community given over to the furtherance of interest and awareness in economic matters. It is for the purpose of enabling students to think economically that it organized the following activities:

A fresher's welcome party for the batch of 2017-20 was organized on 14th September 2017. It was indeed a day filled with joy and happiness and rightly served its purpose of welcoming the fresher's to the Economics Department. All the second and third years leveled their creativity at its best to make this event a memorable one. From songs of friendship to a power packed dance performance, the event had it all. The event was complete with a cake cutting ceremony and the opportunity to groove to music. With smiles on new faces and resounding laughter, the fresher's welcome was the perfect day to let our hair down before moving on to the more academic events throughout the year. A paper presentation competition was organized on 11th October, 2017. The topics for the competition were 'Review of the 25 years of LPG reforms' and 'Analyzing the 2008 financial crises and its aftermath'. It was an inter college competition in which teams from all over Delhi participated and presented their papers and PPTs on either of the given topics. Different perspectives and dimensions of each topic were brought out and questions regarding the status quo were posed and answered. The competition witnessed enthusiastic participation from colleges like LSR, DTU, Shaheed Sukhdev, P.G.D.A.V. (E). Events such as this one enable students to learn about and apply concepts they learn in the classroom and thus form a wholesome pedagogic approach. The second edition of The Ecolibrium, the newsletter of the Economics Society was also launched on 11th October, 2017. The aim of the newsletter is to encourage discussion amongst the budding economists. It strives to transform the image of the discipline from a complex one to a simplistic and engaging one. The second edition is India centric and picks up crucial issues about our country that causes us to reflect upon the grave matters of today. The issues covered included the falling share of GDP devoted to the education sector, the concept of Universal Basic Income and our never ending battle with poverty. With the newsletter, the department has built a discourse around the socio-economic-political issues that shape our lives and the country we live in.

Each year, the society organizes its Departmental Fest, Ecolligence. It is organized with the aim of developing the economic intellect of students. This is an upcoming event scheduled for 15th March 2018 and will comprise of events like Mock Stock, Case Study, Auction, Quiz and Channel Management. The fest will be centered around the theme, The Economics of Growth: Towards Inclusive Growth and is expected to attract the best of minds across colleges in Delhi NCR. It will be graced by Dr Rathin Roy, Member, Prime Minister's Economic Advisory Council. A plethora of unique events, the fest is a confluence of year round efforts by Team Ecolibrium. But, no hard work pays off unless guided in the right direction. Hence, all our events have been realized through constant encouragement and never ending support from our teachers in charge, Dr (Ms) Dolly Narula, Dr (Ms) Sanghita Mondal and Ms Ritika Agarwal.

Team Ecolibrium

Shubham Bhardwaj - President

Yamin Yaqoob - Vice President

Surily Sahay - Vice President

Gitika Wahal - Secretary

Nilesh Dewangan - Treasurer

Apoorva Nautiyal - Joint Secretary

Sudhakar Brar - Technical Head

Abraham Verghese - Marketing Head

ECLECTICA

Department of English

Eclectica - The English Literary Society of the college organised a fun filled day of events for the session 2017-18. The annual self composed poetry recitation competition along with the essay writing competition or Kaleidoscope was organised on 20th February 2018. The purpose of these events was to bring out the latent talent of the students, which hides somewhere in the corners of the four walled classrooms.

In the poetry /slam poetry competition our budding poets captured various themes. From growing addiction with social media, to our longing for our home, to the never ending quest for love, to the enigma that is death, every possible theme was interpreted by the participants in their own way. Each poem was so unique and beautiful that our judges Ms. Urvashi Sabu and Ms. Lian Pui were torn between snapping their fingers and judging them. There were fourteen participants in total for poetry and slam combined. The first prize was bragged by Ankita Taneja, second by Karishma Sahoo, third by Swati Baruah and fourth by Kartik Gupta. For slam, the first prize went to Brinda Sharma, second to Akriti Pant, third to Sara Haque and fourth to Anubhav Tekwani and Isha Gupta.

The Essay writing competition was conducted in two rounds. The first round was held on 15th Feb ‘18. The theme for this round was

“Fairytale with a twist”. The second round was conducted on 20th Feb ‘18 where the participants were shown a video clip on loop. It was judged by Ms. Renu Kapoor and Ms. Pritika Nehra. The participants had to base their pieces of writing on what they interpreted from the video. The first prize went to Kanika Kataria and second to Anubhav Tekwani.

Following the success of last year the society organized BYOB - Bring Your Own Book on the day of the event. The book barter fair was a great success. Over 200 books were exchanged. A book for a book educates the youth!

SANKHYIKI

Department of Statistics

"Sankhyiki" the Statistics department society, organises departmental festival 'Skewsion' every year. It is an amalgamation of academia and some exciting events. This year we are planning to invite the co-founder of "SocialCops", a mission driven data company. They are a team of Engineers, Economists and Data Scientist who share the common purpose of making the world a better place through technology and data. We have also planned a plethora of fun filled activities and events like the mock-stalk, Crossfit extreme, Tambola Bingo etc. for this year's festival.

GEO-CRUSADERS - THE ENVIRONMENTAL SOCIETY

Mission Statement

The mission of Geo-crusaders is to create awareness and motivate students towards understanding various repercussions of environmental degradation and creating a healthy environment for our present and future generations. Issues regarding various socio-ecological aspects, ways of sustainable development as well as environment conservation will also be addressed. The society also aims to work in collaboration with other institutions working towards environmental awareness programs and conduct symposia, workshops, trips, and college projects to keep students updated with new researches and approaches towards keeping our environment in good health.

World Ecology, Environment and Development (WEED) Award

The College along with society was awarded by World Ecology, Environment and Development (WEED) Award by the International Association of Educators for World Peace in 26th World Environment Congress at Indian International Centre, New Delhi on 7/8 November, 2017.

Aravalli Utsav-2017 at India Habitat Centre

The society organized a visit to India Habitat centre on 14th November 2017 for the Under Graduate students under CBCS module. At Aravalli Utsav students came to know about the native flora and fauna of the Aravalli Mountain Range and also about the invasion of the alien species of Prosopis juliflora. They also got to know about the importance of the native flora and fauna to maintain the ecosystem in an effective way and the problems related with the invasive species Prosopis juliflora.

Plantation Drive

The society organized a plantation drive on 15th November, 2017 in the memory of Late AVM Shri. Vinod Rawat Ji. We along with our

students and office bearers of Geo-crusaders planted saplings of various plants which are native to Delhi. We also assisted an NGO-Leaders For Tomorrow (LFT) in carrying out plantation driveat our college campus.

Geo-crusaders @ Asian Waterbird Census 2018

The faculties are participating as volunteers in the Asian Waterbird Census 2018 being held during the month of January and February of the year. Dr. Richa Agarwal and Ms. Renu Jonwall participated in the census held at Okhla Bird Sanctuary on 6th January 2018 and at Delhi Zoo on 20th January 2018, under the leadership of ecologist TK Roy, state coordinator Delhi, AWC, Wetland International South Asia. The reports covering the census have been published in various leading newspapers.

Cleaning the campus

Geo-crusaders organized cleanliness drives in the college campus in the academic year of 2017-2018. More than 100 students along with the faculty members of the society participated in the drive, collecting waste paper, bottles and other non-biodegradable waste. Students also created awareness among their friends and colleagues through posters, newspaper cuttings and interactions; and encouraged them to keep their campus neat and clean. Members of the society also placed and tagged the coloured dustbins (both blue and green) in the college area to inculcate the habit of throwing dry and wet wastes separately.

Geo-crusaders at Aaghaz 2018

The members of Geo-crusaders celebrated the Annual Fest “AAGHAZ’18” on 1st and 2nd February 2018, by fostering the youth to safeguard the environment. The society came out with flying colours as it was able to attain its objective of creating awareness among the youth by putting up posters and showcasing the documentary related to World Wetlands Day. The activities which were organised by Geo-Crusaders included:

- Placement of coloured dustbins (both blue and green) in the college area to inculcate the habit of throwing dry and wet wastes separately.
- Different games which involved:

a. Environmental Quiz
b. Word search (searching environment related words)
c. Celebrate world Wetlands Day

'चिंतन' - हिन्दी साहित्य सभा

'नित चली आ रही है परंपरा,
संस्कृति में नवीनता लाने को।
हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हैं आये,
नव गति, नव उत्साह दिखाने को।'

हिंदी विभाग उच्चता के शिखर पर पहुँचता देख स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हिंदी विभाग ने साहित्यिक एवं अन्य गतिविधियों का आयोजन किया। जिससे विद्यार्थियों में उत्साह एवं उमंग की एक लहर संचारित हुई। सत्र 2017-18 के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों के नियोजन को ध्यान में रखते हुए हिंदी विभाग के प्रभारी डॉ अवनिजेश अवस्थी एवं 'चिंतन' हिंदी साहित्य सभा संयोजक डॉ मनोज कुमार कैन के निर्देशन में छात्र पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों का गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष पद हेतु निर्देश प्रजापति, उपाध्यक्ष-अभिषेक कश्यप एवं तसलीमा खान, सचिव-रोहित, सह-सचिव-आनंद मिश्रा एवं सविता का चयन हुआ। साहित्यिक कार्यक्रमों में सर्वप्रथम 'चिंतन' हिंदी साहित्य सभा द्वारा 20 अगस्त 2017 को 'नवागंतुक समारोह' आयोजित किया गया। जिसमें विभिन्न प्रकार की स्पर्धाओं को आधार बनाकर नवागंतुकों को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का अवसर मिला। उन्हें पुरस्कृत भी किया गया। हमारे प्राचार्य डॉ मुकेश अग्रवाल ने आशीर्वाद रूपी वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि -''शिक्षा ही वह माध्यम है जो युवा वर्ग को राष्ट्र की उन्नति के लिए प्रेरित करता है और उन्हें सक्षम एवं चरित्रवान बनाता है।''

'चिंतन' हिंदी साहित्य सभा द्वारा आयोजित कार्यक्रम की अगली श्रृंखला में दिनांक 12-10-2017 को महाविद्यालय के नवीन संगोष्ठी कक्ष में 'हास्य कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया। अपनी कविताओं से सबके हृदय में नव चेतना का संचार करने वाले कविगण महेंद्र शर्मा, दीपक गुप्ता, शंभू शिखर आदि का आगमन हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं स्वागत गीत से हुआ। हास्य कवियों ने अपनी कविताओं द्वारा प्राध्यापकों, विद्यार्थियों एवं उपस्थित समस्त श्रोताओं को मंत्रमुग्ध ही नहीं किया अपितु राष्ट्र चेतना, युवा शक्ति, मातृभाषा आदि विषयों को अपनी कविताओं में स्थान देकर श्रोताओं को जागरुक भी किया। इस कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ मुकेश अग्रवाल, डॉक्टर अवनिजेश अवस्थी (प्रभारी), डॉ कृष्णा शर्मा, डॉ वीणा, डॉ सुषमा चौधरी, डॉ मनोज कुमार कैन (संयोजक) के साथ-साथ विभाग एवं महाविद्यालय के

प्राध्यापक तथा छात्र उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समापन के समय आगंतुक हास्य कवियों द्वारा पौधारोपण करके छात्रों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी जागरुक किया। पौधारोपण के दौरान प्राचार्य, प्रभारी, संयोजक एवं चिंतन पदाधिकारी आदि उपस्थित रहे।

इसी कड़ी में मातृभाषा को बढ़ावा देने और उसके प्रति विशेष लगाव को ध्यान में रखते हुए हिंदी विभाग की प्राध्यापिका डॉ सुषमा चौधरी के निर्देशन में मातृभाषा दिवस पर दिनांक 21-02-2018 को वाद विवाद (विषय-आधुनिक परिप्रेक्ष्य में मातृभाषा) एवं निबंध (विषय-मातृभाषा) प्रतियोगिता का आयोजन 'चिंतन' हिंदी साहित्य सभा द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता में महाविद्यालय के हिंदी विभाग के अतिरिक्त अन्य पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों ने भागीदारी की। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। प्रतियोगिता में हिंदी विभाग के तृतीय वर्ष के छात्र निर्देश प्रजापति को वाद विवाद में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय वर्षीय छात्र आनंद कुमार मिश्र ने प्रथम स्थान, निर्देश प्रजापति द्वितीय एवं तस्लीमा खान (तृतीय वर्ष) ने तृतीय स्थान पाकर हिंदी विभाग को गौरवान्वित किया। कार्यक्रम की श्रृंखला में चिंतन द्वारा एक और प्रतियोगिता- साहित्यिक प्रश्नोत्तरी एवं साहित्यिक गीत प्रतियोगिता का आयोजन अंतर्महाविद्यालयी स्तर पर किया गया। हिंदी विभाग के विद्यार्थी महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, एवं अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में भागीदारी कर कॉलेज का मस्तक गर्व से ऊँचा कर रहे हैं।

हमारे महाविद्यालय के 'उत्कृष्ट शिक्षा के 60 वर्ष' पूरे होने पर 'हीरक जयंती' के अवसर पर महाविद्यालय के प्रणेता दयानंद सरस्वती के योगदान को दृष्टिगत रखते हुए अंतर्महाविद्यालयी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें हमारे हिंदी विभाग के तृतीय वर्षीय छात्र निर्देश प्रजापति ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। निर्देश प्रजापति ने लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर वीमेन में साहित्यिक गीत प्रतियोगिता में प्रथम, गाँधी भवन (दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित खुली निबंध प्रतियोगिता में सुलेखन हेतु द्वि तीय, हिंदुस्तानी प्रचार सभा, मुंबई द्वारा आयोजित अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता में प्रोत्साहन पुरस्कार, हिंदुस्तानी जवान युवा पत्रिका में संपादक मंडल में स्थान, भारतीय साथी संगठन (वालंटियर फॉर ग्रेट इंडिया) द्वारा राष्ट्र

निर्माण में साहित्य, समाज सेवा, परोपकार के कार्य के उपलक्ष्य में 'इंडियन स्टूडेंट नोबेल अवार्ड 2018' से सम्मान आदि पुरस्कार प्राप्त किया। तृतीय वर्षीय छात्र नवीन ने शिवाजी कॉलेज में वाद विवाद प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। विभाग के विद्यार्थियों ने साहित्यिक प्रतियोगिताओं में ही नहीं अपितु क्रीड़ा क्षेत्र में भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। विभाग के द्वितीय वर्षीय छात्र मनजीत सिंह ने मुक्केबाजी प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया। इसी तरह विभाग के अनेक विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़ बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया गया। 'हिंदी विभाग' छात्रों के उज्जवल कदमों से गौरवान्वित है एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

सत्र का समापन तृतीय वर्षीय छात्रों के विदाई समारोह एवं उनके आगामी शिक्षा के लिए शुभकामनाओं के साथ संपन्न हुआ।

आनंद कुमार मिश्रा
हिंदी विशेष (द्वितीय वर्ष)

DHAROHAR

Department of History

The Department of History started its session with the appointment of new office bearers for the History Society 'DHAROHAR'. The society under the new leadership organized a programme to welcome the freshers in the month of September 2017. It was a fun filled event where the students, both old and new, got a chance to showcase their many talents.

On 23rd February 2018, the students of the Department went on an excursion to Fatehpur Sikri which provided them an opportunity to witness the architectural marvels of the magnificent Mughals, especially of the reign of Akbar. The very fact that the entire excursion was meticulously planned and managed by the students, shows that it was much more than just an educational tour. It not only ignited the young minds with an interest in the past but the entire exercise also taught them the importance of qualities like co-operation, team work and leadership – some of the many virtues which would benefit them in times to come.

Dharohar organized the annual festival of the Department called 'ATEET' on 21st March, 2018. Eminent historian, Dr. Meenakshi Jain (Member of ICHR) was the guest speaker for the event and delivered a talk on 'Medieval India As Gleaned Through Non-Persian Sources'. Various activities involving active participation from the students like Paper Presentation on 'Deconstructing Gender in Indian Cinema'; Photographic Exhibition on ' Lost And Forgotten Water Bodies of Delhi', were also held.

The Department plans to continue to organize many such events in the months to come to equip the students with better understanding of history and assist them in their future endeavor.

ANANT

Department of Mathematics

Mathematics department of PGDAV College is one of the best in Delhi University. Every year our students are achieving great results, many of our students pursue MSc. Mathematics from IIT .

Anant Mathematics Society, the departmental society works throughout the year for the all round development of the students. Every year the society elects its student representatives to organize various activities , lectures and competitions to keep students updated with the latest developments in the subject.

We begin the session by welcoming our freshers by organizing fun activities for them and try to give them the feel of the subject . The society is organizing Intra-College paper presentation on 30th march'2018.

Anant Mathematics society is organizing its Annual Inter-College festival - SPECTRUM 2018 on 5th April 2018 . The theme of our festival this year is "Mathematics in Nature "

Prof.B.K.Das (Ex Head of the department ,Department of Mathematics, Delhi University) has agreed to be the Chief Guest , he will speak on 'Scope of Mathematics '

Dr. Satish Kaushik will be the Guest of Honour for the same. He is a known personality in IT.

The society will organize various Mathematical competitions viz-a-viz. Paper presentation , Mathematical Rangoli , Quiz , JAM (just about mathematics) and so on.

In the end we give farewell to our outgoing batch and wish them good luck for their bright future .

We sincerely hope the Society will continue to work for the betterment of the students .

Anu kapoor
Teacher -in-Charge
Department of Mathematics
PGDAV College

वेद व्याख्यान-मञ्जरी

संस्कृत विभाग

संस्कृत विभाग द्वारा सर्वप्रथम 9 सितंबर 2017 को संस्कृत-समवाय के पदाधिकारियों की नियुक्ति के लिए सभा बुलाई गई जिसमें पदाधिकारियों का चयन हुआ। इसके अनन्तर दिनांक 25 सितंबर 2017 को नवागंतुक छात्रों के स्वागत समारोह का आयोजन किया गया जिसमें किसी भी रुप में संस्कृत विषय पढ़ने वाले सभी छात्रों को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर डॉक्टर चाँद किरण सलूजा जी ने छात्रों को उद्बोधित कर उनका उत्साहवर्धन किया।

इस वर्ष संस्कृत-समवाय द्वारा पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय के हीरक जयंती वर्ष के अवसर पर इस वर्ष से महाविद्यालय में संस्कृत-विभाग के तत्त्वावधान में वेद-व्याख्यान-मञ्जरी नामक वैदिक व्याख्यानमाला का भी प्रारंभ किया गया जिसके अंतर्गत प्रथम व्याख्यान डॉ. जी.सी. त्रिपाठी (निदेशक, योगीलाल लहरचन्द इन्स्टीट्यूट, दिल्ली) का दिनांक 14 अक्टूबर 2017 को संपन्न हुआ। उनका विषय था – 'मानव की आध्यात्मिक चेतना का प्रथम उन्मेष-वेद'। इस व्याख्यान में उन्होंने छात्रों को वेद के कई ऐसे रहस्यों से अवगत कराया जिनसे वह अभी तक अनभिज्ञ थे।

द्वितीय व्याख्यान 30 जनवरी 2018 को प्रोफेसर कपिल कपूर का 'वेदों की सार्वभौमिकता' विषय पर हुआ। इस व्याख्यान में उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा, वेदों की महत्ता, वैदिक वाङ्मय की विशालता तथा उनमें संचित ज्ञान आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने अत्यंत ही सरल और रोचक तरीके से छात्रों को वेदों में संचित ज्ञान के विषय में समझाया। उन्होंने बताया कि हमारा ज्ञान श्रुति परंपरा में होने के कारण कभी नष्ट न होने वाला है। यह ज्ञान कई बार लुप्त हुआ, परंतु हर बार अनेक प्रतिभाशाली चिंतकों द्वारा यह पुनर्जीवित हो गया उन्होंने मैक्समूलर का उदाहरण देते हुए कहा कि मैक्समूलर का भी मानना था कि यदि वेद की सभी प्रतिया भी नष्ट हो जाएँ तो भी इसे मौखिक परंपरा द्वारा संचित ज्ञान के आधार पर पुनः अर्जित किया जा सकता है। इस प्रकार वेदों की सार्वभौमिकता का आशय यह है कि इसमें वर्णित ज्ञान देश-काल की सीमा से भी अविच्छिन्न है।

तृतीय पुष्प के रूप में श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में वास्तु-विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर देवी प्रसाद त्रिपाठी का व्याख्यान हुआ। इनका विषय रहा – 'वेद का एक अंग – ज्योतिष'। इन्होंने अपने वक्तव्य में सर्वप्रथम बहुत ही सरल और सुंदर उदाहरण देकर समझाया कि वैदिक ऋषियों को मंत्रों का श्रोता, वक्ता या कर्ता न कहकर, मंत्रों का द्रष्टा क्यों कहा गया है। तदनंतर इन्होंने छः वेदांगों में से एक ज्योतिष का वैज्ञानिक पक्ष प्रस्तुत किया और बताया कि यदि इसका सही तरीके से अध्ययन किया जाए तो यह अन्य किसी भी आधुनिक तकनीक से अधिक सटीक परिण ाम देता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कुछ अन्य वेदांगों के विषय में भी संक्षिप्त रूप से बताया।

चतुर्थ व्याख्यान डॉ. सम्पादानन्द मिश्र का 26 मार्च 2018 को हुआ। वे श्री अरविन्द भारतीय संस्कृत संस्थान, पुदुच्चेरी में निदेशक के पद पर कार्य कर रहे हैं। उनका विषय रहा– 'वेद-एक भूमिका' डा. सम्पदानन्द मिश्र जी ने अपने व्याख्यान में वेदों को समझने की दृष्टि गीता के माध्यम से दी। उनका मानना है कि वेदों में प्रवेश पाने के लिए अथवा उन्हें समझने के लिए वेदों का ज्ञान आवश्यक है इसी प्रकार गीता को समझने के लिए वेदों का ज्ञान आवश्यक है। इस प्रकार वेद और गीता एक दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं। वेदों को जानने के लिए उनके विषय में ज्ञान होना भी आवश्यक है। अर्थात वेद क्या है? उनकी संख्या

कितनी है? उनकी विषय वस्तु क्या है? डा. मिश्र के अनुसार वेद शब्द की उत्पत्ति 'विद' धातु से हुई है जिसके कई अर्थ होते हैं परन्तु तीन अर्थ मुख्य हैं। 'विद्' धातु का एक अर्थ 'विद्यते' अर्थात् विद्यमान होना है, दूसरा अर्थ है ज्ञान अर्थात जानना तथा तीसरा अर्थ 'पाना' अर्थात लाभ है। वेद चार पुस्तकों में निबद्ध कोई ग्रन्थ नही है जिसे पढ़कर समझा जा सके अपितु वेद अनन्त है। इसके लिए भाषा का कोई बन्धन नहीं हैं क्योंकि भाषा तो किसी भी वस्तु का व्यक्ति को इंगित करने के लिए एक माध्यम है। इसलिए वेद का अर्थ सत्‌चित् आनन्द है जो इस अवस्था को समझने के लिए ऋषि चरित्र विकसित करना पड़ेगा और ऋषि वे व्यक्ति होते हैं जो दृष्टि, श्रुति और विवेक इन तीन गुणों से सम्पन्न होते हैं। वेद किसी व्यक्ति द्वारा रचित ग्रन्थ नहीं है, इसे ऋषियों ने अनुभूत किया है। इस प्रकार यह अनुभूतियों का संग्रह है। इसलिए वेद को अपौरुपेय कहा जाता है अपौरुषेय का अर्थ है – साधारण चेतना से उपर उठकर ऊर्ध्व चेतना में जीवन जीने वाला व्यक्ति।

वेद को पढ़ने के लिए किसी भी व्यक्ति को पहले अधिकारी बनना पडेगा। इसके लिए जाति, लिंग, धर्म या स्थान का कोई बंधन नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति में अधिकारी बनने के लिए सामर्थ्य है। किसी भी चीज़ को प्राप्त करने के लिए अधिकारी बनने वाले व्यक्ति में दो गुण होने आवश्यक हैं- पूर्ण समर्पण और उदेद्श्य की पवित्रता (Purity of Purpose) वेद के अधिकारी में भी यही गुण होने चाहिए। अस्तु 'शिव संकल्पमस्तु' वेद की धारणा के साथ हम आगे बढ़ें।

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

The Department of Political Science took a major step towards improving the quality of our students this year, as early as at the time of admissions. The faculty prepared a proforma to be filled by first years at the time of admission, wherein the information about their parents' education, schooling, goals etc were sought. The purpose was to groom them in a customized manner right from the beginning and follow their progress in the coming three years of their stay. The Department repeated the exercise with the second years students as well.

Political Science Society 'Samvaad' conducted the elections to elect its office bearers for the year 2017-18. The following are the office bearers:

President: Ravi, 3rd year.

Vice-President: Anurag Sharma, 2nd year

Secretary: Tushar Sharma, 2nd year.

Joint-Secretary: Divyanshu, 1st year.

Treasurer: Mohini Singhal, 1st year.

A trip to Parliament and a Inter-College Festival of the department was held on 17th March, 2018. Apart from the regular quiz and declamation contests a novel experiment of having a competition on 'policy-making' was held.

सांस्कृतिक समिति

एक झलक मात्र

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों की धरोहर सदा से ही सांस्कृतिक समिति के पास रही है, इस समिति का मुख्य कार्य है छात्रों में छिपी प्रतिभा का विकास करना और उन्हें समुचित मंच प्रदान करना। इसके लिए महाविद्यालय स्तर पर कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है और फिर श्रेष्ठ छात्रों को विश्वविद्यालय स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर मंच प्राप्त होता है जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास होता है।

'Hyperion Society' एक वटवृक्ष की तरह है जिसमें 'रागा' Society भारतीय संगीत की धारा को लिए है 'Conundrum' पाश्चात्य संगीत में धनी है। 'Rapbeats' एक मात्र ऐसी Society है जो आधुनिकता के साथ तालमेल बैठाकर चल रही है। नृत्य में भी तीन अलग-अलग शाखाएँ हैं जैसे 'नटराज' भारतीय शास्त्रीय नृत्य से परिपूर्ण है। 'जलसा' Society में लोक नृत्य को प्रमुखता दी जाती है और तीसरी श्रेणी है 'स्पंक' (Spunk Society) जिसमें पाश्चात्य नृत्य को सिखाया जाता है। इस तरह हर श्रेणी के नृत्य को प्रमुखता दी जाती है। 'Impressions' थ्पदम ।तजे (फाइन आर्ट्स) ललित कला समिति है जिसमें चित्रकला, स्केचिंग और रंगोली के अद्भुत कलाकार हैं। 'रुद्र' नुक्कड़ नाटक सोसाइटी है जिसमें समसामयिक विषय पर नाटकों को खेला जाता है।

'नवरंग' थियेटर सोसाइटी है जिसमें रंगमंच पर नाटकों का मंचन किया जाता है। 'प्तपे' फोटोग्राफी (Photography) की सोसाइटी है जिसमें मुख्यतः प्रतिछाया की प्रदर्शनी लगाना, विभिन्न विषयों पर फिल्म का निर्माण करना और अनेक प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना। अभी तक की सभी सोसाइटी कलात्मक अभिरुचि से सम्पन्न हैं। 'चाणक्य' सोसाइटी बौद्धिक क्षमताओं की परिचायक हैं जिसमें अच्छे वक्ता तैयार करना, रचनात्मक लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, Paper Presentation, काव्य लेखन और ?नप्र प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया जाता है। मुख्यतः विद्यार्थियों की लेखन एवं वक्तृत्व की प्रतिभा को निखारा जाता है। इस समिति का कार्य प्रवेश-प्रक्रिया से आरंभ हो जाता है। महाविद्यालय के 'Orientation Day' (अभिविन्यास दिवस) पर नए छात्रों को सांस्कृतिक समिति के विभिन्न अंगों का परिचय दिया जाता है और इस समिति के कार्यरत विद्यार्थी अपनी प्रतिभा का परिचय भी देते हैं।

इस वर्ष कॉलेज के स्थापना दिवस को 'हीरक जयंती समारोह' के रूप में 17 अगस्त, 2017 को मनाया गया। समारोह की विशिष्ट अतिथि विख्यात नृत्यांगना पद्म विभूषण डॉ. सोनल मानसिंह थीं, मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और राज्यसभा सांसद डॉ. विनय सहस्रबुद्धे रहे। समारोह के प्रारम्भ

में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत किया तत्पश्चात रागा समिति के छात्रों ने शुभम करोति वंदना का सामूहिक गान प्रस्तुत किया। महिला सशक्तिकरण के बारे में बोलते हुए डॉ. सोनल मानसिंह ने कहा कि आज जबकि जीवन के हर क्षेत्र में महिलायें आगे आ रही हैं पर सच्चाई है अभी तक वहाँ नहीं पहुँची है जहाँ पूरी तरह महिला सशक्तिकरण को स्वीकार किया जाए। आगे उन्होंने कहा शिक्षा का मंदिर मात्र शिक्षण के लिए नहीं बल्कि यह हमें जीने के लिए जीवन मूल्य और संस्कार सिखाता है। अपनी मातृभाषा में वह संस्कार है जिसकी खनक हमें अपनी संस्कृति का परिचय देती है। मुख्य अतिथि डॉ. विनय ने इस अवसर पर डी.ए.वी. संस्थानों के गौरवमय अतीत को प्रस्तुत करते हुए उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर गणमान्यों की सम्मानित उपस्थिति रहीं जिसमें कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. मोहनलाल जी, हंसराज कॉलेज के पूर्व प्राचार्य एस. आर. अरोरा, महाविद्यालय के चेयरमैन डॉ. रविन्द्र कुमार आदि उपस्थित रहे। समारोह में प्तपे सोसाइटी ने कॉलेज के 60 वर्षों के इतिहास पर एक फिल्म बनाई जिसका प्रदर्शन किया गया। कॉलेज की स्वइइल में फोटो प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया जिसमें 60 वर्षों के इतिहास को फोटो के माध्यम से चित्रित किया गया। इसके अतिरिक्त Impressions Fine Art सोसाइटी ने स्वामी दयानन्द और डी.ए.वी. के महत्व को चित्रों के माध्यम से उभारा। नए सभागार में कार्यक्रम का आयोजन किया गया जहाँ छात्रों ने लोकनृत्य, पाश्चात्य नृत्य और एक नाटक की सुंदर प्रस्तुति की। इस तरह महाविद्यालय के छात्रों ने भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम को प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम का समापन डी.ए.वी. की महत्ता बताते हुए डी.ए.वी. गान से किया गया। जिसकी अतिथियों ने भूरि भूरि प्रशंसा की।

25 अगस्त से 6 सितम्बर तक समिति ने विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जिसमें प्रथम वर्ष के छात्रों को प्रमुखता दी गई। प्रथम वर्ष के छात्रों के स्वागत हेतु और उनकी प्रतिभाओं के उदघाटन हेतु 15 सितम्बर, 2017 को 'एक्सप्लोरेंजा' का आयोजन किया गया। इसी अवसर पर नवनिर्वाचित छात्रसंघ के पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण प्राचार्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि युवा नेता और सांसद श्री वरुण गाँधी का उद्बोधन एवं मार्गदर्शन छात्रों को मिला कि हमें नागरिक क्रांति की आवश्यकता है। नागरिक का अर्थ हर पाँच साल में बटन दबाना नहीं है बल्कि हमें देश की समस्याओं के प्रति जागरूक भी होना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारा संसद नीति का केंद्र नहीं, राजनीति का केंद्र बन गया है, पर हम अपनी जागरूक सोच से और पारदर्शिता ला सकते हैं।

1 और 2 फरवरी 2018 को कॉलेज में वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव 'आगाज' का आयोजन किया गया। इस उत्सव की योजना और रूपरेखा बहुत पहले से ही प्रारंभ थी। इस क्रम में 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम की प्रस्तुति हेतु हमने लगभग 36 महाविद्यालयों के प्रतिभागियों को आमंत्रित किया जिसमें से श्रेष्ठ छः सफल नाटकों को

'नवरंग' थियेटर सोसाइटी ने 'अभिव्यक्ति' के अंतर्गत 24 जनवरी, 2018 से निर्णायक मण्डल के समक्ष प्रस्तुत किया। इस अवसर पर रंगचेता, गंभीर नाट्य विशेषज्ञ और सक्रिय पत्रकार डॉ. जयदेव तनेजा ने सभागार को संबोधित किया।

29 जनवरी, 2018 को रुद्र नुक्कड़ नाटक सोसाइटी ने 17 नुक्कड़ नाटकों का सफल प्रदर्शन किया जिसमें सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को उठाया गया, जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

इस सांस्कृतिक वार्षिक उत्सव का मूलभाव था 'सफरनामा' जिसके अंतर्गत छात्रों ने चित्रों के माध्यम से, फिल्म प्रस्तुति के माध्यम से एवं रंगोली के माध्यम से जीवन के विविध पहलुओं को जीवंत किया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थी सुविख्यात हिन्दी लेखिका, समाज सेविका, कुशल प्रशासिका और वर्तमान में गोवा की राज्यपाल डॉ. मृदुला सिन्हा। मुख्य अतिथि ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि मैं अक्सर जब दिल्ली विश्वविद्यालय के पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज के सामने से गुजरती थी तो गेट तक न आकर दूर से ही विद्या के इस प्रांगण को प्रणाम कर लेती थी क्योंकि यहाँ संस्कारों की शिक्षा पर बल दिया जाता है। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन और वेदमंत्र के साथ हुआ। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष और पांचजन्य के पूर्व संपादक डॉ. बलदेव भाई शर्मा जी। आपने छात्रों के जीवन में सांस्कृतिक महत्व को समझाते हुए कहा कि हमें शिक्षित होने के साथ-साथ अपने जीवन मूल्यों के महत्व को समझना होगा तभी स्वस्थ जीवन और स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। इस विशाल कार्यक्रम में विभिन्न महाविद्यालयों के प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इस बार जो नए कार्यक्रम आयोजित किए गए वे इस प्रकार हैं 'पहचान' एक चित्र-प्रदर्शनी थी जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों से श्रेष्ठ चित्रकला के नमूनों को मंगवाया गया, इस प्रकार आकर्षक चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन महाविद्यालय के प्रांगण में किया गया जिसमें श्रेष्ठ दस महाविद्यालयों को स्थान दिया गया। 'न्यूज पेपर परिधान' प्रतियोगिता में भी छात्रों ने अपनी कला से सभी को अभिभूत कर दिया। इसी क्रम में कॉफी पेंटिंग की चित्रकारी ने भी सबका मन मोह लिया। फेस (Face Painting) की भी सभी ने सराहना की। 'चाणक्य' सोसाइटी ने काव्य प्रतिगोगिता का आयोजन किया जिसमें निर्णायक मण्डल को प्रमुखता न देकर दर्शकों के महत्व को समझाया गया और दर्शकों के मत के अनुसार पुरस्कार विजेता चुने गये। इस तरह का प्रयोग महाविद्यालय में

पहली बार किया गया। इसी क्रम में Street Dance एक नई प्रतियोगिता थी जिसकी निर्णायक मण्डल ने

बहुत प्रशंसा की। नया प्रयोग तो फोटोग्राफर सोसाइटी ने भी किया उन्होंने सभी प्रतिभागियों को महाविद्यालय के आयोजन पर फिल्म बनाने का कार्य दिया। जिसमें प्रतिभागियों का स्तर दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। प्रत्येक प्रतियोगिता की चर्चा संभव नहीं है क्योंकि 1 और 2 फरवरी में 27 प्रमुख प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें 70 प्रमुख महाविद्यालयों ने हिस्सा लिया। इस भव्य समारोह में पहले दिन 'द लोकल ट्रेन बैंड' (The Local Train Band) ने अपनी कला का अद्भत प्रदर्शन किया और दूसरे दिन प्रसिद्ध पंजाबी लोक गायक मिलिंद गाबा ने अपने गायन से छात्रों का मन मोह लिया। इस कार्यक्रम में छात्रों की इतनी अधिक भागीदारी रही जितनी पी.जी.डी.ए.वी. के इतिहास में कभी न रही होगी। लगभग 12 हजार दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र उपस्थित रहे।

इस समारोह के सफल आयोजन में छात्रसंघ के परामर्शदाता श्री रामवीर एवं छात्रसंघ के पदाधिकारियों का महत्वपूर्ण सहयोग मिला जिसके लिए सांस्कृतिक समिति उनकी आभारी है। इतने विशाल स्तर पर जब भी कार्यक्रम का आयोजन होता है तो छात्र वर्ग, शिक्षक समुदाय, प्रशासक वर्ग सभी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

18 फरवरी, 2018 को हीरक जयंती समारोह के कार्यक्रम में तब अविस्मरणीय पल आ गए जब महाविद्यालय में राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द जी आए और अति प्रसन्नता और गौरवान्वित हुए जब हमें ज्ञात हुआ कि राष्ट्रपति जी भी डी.ए.वी. परिवार के ही एक सदस्य हैं। आप ने केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं स्किल इंडिया, मेक-इन-इंडिया, स्टार्ट-अप-इंडिया के बारे में छात्रों को अवगत करवाया। साथ ही महाविद्यालय के महत्व को बताते हुए कहा कि पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज विश्वविद्यालय में ज्ञान की अर्थव्यवस्था का नेतृत्व कर रहा है। इसलिए सरकारी योजनाओं का लाभ लेते हुए अपना विकास करके समाज में रोजगार के अनेक अवसर पैदा करने चाहिए। इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश त्यागी ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि आज के युवाओं की भूमिका केवल स्वयं को शिक्षित करना नहीं बल्कि उन्हें पर्यावरण-प्रबंधन और सामाजिक मूल्यों के उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। उस अवसर पर प्रख्यात शिक्षाविद डॉ. सतीश शर्मा ने डी.ए.वी. संस्थानों के महत्व को बताते हुए कहा कि इस संगठन ने छत्तीसगढ़ और झारखंड जैसे अविकसित क्षेत्रों में शिक्षा के लिए उत्कृष्ट कार्य किया है। इस तरह इस कार्यक्रम में भी सांस्कृतिक समिति ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया और सभी छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़ कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

हीरक जयंती समारोह के कार्यक्रम के आयोजन में मार्गदर्शन के लिए हमारे साथ डॉ. अशोक गुप्ता जी थे।

21 फरवरी 2018 को सांस्कृतिक समिति और हिन्दी विभाग की 'चिंतन समिति' ने मिलकर 'मातृ-भाषा दिवस' को बड़ी धूम-धाम से मनाया। इसमें निबंध-प्रतियोगिता और भाषण प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया।

इस कार्यक्रम में भी छात्र-छात्राओं की बड़ी संख्या में भागीदारी रही।

आगामी कार्यक्रम में विशेष आकर्षण TEDx P.G.D.A.V. College रहेगा जिसका आयोजन 14 अप्रैल, 2018 को किया जाएगा।

8 मार्च 2018 को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस पर नवरंग थियेटर सोसाइटी ने 'त्यागपत्र' नाटक का मंचन किया जो कि स्त्री समस्या पर आधारित था। ताकि महिला को सशक्त किया जा सकें।

सांस्कृतिक समिति के कार्यक्रमों का आधार स्तंभ हमारा 'छात्र' है जो अथक परिश्रम करते हैं। कला के प्रति सम्मान, रुचि एवं प्रतिभागिता उनका मूलमंत्र रहा है। हमारे उत्सव की सफलता का श्रेय इन्हीं को जाता है। इसी क्रम में सांस्कृतिक समिति के सदस्यों के सहयोग, परामर्श और अथक परिश्रम की सराहना करना अनिवार्य है।

शिक्षक टीम

डॉ. ऋचा अग्रवाल, श्रीमति मेघा अग्रवाल,
सु. भावना मिगलानी, डॉ. अर्पणा दत्त,
डॉ. परमानंद शर्मा, सु. प्रीति लखानी, डॉ. नितिन

छात्र टीम

अध्यक्ष- कनिष्क सचदेवा
वरिष्ठ उपाध्यक्ष- भरत जैन
उपाध्यक्ष- अनमोल
सचिव- वसीम अख्तर,
संयुक्त सचिव- मलय मेहता
कोषाध्यक्ष- मुस्कान सिंह
सह कोषाध्यक्ष- शुभम अग्रवाल

डॉ. सुषमा चौधरी
(सांस्कृतिक समिति
संयोजिका)

सुझाव | डीयू के पीजीडीएवी कॉलेज में एक्सप्लोरेंजा 2017 कार्यक्रम का शुभारंभ

देश में राइट टू रिकॉल की जरूरत : वरुण गांधी

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : पीजीडीएवी कॉलेज में शुक्रवार को नवनिर्वाचित छात्रसंघ पदाधिकारियों को शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि भाजपा सांसद वरुण गांधी रहे। उन्होंने छात्रों को राइट टू रिकॉल का महत्व समझाया व कहा कि देश की कई समस्याओं का समाधान इसी में निहित है।

पीजीडीएवी कॉलेज में शुक्रवार को एक्सप्लोरेंजा 2017 कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस दौरान नवनिर्वाचित छात्रसंघ पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए भाजपा सांसद वरुण गांधी ने कहा कि हमारी संसद अब नीति के केंद्र से राजनीति का केंद्र बन गई है। हम अपनी जागरूक सोच से संसद में पारदर्शिता ला सकते हैं।

नागरिक अधिकारों का अर्थ हर पांच साल में चुनावी बटन दबाना ही नहीं वरन देश की समस्याओं के प्रति जागरूक होना भी है। यदि सांसद या विधायक ठीक से काम नहीं करते हैं तो जनता को उन्हें वापस बुलाने का अधिकार मिलना चाहिए। राइट टू रिकॉल से ही देश की कई समस्याओं का समाधान संभव है। इससे नेताओं को अपनी जिम्मेदारी का अहसास होगा। कार्यक्रम में कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को उनके उत्तरदायित्व के निर्वहन की शपथ दिलाई। इस दौरान डॉ. ओपी अग्रवाल और डॉ. सुषमा चौधरी समेत कई प्रोफेसर मौजूद रहे।

दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज में एक्सप्लोरेंजा के शुभारंभ पर उपस्थित सांसद वरुण गांधी (बाएं से तीसरे)। ● जागरण

S.No.	Society Name	Name of Student	Position secured	Name of Competition	Place
1	Chanakya	Gitika Wahal	Best Interjector	Debate	Lady Hardinge College, D.U.
2	Chanakya	Surily Sahay	First	Debate	Lady Irwin College, D.U.
3	Chanakya	Abhishek Kumar	Third	Creative Writing	Punjab Engineering College
4	Diversity	Abhishek Kumar	Second	Solo Street Dance	AIIMS, New Delhi
5.	Rapbeats	B.K.Singh	Second	Rapping	AIIMS, New Delhi
6.	Chanakya	Gautam Issar	Second	Debate	ARSD College, D.U.
7.	Techwhiz	Gautam	First	Big Data and Analytics Competition	P.G.D.A.V. College, D.U.
		Kunal Grover			
		Rahul			
8.	Techwhiz	Vaibhav Bansal	Second	Big Data and Analytics Competition	P.G.D.A.V. College, D.U.
		Vibhor Bansal			
		Vishal Kumar Singh			
9	Techwhiz	Yusuf Parvez	Fourth	Big Data and Analytics Competition	P.G.D.A.V. College, D.U.
10	Chanakya	Aashna Bhargava	Third	Slam Poetry	LSR College, D.U.
11	Navrang	Team	First	Stage Play	AIIMS, New Delhi
12	Chanakya	Surily Sahay	Third	Paper Presentation	St.Stephens College, D.U.
13	Chanakya	Divisha Arora	Second	Debate	Satyawati College, D.U.
14	Impressions	Neha Maan	First	Poster & Slogan Making	P.G.D.A.V. College, D.U.
15	Impressions	Yogeshwar Bajaj	Second	Poster & Slogan Making	P.G.D.A.V. College, D.U.
16	Chanakya	Gautam Issar	First	Jam- Just a minute	P.G.D.A.V. College, D.U.
17	Impressions	Yogeshwar Bajaj	First	T-shirt painting	P.G.D.A.V. College, D.U.
18	Techwhiz	Vishal Kumar Singh	Second	Robotics & Android	CPJ College, GGSIPU
19	Chanakya	Gitika Wahal	Second	Debate	Vivekananda College, D.U.
		Surily Sahay			
20	Chanakya	Anubhav Tekwani	First	Microtale Writing	IIT Delhi
21	Impressions	Team	Best Painting Award	Fine Arts	Hindu College, D.U.
22	Impressions	Tanya Rawal	Best Art Work	Fine Arts	Hindu College, D.U.
23	Iris	Bharat Gupta	Second	Online Photography	St. Stephens College, D.U.
24	Rapbeats	Ishanjali Barla	First	Rapping	Manav Rachna University
25	Rapbeats	Varishu Pant	Second	Rapping	Manav Rachna University
26	Rapbeats	Jatin Pant	First	Beat Boxing	IIT Delhi
27	Navrang	Team	First	Stage Play	IIT Delhi
28	Navrang	Team	First	Stage Play	Manav Rachna University
29	Rapbeats	Rishabh Sharma	First	Rapping	IIT Delhi
30	Rapbeats	Mohit Zoot	Second	Rapping	IIT Delhi
31	Techwhiz	Vishal	Second	Quiz	Shaheed Rajguru College, D.U.
		Prashant			

32	Iris	Bharat Gupta	Third	Photography	JMC, D.U.
33	Impressions	Team	Appreciation Certificate	Fine Arts	Shivaji College, D.U.
34	Diversity	Abhishek Kumar	Dance Trainer	Western Dance	At various places
35	Rapbeats	Shivai Munjal	Official Music Video- Armada Music		
36	Conundrum	Team	Self Composition- My Fall		
37	Rapbeats	Shivai Munjal	Official Music Video- TAJ		
38	Diversity	Team	Part of Organising Team of Dance Show- Dabangg Tour		
39	Techwhiz	Vaibhav Bansal Vibhor Bansal	First	Coding	P.G.D.A.V. College, D.U.
40	Chanakya	Apporva Nautiyal	Consolation	Debate	P.G.D.A.V. College (E), D.U.
41	Conundrum	Team	Third	Western Solo Singing	St. Stephens College, D.U.
42	Iris	Team	Attended Workshop organised by Panasonic		
43	Chanakya	Anubhav Tekwani	First	Debate	Deshbandhu College, D.U.
44	Conundrum	Team	First	Battle of Bands	Indian School of Business & Finance
45	Raaga	Rajat Dhingra	First	Solo Singing	IMS, Ghaziabad
46	Raaga	Ajay Narayan	Second	Solo Singing	IMS, Ghaziabad
47	Raaga	Rajat Dhingra Shivani Ghansela	Second	Duet Singing	IMS, Ghaziabad
48	Chanakya	Surily Sahay Gitika Wahal	Third	Debate	Mood I Fest, Mumbai
49	Rapbeats	Rishabh Sharma	First	Rapping	Mood I Fest, Mumbai
50	Raaga	Rajat Dhingra	Second	Solo Singing	JDMC, D.U.
51	Chanakya	Anubhav	Third	Poetry	JDMC, D.U.
52	Diversity	Abhishek	Second	Solo Street Dance	MSIT, GGSIPU
53	Raaga	Vaishali Pal	Second	Solo Singing	Ramanujan College, D.U.
54	Impressions	Sumit Sohal	Second	Brushless Painting	Ramanujan College, D.U.
55	Chanakya	Surily Sahay Gitika Wahal	Third	Debate	Rotary Club (organised by Discovery Channel)
56	IRIS	Ayush Dubey	His work selected in top 6 in Inspiros India Magazine 44th edition (Mobilography Section- iiframe)		
57	Diversity	Team	Second	Western group dance	P.G.D.A.V. College, D.U.
58	IRIS	Aditya Bhuker	First	Phone Photography	SGND Khalsa College, D.U.
59	Chanakya	Isha	Second	Poetry	Rotaract Club of Young Visionaries
60	Chanakya	Paras	First	Quiz	Motilal Nehru College, D.U.
61	Conundrum	Team	Second	Battle of Bands	LSR College, D.U.
62	Chanakya	Brinda	Second	Slam Poetry	LSR College, D.U.
63	Rudra	Sonali Negi	First	Creative Writing	P.G.D.A.V. College (E), D.U.
64	Chanakya	Nikita	First	Debate	P.G.D.A.V. College (E), D.U.
65	Diversity	Abhishek	Third	Solo Dance	SPMC, D.U.

66	Chanakya	Anubhav	Second	Slam Poetry	CVS, D.U.
67	Conundrum	Team	First	Battle of Bands	Dyal Singh College, D.U.
68	Impressions	Sumit Sohal	First	Photo Recreation	LSR College, D.U.
69	Impressions	Yogeshwar Bajaj	Second	Cover Page Designing	P.G.D.A.V. College, D.U.
70	Raaga	Rajat Dhingra	Second	Solo Singing	Dyal Singh College (E) , D.U.
71	Chanakya	Isha	Second	Slam Poetry	JMC, D.U.
72	Chanakya	Brinda	Second	Slam Poetry	JMC, D.U.
73	Raaga	Rajat Dhingra	Second	Solo Classical Singing	Zakir Hussain College, D.U.
74	Impressions	Sumit	Second	Painting	Dyal Singh College, D.U.
75	IRIS	Team	Third	Photowars	St.Stephens College, D.U.
76	IRIS	Aditya Bhuker	Second	On the spot Photography	SGND Khalsa College, D.U.
77	Chanakya	Richa	Best Interjector	Debate	DRC, D.U.
78	Chanakya	Anubhav	First	Slam Poetry	Kalindi College, D.U.
79	Rapbeats	Vikram Singh	First	Rapping	Bhaskaracharaya College of Applied Sciences, D.U.
80	Rapbeats	Varishu Pant	Second	Rapping	Bhaskaracharaya College of Applied Sciences, D.U.
81	Impressions	Sumit Sohal	Third	Poster Making	ARSD College, D.U.
82	Raaga	Ajay Narayan	Second	Solo Singing	Bhaskaracharaya College of Applied Sciences, D.U.
83	Raaga	Vivek Dureja	Third	Solo Singing	Bhaskaracharaya College of Applied Sciences, D.U.
84	Chanakya	Anubhav	Second	Slam Poetry	Bharati College, D.U.
85	Chanakya	Brinda	Third	Slam Poetry	Bharati College, D.U.
86	IRIS	Bharat Gupta	Third	On the spot Photography	RLA College, D.U.
87	Rudra	Team	First	Street Play	RDIAS, GGSIPU
88	Raaga	Shivani Ghansela	Second	Duet Singing	RDIAS, GGSIPU
89	Raaga	Vaishali Pal	Second	Solo Singing	DTU
90	Chanakya	Brinda	Second	Slam Poetry	Shaheed Bhagat Singh College, D.U.
91	Impressions	Sumit Sohal	Third	T-shirt painting	DRC, D.U.
92	Impressions	Gunjan	First	Cover Page Designing	P.G.D.A.V. College, D.U.
93	Diversity	Team	Second	Western group dance	DCAC, D.U.
94	Chanakya	Brinda	Second	Slam Poetry	MAC, D.U.
95	Diversity	Team	Third	Western group dance	Vivekananda College, D.U.
96	Chanakya	Paras	First	Tech Quiz	ANDC, D.U.
97	IRIS	Team	First	On the spot Photography	St. Stephens College, D.U.
98	Chanakya	Richa	First	Debate	MAC, D.U.
99	Raaga	Team	Second	Group Classical Singing	Bharati College, D.U.

100	Chanakya	Brinda	Third	Slam Poetry	DSC, D.U.
101	Chanakya	Richa	Third	Jam- Just a minute	MAC, D.U.
102	Raaga	Shivani Ghansela	Second	Solo Singing	IITM, GGSIPU
103	Chanakya	Kinshuk Kshitij	Third	Quiz	Sri Aurobindo College, D.U.
104	Diversity	Abhishek	First	Solo Dance	IHE, D.U.
105	Chanakya	Paras Dumka	Second	Quiz	ANDC, D.U.
106	Diversity	Yatin	Second	Solo Dance	ANDC, D.U.
107	Diversity	Team	First	Western group dance	Jamia Hamdard University
108	Diversity	Team	Second	Western group dance	ANDC, D.U.
109	Raaga	Shivani Ghansela	Miss Feria	Talent Hunt	IHE, D.U.
110	Raaga	Shivani Ghansela	Miss Tide	Talent Hunt	ARSD College, D.U.
111	Raaga	Rajat Dhingra	Second	Solo Singing	Sri Aurobindo College, D.U.
112	Raaga	Vaishali Pal	Second	Solo Singing	Sri Aurobindo College, D.U.
113	IRIS	Bharat Gupta	First	Photography	CVS, D.U.
114	Navrang	Team	Invited to perform at Annual Holi Celebration of Karkardooma Court and Appreciated		
115	Chanakya	Anubhav	Second	Poetry Slam	Lady Hardinge College, D.U.
116	Rudra	Team	Second	Street Play	IILM, Lodhi Road, New Delhi
117	Rudra	Team	First	Street Play	Pearl Academy, Naraina, New Delhi
118	Rudra	Satyam Kanika Aru	Second	Ad-Making Competition	P.G.D.A.V. College (E), D.U.
119	Rudra	Suryansh Saini	Best Actor	Street Play	P.G.D.A.V. College (E), D.U.
120	Navrang	Divyashekhar Jha	First	Mono-Acting	P.G.D.A.V. College (E), D.U.
121	Navrang	Gyanesh	Second	Mono-Acting	P.G.D.A.V. College (E), D.U.
122	Navrang	Siddhant	Third	Mono-Acting	P.G.D.A.V. College (E), D.U.
123	Rudra	Sonali Negi	First	Dance-it-bad	P.G.D.A.V. College (E), D.U.
124	Chanakya	Anubhav	Second	Slam Poetry	Shaheed Rajguru College, D.U.
125	IRIS	Bharat Gupta	Third	On the spot Photography	CVS, D.U.
126	IRIS	Bharat Gupta	Second	On the spot Photography	Motilal Nehru College, D.U.
127	Chanakya	Richa	Second	Group Discussion	Shaheed Rajguru College, D.U.
128	Chanakya	Vaibhav Awasthy	First	Paper Presentation	P.G.D.A.V. College, D.U.
	Raaga	Shivani Ghansela	First	singing	D.M.E
130	Diversity	Karishma	Second	classical dance	SRcc Du

SPORTS

Department of Physical Education

On behalf of Delhi University, the Department of Physical Education and Sports Sciences conducted the selection trial in Volleyball (Men) for admission on the basis of sports. 262 candidates appeared in the three day procedure. The Selection trial was held as per Delhi University norms with several expert nominated by the University.

For the year 2017-18 the college admitted 46 candidates on the base of sports in different games viz. Athletics, Basketball, Boxing, Cricket, Football, Table Tennis, Taekwondo, Volleyball and Wrestling.

The college celebrated the International Yoga Day on 21st June,17

The Department started Physical Education as a Discipline Specific Core Course in B.A (P).

In connection with the Diamond Jubilee Celebration of the college the Department of Physical education & Sports Sciences organized an Inter College Volleyball Tournament for Men & Women. The tournament started on the Foundation Day of the College, 17th August 2017. B.R. Ambedkar College and Mata Sundri College were emerged as winners of Men & Women categories.

On behalf of the DAVCMC the college organized an inter DAV school (Delhi-NCR) Cricket Tournament for Boys & Girls.

Fitness Centre cum Human Performance Lab

A Fitness Centre cum Human Performance Lab is fully functional in the college.Both staff and students are availing the following facilities:-

Fitness Training-
Weight Training
Cardio Respiratory Endurance
Exercises with Dumbbells
Exercises with Kettlebells
Exercises with Thera Band
Special Flexibility Exercises
Step Aerobics
Weight Aerobics
Floor Aerobics
Circuit Training
Skipping
Power Yoga
Meditation
Pranayama

Human Performance Assessment
Leg Strength Assessment
Back Strength Assessment
Grip Strength Assessment
Breath Holding Capacity
Body Mass Index (BMI)

The college teams participated in several intercollegiate tournaments and performed well. The following are some of the major achievements during this year.

Lighting the Secret Flame

Flag Hoisting
Annual Sports Day

National Seminar on The Need for Physical Education in Improving the Performance of Indian Sports persons in Olympics & other National / International Tournaments.

Department of Physical Education & Sports Sciences of PGDAV college organized a 2 day National Seminar on The Need for Physical Education in Improving the Performance of Indian Sports persons for Improving Performance in Olympics & other National / International Tournaments on 07-08 November 2017. The inaugural function began with the lighting of the lamp and welcome address by the Principal Dr. Mukesh Aggarwal. This was followed by the keynote address by the Chief Guest Prof. Dr. Dilip Duriha, Vice Chancellor, Lakshmibai National Institute of Physical Education, Gwalior. In his address Prof. Duriha emphasized the need for physical education at grass root level for the improvement of performance of India in Olympics and other national international tournaments. He further informed about the different schemes and policies of Government of India and Sports Authority of India for the promotion of sports at primary level.

There were 8 sessions in the next two days and 18 papers were presented in front of a large audience. Several eminent personalities from the field of physical education and other fields chaired these sessions.

The first session was chaired by Dr. A.K. Uppal, Ex Vice Chancellor, Jiwaji University, Gwalior and Dean & Director LNIPE Gwalior. Two paper were presented in the session, "Motor Development and Coordinative Abilities – A pre-requisite for Sports '' by Dr P P Ranganathan, Dr. Sheela Kumari S., & Dr. Rakesh Kumar.

The II session was chaired by (Prof.)Dr. Vivek Pandey, Associate Professor, LNIPE, Gwalior . Two paper were presented in the session "Development of Specific Fitness Abilities", by Dr.Vikram Singh, Dr.Parmod Kumar Sethi; and Dr. R. Chakravarty, .

The III session was chaired by Dr. Dhananjoy Shaw, Principal, IGIPESS, University of Delhi, New Delhi. Two paper were presented in\ the session " Need for Sports and Exercise Sciences at Grass-root level by Ms Gursharan Kaur*,Mohd. Asif Khan & Dr. A. K. Uppal,.

The IV session was chaired by Dr Vikram, Director of Physical Education, JNU. Two paper were presented in\ the session "Government

March-Fast

Meet flame

and Physical Education & Sports: Policies and Challenges. By Kumar Anuj, Tiwari Sandeep, Kaur Charanjeet, Manoj Sethi, Dr.Sudhir Kumar. Sharma,

The V session was chaired by Dr. Sandeep Tiwari, HOD,Department of Physical Education, University of Delhi. Two paper were presented in\ the session " Current status of Physical Education in India. By K V K Reddy, Sanjay Kumar, Dilip Kumar Singh, Shantiroopan".

The VI session was chaired by Dr. S.S. Awasthi, Chairman National Seminar Two paper were presented in\ the session " Role of Yoga in promoting sports. Varun Bhushan, Dr. Rajesh Kumar Bhardwaj".

The VII session was chaired by Dr. Sheela Kumari, Associate Professor, Gargi College, New Delhi. Three papers were presented in\ the session " Women & Physical Education & Sports by Dr. Shweta Suri, Ms. Rekha Sharma, Ms. SakshiVerma, Jyoti A. Kathpalia".

The VIII session was chaired by Dr. Joselet Charles, Associate Professor, LNCPE, Thiruvananthapuram. Three papers were presented in\ the session " Development of General Fitness Abilities by Dr.Rakesh Gupta Ms. Meenakshi Pahuja, Dr. Vijay Kumar, Dr, Bimla Pawar.

Discussion & Summarization of the total proceedings was done by Dr. A.K. Uppal, Professor, Ex Vice Chancellor, Jiwaji University, Gwalior and Dean & Director LNIPE Gwalior.

The following resolution was adopted by the member presents:

1. For improving the performance of India in Olympics and other national/international tournaments India should improve its base by makeing physical education compulsory from grade K to XII.
2. It also insisted the need for a uniform curriculum and syllabi in the teacher training institutes for producing quality physical education teachers.
3. The responsibility of developing the habit of participating in physical activity by more and more school children's reports with the physical education teachers, school authorities, parents and society. Every school and parent must be repeatedly informed and remind by the media and other sources.
4. The sports infrastructure in schools shall be made available to the neighbor children, free of cost so that the habit of participating in sports, after the school hours can be developed in them.

The two day seminar was concluded with the distribution of mementoes and certificates to all resource persons and participants by Sh. Mohanlal ji & Dr. A K Uppal and a vote of thanks by Dr. P.P. Ranganathan.

ACHIEVERS			
S.No.	Name	Course	Achievements
1	Ms. Taniya Negi	B.Sc (Mt.Sc.)	GOLD In Delhi State Boxing Championship,
			Silver in DU I/C Championship
2	Mr. KiratJit Singh	B.COM(H)	GOLD, DU I/C Gatka Champoinship
3	Mr. Arvind	B.A.(H) Hindi	GOLD in Delhi University Boxing Championship
4	Ms. KOMAL	B.A. History (H)	GOLD in Delhi State Boxing Championship
5.	Yogesh Kumar	B.A.(H) Sanskrit	Silver DU Wrestling Championship
6.	Ajay Kumar	B.A.(H)English	Silver DU Wrestling Championship
7.	Hans Chaprana	B.A.(Prog.)	Bronze DU Wrestling Championship
8.	Ashish Birhman	B.A.(H) Sanskrit	2 Bronze DU Wrestling Championship
9.	Deepanshu Tokas	B.A(H) Pol.Sci.	Silver in DU I/C Boxing Championship
10.	Manjeet Singh	B.A.(H) Hindi	Bronze in DU I/C Boxing Championship
11.	Dev Sahu	B.A.(H) History	Bronze in Delhi University 20km. Walk Championship
12.	Pratham Kumar	B.Com(P)	Gold in WAKO INDIA KICK BOXING FEDERATION CUP 2017-18,
			SILVER in WAKO INDIA NATIONAL KICKBOXING CHAMPIONSHIP ,
Bronze NATIONAL URBAN GAMES 2017 WUSHU CHAMPIONSHIP,			
Silver in Delhi State Wushu Championship,			
13.	JAI SINGH	B.A(Prog)	Bronze Medal in National Taekwondo Champonship,
			Gold in Delhi State Championship'17, Bronze in DU I/C Cahmpionship
14.	Karan Yadav	B.A (Prog.)	Golden Ball & Golden Shoes Award
15.	Bhumesh Kr. Maithil	B.A(H) History	Gold in Delhi state '17 Championship
			Silver in DU I/C Championship

S.No	Team	Achievements
1	Cricket	1. Winner in college Cricket Tournament'17 Jamia Hamdard University,
		2.WINNERS in Cricket Tournament TABEER' 2018 organized by National Law Fest Jamia Millia Islamia University
		3. Runner Up DU I/C Cricket Tournament,
		4.Secured 4TH Position in the KIIT, inter University Cricket Tournament Bhubaneswar
2.	Football	1. Winners in Spardha'18 organized by NDIM.
		2. Runners-up in Inter college football Tournament'17 organized by Reliance Foundation,
3.	Volleyball	1.Runners-up in Inter college Volleyball Tournament'17 organized by Krishna Engineering College.
4.	Taekwondo	1. Secured 4th place In DU I/C Tournament
UNIVERSITY/STATE REPRESENTATION		
1.	Cricket	
	Karan Bidhuri, B.A(Prog.)	Delhi University
	Rakesh Chauhan, B.A(Prog.)	Delhi University
	Himank Singh, B.Com (Prog.)	Delhi University & Delhi State
2.	Boxing	
	Arvind of B.A.Hindi (Hons.)	Delhi University
	Taniya Negi B.Sc (Mt.Sc.)	Delhi State
3.	Football	
	Aman singh Bhati	Himachal Pradesh State
4.	Gatka	
	Kiratjit Singh B.com(H) Delhi University	

NCC

This year 54 girls and 160 boys were enrolled with the NCC Unit of the college. Under the guidance of Ms. Renu Jonwall and Sh. Hari Pratap Singh, and in the leadership of SUO Namita Yadav and SUO Vaibhav Bhatnagar, all cadets participated in numerous camps held at national and state level.

In the beginning of the session 2017-18 :

- our five cadets attended All India Girls Track at Himachal Pradesh in the month of June,
- 10 cadets attended C.A.T.C. Camps with SUO Namita Yadav in the month of August,
- then our two cadets Sargent Neeraj Singh Rathore and Cadet Rahul Kumar attended Thal Sainik Camp,
- 4 cadets attended Rock Climbing and Treckking Camp, in Uttarakhand in the month of September.
- Three cadets attended National Integration Camp-II held at Warangal, Andhra Pradesh in the month of November.
- In December three cadets attended army Attachment Camp held at Meerut, Uttar Pradesh.
- One cadet attended NIC at Ropar, Punjab along with SUO Namita Yadav.
- Our CQMH Poonam Sangwan attended Mountaineering Camp in Manali, Himachal Pradesh in the month of October.
- Cadet Nawang Dorge (flag area, PM Rally) Cadet Ayush Tripathi (PM Rally), Cadet Raghuvendra and shourya (culture) and, CPL Praveen attended Republic Day Camp, CPL Pravenn was on Rajapath.

Apart from this our cadets also participated in other events like –11 cadets in Amar Jawan Jyoti, 19 in Chief Minister Rally, 10 cadets in Yoga Day, 20 Flag Day.

Our ACHIVERS of the year are JUO Shivam Sharma (OTA), CPL Gaurav Rana (IMA) and JUO Smriti Singh (Asian League).

Along with all these we excel in social work also. Our all cadets participated in Water Conservation Drive held at India Gate, tree plantation drive, Digital India Awareness program and Swachh Bharat Abhiyan Week was organized by our cadet in college.

In the month of September we celebrated our rank ceremony in which we assigned rank to the deserving candidates and the appointments for the year 2018 are as follows:- JUO Smriti Singh, JUO Akshita Mishra, JUO Kirti Tiwari, JUO Drishti Goyal, JUO Rishabh Kumar, JUO Adarsh, JUO Wazid Ali, JUO Sanjay and CHM Ranjeet.

This year, we introduced inter platoon competitions to inculcate a sense of learning and healthy competitions among cadets under the guidance of both C/Ts, Competitions such as Quiz competition, Quarter Guard competition, Squad Drill competition, Section Attack Competition etc. and held successfully.

In inter-college competitions at Kirori Mal College and Miranda House, our P.G.D.A.V. Company won prizes in Guard of Honor, Drill, Best Cadet and Debate.

On 21st February '18 we celebrated our Annual NCC Fest "PRABAL 2018" in which more than 20 colleges participated with enthusiasm and won many prizes in different competition and the Chief Guest for the day was DDG. Brigadier N.K Dabbas. He not only marked his presence in the event but also enlighted the life of students with his golden words. Fest was successful and remarkable.

At last winning or losing doesn't matter, what matter the most is participation and learning.

छात्र संघ परिषद

चुनाव

पिछले 60 वर्षों के महाविद्यालय के इतिहास में पहली बार छात्र संघ का गठन निर्विरोध हुआ। केवल विश्वविद्यालय (DUSU) प्रतिनिधियों के लिए मतदान कराया गया।

कार्यकारिणी

अध्यक्ष : निलेश चौधरी, वाणिज्य विशेष तृतीय वर्ष

उपाध्यक्ष : राजदेव सिंह
राजनीति शास्त्र विशेष द्वितीय वर्ष

सचिव : सिमरन गौड़, वाणिज्य विशेष द्वितीय वर्ष

सह सचिव : फातिमा, बी.ए. प्रोग्राम तृतीय वर्ष

केंद्रीय पार्षद : मानिक बसोमा, बी.ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष
सुमित लोहिया
बी.ए. संस्कृत विशेष प्रथम वर्ष

परामर्शदाता : रामवीर, वाणिज्य विभाग विभाग

सदस्य : श्री चेतन नेगी, वाणिज्य विभाग
श्रीमती आकांक्षा, जैन, वाणिज्य विभाग
सुश्री मोनिका सैनी, वाणिज्य विभाग

छात्र संघ का शपथ समारोह : नव निर्वाचित छात्र संघ परिषद के सदस्यों का शपथ समारोह 16 सितंबर 2017 को हुआ। जिसके मुख्य अतिथि श्रीमान वरुण गांधी, लोकसभा सांसद थे। 'भारत में युवा राजनीति का भविष्य: चुनौतियां और अवसर' विषय पर अपना भाषण दिया। जिसके अंतर्गत युवाओं को राजनीति में सक्रिय भूमिका के साथ-साथ Skill India and Re-skill India पर बल दिया। प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल ने नवनिर्वाचित सदस्यों को शपथ दिलाई तथा छात्रसंघ को बधाई देते हुए कहा कि छात्रों को अपने समय का

सदुपयोग करते हुये महाविद्यालय की गतिविधियों में अपनी सक्रियता रखनी चाहिए। छात्र संघ के परामर्शदाता श्री रामवीर जी ने 'छात्र प्रतिभा सम्मान पुरस्कार' की घोषणा की, जिसके अंतर्गत विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान लेने वाले छात्रों को क्रमशः ₹15000, ₹10000, और ₹5000 की नकद राशि दी जाएगी।

राष्ट्रीय युवा दिवस

छात्र संघ परिषद् ने 12 जनवरी 2018 को स्वामी विवेकानंद जयंती व राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया। जिसके मुख्य अतिथि श्रीमान भागेंदर पाठक (वरिष्ठ एडिटर समय सहारा नोएडा) थे उन्होंने युवाओं को प्रेरित करने वाले विचार और स्वामी विवेकानंद जी की भारतीय संस्कृति को सम्मान दिलाने में भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. शिव शंकर अवस्थी (एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विभाग) ने छात्रों को विवेकानंद के जीवन चरित्र का अनुसरण करना चाहिए और चरित्र निर्माण के साथ-साथ देश व समाज के निर्माण में एक युवा अपना योगदान देकर देश व समाज को एक आइना दिखाना चाहिए। प्रोफेसर डॉ. अभय प्रसाद (प्रवक्ता राजनीति विभाग) ने अपने भाषण में युवाओं को विवेकानंद जैसा वक्ता विद्यार्थी और दृष्टा बनना चाहिए। आज देश को युवाओं की आवश्यकता है, जो देश का नेतृत्व कर सके। कार्यक्रम में छात्र और अध्यापकों ने अपनी सक्रिय भागीदारी दी। कार्यक्रम के अंत में रामवीर (परामर्शदाता छात्र संघ और कार्यक्रम के संयोजक) ने सभी छात्रों और अध्यापकों का धन्यवाद करते हुए कहा कि राष्ट्रीय युवा दिवस व स्वामी विवेकानंद जयंती का सफल कार्य रहा है आज भारत की जनसंख्या का 65% नागरिक युवा है और इस युवा राष्ट्र के सामने अब किसी भी प्रकार की समस्या नहीं आ सकती है और यह देश अब विश्व का संचालन और नेतृत्व करेगा।

सांस्कृतिक उत्सव

महाविद्यालय के वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन 1 व 2 फरवरी 2018 को छात्र संघ परिषद और सांस्कृतिक सभा ने संयुक्त रूप से किया। आगाज 2018 की मुख्य अतिथि डॉ. मृदुला सिन्हा (महामहिम राज्यपाल, गोवा) रहीं, उन्होंने अपने भाषण में कहा समाज को एकत्रित करने की शक्ति नारी में है, जो देश व समाज को एक दिशा दे सकती है। नारी और बेटी को दूब और धान की संज्ञा दी, अतः जिस प्रकार से दूब किसी भी स्थान पर जाकर अपना निकास और आंगन की सुंदर बना देती है उसी प्रकार से नारी को किसी भी स्थान पर भेजा जाए तो वह खुशहाली और परिवार व समाज का निर्माण ही करती है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. बलदेव भाई शर्मा (अध्यक्ष, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास-NBT) रहे। उन्होंने युवाओं को संदेश दिया कि युवाओं को अपने अध्ययन में गहनता लानी चाहिए और जीवन में लक्ष्य ऊंचा रखना चाहिए, युवा का विकास ही देश का विकास है। डॉ. मुकेश अग्रवाल (प्राचार्य) ने अपना स्वागत भाषण दिया, उन्होंने महाविद्यालय के छात्र और अध्यापकों को बधाई व कार्यक्रम की सफलता की मंगल कामना की। कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ सुषमा चौधरी (प्रोफेसर हिंदी विभाग) ने किया रामवीर (परामर्शदाता) ने कार्यक्रम के अंत में सभी आगुंतक अतिथि छात्र छात्राओं व महाविद्यालय के कर्मचारियों अध्यापकों का धन्यवाद किया। छात्र संघ परिषद सांस्कृतिक सभा की तरफ से सभी का हृदय से आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के प्रथम दिन समापन में 'Local Train' Brand के माध्यम से संस्कृति संगीत व नृत्य का आनंद लिया। कार्यक्रम के द्वितीय दिवस 2 फरवरी 2018 को महाविद्यालय में आए हुए प्रतिभागियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया सांस्कृतिक उत्सव का अंतिम कार्यक्रम के रूप में स्टार 'Milind Gaba' रहा। आगाज 2018 सांस्कृतिक उत्सव का ऐतिहासिक रहा, इस स्टार 'Milind Gaba' का ब्रांड नेम से महाविद्यालय में छात्रों का बढ़ता भीड़ का सैलाब रहा जिसके अंतर्गत 20000 से अधिक छात्र-छात्राओं ने संगीत कलाकार के संगीत का आनंद महाविद्यालय के खेल परिसर में लिया कार्यक्रम का शांतिपूर्ण समापन रहा।

महर्षि दयानंद बोधोत्सव

13 फरवरी 2018 को छात्र संघ परिषद ने 'ऋषि दयानंद बोधोत्सव' कार्यक्रम का सफल आयोजन किया। कार्यक्रम में छात्र, शिक्षक और कर्मचारी वर्ग ने भी बढ-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमान अजय अग्रवाल (निर्देशक इंद्रप्रस्थ अध्ययन केंद्र, नई दिल्ली) रहे। उन्होंने स्वामी दयानंद जी के जीवन और उनका आधुनिक भारत के निर्माण में भूमिका पर अपना विचार छात्रों के सामने रखा उन्होंने कहा कि एक युवा की समाज से त्रुटियां और पाखण्डों का खंडन कर सकता है। छात्रों को सत्यार्थ प्रकाश को जीवन में कम से कम एक बार पढ़ना चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. रामजीत योगाचार्य (चिकित्सक नागरिक अस्पताल, पलवल) रहे, उन्होंने छात्रों के सामने खुद अपने से कठिन से कठिन आसनों का प्रदर्शन किया। उन्होंने योगासन का मनुष्य जीवन में लाभ और स्वास्थ्य पर प्रभाव पर अपना विचार रखा। छात्रों को सलाह के रूप में कहा कि छात्र को अनुशासित रहना चाहिए छात्र को अपनी वह शक्ति का विकास कर एकाग्रता का बढ़ना चाहिए छात्र को समय आने पर अपनी शक्ति और ज्ञान को प्रकट करना चाहिए छात्र को अपनी दिनचर्या व्यवस्थित रखनी चाहिए छात्रों को योग के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अश्विनी महाजन (एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग) ने की प्रोफेसर महाजन ने कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण श्रोताओं के सम्मुख रखा उन्होंने कहा कि युवाओं को महापुरुषों और क्रांतिकारियों की जीवनी को पढ़ना चाहिए जीवन में उसे एक साथ करना चाहिए मंच का कुशल संचालन श्री अजीत कुमार पुरी सहायक प्रवक्ता हिंदी विभाग ने किया। धन्यवाद भाषण महाविद्यालय के डॉ. ओ.पी. अग्रवाल ने दिया कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि छात्र संघ परिषद को इस प्रकार के कार्यक्रम महाविद्यालय में समय-समय पर कराते रहना चाहिए। छात्रों ने बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ता है छात्रों का सर्वांगीण विकास व देशभक्ति की भावना प्रबल होती है। कार्यक्रम में विदेशी दर्शक भी नजर आए न्यूजीलैंड की सुश्री गुरप्रीत सिंह सिद्धू जिन्हें कार्यक्रम के आयोजक रामवीर महाविद्यालय की तरफ से उनका स्वागत एक तुलसी पौध व सत्यार्थ प्रकाश देकर किया।

शैक्षणिक वर्ष 2017-18 का छात्र संघ परिषद ने महाविद्यालय में अपनी एक अलग पहचान बनाई है, वर्षभर छात्र संघ परिषद के सभी पदाधिकारी और परामर्शदाताओं ने अपना समय और मार्गदर्शन से छात्र संघ को रचनात्मक कार्यों में सक्रिय रखा छात्र संघ में छात्रों की तरफ से मिलने सुझाव और समस्याओं को सहजता व सजगता से समाधान किया।

NSS

The Programme Officer of PGDAV College NSS Unit is Dr Abhay Prasad Singh and Co-PO is Dr Chander Pal Singh. The events and activities organised and undertaken by the college NSS team over last one year have been quite formative.

Small acts, when multiplied by millions of people, can transform the world! These words form the DNA of N.S.S. at PGDAV College. It started out with sole motive of 'Not Me But You', reflecting upon the essence of democratic living and the need for self-less service. N.S.S. provides a platform for students to contribute selflessly to this society, to not only help grow other but to also grow themselves as more sensible person. It helps the students develop appreciation to other person's point of view and also show consideration to other living beings. The efforts of N.S.S. volunteers have been widely acclaimed by the community, universities, colleges and the people who have experience the change.

This year N.S.S. witnessed some of the most sought and influencing speakers and social activists. The year started with the golden words of Ms. Laxmi Agarwal, an acid attack survivor and international women of courage award winner by Michelle Obama. Following the legacy and defining what N.S.S. thrives and works for, we also organised various rallies for politically and socially upheld issues like 'Swachhta' where we chanted slogans and inspired people around us to work for the nation as one.

We also organised various drive like blood donation drive in collaboration with red cross and snapstoreapp whereby we donated 100 units of blood, medicine; clothes collection drive in collaboration with medicine baba and clothes box foundation respectively, citizen

voter registration drive to enable every rightful citizen to exercise their right.

N.S.S. believe in the democratise access to resources and opportunities. We believe every one is equal and that everyone deserves equal opportunities in their lives and thereby supporting the same ideology, we demonstrated a play which dealt with homosexuality and imbibed that they are and they should be equivalent part of our society. The audience showcase tremendous response and it received a loud standing ovation for several minutes. Not only this, we believe every new year is a new page in the beautiful journey and, therefore, to mark something new this year, we have started our own child education program called 'Astitva', whereby we will teach 25 kids who lack educational access and educate them in the most appropriate way. To give a helping hand, we have also collaborated with various NGO's namely People for Animals, owned Smt. Maneka Gandhi, Udayan and Udaan.

In addition to that, and maintaining the strong bond of social service and celebration of life, we organised our annual cultural fest which saw guests, speakers and sponsors like never before. Microsoft, LIC, CBI, Jaypee, T-series were some of the few. The event was lit with the voice and words of Mr. Sharad Sagar, a Forbes 30 Under 30 Honouree who works with children and youth all over the world. President Obama personally congratulated him for this deep and impactful words. We also hosted Mr. Gaurav Tripathi and a cheerful band from T-series.

At N.S.S., our core motive have to bring smile, peace and opportunities to everyone. Through one task at a time, we are uprising this civilisation and we strongly believe that together, we shall stand as one great team of people that knows no day or night, who is living to make this country and this world a better place.

SATARK

The Consumer Club

2017-18 has been a great and successful year for the club. The dynamic team of students organised several events. It kicked off with lively and interactive **Knowldege Sharing Session,** where Dr Sheetal Kapoor from Kamala Nehru College spoke on **"GST and its impact on Consumers"** on 8th September, 2017.

On 25th September,2017 a **quiz** was held on Consumer Protection Act, GST and other basic consumer- related question to test the knowledge of students regarding the topics. A total of 40 people participated. Pragya Pandey emerged victorious and Sayash Aloney was the runner up.

A T-Shirt painting competition on "e-waste". was held on 27th September, 2017. A total of 12 teams partipated. Yogeshwer Bajaj was selected as the winner followed by the team of Niharika Kamboj and Anushree Basak as first runner up. The second runner up position was shared by Divya Aggarwal And Vinson Mathew Issac. Judges were Dr Kusum Chadda and Dr Hira Singh Bisht.

E-Waste collection drive was held on 11th, 12th and 13th of October. It was a great success due to the combined effort of the Core members, the Faculty members and the team. Approximately 50 kgs of e-waste was collected which was disposed with e-parisara in the month of December 2017.

In January 2018, **cover page designing competition** was held. The theme was E-commerec on the lines of theme of World's Consumer Rights Day 2018. Total of fourteen entries were received and Utsavi and Gunjan of B.com(H) III year were selected as the winners followed by Yogeshwar Bajaj.

Guests from Consumers India
with Team Satark

The Research Team

An **inter-college online photography competition** was organised in the month of January 2018. Total 14 entries were received through which the creative young minds shared the cultural impact on consumer behaviour through their lens. It was judged bt Dr Meera Khare.

On 16th Feb 2018, our members Ibtesham and Ekta made a **presentation** on “Consumer Protection Act: What it is and what it should be” where they discussed the current CPA and the proposed one. Such KSS enables peer learning as well as gives members chance to develop their communication skills.

On 22nd February an **inter-college debate** was organised on the topic of '**Online transactions are safer**'. Total 14 teams from different colleges participated and the event was judged by Dr. Shuchi Pahuja and Ms. Monika Saini, Professors Department of Commerce, PGDAV College. Tanvi Tharija and Madhur Mahajan from ARSD college were selected as the best team by the judges and Anshika Adhlakha and Arnima Ailawadhi were the runner ups. Pragya Pandey was awarded as the best speaker and Utkarsh Rastogi was selected as the best interjector.

Our students researched on **‘Energy Drinks: Reality or Myth’.** The team made **presentation** which was followed by an open house discussion on 22nd Feb 2018. Dr. Jayashree Gupta and Ms. Geeta Kumar from Consumers India led the discussion.

The club came out with its annual newsletter in March 2018. All this has made us all a little more Satark regarding e-waste, online transactions, Consumer Protection Act and energy drinks.

Dr Vandana Agrawal
Advisor

Convener
Ms Sakshi Verma

ENACTUS

ENACTUS is an international organization that works with leaders in business and higher education to mobilise university students to make a difference in their communities and become socially responsible business leaders.

Keeping the spirit of social entrepreneurship in mind, ENACTUS PGDAV conceived Project Korakagaz, wherein we train women of marginalised communities to produce spiral bound notebooks. The required skills are provided to the survivors of gender based violence and also to the women living in the slums of Srinivaspuri and Nizamuddin.

In order to nurture the cause of upliftment and empowerment of the marginalised community team ENACTUS PGDAV collaborated with Shakti Shalini, an NGO dedicated to advancing gender equality and women empowerment since 1987. The team along with four members of the NGO carry out the work at Kushalta Vikas Kendra(KVK), which is the shelter home of Shakti Shalini. In addition to this we have associated ourselves with other two NGO's, namely NOW(New Opportunities for Women), Srinivaspuri, New Delhi and ASHRAY, Jangpura, New Delhi.

Many eminent personalities who have visited our college in recent times like Padma Vibhushan Smt Sonal Mansingh, Sri Vinay Sahasrabuddhe,Sri Varun Gandhi,Smt Mridula Sinha and Sri Baldev Bhai Sharma have been felicitated by notebooks produced under Project Korakagaz,which they have appreciated a lot.Team Enactus PGDAV had the privilege to brief Prof. Yogesh Tyagi, the honourable Vice Chancellor of Delhi University, regarding our project.He motivated us to keep up the good work.

From time to time team Enactus PGDAV finds and seeks opportunity to put up stalls through which it exhibits and promotes Project Korakagaz at diversified venues.Apart from its outreach in Miranda House College through a well organised event, it also marked its presence in a major way at Diwali Mela at KVK and at Akzonobel India, a company based out of Gurgaon.

Also three students from Enactus PGDAV represented the team at the Social Startup fest at Shaheed Sukhdev College of Business Studies.

We are eagerly looking forward to realise our ultimate objective of creating an entrepreneur through social entrepreneurship.Having identified one such potential entrepreneur from the residents of KVK, the team has plan in place to make her learn about photoshop, marketing and data management so that she can independently take up the production and thus uplift her socio-economic status .

This year in order to maximize the reach of our project we have designed a web portal which became live on August 1, 2017 in order to receive online orders for our notebooks.

Visit us at: www.enactuspgdav.org; Reach us at: enactuspgdav@gmail.com

THE PLACEMENT CELL

Being one of the most important societies of the college, The Placement Cell serves as an interface between the students and the corporate world. Apart from bringing various companies to the campus, the placement cell also provides internship opportunities, organizes study abroad seminars, soft skills workshops and mock group discussions.

In doing so, we ensure that we fulfill our primary focus of providing a helping hand to students in their initial step into the corporate world, thereby creating a legacy.

The session started with a workshop on **'Entrepreneurship and Corporate Writing Skills'** in collaboration with eAgetutor which enlightened the students about communication skills and personality development. A workshop on **'Soft Skills'** in collaboration with Global Talent Track was also very well received as it helped students in resume writing , personal interviews etc. Along with the placement activities, we also arrange industrial visits for the students to minimize the gap between campus and the corporate world. Forty students from various streams of college completed Barclays Connect with Work program partnered with GTT/NASSCOM Foundation in the month of August – September 2017.

For the first time in the University of Delhi, the cell collaborated with LinkedIn-MTV for a job fair which provided an excellent platform to students across Delhi-NCR to get their dream internship in one of the 12 biggest companies such as Amazon, HP, Flipkart, HDFC Bank etc.

Workshops and Seminars on various topics were conducted throughout the year and students not only from third year but first and second year were also invited to participate in them. More than placements, our overall goal is to work on building in our students the confidence to face the world beyond college. For this, we take and analyze feedback from both the students and the recruiting companies before planning our workshops and lectures.

In our desire to be the best we have always believed in building everlasting bonds with our corporate partners. According to our record this year, 120 students have been placed in high standing corporate institutions such as: **EY- GDS, Willis Towers Watson, Wipro, FIS Global, InShorts, PwC, Alight Solutions, Tommy Hilfiger, British Telecom, Royal Bank of Scotland** amongst others with job profiles like actuarial analyst, assurance associate, content proof reader etc and packages as high as 4.5 lakhs p.a.. Starting the year with one of the big 4 auditing firms, EY-GDS recruited

9 students. 45 students were placed with RBS and 10 students were placed with FIS Global. One of the leading companies in the technology world, Wipro hired 25 students in the month of February. We are still awaiting quite a few recruiters which will, without doubt, raise the number.

To help students apply their theoretical knowledge in the practical world and make them more corporate ready, the placement cell pitched more than 50 companies for internship opportunities with profiles ranging from content management to marketing and sales.

The cell has also opened a stock market trading club in the college, **Trader for Tomorrow - PGDAV Chapter,** in collaboration with The Financial Doctors. The Club provides a platform to anyone who wants to carve out a career in Equity Analysis, Security Analysis, Portfolio Management, Prop Trading, and Institutional Investment or wants to gain hands on experience in Worldwide Financial Markets.

Next, the placement cell is looking forward to host its annual summer internship fair- **CONVERGE** on the 21st of March 2018. Students across universities from Delhi-NCR will be participating in the fair which aims to bridge the gap between the potential pool of student interns and top companies.

The success of our placement cell warrants a due credit to the student team and the faculty members who worked meticulously throughout the year.

Excellence they say, flows beyond boundaries and we at The Placement Cell believe that the journey has just begun as we strive to scale new heights and in the process give a push start to the career of our students.

The Placement Cell Team
(2017-2018)

KAIZEN-Career Counselling Club

Career Counselling Club, PGDAV college, suitably named KAIZEN(Japanese word for 'small improvements'), has been functioning since 2015. Its prime function is to prepare students for different careers. There is no membership registration for the club and it is open to all students of the college who can attend its programs.

Kaizen conducts two types of activities: regular weekly meetings and sponsored programs by experts. It holds regular meetings (in Room No.105 New Block at 1.30 pm) every Friday. The prior information about its activities are regularly posted on its facebook page: Career Counselling Club, PGDAV College.

The regular activity of the club consists of a book review; presentation of biographical sketches of persons of eminence; sessions on increasing one's vocabulary, both English and Hindi; and, a discussion on current topics. This academic session its activities included book reviews of the best sellers- 'The Kiterunner' (24th September) and 'Our Moon has Blood Clots'(9th February) by Mili Dangwal. These reviews sensitized the students to the harsh realities of war and violence and the immense potential of human resilience. Presentation on life and achievements of present day icons like Elon Musk by Anjali (19th February). It further inspired the students. The vocabulary sessions by Pawan and Shreyas, enriched the vocabulary of students by adding 40 words(Hindi and English) this year and attendees were encouraged to enter a competition for best user of the words to create a meaningful paragraph, through our facebook page. Debates and discussions on the themes: "Ban on Fire crackers"(3rd November), "Right to privacy"(19th january), "Indo-Israel relations"(19th February) added to the knowledge and clarity of students on the issues.

The sponsored activities included useful and widely attended sessions on:

1. "Interview techniques and personality development" by Alok Kumar on 5th September.

2. "Careers in computer science after graduation. An insight into Artificial Intelligence, Analytics and Cyber Security" by Ritukar Chadha on 21st September.

The details of these programs were subsequently posted on the facebook page.

A session on entrepreneurship: 'Your Own Business', a topic the students are looking forward to, is lined up for next for 5th April, 2018 where students will be involved in certain activities that will help them to know themselves in a better way; the skill-set they possess; the work they would like to do all through their life and will also learn efficient ways to market themselves and earn using their skills. The resource person will be Professor Anand Saxena, Department of Commerce, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi.

Compiled by
Nisha Jha and team

SPIC MACAY

The PGDAV College chapter of Spic Macay organised a Kathak performance by Padmashree Ms Shovana Narayan on 27th September. The programme was inaugurated by the principal of the college Dr Mukesh Aggarwal who also welcomed the guests. The programme was a part of the 'Virasat' series.

Ms Narayan, along with her accompanists on tabla, harmonium and violin mesmerised the audience with her enthralling performance. She began the session by throwing light on the origin and the history of kathak dance in India. She then moved on to a lecture-demonstration of the dance form explaining and demonstrating the various gestures ,facial expressions and bodily movements that form the lexicon of kathak. She presented the dicing sequence and its sequel from the Mahabharata which found a strong resonance among the audience. As a grand finale to the programme she danced to a thumri set on the raas leela of Krishna and Radha. The programme was attended and appreciated by the students and faculty members of the college along with guests from outside.

GLOBIZ- International Business Cell

The International Business Cell, popularly known as 'GLOBIZ', was constituted by the Department of Commerce in 2016 with primary objectives of raising research interest in the area of International Business, promote academic deliberation by organizing regular theme-based events and keeping the academia in tune with the global business scenario. The Cell currently functions under the able guidance of Sh. K.K Srivastava (Patron), Ms Anindita Goldar (Convener), Sh. Surendra Kumar (Co-Convener), Dr. Manoj Kumar Sinha (Co-Convener) and seven other Commerce Department faculty members.

Post its inception the Cell has and continually organizes various learning and interaction programs which have always attracted large participation from students and faculty members. It is proud to have hosted seminars where eminent personalities in the field of International Business like Prof. B.N. Goldar (Former Professor at Institute of Economic Growth, member of National Statistical Commission and current ICSSR National Fellow), Prof. Surender Kumar (Delhi School of Economics), Sh. Navin Kumar Maini (Former Deputy Managing Director, SIDBI) and Sh. Shiv Raj Gupta (Eminent Industrialist) delivered speeches on the topics 'New Perspectives on Trade and Environment in the Era of Global Economic Turbulence' and 'Entrepreneurship Development' at the events which were highly appreciated by the audience.

Building on its glorious past, the Cell has further lined up a series of events for the future. On 16th and 19th March, 2018 the Cell will be organizing two faculty interaction programs where three renowned personalities Dr. Niti Bhasin (Associate Professor, Department of Commerce, DSE), Dr. Ashish Chandra (Associate Professor, Department of Commerce, DSE) and Dr. Sumati Varma (Associate Professor, Sri Aurobindo College Eve.) will be delivering talks on the important aspects of International Marketing, BREXIT, Protectionism and impact of Cultural differences on International Business, and will be hence interacting with the faculty members. Through such endeavors the International Business Cell has and will always strive to further enrich and enhance the knowledge base of faculty members and students.

Speakers and Faculty members along with organizing committee of the Seminar held on 25th February 2016

वूमेन डेवलपमेंट सेल

8 मार्च, 2018 को महाविद्यालय की 'वूमेन डेवलपमेंट सेल' द्वारा 'विश्व महिला दिवस' के उपलक्ष्य में नारी सशक्तिकरण और नारी अधिकारों को ध्यान में रखते हुए जैनेन्द्र के नाटक 'त्यागपत्र' का मंचन किया गया। नाटक में सुमिता (मृणाल), दिव्यशेखर झा (प्रमोद), निखिल (छोटे प्रमोद), आशा (प्रमोद की माँ), सुमिता देवनाथ (मृणाल की बुआ), सचिन (फूफा), दक्ष (डॉक्टर एवं मृणाल का प्रेमी) के साथ-साथ शिवानी, रुचि, ज्ञानेश, कृष्णा एवं स्माइल आदि ने अपने अभिनय से बेहद प्रभावित किया।

23 मार्च, 2018 को महाविद्यालय के विद्यार्थियों को सेल्फ डिफेंस (आत्मरक्षा) के संदर्भ में चेतना युक्त करने हेतु 'आई लव सेफ डेल्ही' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में पूर्व मिस्टर इंडिया डैनी, बॉक्सर रॉकी और मृगांका (Founder SLAP) ने विद्यार्थियों विशेष तौर पर छात्राओं को आत्मरक्षा के नियम सिखाए।

BHARAT RATNA DR B R AMBEDKAR VYAKHYANMALA

PGDAV College celebrated 126th Birth Anniversary of Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar on 13th April 2017. The programme formally commenced by paying homage to Dr. B.R. Ambedkar by Principal, Dr Mukesh Aggarwal, Chief Guest Arjun Ram Meghwal and Guest of Honor Dr. Shawraj Singh Bechain. In his speech, Chief Guest Arjun Ram Meghwal said, 'Babasaheb is the name to be reckoned with as an epitome of cultural revolution in the social, political and religious horizon of pre and post-independent India. Initiatives have to be taken to awaken today's generation to imbibe the thought put forth by Dr. B. R. Ambedkar in nurturing humanity.' The Guest of Honor, Dr. Shawraj Singh Bechain delivered his speech on the theme 'Social Justice and Sustainable Development of a Nation.' He said, 'For today's generation, Dr. Ambedkar has become a symbol of democracy and freedom. He is an icon of Free Speech and Social Justice.' The programme was attended by faculty members and students. An inter college Essay Writing Competition on 'The Role of B.R. Ambedkar in Nation Building' was also organised on 11th April 2017, which witnessed the participation of about 70 students from different colleges.

This is the fourth programme of Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar Vyakhyanmaala. Distinguished speakers like Prof. Vivek Kumar, Dr. Sonkar Shashtri, and Dr. Narendra Jadhav have graced the occasion at the earlier celebrations of this series organized in 2014, 2015, and 2016 respectively.

Through The Lens

We keep this love in a photograph
We made these memories for ourselves
Where our eyes are never closing
Our hearts were never broken
And time's forever frozen, still

Ed Sheeran: Photograph

Award Winning Photographs by IRIS : The Photography Society

Walking into the unknown

Lost Temptations

The end of time

World within a World

Breaking Frames

Sound of Silence

Ethereal Beauty

Cameraderie

Perspective on food

Brush strokes

Oh, the hours I've spent inside the Coliseum
Dodging lions and wastin' time
Oh, those mighty kings of the jungle, I could hardly stand to see 'em
Yes, it sure has been a long, hard climb
Train wheels runnin' through the back of my memory
When I ran on the hilltop following a pack of wild geese
Someday, everything is gonna be smooth like a rhapsody
When I paint my masterpiece

Bob Dylan: When I Paint My Masterpiece

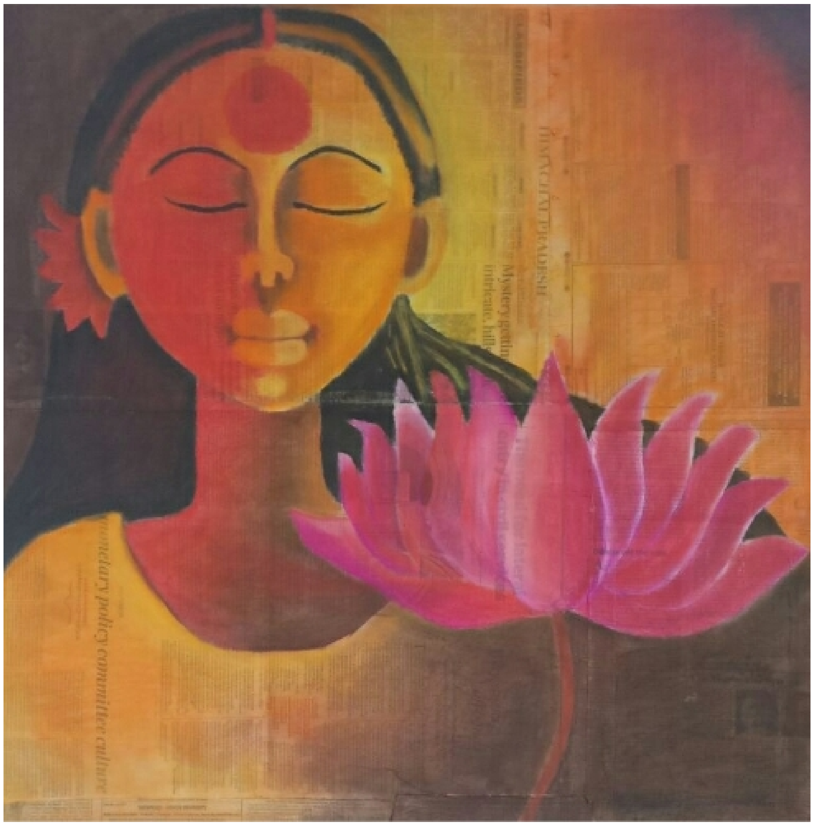

Lanya Rawal, B.Com. (Prog.) 3rd Year

BEST ARTWORK, HINDU COLLEGE

Sumit Sohal, B.Sc. (Mathematical Sc.) 3rd Year

3RD PRIZE, POSTER MAKING, ARSD COLLEGE

Sumit Sohal, B.Sc. (Mathematical Sc.) 3rd Year

1ST PRIZE, LADY SHRI RAM COLLEGE

Sumit Sohal, B.Sc. (Mathematical Sc.) 3rd Year

3RD PRIZE, T-SHIRT PAINTING
DAULAT RAM COLLEGE

पत्रिका संबंधी विवरण

फार्म नियम - 04

फार्म

(नियम - 04 देखिए)

1.	प्रकाशक स्थान	:	पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) नेहरू नगर, नई दिल्ली
2.	प्रकाशन की अवधि	:	वार्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	गरिमा गौड़ श्रीवास्तव
4.	क्या भारत के नागरिक हैं यदि विदशी मूल है तो देष्ठा का पता	: :	हाँ ....
5.	सम्पादक का नाम यदि विदेशी मूल है तो देश का पता	: :	डॉ. उर्वशी साबू ....
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रकाशित से अधिक के साझेदार हों।	:	डॉ. मुकेश अग्रवाल पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

मैं, गरिमा गौड़ श्रीवास्तव, एतद्द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवम् विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

P.G.D.A.V. COLLEGE

Nehru Nagar, New Delhi-110065

Volleyball (Women) Team 2017-18 Winner Vanquish

(Organized by Global Technical Campus, Jaipur)

Sitting *(L-R)* : Nirupama Gautam, Kiran Pachori, Archana, Deepika Buntoliya, Pooja Nishad.

Middle Row *(L-R)* : Ananya Pandey, Dr. P.P. Ranganathan (Associate Professor), Dr. Mukesh Aggarwal (Officiating Principal), Sh. Navneet Singh (Trainer), Swati Rawat (Captain)

Standing *(L-R)* : Geetanjli Bidhuri, Mansi Mehra, Simmi, Nisha Joshi, Ankita Rai, Shivani.

P.G.D.A.V. COLLEGE
NEHRU NAGAR
NEW DELHI
UNIVERSITY OF DELHI
UNION OATH TAKING
Shri Suman Kumar
PGDAV COLLEGE (EVE.)
FIRST FLOOR
GROUND FLOOR
SAFARNAMA